THE

HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरे ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st Sept, 1884. | प्रयाग भाद्रपद शुक्ल ९ सं० १९४१
Vol. VIII.] [No. 1. | [जि० ८ [संख्या १

हमारा नया साल ।

अष्ट सिद्धि दाता अष्टाङ्ग योग विधाता अष्टदिक्पाल पाल श्री जगदीश की आनन्द पीयूष वर्षि णी कृपा से आज हमारा अष्टम वर्ष आरंभ हुआ॰ विशेष हर्ष ह मको इस बात का है कि गत वर्ष बिना किसी प्रकार का विघ्न के आक्रमण के सुख और कुशल पूर्वक बीत गया और हम अपने रसिक और चतुर सुजान पाठकों को अम्रता स्वाद सदृश उत्तरोत्तर

उत्तम और मनोरञ्जक लेख का स्वाद चिखाने में अपने सहयोगियों में किसी से कम न रहें और यही हमारा मुख्य उद्देश्य है; पर खेद इस बात का है कि जैसा श्रम हमारा [illegible] है और जहां तक हिन्दी में समाई है उसके अनुसार जैसे बहु मूल्य और अनूठे प्रस्ताव इसमें छपते हैं वैसा प्रतिफल न देख भांति २ की कल्पना जी में उठती है इसमें संदेह नहीं इस ढंग का पत्र किसी दूसरी भाषा में निकलता होता तो हज़ार दो हज़ार कापी बिकने में कोई मीन मेख न था पर यहां तो "जैसे उदई वैसे भान न उनके चुंदी न उनके कान" जैसी यह भाषा हिन्दी दरिद्र वैसे ही इसके कदरदां और पाठक निष्किञ्चन और अल्पज्ञ हैं हिन्दी पाठकों की कोटि में अभी बहुत ही कम उस ढंग के पढ़ने वाले हुए हैं जो सुलेखक के लेख चातुरी की उक्ति युक्ति और व्यङ्ग समझ सकते हैं। हैं भी तो अङ्गरेज़ी तबियत के प्रभाव से गिरे रूखे और मत्सरी। रहे केवल हिन्दी जानने वाले सो उनकी योग्यता और समझ के अनुसार पंसारी अत्तारों की पुड़िया बांधने के उपयोगी वही एक पैसा दाम वाले पत्र ठीक और कदर के लायक ठहरते हैं इस दशा में हमें कौन पूछे सच है "यत्रभेकोपतिवंक्ता तत्रास्माकंकुतोवच:" "ये गांहक कर कौन के तुम कौनो कर कौन" खैर जो हो अपने देश समाज और हिन्दी की वर्तमान गिरी दशा पर ध्यान कर राजा बाबू और श्रीमन्तों को अपनी ओर से पराङ्मुख देख साधारण लोगों से जो कुछ हमें सहायता मिलती है उतनेही से हम अपना भाग्य सराहते हैं यदि ठीक समय पर मूल्य मिलता जाय परन्तु खेद और नैराश्य जी में तभी स्थान पाते हैं जब लोग बर्ष पर्यन्त बराबर पत्र ले पीछे से हमें निंबुआ नोन चटाने लगते हैं; हे ईश्वर ऐसों का अन्तिम परि-

काम तू ने क्या सोच रक्खा है? वसुधा देवी तू इन कृतघ्नों का बोझा कैसे सहारती है? अब अन्त में हम अपने महोपकारी पं० गोपालराव हरी सब डिपुटी इन्सपेक्टर स्कूल फर्रुखाबाद को अनेक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने गत वर्ष में इस दीपक को बत जाने से बचा रक्खा ऐसेही ऐसे निष्कारण मैत्री भाव प्रकाश करने वाले और हमारे इस सर्वोपकारी काम में दस्तगीरी करने वाले दो एक महानुभाव और खड़े हो जाते तो फिर क्या था "अवनीतलमेवसाधुमन्येनवनीमाधवनीविनोदहेतुः" और इस विज्ञ पुरुषों में अपनी कदरदानी होती तो यह अषाढ़ जीवन रूखा और फीका क्यों जंचता अस्तु हम भी रगड़ किये जाते हैं कभी तो दिन चेतेंगे। दिन काटा फरियाद से और रात जारी में काटी। उम्र काटने को काटी पर क्या ही ख्वारी से काटी। अजब अन्दाज़ की तकसीम साकी ने निकाली है। लबालब सब का सागर है हमारा जाम खाली है॥

—०—

पर उपदेश कुशल बहु तेरे।
आप करैं ते नर न घनेरे॥

इस संसार मे ३ प्रकार के मनुष्य देखे जाते हैं एक वह हैं जो अपनी ही फिकिर से छुट्टी नहीं पाते; दूसरे वह हैं जो संसारी बिषय भोग से फुरसत नहीं पाते तब समाज की उन्नति की ओर किस जून ध्यान दें; तीसरे वे हैं जो समाज और देश की भलाई मे बहुतसा यत्न और प्रयास कर कोई प्रत्यक्ष फल न देख बिरत भाव ग्रहण कर अत्यन्त ठंढे पड़ जाते हैं बरन दूसरों को भी इस पंथ पर पैर रखते देख वारण करते हैं और यही सिद्धान्त कर लेते हैं कि इस बात मे पड़ना केवल मूर्खता और ना समझी है क्योंकि जब कोई आशा प्रतिफल की नहीं तब क्यों व्यर्थ अपना समय खोवैं— इसी कोटि के लोगों मे कितने ऐसे भी हैं जो अपने तईं ससार मे प्रसिद्ध होंगे का यह एक अच्छा द्वार समझ देश की भलाई चाहने वालों मे बड़े महन्त बन जाते हैं—इन सब प्रकार के सज्जनों से हमारा निवेदन है कि अपना आराम

सुख और काम चलाना तो सभी जानते हैं मनुष्य जो सत् असत् विवेकवान हैं उनका मुख्य कर्तव्य यही है कि दूसरों को भी फिकिर रक्खे और सब के हित में तत्पर रहै और जो इतना न हो सके तो जिनसे अपना कुछ सम्बन्ध है उनके कल्याण का सोच तो हर एक साधारण मनुष्य को भी होना ही चाहिये ; जो लोग ऐसे हैं कि आप तो सुख से खाते पीते चैन करते हैं और उनके बन्धु भाई तथा स्त्री पुत्रादि भूखों मरते हैं उन्हे कोई अच्छा नहीं कहता इसी तरह जो लोग अपना ही सुबीता देख अपने देश की दशा पर ध्यान दे कभी एक क्षण वा मुहूर्त भी उसे विपत्ति से उबारने का सोच नहीं करते उनको कौन अच्छा कहेगा ? क्योंकि—"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" तब जो लोग अपनी जन्म भूमि को कष्टित दशा में देख इसको सुधारने में कुछ प्रयत्न नहीं करते उनके निरर्थक जीवन से लाभ क्या ? संसार में दो प्रकार की प्रथा है एक अपने पन का घटाना दूसरा अपने पन का बढ़ाना अपने पन का घटाना तो यह है कि संसार भर से अपने देश को अधिक समझना और देश के मुकाबिले अपने घर वालों को अधिक जानना और अपने शरीर पर कुछ बाधा होनेसे घर वालोंको भी तुच्छ मान लेना ; अब अपने पन का बढ़ाना यह है कि स्वजन बान्धवों के हित के लिये अपने निज शरीर का कुछ खयाल न करे और देश हित के हेतु घर वालों को भी होम दे जैसा सच्चे देशहितैषी अपने देश की रक्षा के निमित्त पुत्रादिकों को भी लड़ाई में कटने के लिये भेज देते हैं—जिसको तुम आराम और सुख समझे बैठे हो उसकी जड़ भी अपने देश और समाज की उन्नति है जो समाज अच्छी दशा में होगी तो तुम्हारा सब सुख भी स्थिर रह सक्ता है और नहीं तो एक न एक दिन धूर में मिल जायगा जैसा कि जो अपनी सञ्चित पूंजी को खाय और उसे आगे बढ़ाने की कुछ फिकिर न करे तो वह पूंजी के दिन तक रहैगी—अब जो लोग यत्न करते २ थक गये और अब निरुत्साह हो देश की भलाई की ओर से निराश हो बैठे हैं उनसे यह प्रार्थना है कि वे क्यों इतना घबड़ा गये सोचें तो सही आज काल जो कुछ हो रहा है यह सब उन्ही के उपदेश और बीज बोने का फल है हम लोगों को उसका कार मझधार में ले जाय आप ही जांय अलग यह

ठीक नहीं अच्छे सिपाही का यह काम नहीं है कि न जाने जीत हो या हार क्यों व्यर्थ को सिर कटावें—हमारे देश मे क्षत्राणी अपने पति को संग्राम मे जाते देख कह देती थीं रण से विमुख हो भाग आओगे तो तुम्हारा कभी मुंह न देखेंगी-ठीक भी है ऐसे भीरु और कादर का क्या मुंह देखतीं जो अपने जानकी डरसे जो तेजो अपना घर वार देश और स्वतंत्रता सब शत्रु के अर्पण कर आया—फिर आप कैसे सिपाही कि कठिनाई पड़ने पर देश की भलाई का सोच छोड़ बैठे और कादरों की भांत कहने लगे यह तो हमसे न होगा इससे आप सावधान हो समयानुसार उपाय से न चूकें। अब वे लोग जो अपने से कम समझ वालों को देख उनसे अरुचि मान लेते हैं और यह जाना कि इनको उपदेस देनेसे कभी कोई लाभ न होगा इस लिये उनको छोड़ बैठते हैं उनसे हमारा यह प्रश्न है कि वेजो मूर्ख न होते तो उन्हे आप सिखाते क्या? आपके सिखाने की आवश्यकता तभी है जब हम नहीं समझते हैं। अन्त मे विनय उन लोगों से है जो इस काम मे लगे हुए हैं। आप देखते हैं इस देशोन्नति के बारे मे जितनी पुकार मचाई जाती है उतना फल नहीं होता इसका क्या कारण है? आप कहेंगे लोग हमारी नहीं सुनते इसका कोई कारण अवश्य होगा।

हित अनहित पशु पंछिउ जाना। मानुष तन गुण ज्ञान निधाना ॥ सुनियत निकट विहग मृग जांहीं। बाधक वधिक विलोकि पराहीं ॥ जो आप उनके सच्चे हितकारी हैं तो संभाव नहीं कि वे तुम्हारी बात न सुनें इससे हम अपने दोषों को आपही विचारें: हमारी मसाल उस सोते हुए से है जो कभी २ चौंक उठता है और थोड़ी देर कुछ बर्रबर्र बक फिर लम्बी तान लेता है। कभी जो कुछ सुध आई तो आरंभ शूर बन कोई बात छेड़ बैठे उस समय बड़े जोश खरोश के साथ लेक्चर या वक्तृता कर कराय छुटकारा पाया हम समझे हम ने अपना काम कर लिया—सुनने वालों ने खयाल किया ये लोग अपनी नामवरी के लिए वा एक तमाशा या दिल्लगी समझ इकट्ठे हो जाते हैं यह समझ उन्होंने भी कुछ ध्यान न दिया आपका सब कहना मानो एक कान मे आया दूसरे से निकल गया। उनके लिये हमारी चि[illegible] पिता तो तब जान पड़े और हमारा

विश्वास तभी लोगों के जीमें जमैं जब हम पहले अपने को सुधारें और केवल सभाओं ही में बड़े आडम्बर के साथ धूम धाम की वक्तृता न कर साधारण रीति पर भी लोगों के संग आन्तरिक भाव प्रगटकर दिखावें उनकी सुनें और अपनी कहैं वे अपनी अवज्ञा और अपमान भी करें तो उसपर कुछ ध्यान दें। फिर सर्वोपरि एक बात यह है कि स्वार्थ और पर उपकार में बड़ा अन्तर है एक अंगरेजी मसल है एक नौकर दो मालिक की सेवा नहीं कर सक्ता। जब तक हम स्वार्थ के बश में पड़े हैं तब तक दूसरों के भलाई की वासना भी हममें नहीं आ सकी क्योंकि अलबत्तो हम ठहरैंगे नहीं जिस स्वार्थके बश में पड़े हैं वह हमसे जो करावैगा वही करना पड़ैगा इससे जो हम अपने परिश्रम से कुछ फल सिद्धि चाहते हैं तो पर उपदेश छोड़ आप खुद कुछ कर दिखावें नहीं तो इस झूठी बकवाद से कभी कोई काम पूरा होने वाला नहीं है।

ह॰ प्र॰

॥ तुच्छ ॥

वजेदारी की यह भी एक वजेदारी है कि इसी के मुकाबिले एक को हीन और तुच्छ समझते हैं जैसा विलायती विद्या के आगे हमारे शास्त्र तुच्छ हैं; इङ्गलैंड यात्रा के आगे चारो धाम कर आना तुच्छ है; रेल के आगे विमान तुच्छ है; तार के आगे दैवी दूत तुच्छ हैं; अंगरेज इंजिनियर के आगे विश्वकर्मा तुच्छ है; बिजली की रोशनी के आगे चन्द्रमा की चांदनी तुच्छ है; विलायत के बने कपड़ों के मुकाबिले काश्मीर के दुशाले बनारसी कमख्वाब तुच्छ हैं; ट्रेमवे के आगे एक्का गाड़ी तुच्छ है; पुलिस के आगे नादिरशाही तुच्छ है; चुंगी के आगे जजिया तुच्छ है; बाबूगीरी की नौकरी के आगे इज्जत तुच्छ है; रुपये के आगे ईमान तुच्छ है; वकालत के आगे राज्य तुच्छ है; पुरोहिती और पण्डागीरी के आगे जमींदारी तुच्छ है; पारसी थियेटर के आगे कसबियों का नाच क्या चीज है; खुशामद के आगे मोहिनी मंत्र तुच्छ है; थियोसोफी के आगे यावत् मजहब बदमजे हैं; ब्रह्मसमाज के आगे इसाई मजहब तुच्छ है; नेचरियों के आगे ईश्वर

तुच्छ है; अंगरेजों के आगे नेटिव फकीर और तुच्छ है; यूरेशियन बीरांगनियों के आगे अहल विलायती तुच्छ हैं; अंगरेजी लेडियों के आगे परियां वेपर और तुच्छ हैं; हमारे असभ्य पण्डितों के आगे आइस्टागी और सभ्यता तुच्छ है; रेओडेंटी के आगे बड़े २ रजवाड़े काठकी पुतली से तुच्छ हैं; विहार की कैथी के आगे यावत् भाषा की वर्णमाला तुच्छ है; नादिहन्दों के आगे हमारा पत्र तुच्छ है बस इसी तरह मिलान करते जाइये एक के आगे दूसरा तुच्छ से तुच्छ जंचता जायगा;

एकवज़ेदार।

—०—

॥ साहब लोगों साहब पन ॥

साहब लोगों का साहब पन। साहबों का मिजाज। साहबानी आदत। साहबानी रहन सहन। का रूप पूरा २ हाल हम काहे को कभी जानते और न जानने का कभी इत्तिफाक होता मसल है। सोवैं झोपड़ियोंमें और स्वपन देखें महलों का। यदि हमारे मित्र साहब कदर और मवाजिश के साथ उस रात को अपने घर हमें न बुलाये होते। पहले जिस कमरे में मित्र जी ने हमें ले जाकर बैठाया कुछ उसकी दास्तान शुरू करते हैं। आह किन २ पेचोदारास्तों से होकर गुजरे। भूल भुलैया मात थी पहले पच्छिम का मुंह करलेना पड़ा फिर पच्छिम से पूरब को मुड़े तब दकिखन की राह से होकर असल कमरे तक पहुंचे राह में जाते २ मुझे यही खयाल सूझा कि मैं भौमुखी मकानों तो नहीं हो गया कहीं। खैर तो भी इस पेचीदगी को हम वैसी न कहेंगे जैसी हमारे हिन्दुस्तानी मकानों में होती है। अगर कोई मेहमान आवे तो पहले आप उसे एक चौका में ले जायगे तब दालान दर दालान होते एक कड़े लम्बे चौड़े कोठा के भीतर लेजाय बैठा देंगे जिसमें सिर्फ एक ही दरवाजा होगा कोठा क्या कलकत्ते का ब्लैक होल भी जिसके आगे पसंगा है। अपने में भी इतनी अंगरेजियत आ गई है (कहां से आई यह कोई यदि बतला दे तो हम उसको धन्यबाद दें) कि बहुधा जब बाहर सैर को निकलते हैं तो जेब में दो एक पाकेट बुक छोड़ रखते हैं। कदाचित लोग अचरज से आवेंगे कि इन दो एक का क्या माने? पाकेट बुक न हुआ पान का डब्बा ही सही। आप के हिन्दुस्तानियों में तो कुर्ता की गहरी इतनी बड़ी

बुक रखने की चाल हुई नहीं । अंगरेजी लोग लिये भी रहते हैं तो सिर्फ एक । दो या तीन के रखना यह अपनी ईजाद है एक में तो अपने रोज़ मर्रे का हाल लिखते हैं दूसरे में उसी के सम्बन्ध में जो २ अच्छा ख्याल मन में आते हैं उसे टांक लेते हैं कि भाग न जाने पावें और जहां एक बार कोई बात पाकेट बुक में बन्द कर दी गई तो फिर जब उसे खोलें न तो और नई २ बातें सूझेंगी । पर बहुत तब होता है जब किसी के सामने या कचहरी में कोई बात मन में आती है क्योंकि उनसे बात करें या मुसाफ़िर नोटबुक में लिखने बैठें । इस लिये हमारी बड़ी हानि होती है और बहुत से अनमोल ख्याल फिर अन्तर्ध्यान हो जाते हैं पर जब कि नोट बुक साथ रखने की चाल ही हम हिन्दुस्तानियों में नहीं है तो कहां तक इस्के गुण आप के सामने गावें । अन्धे के सामने रो के अपने दीदे खोइये । (माफ़ कीजियेगा) खैर इस नोटबुक के पास रखने से यह लाभ हुआ कि उन कमरों में जिन्में से घूमते हुए हम लोग गये उन सभों के नाम जो हमारे मित्र जी ने बतलाये वह हम धीरे २ लिखते गये । क्योंकि वहां पहुंचते ही यह कुतूहल हम पर सवार हुआ कि यह ज़मीन ही हमें बिल्कुल नहीं मालूम हुई और आसमान भी मानो यहां दूसरा ही था । इस लिये हमारे ध्यान में यही बात आई कि वहां का कुछ हाल लिख कर आप लोगों को भी सुनावेंगे तो अवश्य कुछ न कुछ दिल लगाव होहीगा । पर बड़े २ दस्तूर साम उन अंगरेजी लफ्ज़ों को यहां लिखते डर लगता है इस लिये केवल इतना ही लिखते हैं कि उस कोठी में यद्यपि हमारे मित्र ही अकेले रहते थे पर हम समझते हैं कम से कम २० कमरे होंगे । कम से बारह या पन्द्रह तो बिल्कुल आरास्ता तैयार हैं और उन की ज़रूरत भी पड़ती है । क्योंकि अंगरेज़ लोग शायद जन्म भर एक घंटा एक कमरे में नहीं बैठते । यही सब लोग कदाचित डार्विन ने "बन्दर के औलाद" की थ्योरी कायम की है । सुबह की एक कमरे में बैठते हैं । आफ़िस का काम एक में करते हैं । दो पहर को खाने की जगह दूसरी है । शाम के लिये दूसरा है । रात के काम के लिये अलग सामान है खास २ लोगों की मुलाक़ात के लिये और ही कमरा है । खाना और क

हीं खाते हैं। पढ़ने को लइब्रेरी अलग है नहाने या गुसल के एक छोड़ तीन २ कमरे हैं। और कितने कमरे कितने दूसरे २ कामों के लिये होंगे जिनका हाल हमको नहीं मालूम क्योंकि मारे शरम के हम मित्रजी से पूछ न सके और न वेही मारे शरम के हमसे कुछ कह सके। उस समय अपने मित्र का स्वर्ग तुल्य इस वास स्थान और शाहजादे तौर पर ज़िन्दगी काटने से जो बैकुण्ठ और कैलाश का सुख इसी पृथ्वी पर उन्हें हासिल है उसे ख़याल कर मन से बड़ी टूट गई और मारे शरम के गड़ गया जब से हिन्दुस्तानियों के रहने सहने के बेहूदे तरीके से उसका मिलान करने लगा। हमारे हिन्दुस्तानी भाई खांय वहीं हगें वहीं सोवें वहीं और चाहे २० आदमी का कुनबा हो तो भी वही बीता भर की ढाबली में घुस पैठ किसी तरह ज़िन्दगी काटेंगे मैलापन जन्म घूंटी के साथ पिला दिया गया सफाई के साथ आराम से रहना जानते ही नहीं। खैर अब हम प्रस्तुत का अनुसरण करते हैं इन सब कमरों में जिन्में से होते हुए हम लोग गये मौके २ की चीजें क़िस्म२ खूब सूरती से रक्खी हुई थीं जो कहने से नहीं बल्कि देखनेही से मन में बैठ सकी है— अच्छा तो पहले बड़े कमरे को जाने दीजिये उसका बयान पीछे करेंगे क्योंकि एक बारगी किसी बड़े काम को अपने ऊपर उठालेने से यह होता है कि अन्त र जराभी ढील हो तो हिम्मत टूट जाती है—इसी से हमारे यहां के कवि लोग पहले किसी ग्रन्थ के आरम्भ में कोई देवी या देवता का मङ्गला चरण कर लेते हैं पर हम यहां किस देवता का मंगला चरण करें और किस अर्थ से? पर किसी बड़ी चीजों के बयान की हमको हिम्मत हो इस लिये उदाहरण की रीति पर एक छोटे से छोटे कमरे का कुछ हाल लिखते हैं—जब हम लोग एक २ कमरा देखते हुए आगे बढ़े तो हमारे चिहरे पर वे तरह आश्चर्य के चिन्ह देख हमारे मित्र ने मुसकिराहट के साथ हमसे पूछा—"आइये आपको बड़ा ताज्जुब हुआ" और पेश्तर इसके कि हम उनको इसका कुछ उत्तर दें हमारे कान्धे पर हाथ रख उन्होंने धीरे से कहा कि "यहां तो हम अकेले ही रहते हैं" इसका मतलब यह था कि अगर हमारे मित्र की मेम साहब भी उनके साथ रहती होती तो शायद कोख ह चौके बदले बत्तीस को सामाना करा

ये भी कोठी उन्हें लेना पड़ता क्योंकि जब आप साहब बहादुर के तरह रहते हैं तब अपनी अर्द्धाङ्गिनी को लाजिम था कि मेमों की तरह पर रखते और मेमों के कितने खटराग होते हैं उस्के सोंचने को भी हम अपने में हिम्मत नहीं पाते तब लिखलाती दूर है—हां तो उस कमरे का आपको मतलब बतलावैं आप उस्को लाइब्रेरी अर्थात् किताब रखने के कमरे का बचा समझिये—इन कमरों में ventilation यानें हवाके आने जाने का खूबही खुलासा रास्ता था—अफसोस यह न्यामत शहर के रहने वालों को कभी ख्वाब में भी मयस्सर नहीं हो सक्ती—खैर वहां मुख्तसर सा पढ़ने लिखने का सामान और चमकती हुई जिल्दकी थोड़ी सी किताबें शीशे की आलमारियों में चुनी हुई थीं और हमारे मित्र जी वहां बैठ अखबार पढ़ा करते थे—कोने में रखने की चीजें और दीवाल पर टांगने की चीजों को हम देखतेही रह गये "एक आतेरी कुदरत के हैं लाखों जलवे । है राहु कि इन दो आंखों से क्या २ देखूं" ! खैर इतने में कुत्तों ने बड़ा शोर मचाया तो दोस्त के कमरे में गये—किता उस कमरे की न गोल थी न चौकोर कुछ अजीब तरह का खूब सूरत कमरा वह था कोने में छोटासा एक पियानो भी रक्खा था जाबजा दीवालों पर हिन्दुस्तान के बड़े प्रसिद्ध और नामवर लोगों की तसवीरें लगी थीं जिन्हें हमारे मित्र जी ने बड़ी मेहनत और फिकिर से जमा किया था बीच में एक गोल मेज़ था जिस्के चौगिर्द मखमली गद्दे की न बहुत ऊंची न बहुत नीची कुर्सियां रक्खी थीं—इतने में घंटी बजी मित्रजी ने कहा चलिये चा तैयार है हमको यद्यपि चाकी कुछ चाह न थी और न उस्के पीने की कभी आदत रही पर उनके अनुरोध से अंगीकार करना पड़ा और वहां से उठ खड़े हुए

बची सुनाकाती···

—०—

॥ विवेचक का भ्रमोच्छेदन ॥

यह लेख हम विवेचक महाशय के प्रश्नों के उत्तर में लिखते हैं जोकि—प्र—के जुलाई के नम्बर में निकले थे—पहले हम विवेचक जी को हृदय से धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हमारे इस क्षुद्र लेख पर इतना हर्ष प्रगट किया—अगर उक्त महाशय ऐसे दो एक हिन्दी पाठकों को किंचित भी आनन्द हुआ तो हम उस्को

बहुत प्यार मानते हैं क्योंकि यह तो हम पहलेहो से समझे हुए हैं कि हमारी भाषा हिन्दी की वह अवस्था अभी नहीं आई कि इस प्रकार के लेख की उतनी भी पूछ हो जितनी बड़े से बड़े इन्दर सभा ऐसे खापरात्रों की होती है यद्यपि ईश्वर की कृपा से हिन्दी के रसिक बढ़ते जाते हैं और हिन्दी के पत्र भी जहां दो एक निकलते थे वहां अब बीस पचीस के लग भग निकल रहे हैं पर तौभी अपनी सर्व साधारण समाज की तबियत इस ओर से कुछ ऐसी उखड़ी हुई मालूम होती है कि बाजे समय तो सच२ बड़ा दुःख होता है—और उचित तो यह है कि पार्सियों के बराबर मुसल्मानी खयालात के जिन और परियों के हम और आप बराबर एक से भक्त हैं—उन लोगों के पास भी दोचार अच्छे नाटक हैं जिस दिन वे लोग उन नाटकों का अभिनय करते हैं उस दिन कुछ भी भीड़ नहीं होती—पार्सियों की एक युक्ति शायद आपको मालूम नहोगी वह यह है कि जबवे भीड़ कम होती देखते हैं तब फिर इन्दर सभा करते लगते हैं और उस दिन पांच सौ और कभी२ हज़ार रु० भी एक रात मे मिलना कुछ बड़ी बात नहीं है· पार्सियों की शिकायत करना हमारा आशय नहीं है बल्कि इस बात मे उनकी तारीफ है कि लोगों की तबियत देख के वाही ढंग रचते हैं और बेशक फायदा उठाते हैं हम सबसे यह अच्छी तरह सूचित होता है कि लोगों के (taste) रसास्वाद की झुकावट किस ओर है—'नई रोशनी' के बारेमे हमारे "विवेचक"जी के दो प्रश्न थे एक यह कि प्रथम अङ्क मे कोई दृश्य "सीन" बदली नहीं गई—पहले हम इसी को ते करले तब दूसरे प्रश्न का उत्तर लिखैं—स्पष्ट है कि यह नाटक उस किस्म का नहीं है जिसमे बड़े२ वीरों के वीरता के काम दिखलाये गये हों या किसी बड़े राजा के चरित्र अथवा उसकी "पालिसी" राज्य सम्बन्धी रीति नीति को लेकर कुछ लिखा गया हो—जैसा श्री राम चन्द्र या युधिष्ठिर अकबर या औरंग जेब या किसी बड़े (Historical epoch or event) ऐतिहासिक इति वृत्त पर कोई "ट्रेजिडी" दुःखान्त रूप नाटक लिखा गया हो—अथवा आदिसे अन्त तक कोई चुह चुहाता हुआ सरस शृङ्गार रस का किस्सा हो—ऐसे बड़े२ नाटकों मे आप ऐसे बड़े २ लोग जैसा राजा रानी मंत्री राज कुमार सेना पति सारथी आ·

दिखी पाइयेगा और उन्ही मे अब राज भवन की शीन है-अब अमात: देखे हुए नीति शास्त्र पारङ्गत बड़े २ मंत्री लोग राज सभा मे बैठे कर्तव्य से कर रहे हैं। फिर बाद इसके किसी गुप्त स्थान मे नायक नायिका का प्रेमालाप दिखलाया गया कि जिसे देख दर्शक या नाटक के पढ़ने वाले एक बारगी फड़क उठे—फिर वही नायक रण भूमि में आकर वह वीरता दिखलाता है कि देखने वाले का भी खून जोश मे भर उठता है। या फिर किस घने जङ्गल मे कुटी या ऋषियों का आश्रम दिखलाया जिसे देख उस समय के भारत वर्ष का सरल भाव और पवित्र चरित्र का खयाल कर लोगों की आंख मे आंसू भर आवे और फिर पहाड़ झरना नदी बड़ी २ राजधानी या नगर समुद्र और उसमे जहाजों का डूब जाना इत्यादि एकबारगी एक दिखलाकर अद्भुत आनन्द देखने वालों के जीमे उप जाते हैं(In door and out of door actions)घर के भीतर और बाहर के कामो को मिलाने से जो (picturesqueness) मनोहर विचित्रता होती है वह इन्ही नाटकों मे होगी—हमारे इस छोटे नाटक को तो आप छोटा सा (Domestric drama या social sketch) सामाजिक चित्र का चित्र पट समझिये इसे जल्दी २ सीन बदलने की आवश्यकता ही क्या है ? और शायद इसे कुल पांच या छ जगह सीन बदली जाय—सब से अधिक तो इसी भटी और सूत्र धार महाशय से क्षमा मांगना चाहिये कि उन्हे आने का अपने नाटक मे हमने निमंत्रण नहीं भेजा—अब आप के दूसरे प्रश्न की समालोचना करते हैं कि "हिन्दू पात्र और उर्दू भाषा और अंगरेजी ढंग की बातें तीनों मिलाकर खिचड़ी बना दी गई है" सच पूछिये तो एकही बात टोकने के लायक मालूम होती है अर्थात भाषा—क्योंकि पात्र हिन्दू होना ही चाहिये और अंगरेजी बातों को न कहिये यह नाटक ही इस अभिप्राय से लिखा गया है—नई रोशनी के कुसंस्कार को जब हम लिखने बैठे तो क्या ब्राह्मणों के जनेऊ का ठट्ठों मे उड़ाते अथवा अपने लोगों के विवाह की रीति पर कुछ हंसते—अवर की भाषा सो भाषा तो वास्तव में ऐसे लोगों की जैसी होती है वैसी हमने लिखी—आप ऐसे लोगों से यह आशा नहीं कर सक्ते कि अंगरेजी

को उच्च शिक्षा पाकर उनकी बोल चाल शुद्ध हिन्दी भाषा की हो—विवेचक महाशय आप भी यह भूलते हैं नाटक कार का काम लिखने का है यह कहने का नहीं कि आप ऐसा नहीं ऐसा कीजिये नाटक रचने वाले को उसी से मतलब है जो संसार में वास्तव में क्या होता है—जो होना चाहिये उसे हमारे फिलासोफर्स और मोरालिस्ट को झगड़ने दीजिये ऐसा संभव है कि शुद्ध हिन्दी के पढ़ने वाले तब प्रसन्न होते जब कि इसकी भाषा क्लिष्ट संस्कृत शब्दों से भरी होती परन्तु हम तो ऐसा किया नहीं चाहते—यह कौन नहीं चाहता कि सब लोग शुद्ध हिन्दी बोला करैं और अङ्गरेज़ियत के दोष अंगरेजी पढ़े हुए लोगों से निकल जांय—पर ऐसे लोगों में जो पाया जाता है उसपर ध्यान दीजिये अब अंत में हम अपने विवेचक जी को बहुत सा धन्यवाद देते हैं कि इस वाहियात लेख की विवेचना में अपना बहुत सा अनमोल समय खराब किया— आप लोग जो इसी तरह हमारा उत्साह बढ़ाते जांयगे तो आशा है शीघ्रही यह नाटक समाप्त हो जाय—और अगर आपही लोगों को न रुचा तो लिखना ही फ़ुजूल है।

पति पत्नी

हमारे यहां के बुद्धिमानों ने कहा है माता पिता भाई बहन पुत्र इत्यादि रिश्तों की परस्पर स्थिति और इन सभों में स्नेह का हेतु मनुष्य जाति में केवल एक चीज है और उसका नाम विवाह है—हिन्दुस्तान के नेचरिये शायद अभी इतने प्रचण्ड नहीं हुए हैं कि चूतड़ पीट २ कहते फिरें जैसा अमरिका फ्रान्स आदि देशों के लोगों में जमात की जमात इन नेचरियों की कहती है कि विवाह कोई चीज नहीं है"—"विवाह की जरूरत हमें क्या है" जैसे और सब वैसाही आदमी एक जानवर है देखते हैं तो सब जानवर किसी प्रकार के बन्धन में न पड़ स्वच्छन्द रहते हैं—यह क्या कि जन्म भर के लिये एक रूप कुरूप अन्धी बहरी लंगड़ी लूली और औरत के साथ रहे—यह क्या कि जिसका एक बार सम्पर्क हुआ उसी के गले में गला बांध बैठ रहैं फिर अलग होना कैसा जहां खाना पीना कपड़ा लत्ता गाड़ी घोड़ा मकान आदि मनुष्य बदला करते हैं वहां स्त्रियों को भी बदल डाला करैं„ !!! यह सब अमरिका फ्रान्स आदि देशों की उपज है जो इन दिनों सभ्यता की नाक समझे जाते हैं—

हिन्दुस्तान के नवशिक्षित भी अगर इसी तबियत के हुए तो उनको तो और अधिक झीखना पड़ेगा क्योंकि जहां बाहर वाले यह कहेंगे कि "जन्मभर के लिये एकही के साथ दोस्ती करना क्या मानै" वहां हमारे हिन्दुस्तानी भाई जो प्रतिक्षण हिन्दुस्तान मे पैदा होने के लिये अपने को कोसते होंगे यह उत्तर देंगे कि "हमसे तो आपही अच्छे हैं क्योंकि आपने तो ठोंक बजाय हाथ मार सौदा लेकर लिया है यहां तो मा बापने हम दोनो का गला एकही रस्सीमे घोंटा"—खैर इस विषय मे हमे मंजूर नही कि ते करने बैठें कि इन दोनो मे कौन अच्छे हैं और क्यों ?—समझ लीजिये नेचरिये अपने किये का फल पावेंगे क्योंकि जिस वक्त उन्होंने अपना कानून जारी किया उसी दम उनमे और कुत्तों मे कोई फर्क बाकी न रहेगा और जो वे सृष्टि के इतर जानवरों की भांत रहा चाहते हैं तो सच मूच जानवरही हो जांयगी—पति और पत्नी से बढ़ कर कोई दूसरा रिश्ता ऐसा संसृष्ट और पवित्र नही हैं—क्योंकि धर्म की राह से लीजिये तो—कानूनकी राह से लीजिये तो—समाज के बर्त्ताव और चलन की रीति पर लीजिये तो—और सब से बढ़ कर प्रेम और मोहब्बत की राह से लीजिये तो पति और पत्नी दोनो एक हैं—इसी सभों का एक मत है कि Husband and wife are one और पुरुष मे कुछ अन्तर नहीं है—इन दिनों के "रिफार्मर" संशोधन चाहने वालों को सब से बढ़ कर बड़ी शिकायत यह है कि हिन्दुओं के विवाह मे हद से ज़ियादा पाखण्ड और अपव्यय भरा हुआ है—खैर इन दिनो के संशोधक विवाह के अपव्यय और इसकी बहुत सी वाहियात रसम के सबब जो बुराइयां पैदा होती हैं उन्हे निकाल देंगे तो भारत वर्ष उनका धन्यवाद करैगा मगर गौर कीजिये जो विवाह की असल रीति है कि पिता किसी धर्म के आचार्य जैसे पुरोहित काजी या पादरी के सामने अपनी कन्या वरको दे देता है इसका वे क्या चारा कर सक्ते हैं और यह रसम हिन्दू मुसल्मान या अङ्गरेजों ही मे नहीं वरन सब सभ्य जातिमे होती है और यह कहना कोई बड़ी अत्युक्ति न होगी कि यदि इसी विवाह सम्बन्धी नियमो Marriage institutions को हम मनुष्य जाति की सभ्यता का मान दण्ड समझें तो युक्ति सङ्गत है मनु इत्यादि पुराने

आर्यों के ग्रन्थ पढ़ने से—मालूम होता है कि पति पत्नी के रिश्ते में कैसी बड़ी बारीकी कायम की गई है—यह तो विवाह के पूर्व या विवाह के समय पति पत्नी दोनों को एक किये जाने का माहात्म्य हुआ ; हमारे इस प्रस्ताव को लोग यहां तक पढ़ कह सक्ते हैं "लिखने वाला किस समय के विवाह का चरखा ओट रहा है क्या कोई नया बिलयती हिन्दुस्तान में आया है जिसने हिन्दुस्तान की वर्तमान दशा का कुछ भी हाल न देखा है न सुना है पुरानी पुस्तकों में जो कुछ पढ़ रक्खा है उसी पर अपना पांडित्य देखला रहा है,, यह कौन नहीं जानता कि आज कल हिन्दुस्तान में विवाह के क्या माने हैं इन दिनों का बाल्य विवाह को मा बाप की फूटी आंख का सुख या आतशबाजी और फुलवारी बाजों की पौ बारह कहना चाहिये ; जब आपके उत्तम और पवित्र रिश्ते को लोग समझते थे और कदर करते थे तब करते थे अब वह ज़माना लद गया—अब उन पुरानी बातों पर आप क्या बहुत सा ओट रहे हैं"—आपने खेतों में देखा होगा दस पांच हाथ की रस्सी से बहुत सी गाय भैंसों को बांध देते हैं कि उसी ठौर घूम घाम घास भूसा खाया करें और कहीं छट कर जांय नहीं—ठीक यही दशा हमारे देश में नव विवाहिता कुमारियों की है—माना हमने कि हमारे यहां की स्त्रियों को सोजा या गालीचा बुनना नहीं आता; पियानो बजाना या बिलायत की परियों की भांति अखबारों में लिखना हर महीने लोगों के रोज़मर्री महज़ मामूली का सीधा एक नया किस्सा "Tea cup and saucer novel,, लिख कर फेंक देना नहीं आता—खैर इसकी ज़रूरत भी तो हमें नहीं है—पहले यह सोचिये " पत्नी धर्म " में कौन २ बातें हैं—क्या उनका दार मदार केवल ऊपर लिखे हुए गुणों ही पर है ? कभी नहीं—हम न इसी बात के लिये रो रहे हैं कि हाय २ अब नी समय का हमारी स्त्रियों का सतीत्व और तेज निकल गया और न इसी बात को हम जीसे चाहते हैं कि यहां की स्त्रियां पतिव्रत और लज्जा को तिलांजलि दे लोगों के साथ घूमना कनाखट की बातें करने की विद्या coquetry और फ्रांस देश की स्त्रियों के समान चपलता और चरफरता सीखें और न उनके

पतियों ही का हम यह उचित कर्तव्य समझते हैं कि जबरदस्ती उन्हें अंगरेज़ी पढ़ावें कि उनको शेक्सपियर का "ओनस ऐंडअडोनिस" या रेनलड की "मिस्टरीज़ अफदि कोर्ट अफ लंडन" पढने का मौक़ा मिले—अफसोस हमारे खयालात उतने ऊंचे नहीं हैं—हम समझते हैं हमारे यहां की साधारण स्त्रियां यह सब छोड़ अपना धर्म और कर्तव्य पति पुत्र और गृहस्थी सम्बन्धी बातें समझ सकें तो वही बहुत है—अर्थात पति की आज्ञा क्या वस्तु है पुत्र को भली भांत लालन पालन और उनको उत्तम शिक्षा से क्या लाभ है घर के अच्छे इन्तिज़ाम से क्या २ सुख और बरकत होती है—अगर इसी सब को उन लोगों ने समझा तो बहुत किया—हम कभी न कहेंगे कि यह सब उनके लिये सहज मामूली और थोड़ी बात है अगर इन्ही सब बातों को उन्होंने अच्छी तरह निबाहा तो घर संभाल लिया और अपने गृहस्थाश्रम के कर्तव्य कर्म से पार हुई ऐसी स्त्रियां सच २ अपने पति की प्रीति पात्र और अर्द्धांगिनी होने योग्य हैं—नहीं तो स्वेच्छाचारिणी हो ज़बान और कलम दराज़ी से ज़ोर अपने पति को मालिक बन बैठें और अंगरेज़ी मेमों की तरह रेशमी कपड़े और दूसरी २ फ़ैशन और सजावट की चीजों की बिल से मारे पति का नाकों मे दम किये रहें—पुरुष कैसा ही चतुर और पढ़ा लिखा हो पर गृहस्थी का सब इन्तिज़ाम कुछ स्त्रियों ही के कोमल अङ्ग और कोमल मन से बन पड़ता है घर के छोटे से छोटे काम में भी बुद्धिमान स्त्री अपने पति को उत्तम सलाह दे सक्ती हैं सिवा घर के कामों के अपने पति को प्रसन्न रखने और सखी सहेलियों मे प्रतिष्ठा पाने वाली बातें भी थोड़ी भी सीखना आवश्यक है और इन बातों के सिखलाने मे जैसा पति अपनी पत्नी को मदद कर सक्ता है वैसा और कोई नहीं कर सक्ता; पहले इसके कि हमारे देश से परदा उठाया जाय स्त्री शिक्षा खूब फैलनी चाहिये उत्तम स्त्रियां सच २ वह अमूल्य रत्न हैं कि पति उसको सदा अपने हृदय पर धारण किये रहे पत्नी अपने पति को कैसे २ आनन्द दे सक्ती है यह हम अन्त मे कवि कुल तिलक कालिदास के इन श्लोकों को लिख समाप्त करते हैं "गृहिणी सचिव: सखी मिथ: प्रिय शिष्या ललिते कलाविधौ" "शुश्रूष स्वगुरुं कुरु

प्रिय सखो वृत्तिं सपत्नी जने भर्तुर्विप्रक्षतापि रोषण तया मास्म प्रतीपं गमः । भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भोगेष्वनुत्सेकिनी यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः—" इत्यादि—

—०—

। समझदारी की बलिहारी ।

सम्पादक महाशय

गत अङ्क में आप के पत्र में एक लेख समझदारी पर छपा था उसे पढ़ मैं भी यही निश्चय करता हूं कि समझ सचर बड़ी वस्तु है सत्व रज तम त्रिगुणात्मक बुद्धि की प्रेरणा से मनुष्य अपनी रुचि के अनुसार प्रत्येक अयथार्थ वस्तुओं को यथार्थ मान लेते हैं क्रोध लोभ मोह हमारी बुद्धि को ऐसा ढांपे हुए हैं जिस्से हमें सच्ची ठीक समझ होती ही नहीं ; इसी कारण अपने पुत्र वा मित्र के अवगुण भी गुण ही दिखाई देते हैं और शत्रु के गुण भी अवगुण; इस दशा में सत्य को चीन्हना महा दुष्कर है ; सत्य वस्तु को दूरदर्शी महात्माओं ने टुकड़े २ कर भिन्न २ स्थानों में दिखाया है हम जो एकही ठौर थोड़ा सा टटोल पूर्ण ज्ञानी और सत्य के पहचानने वाले अपने को मान बैठते हैं इसी का नाम भूल है; बस जो हमको यथार्थ बोध से प्रयोजन है तो आपस का झगड़ा छोड़ महात्माओं के वचन देखें पढ़ें और विचारें और निष्काम परोपकार में रत हो प्राणीमात्र से आत्मवत् प्रीति करें तब इस दुर्बल बुद्धि मे गुरू कृपा और उपदेश से शास्त्रोक्त धर्म का यथार्थ रूप देखलाई देगा और ऐसा यथार्थ बोधवान् पुरुष सदा आनन्द में रह सब के साथ प्रीति भाव से वर्तेगा जब किसी से उसका विरोधही न रहा तब समझ की पिभिन्नता कैसी "सबै भूमि गोपाल की यामे अटक कहां । जाके मन में अटक है सो ही अटक रहा „ ॥

ह॰प्र॰

म्युनिसिपलिटी स्तोत्रम् ।

अस्य श्री म्युनिसिपलिटी स्तोत्र मंत्रस्य महा यूरोपीय कलेक्टरो देवता सेक्रेटरी ऋषिः हिन्दुस्तान की ज़र खेज़ी बीजं खुशामद शक्तिः रुपये की आमद प्रयोजनं केनिङ्गटन की सफाई और शहर का गन्दापन कीलम् सर्व आधि व्याधि दूरार्थं जपे विनियोगः ।

हे ब्रिटिश राज्य की महिमा स्वरूपिणी म्युनिसिपेलिटी तुझे हम कोटि २ प्रणाम करते हैं हम तेरे पवित्र चरित्र अनेक वर्षों से एक टक चित्त लगाय देख रहे हैं जिसके अवलोकन से हृदय में कृतज्ञता प्रेमोद्गार हो जाता है कि हाथ पांव जिह्वा सब स्तब्ध होगई न मुख से कुछ कह सक्ते हैं न हाथ से कुछ लिख सक्ते हैं थे हमारे नेत्र जो चंचलता का दावा बांधे थे तेरी महा डाकिनी की सूरत देख नितान्त जड़ रूप होगये और मन प्रेम की तरङ्गों मे डुबकी मारता हुआ अन्त को wreck ed ship टूटे जहाज़ की भांत टुकड़े २ हो आश्चर्य्य की जल पर तैर रहा है आहा ! क्या महिमा क्या उपमा ! क्या बनावट ! क्या सजावट ! क्या लिखावट ! शेष शारदा क्या तेरे अगणित गुणों का पार पा सक्ते हैं ? कभी नहीं हे तीर्थराज की दुर्दशाकारि[illegible] हे खुलानक प्रचारिणी हे अङ्गरेजों के अर्थ खुशामद संच[illegible] हे शहर की आरोग्य नि[illegible] हे तप जूड़ी हैजा सहकारिणी हे अलफ्रेड पार्क नामक नन्दन वन मे साहिब मेमस्वरूपेण विहारिणी हे साहब लोगों की आया मेहतरानियों के दुखदन्द निवारिणी हे एक रुपये पर एक आना चुंगी प्रचारिणी हे सकल ऊंच नीच वन्दिते हे अनेक एड्रेस अभिनन्दिते हे टौनहाल बिलासिनी हे हिन्दू "हाल" hall दिल हुलासिनी हे गरीब मुख मर्दने हे प्रत्यक्ष जनार्दने हे अब तक पुलिस मनोरमे हे दुष्ट प्रबन्धानन विभ्रमे हे गौराङ्गजननन्दिनी हे कृष्णाङ्ग दुखकन्दिनी हे हिन्दू

धन नायिके हे पूरण गुण गायिके हे आलस्य महोदरे हे सर्व अचिथि महोदरे हे सिम्बरमुनीना मावासकन्दरे तेरे प्रबन्ध मे अब आत्मशासन का नया प्रबन्ध जारी होते देख हम तेरी स्तुति करते हैं कि अब हम नये प्रबन्ध से भी रूप धारण कर अपनी विकर दृष्टि पात से हम सबों को बचाये रह हम सदा तेरे ध्यान मे एकाग्र चित्त रहा करेंगे तथा च

क ध्यानम् ।

शुक्लप्रचामाङ्गशोभाढ्यां गौनमाडौलिभूषितां । महामोहमसदृशां कराञ्चांकालसीदराम् । चन्द्रानुगोऽपिचिन्वन्तीं खलीनालोभिकालतीं । डालती वनजारअपनी चारीजांबिवरूपावसे । टौनहाली महाभीमे टेविलचेयरशतान्विते । सिम्पलीलपसन्दीप्ते प्यूनभृत्यनिषेविते । उन्नाशनममासीनां पेपरप्यनचमत्करां । महाविचारसंमग्नां सनोलगुंधनागमे । तांश्रीमह्यूनिसिपेलिटीति ख्यातांसतींमारतभाग्यदेवीम् । सर्वं वयंनमविनो तशीर्षां पुनःपुनःपौरजनानमामः

—०—

श्लोक ।

तातेनकथितंपुत्र: लेखंलिखममाज्ञया । नतेनलिखितोलेख: पितुराज्ञानलोपिता ॥ १ ॥

अस्वंनखलुकर्तव्य मितिपित्रानियोजितः । तदेवशस्त्रं कृतवान् पितुराज्ञानलंघिता ॥ २ ॥

कान्तोकनककम्बीरं करेकिमपिकुर्वंति चागारलिखितेभानौ विंदुमिन्दुमुखीददौ ॥ ३ ॥

हारोयंहरिणाक्षतास्तिहृदये सख्याप्र्यंतां प्रेषितः पत्याचेतिवचोनिशम्यमहसा नारोपिताशङ्कया । मालेयंशृणुभाविनीतिवचनं बुध्वासमारोपिता भावोऽचैवविचार्यतां सुधजनाः कोऽत्राप्यबद्धिमुदा ॥४॥

कुवर—रामेश्वर प्रसाद ॥
गोधौर ॥

जो महाशय शुद्ध हिन्दी मे इन श्लोकों का भावार्थ लिख भेजेंगे उनको धन्यवाद पूर्वक उसे हम मुद्रित करदेंगे—

नमोधर्मायमहते ।

॥ जि—७ नं—११ के आगे से ।

अब देखना चाहिये कि कोई धर्म प्रचलित कैसे होता है—इसका पूरा उत्तर आपको मत प्रवर्त्तकों के ढंग के परखने पर मिलेगा-पहिले यह बतलाइये कि यह जो धर्म धर्म हम लोग सुनते हैं वह क्या है ? हम जहां तक समझते हैं यह अवश्य आचरणीय धर्मसम्बन्धी नियमों का संग्रह है—जब यह बात है तो जिन २ ढंगों से समाज और राजनीति के इत्तर नियमों के संग्रह बने उन २ ढंगों का इसमें भी होना आवश्यक है—नियमों के जारी होने का केवल एक नाम यह है कि वे उसी समय बनते हैं जब उनकी आवश्यकता होती है और लोग उनके बिना चल नहीं सकते और हाथ फैला २ मांगते हैं—और यह बात आप सब नियमों में पाइयेगा। चाहे वे नीति सम्बन्धी हों चाहे सामाजिक—उदाहरण की रीति पर निम्न लिखित बातों को लीजिये— आप सोच सकते हैं कि जो २ बातें इस समय आपकी समाज में बेरोक टोक प्रचलित हैं वह सौ वर्ष पहले जैसी समाज की दशा थी उसमें किसी प्रकार नहीं ठहर सकती थीं—उससमय जो कोई आजकल के ढंगपर चलता उसे "पतित" 'च्युत' 'भ्रष्ट' आदि की पदवी दी जाती आपको याद होगा कि जितनी पोलिटिकल लड़ाइयां झगड़े इन दो चार वर्षों में इलबर्ट बिल या आत्मशासन प्रणाली आदि के कारण हुए उनमें यह किसी ने नहीं कहा कि हिन्दुस्तानी किसी तरह इन अधिकारों के पाने योग्य नहीं है - किन्तु विचार इस बातका था कि इन अधिकारों के देने का समय अभी आया है या नहीं—इसी तरह अब आप के समाज में कितने ही ऐसे लोग होंगे जो इस बात के लिये तन मन से उद्यत हैं कि विधवा विवाह सहभोजन या विलायत का जाना आदि जारी हो जाय और ऐसे किये वे क्या २ न करेंगे—अब बतलाइये कि इस प्रकारके आन्दोलन हमारी समाज में कितने दिनसे उठने लगी हैं ? तात्पर्य यह है कि हर एक समय (age) में उस समय के साथ रहने वाली बातें भी अवश्य आती हैं—और वह न हमारे रोके रुकेंगी न आपके—फिर जब यह बात है तो धर्म बेचारे को आप नियमबद्ध होजाने वालों की पंक्ति से क्यों निकाले देते हैं—

पहले नम्बरों में हम यह लिख आये हैं कि अपने२ विचार और पहुंच के अनुसार लोगों ने जुदे२ देश में जुदी २ देव

माला कल्पित कर लिया है—हम समझते हैं कि किसी पक्के मजहब का जारी होना देव माला बनने के हमेशा उपरान्त होगा—क्योंकि पहिले मनुष्य की बुद्धि काम में आती है और वह यही चाहता है कि कोई पूज्य वस्तु ऐसी खोज कर निकालें जिसके सामने चित्त खोल कर अपनी भक्ति प्रगट कर सके—स्पष्ट है कि यह सब चिन्ह मनुष्य की आदिम अवस्था के हैं—पर जब थोड़े समय उपरान्त समाज और सभ्यता का फैलाव होता है तो मोरालिटी धर्म्म के साथ मिला चाहती है क्योंकि कोई एक साथ रहने वाली जनता बिना moral bcnds सुनीति जनक बन्धन के एकत्र नहीं रह सकी—अतएव ऊपर लिखे हुए जो नियमों के संग्रह हैं वे Inteliectuality and morality बुद्धितत्व और सुनीति सार के फल हैं—spirituality अध्यात्म विद्या के बीज सुनीति के पूर्व्व या साथही या पीछे बोए गये हैं इसे हम आगे चल कर स्पष्ट करेंगे—हमारे समझ में यह आता है कि सब [illegible] प्रचारकों अथवा मजहब में थोड़ा अदल बदल करने वालों के जीवन (चाहे आप बुद्ध, ईसा, मोहम्मद ऐसे आदमियों को लीजिये चाहे आज कल के राम मोहनराय केशवसेन दयानन्द या कर्नल आलकाट सरीखे आदमियों को लीजिये इन सबों के जीवन वृत्तान्त इसी बात को सिद्ध करते हैं कि अपने२ समय में जो मत या संप्रदाय इन लोगों ने प्रचलित पाया वे ठीक नहीं थे और उनको नहीं रुचे (यद्यपि इन सब मत प्रवर्तकों में दयानन्द या आलकाट किसी नई बात के प्रचार करने वाले नहीं हैं किन्तु पुरानी ही दबी दबाई बातों का नया अभ्युत्थान देने वाले हैं)—इससे बढ़ कर मनुष्य के जीवन में दूसरी क्या भूल हो सकी है कि ऐसे पुरुषों को जो धर्म्म का तत्व और सचावट की खोज के पीछे यहां तक पच मरे कि कितने इनमें से अपने अमूल्य जीवन से भी हाथ धो बैठे उन्हें यह समझें कि नाम या धन के लोभ से इतनी मेहनत उन्होंने किया है—सोचने और विचार करने की बात है कि जिस मनुष्य को life and death मरण जीवन के problem प्रश्न की उलझी गांठ solve सुलझाना है उसके उदारचित्त में तुच्छातितुच्छ सांसारिक वस्तु नाम या धनसंचय की वासना क्यों कर समा सकी है और फिर नाम होना एक ओर रहा उलटे कितने वादी प्रति वादी और विरोधी उठ खड़े

होते हैं जिनके रगड़े मे दांतो पसीने आते हैं नाम के बदले बोचर लोगों की गालियो का मधुर स्वाद अलबत्ता अनुभव करना पड़ता है ऐसे लोगों को इस मे छुट्टी कहां कि स्वार्थ साधन मे फसैं शाक्य मुनि गौतम बुद्ध ही का उदाहरण लीजिये अपने जीवन पर्यन्त जो इसी सोच मे पड़े रहे कि उनको इस बात का पता लगे कि मनुष्य क्या है—कांह से आया हैं—और कहां जायगा और संसार मे इस सब दुःख का क्या कारन है ऐसे लोगों का सदा यही उद्यम रहा कि जो २ मानसिक सन्ताप दुःख और सोच उनको हुए वह उनके साथ रहने वाले या उनके देशवालों को न हो और इसी के लिये जन्म भर उन्होंने एक क्षण भी विश्राम न लिया अब बतलाइये इनसे बढ़कर unselfish स्वार्थ को तुच्छ समझने वाला दूसरा कौन होगा और इनसे अधिक उदारचित्तता का उदाहरण आप क्या देंगे? वास्तविक धर्म शिक्षा इन महात्माओं को जो कुछ हो पर cardinal virtues श्रेष्ठ सत्कर्म और moral purity एक उत्तमाचरण ही येलोग अचल स्तम्भ थे यदि ऐसा है तो इसमें कौनसी बड़ी अचरज की बात ठहरी जो इन महात्माओं की धर्म सम्बन्धी शिक्षा में "मोरालिटि" उत्तमाचरण की शुद्ध निर्मल धारा बहती हुई पाई जाय सच पूछिये तो "मोरालिटी" ही की भित्तिपर इन लोगों ने अपने २ धर्म रूपी चित्र को उरेहा है फिर जिस मनुष्य का जन्म का जन्म परोपकार धर्म का उदाहरण था उसने इसका किया तो क्या आश्चर्य है—धर्मनिष्ठता और सदाचार दृढ़ता की ये बातें आज काल के अंगरेजी पढ़े हुओं के मन मे न आवेगी जिनका कि आदि से यह सिद्धान्त है कि मजहब जारी करने वाले सब कपटी थे और उन्होंने सरासर झखमारा और पाखण्ड रचा है—आप निश्चय जानिये ऐसे लोग वेही हैं जिन्होंने एक भी मजहब या मजहबी बातों का हाल कभी नहीं पढ़ा है पर तौभी अपनी राय सर्वोपरि रखते हैं—हम पूछते हैं क्या पाखण्ड संसार मे चल सक्ता है? क्या पाखण्ड ही केवल लाखों किरोड़ों मनुष्य पृथ्वी के हर एक प्रान्त मे आपके मतानुयायी हो जांयगी; अब आप ज्ञान और बुद्धि के आभूषण से अलंकृत हो यह दावा रखते हैं कि पैसे दो पैसे की बातों मे भी नित्य के व्यौहार मे आपको कोई पाखण्डी धोखा नहीं दे सक्ता और प्रत्यक्ष देख

ते हैं कि बड़े२ बुद्धिमान रूपया पैसा घर बार कहां तक कहै राज्य पद भी सब इसी धर्म की खोज में छोड़ बैठे तो क्या आप यही कहैंगे कि किसी पाखण्डी ने उनको चेला बनाकर ठग लिया?—कभी नही—कभी नहीं—और जो कुछ आप चाहिये इसे मान लेंगे पर मजहब वालों ने पाखण्ड रचा है यह हम स्वप्न में भी नहीं मान सक्ते।

हम ऊपर सूचित कर आये हैं कि धर्म शिक्षा के साथ सदाचार शिक्षा होना बहुत आवश्यक है और धर्मरूपी किन रों से सम्बद्ध हो सुचरित्र की निर्मल नदी सदा बहती है—यहां तकतो धर्म के गुण सम्बन्धी qualitative प्रश्नों का विवरण हुआ अब हमारे पाठक यह सोचते हों कि हम विज्ञान शास्त्र के नियमों के अनुसार थोड़ा quantitive analysis मात्रा निर्णय भी करेंगे अर्थात किस नदी का कैसा पानी है और वह कितनी गहरी नदी है और कैसे वेग से बहती है—तात्पर्य र कि कौन सा धर्म कैसा है और उस्की ी शिक्षा है वा सच्चरित्र के सिद्धान्त किसमें सब से अधिक भरे हुए हैं—इन प्रश्नों का उत्तर देने की भी हम चेष्टा करेंगे और कदाचित उनको यह आशा हम पूर्ण न कर सकेंगे तो हमारे सुविज्ञ पाठक वृन्द हमें क्षमा करेंगे—क्योंकि यदि आप को पानी ही पीने से प्रयोजन है और तृष्णा की शान्तिही आप का मुख्य उद्देश्य है तब आप को स्वच्छ जल कोई ला दे तो उस्से आप यह प्रश्न क्यों कीजियेगा कि "क्यों जी यह किस कुए का जल है"? किसी वस्तु के कोई नाम रख देने से कुछ नही होता—अगर आप को सुगन्धि ही से प्रयोजन है तो यह गुलाब हो या और कुछ हो आम खाने से काम पेड़ गिनने से आप को क्या मतलब—मनुष्य को सारांश ग्रहण करने की रीति भ्रमर से सीखना चाहिये—आप का भ्रमर जब मधु एकत्र करने जाता है तो यह नही सोचता कि यह काले आदमी का बाग है या गोरे आदमी का—हमारे सार्वभौम तत्वान्वेषण शील cosmopolitan student को नाम क्या वरन भाषा का लगावभी ऐसा ही है जैसा मनुष्य को अपना तन ढ़ापने के लिये कपड़ा चाहे वह नीला हो या पीला या सफेद—चाहो पण्डितों का ढीला ढाला जामा हो चाहो सक्के वो मौलवियों का ढीला ढाला चोगा चाहो रोमन के थोलिक पादरियों का ढीला ढाला गौन हो—यहां पर हम

एक अंगरेजी पुस्तक से लेकर कुछ लिखा चाहते हैं "Men and parties, sects and creeds are the mere ephemera of the world's day while Truth high seated on its rock of Adamant is alone eternal and supreme,, "Language belong to the world of relativity while Truth is the only Absolute reality.

अर्थात भिन्न २ लोग और मजहब को भिन्न २ तड़ या भिन्न २ मत और भिन्न२ धर्म संसार के महा दिवस में केवल क्षण मात्र जीने वाले हैं किन्तु एक सत्यही नित्य और परात्पर है और अपने वज्र सदृढ़ अचल शिखर पर सदा विराजमान रहता है—मनुष्य की भाषा परस्पर की परिणामी बातों से सम्बन्ध रखती है पर सत्यही एक केवल परम अर्थ है-शेष

—(*)—

आर्य समाज की कार्तव्यता।

१६ अगस्त को यहां की आर्य समाज के प्रयत्न से दो हिन्दू जो थोड़े दिन हुए इसाई हो गये थे प्रायश्चित कर फिर हिन्दू कर लिये गये—हिन्दूपन स्थिर रखने की यह बड़ी उत्तम उपाय निकाली गई अब निश्चय होता है हिन्दू इस देश में स्थिरस्थ हो रहेंगे—यदि कहीं एकाध्र की बात गगा स्नान और पोंगा पण्डितों पर इस धर्म का सब दार मदार रहता जैसा अब तक रहा तो हमारी हानि भी हो रही खैर जो हो आर्य समाज को इसका धन्यवाद है।

प्राप्ति।

आर्य रमणी रत्न।

। श्री नारायण हेमचन्द्र प्रणीत ।

यह छोटी सी पुस्तक उत्तम स्त्रियों के जीवन चरित्र से बनाई गई है भाषा इसकी सरल होना उचित था ऐसी कठिन भाषा तो पुरुष भी कितने न समझ सकेंगे तब स्त्रियों के लिए अति क्लिष्ट कही जा सकी है मूल्य एक आना।

॥ प्रेम पुष्पावली ॥

ब्राह्मण पत्र के सम्पादक पं० प्रताप नारायण मिश्रकृत—इस पुस्तकके आदि में बाबू हरिश्चन्द्र जी का प्रशंसा पत्र इस पुष्पावली की अनूठी सुगन्धि की पूरी गवाही है॰ यह ग्रंथ ग्रंथकार की अनुपम कविता शक्ति की कसौटी है। अस्तु हम नये हरिश्चन्द्र या हरिश्चन्द्र सानी को इस पुस्तक के लिए अनेक धन्यवाद देते हैं।

शिक्षा सोपान।

पं॰ गोविन्दनारायण मिश्र प्रणीत—अक्षराभ्यास करने वाले बालकों के लिये समीप जाकी विद्या प्रासाद पर चढ़ने के लिये "सोपान" सीढ़ी रूप कलकत्ता उचितवक्ता यन्त्रालय में यह पुस्तक छापी गई है मूल्य ।)

मूल्य अग्रिम २।) पश्चात ४।)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gpinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

---xxxx---

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिद्वीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Octr, 1884. Vol. VIII.] [No. 2.

प्रयाग आश्विनशुक्ल ११ सं० १९४१ [जि० ८ [संख्या २

सम्पादक महाशय।

यह थोड़े से पृष्ठ हमको एक हमारे मित्र मिस्टर···जो हाल ने विलायत से आये हैं उन्हों ने भेजा है—आज कल विलायत जाने को और विलायत से लौट आये लोगों से वहां का कुछ हाल सुनने की लोगों को बहुत उत्कण्ठा है इस लिए आशा है आप अपने पत्र में इसे अवश्य प्रकाश कीजियेगा—जैसा उनकी आन्हिक पत्रिका Dairy में है वैसाही ठीक २ हम लिखते हैं।

स्थान—"पिनोश्रिया"—जहाज में

फर्स्ट क्लास का एक कमरा—समय साढ़े तीन बजे रात के—जैसेही घड़ी में तीन बजा वैसेही हमारी नींद एक बारगी खुल गई—कमरे में कुछ गरमी मालूम पड़ने से हम बाहर चले आये—समुद्र का पानी शान्त था और ठंडी हवा मन्द २ बह रही थी—वहां पर सिवा दो चार काले २ माझियों के और कोई न था क्योंकि यह कौन समय टहलने और हवा खाने का था—इस समय मेरे मन मे अजीब २ खयालों के तरङ्ग उठने लगे जिसके कारण हम कहां थे और क्या करते थे सब भूल गये—पहले नींद से एका एक चौंक पड़ने का कारण जो सोचा तो याद आई कि आज शाम को कप्तान से बात चीत हुई तो उसने कहा कि २४ घंटे का और रास्ता बाकी है तब से हम बराबर घंटा गिन रहे हैं अब शा यद चौबीस या पचीस घंटे की राह बंबई पहुंचने की और रह गई हो एक दिन रात बीतते क्या लगता है यही सोच हम सोये थे—खैर कल हमारी विलायत की यात्रा समाप्त होगी और सूर्योदय के साथही फिर हम अपनी जन्म भूमि में पांव रक्खेंगे तीन चार वर्ष विलायत के तो कुछ न मालूम हुए दिन क्रिकेट वाल अङ्गरेज मित्र और लेडियों के साथ रह ध्य कथा संलाप में कटा रात्रि थियेटर सरकस कांसर्ट आदि उमदा २ दिल लगाव में बीता किया पर ये ३ सम जहाज पर के काटे नहीं कटते थे— हो हमारे देखते ही देखते भारत व क्या क्या होगया—पहले के मा बा सामने कोई विलायत का नाम लेता तो वे थरथर मे आते थे और विला को एक तरह का काला पानी सम थे वही अब के मा बाप हैं कि अपने के को विलायत भेजने के लिये चि मचाये हुए हैं—हमारे देश के लोग जा तेही नहीं कि विलायत की इमतिहान कितने सहल हैं लोग समझते हैं यहां विद्या का पूर्ण पारङ्गत हो तब इङ्गलैंड जाने का मन करे पर यह बड़ी भूल है हमने तो हिन्दुस्तान में कुछ भी नहीं पढ़ा और दो चार भले मानुसों के कहने से चलो तो दिये यहां तक कि अच्छी तरह खत लिखने का ढंग हमको विला यत ही मे आया और फिर तो दोही एक वर्ष बाद प्रिंस आफ वेलस ने भी हमे बुलाया ग्लैडस्टोन से भी हम मिलने जाते थे एक हिंदू पेड्रियट से हम अखब त्ता हमेशा हैरान रहे जरासा हमलोगों

ने हाथ पैर हिलाया कि पुकार मचा दी कि "हम लोगों के सब युवकों ने जो विलायत गये हैं जल्दी कर बिल्कुल काम बिगाड़ दिया" मानो एक अकिल की पुड़िया वेही तो हैं और हम लोग तो निरे कूड़ा करकट हुए बटोर कर मुल्क के बाहर फेंक दिये गये हैं चार बर्ष मेहनत करते हुआ हम तो अब चल कर विश्राम करते हैं देश भलाई की सुध पीछे [illegible] जायगी यही सब सोच इसको बिल्कुल [illegible] मोद न आई और अपने कमरे में आय [illegible] म्प तेज कर जो कुछ मन में आया [illegible]सीट डाला—

[illegible]छ महीने बाद हमारे मित्र मि [illegible]ष्टर —की Diary आन्हिक पत्रिका में एक तारीख का दूसरा लेख—हम बिलायत जाना लोगों का किसी तरह पसन्द नहीं करते या तो पहले आप अपने देश की समाज को बिलायत की समाज के जोड़ का बिल्कुल कर डालिये या थोड़ही से लोगों में इसका नमूना कर दिखाइये नहीं तो हम सरीखे थो की तबियत वालों के सामने बिलायत का नाम न लीजिये जाने को तो बड़ी तेज़ी से गये जिब्रालटर और मालटा की सैर करते ही घर बार भूलना शुरू हुआ और यहां तक बिलायत की बातों में जो

खुभ गया कि स्वदेशीय मित्रों के पत्र का जवाब लिखना भी अखरने लगा इसतो उनको अपने अमूल्य समय को काम में लाने का गुण सिखाया चाहते थे परन्तु उसको हमारे मित्रों ने समझा कि बिला यत में पैर रखतेही हमारे मिजाज में शेखी भर गई पहले एक दोष तो यही है कि भाषा हमारी और हमारे देशवा सों की यद्यपि एक है तो क्या मिजाज तो एक नहीं है? हम न आप के बर्ताव को समझ सक्ते हैं और न आप हमारे सलूक की क़दर कर सक्ते हैं लोग कहते हैं आब हवा का रूखा पन ठंडे मुल्क की तासीर है और "ट्रापिकलरीजन" गरम मुल्कों में जहां सब बातें आसा इश और आराम से भरी हैं खास कर हिन्दुस्तान में मुल्क में जहां सूर्य की ती खी किरणोंही में बहुतास और सरसता के भर देने का गुण मालूम होता है एक ऐसी बनावट और थोड़ी बात का बहुत विस्तार करना ऐसा समाया हुआ है कि हमें बरदाश्त नहीं होती—आप बिलायत की समाज को कृत्रिमता बनावट और दगदारी से पूर्ण और वहां के लोगों को स्नेह बन्धन शून्य कहियेगा? जहां दो चार मित्र चाहो जन्म पर्यन्त एक साथ

खान पान और वसो वास करते रहे हों उन्हों से काल गत्वा एक सिधार गया तो दूसरे ही दिन कोई उसे पूछेगा भी नहीं और उसका स्मरण कर प्रेमाश्रुपात पर तो लोग हसेंगे—इस प्रकार की समाज को यदि आप कट्टर समझिये और भारत वर्षी जनों के एक २ रोम कूप को प्रेम मैत्री और अनुकम्पा पय: पूरित मानिये तो यहां तक कुछ क्षति नहीं है परन्तु इससे आगे आप और कुछ हाथ बढ़ाया चाहते हों तो सभ्यता की चरम सीमातक पहुचे हुए सुसभ्य देश के साथ अर्द्ध शिक्षित देशकी असभ्य और अशिक्षित समाज की तुलना और बराबरी करने की इच्छा प्रगट करते हैं।

विलायत मे रह मनुष्य कैसे न वहां की सब आदतें सीखेगा? और अगर सीखा तो इससे बढ़ कर दूसरा महा पाप इस जन्म मे उससे और क्या बन पडेगा—क्यो कि जब फिर आने पर भारत वर्ष रूपी नरक के कुण्ड मे ढकेला जायगा और विलायत के सुखों की उसे याद आवेगी तब एक२ पल उसका पहाड़ हो जायगा—हमहोंने हमको विलायत से आये हुए परन्तु जब२ कोई बात भी वहां की हम को याद आती है तब बर बार लोग कुटुम्ब सब छोड़ विलायत ही भाग जाने को जी चाहता है जब हमने इंगलैंड छोड़ा उस समय हमे यह खयाल नहीं था की इस भारत मे हमको आकार फसना पड़ेगा—अब हम सोचते हैं कि जब हम लोगों की हाजिरी Roll call हो चुकती थी और हम अपने से भी बढ२ कर साथियों को लेकर "टेम्पिल" की परिक्रमा करने को निक[illegible] लते थे तो कैसे२ लोगों से मिलते थे [illegible] की बातें सुनना छोड़ पढने मे मन [illegible] गाने का जी नही चाहता था—उस [illegible] मुकाबिले यहां के लोगों को देखते [illegible] कि अव्वल अन्दाजा grace की कौन कहे जरा सी बात करने का लोगों को ढंग भी नहीं आता तब यही कहने को जी चाहता है "हे ईश्वर तूही इस भारत भूमि की कुशल कर" और हजारों बातें ऐसी हैं जिनका अनुभव हमने वहां किया और जब उनके टक्कर की चीजों की कौन कहे उनका शतांश सहस्रांश भी यहां दुर्लभ है तो बतलाइये तबियत क्यों न अकुलाय? एक स्त्रियों ही की दशा देखिये यद्यपि हम विलाय मे बहुत नही घूमते थे बल्कि इसी लिये हमारे दोस्त हमे "किताब के कीड़े"

कहा करते थे तो भी हमको वहां की सर्व साधारण स्त्रियों की चाल चलन का अच्छी तरह अनुभव है। जब इन सब बातों को याद कर अपने पास दूर अस पास जो चीज़ है उस पर निगाह करते हैं और आस पास की स्त्रियों की दशा देखते हैं तो यही कहने को जी चाहता है कि महाराजा दिलीप सिंह की तरह सरकार हमको भी विलायत मे कैद कर देती तो जन्म भर हम सरकार को इस्का धन्यवाद देते बाहर तो हम यथा शक्ति खूब शेर बने रहते हैं पर घर के दुर्बुद्धि लोगों से ऐसी तबियत हैरान परेशान है कि यही जी चाहता है कि खैर जो हुआ सो हुआ अब तो हम इनसे अलग होने से रहैं पर यदि अपने unborn लड़कों को बिलायत ब्रिटिशवार्न सब्ज्येक्ट की birthright के लिये न भेज सकैं तो मा बाप आदि को तो भेज दें जिस्से उनका जन्म भी शुद्ध हो जाता और बिलायत की हवा खा आने से तबियत की गन्दगी दूर हो जाती इस सलाह उद्यम पर लोग हसैंगे पर दूसरा कोई रास्ता उनके सुधारनेका तो हमे सूझताही नहीं अपने दोस्तों को हम जो देखते हैं जो बड़े नागरिक और सभ्य कहलाते हैं तो मन मे यही बात जचती है कि इङ्गलैंड "कड़ी सम्यकिन्स" गंवार उनसे कहीं बढ़ कर हैं सुरौपत का ईश्वर सत्यानाश करै जिसे लड़काई ही से जान पहचान और बहुत कुछ घृष्ट पृष्ट है उन्हे कैसे छोड़ सक्तें हैं· हर्ष की बात है कि अभी तक हमारे भी दो एक सच्चे मित्र हैं सच्चे इस कारण से कि वे हमारी अंगरेजीयत को समझते हैं और कुछ टोकते नही किन्तु लोगों की राय हमारे निस्वत कैसी है उस से ठीक २ कह देते हैं उनकी कहने से मालूम हुआ कि लोग हमको इस गरूरी प्रौढ़ और प्रगल्भ जानने लगे हैं पर इन सब गुणो की नमूने की तरह सार्टिफिकेट तो हम अपने को तभी दे चुके थे जब विलायत जाने लगे अतएव वहां से लौट किसी और नये गुण का आविष्कार हमने नही किय।—संसार में भिन्न २ दल की भिन्न पद्धति है हमारे वर्ग की यही सब पूर्व्वोक्त पद्धति है यदि हम उसपर न चलैं तो हमारा दोष है परन्तु खेद तो तब होता है जब देखते हैं कि काउण्ट ने बड़े यत्न से अपनी तबियत तो गोरों की ऐसी कर लिया है पर जब गोर उस काउण्ट को गोर समझे तब न इस विषय पर हमारे मन में बहुत खेया

स आया करते हैं क्योंकि यह दिन रात का खटका है।

—०—

जीते जी नरक में कौन ?

धनवान् रोगी। कुटुम्बी निर्धन। म्लेच्छ के राज्य में हिन्दू। पुलिस के क़ब्ज़े में बाज़ार के दूकानदार। खुली नाली वाले महल्लों में रहने वाले प्रयाग के निवासी। अवज्ञाकारी पुत्रों का पिता। इलाहाबाद के एक्कों में जुतने वाले घोड़े। मिहतर चमार सातो जात से भरी हुई रेलगाड़ी में बैठा हुआ क्रियावान् ब्राह्मण। हमारे देश की बाल विधवा। अपने प्यारे से बिछुड़ा हुआ आशक। काबुलियों की क़ैद में पड़े हुए अंगरेज। सरकारी दफ़्तरों में किरंटों के बीच हिन्दुस्तानी क्लार्क या चार मुसल्मानों के बीच एक हिन्दू। नील कर या चाय की काश्तकारी करने वाले अंगरेजों के क़ब्ज़े में कुली लोग। सख़्त मिज़ाज हाकिम के नीचे अमले। नासमझों के बीच समझदार उपदेश कर्ता। कौओं में हंस। गीदड़ों की समाज में सिंह। असभ्यों की मण्डली में सभ्यता की चटनी चाटे पढ़ा लिखा विद्वान। क्रुद्ध निठुर पति के वश में पड़ी अमीर की कन्या। इत्यादि इत्यादि।

जीते जी स्वर्ग में कौन ?

तमाम फ़ौज को पहुंचे हुए आली दिमाग अंगरेज। साहब लोगों के ख़ुशामदी हिन्दुस्तानी रईस। देशी किरानी। तीर्थं के पंडे। खत्रियों के पुरोहित। होटल के खाने वाले। हाईकोर्ट के बारिस्टर। रेलगाड़ी के फर्स्ट क्लास के मुसाफ़िर। दयालु और न्यायी राजा की प्रजा इत्यादि इत्यादि।

चन्द्र चूड़

—०—

महा षोडश मात्रिका।

१ फूट २ लूट ३ जलन ४ ईर्षा जाति पांति सहोदरा। ५ पुलिस ६ चुंगी महा लंगी नंगी नाचे गली गली। ७ अदालत व खुशामदत ८ चंडू १० ब्रांडी विलायती। ११ रेल ठेल तथा १२ ईं क्वे ये दे बाङल मात्रिके। १३ शीतला १४ ऐश ऐयाशी १५ डेंग्यू फीवर १६ विशूचिका एतास्तु मात्रिका घोरा दौरा करतीं फिरें सदा। देशे देशे पत्तने वा ग्रामे ग्रामे गृहे गृहे। कदनं कुर्वती नूनं भरत खण्डनिवासिनाम्। सर्वैः पारिषदैः सार्द्धं भीम रूपा भयंकराः॥ च—चूड़

ग़ज़ल अव्वल।

ऐ जान हिन्दी ऐ जान हिन्दी हमारी प्यारी ज़बान हिन्दी॥ थी हमको पहले उमेद कामिल, ख़याल हंटर को कुछ तो होगा। मगर वु धोखे की टट्टी निकली, गँवाया सारा गुमान हिन्दी ।१। न हुआ कोई भी पूरा अर्मां, बरन गई वो ख़ुद आप शर्मा। रही फ़तहयाबीउर्दू ही को, हुई मुफ़्त में हैरान हिन्दी ॥ २ ॥ कई करोड़ों हैं बसते हिन्दू, जो मुल्क पंजाबों मग़रबी में। थी सबकी मर्ज़ी अदालतों में, हो जारी अब ये ज़बान हिन्दी॥ ३॥ हुरूफ़ इसके हैं साफ़ इतने, नहीं ज़रा सी भी होवे ग़ल्ती। औ समझी जाती है हिन्द भर में, मशीय जाने जहान हिन्दी ॥४॥ मगर है उर्दू ही जिनकी प्यारी, करेंगे हिन्दी की ख़ूब ख़ुारी। पड़ी है आफ़त ये आके भारी, लबों पै आई है जान हिन्दी ॥५॥ ये मुल्क हिन्दुस्तां अब नहीं है अगर्चे हिन्दू तो हम सही हैं। मगर य उर्दू की आशकों के, रही है फ़क्त दर्मियान हिन्दी ॥ ६ ॥ निकालो उर्दू को जल्द यक दम डरो न हिन्दू ज़रा भी अब तुम। हमेशा चमकेगी येही हर दम, ज़बां पै सब ज़बान हिन्दी ॥७। ऐ जान हिन्दी ऐ जान हिन्दी हमारी प्यारी ज़बान हिन्दी॥

ग़ज़ल दोयम।

हिन्दी का अब तो कोई कद्रदां रहा नहीं। अफ़सोस यही है उसका रुतबा ज़रा नहीं ॥ १ ॥ कायथ हैं जितने मुल्क में पढ़ते हैं फ़ारसी। हिन्दी का नाम लेना भी उनको रवा नहीं ॥२॥ शास्तर के रटने वालों को हिन्दी से काम क्या। भाषा की पोथी पढ़ने से बनना गधा नहीं ॥३॥ सब सेठ साहूकारों को पढ़ना हराम है। रोज़गार नहीं है होना मुसीबत ज़रा नहीं। अंग्रेज़ी पढ़े बाबू को हिन्दी से क्या ग़रज़। इङ्गलिश की बराबर तो किसी में मज़ा नहीं॥ रजवाड़ों का उर्दू ही से

चलता है कारी वार । हिन्दी को दें रिवाज क्यों सिर से दुखा नहीं ॥ ६ ॥ सरकार में नहीं है जब इसकी क़दर कहीं। ऐ यारो हिन्दी का पढ़ना बजा नहीं ७ ॥ इस मुल्क मग़रबी व शुमाली के दर्मियान । लोगों में इत्तिफ़ाक़ या एका ज़रा नहीं । ८ । गाँवों के रहने वालों की हिन्दी ज़बान है । शायक़ भी उसके पढ़ने का उनके सिवा नहीं ॥ ९ ॥ दिक़्क़त हज़ारों सहते हैं उर्दू से ये ग़रीब । लेकिन मरज़ की जानते कुछ भी दवा नहीं ॥ १० ॥ अफ़सोस सद अफ़सोस कि हिन्दू ये बेशुमार । उर्दू के बद फ़रेब से करते गिला नहीं ॥ ११ ॥ हम रोज़ देखते हैं कि हर शहरो मुल्क में । नेकों के गले काटते हैं बद का सज़ा नहीं ॥ १२ ॥ ख़ामोश हो ख़ामोश हिलाओ नहीं ज़बां । बैठे रहो घरों में ज़माना भला नहीं ॥

श्री

श्रीधर पाठक ।

॥ वार्द्धक्य ॥

इसमें सन्देह नहीं बुढ़ापे में प्रायः मनुष्य सब भांत शिथिल पड़ जाता है परन्तु सच पूछिये तो यह अवस्था बाल्य कैशोर और युवा सबका निचोड़ है और जन्म पर्यन्त किये हुए भले बुरे ऊंच नीच कामों का आदर्श है—जब सब कर्मेन्द्रियां निरन्तर काम करते२ थक कर शिथिल और ढीली पड़ जाती हैं और ज्ञानेन्द्रियां भी अपने२ विषय से सङ्कोच ग्रहण करने लगती हैं उस समय सब इन्द्रियों का स्वामी या प्रवर्तक मन शिथिल होने के बदले हिर्स हवा के चपल घोड़े पर सवार हो लोभ मोह के मैदान में सरपट धावा मारा करता है—जो मनुष्य जवानी की नई उमर में सतसङ्ग सेवा और सत्कर्म रत रहा है वह बुढ़ापे को धीरता गंभीरता के साथ निर्भय पार कर देता है और अपने पूर्वकृत कर्मों का स्मरण कर उसे कभी पछतावा या अपसोस नहीं होता—चाहे सिवा रामनाम के एक काले अक्षर से भेंट न रखता हो और न योगी या मुनियों की भांत मनन कर सका हो तौभी उसके सुखानुभव की सीमा नहीं है क्योंकि उसे पूरा विश्वास हर

ता है कि मैंने जैसा चाहिये था। वैसाही अपने दिन काटे तब इस समय मेरे मन को किस बात से शांति अथवा पीड़ा पहुंच सक्ती है ऐसे मनुष्य का बुढ़ापा निस्सन्देह बड़े आराम से कटता है—हमारे देश मे वार्द्धक्य के लिये मुनिवृत्ति अर्थात् मनन के द्वारा स्वस्वरूप या परमात्मज्ञान लाभ प्रयोजक विचारही नियत किया गया है और यथार्थ मे इस अवस्था को छोड़ कौनसा दूसरा समय मनुष्य को मिल सक्ता है जिस्मे वह स्वास्थ्य अवकाश और सुचित्ती के साथ परमार्थ साधन कर सके लिखा भी है "प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनं । तृतीयेन तपस्तप्तं चतुर्थे किं करिष्यति" परन्तु यह मनन वृत्ति सब के भाग्य में नहीं है बहुतों को इस अवस्था मे भी विषय वासना नहींछुटती और इन्द्रियां अपने२ विषयों से उपराम को प्राप्त न हो तृप्ति सुख का अनुभव कभी करती ही नहीं बरो ऐश आराम और आराइश दांत गिर जाने और मूछी पिलने पर भी मन में बसी रहती है ऐसे लोगों को बुढ़ापे से इतना बैर रहता है कि वे और२ उपाय उस्के छिपाने की करते हैं पर यह वह आसेब है कि कभीं छिपाये छिपता है। हिजाब छोड़ खिजाब करने लगे नौजवानो की कहानी याद कर२ लाख लाख तरह पर हसीनो के शुमार मे सीग कटाय बछरू बन मिला चाहते हैं पर बुढापा कब मिलने देता है। जिस प्रकार यौवन की वृद्धि के साथ बलकी वृद्धि होती जाती है उसी के विरुद्ध वार्द्धक्य मे बल और पौरुष की हानि और शरीर दिन प्रति दिन क्षीण और निर्बल होता जाता है। इसी कारण ऐसे मनुष्य बहुत कम मिलेंगे जो निर्बलता के कारण इस अवस्था मे कोई न कोई व्याधि से न ग्रस लिये गये हो—और जिसने जन्म से इन्द्रिय निग्रह रूप साधन एकाग्र मन को किया है उन पर निर्बलता कभी आखेट नहीं करने पाती। बुढ़ापे मे आय मौत को सरो निकट देखते हैं और दूसरी दुनिया या बैकुण्ठ या बिहिश्त निर्वाण अथवा मोक्ष जैसा जिस्का मत और विश्वास हो उसी के अनुसार इस जीवन के भावी परिणाम को सोचते हैं जो पापी हैं वे नरक की यातनाओं को याद कर२ कम्पमान होते हैं इस संसार के छूटजाने का निश्चय तो सबोंको रहता है पर आगे क्या होना या हम क्या हो जांयगी इसे किरोड़ों मे एक दो पहचानते हैं; मनुष्य गृहस्थाश्रम मे रह पुत्र पौत्र की अभिलाषा सुख्य

कर इसी लिए करता है जिस्से बुढ़ापा के समय जब हाथ पांव सब थक जाते हैं और कोई काम करने लायक नहीं रहता तब पुत्र उस्का आदर पूर्वक भरण पोषण करे। इसी लिये हमारे शास्त्र की आज्ञा भी है। "वृद्धौ च माता पितरौ साध्वी भार्य्या सुतः शिशुः। अप्यकार्य्यं शतं कृत्वा भर्त्तव्या मनुर ब्रवीत"। इति।

श्रीधर पाठक।

—०—

पदार्थ की चतुर्थ अवस्था वा किरन्त पदार्थ।

। श्री मती स्वर्णकुमारी देवी लिखित। भारती मासिक पत्र से। जगत् के यावत् पदार्थं को कठिन तरल और वाष्पमय इन्ही तीनो मे से किसी न किसी अवस्था मे हम देखते हैं अब तक वैज्ञानिक लोग भी पदार्थ की अवस्था सम्बन्ध मे इस्से अधिक कुछ नहीं जानते थे संप्रति वैज्ञानिक पण्डित क्रूक्स ने पदार्थों की चतुर्थ अवस्था आविष्कार किया है वह क्या है उस्का कुछ विवरण संक्षेप से हमनीचे लिखते हैं।

पदार्थ जगत् परमाणु द्वारा गठित है यह वैज्ञानिकों का सामान्य सिद्धान्त है भौतिक पदार्थ के छोटे से छोटे अविभाज्य अंश को परमाणु कहते हैं किन्तु इन परमाणुओं का अस्तित्व मनही से नेत्रों से ज्ञात हो सक्ता है क्योंकि उत्तम से उत्तम भी अणुवीक्षण यंत्र "मैक्रास्कोप" पदार्थ के परमाणु राशि को देखना नहीं सक्ता परमाणु पदार्थ मे अलग २ नहीं रहते किन्तु एकसे अधिक परमाणु इकट्ठे होकर एक विन्दु के रूप मे स्थित रहते हैं और इसी परमाणु संमिलन विन्दु को अणु कहते हैं।

पदार्थ मात्र इसी प्रकार के छोटे २ अणु राशियों की समष्टि हैं और क्या कठिन क्या तरल क्या वाष्पीय इन तीनो अवस्थाओं मे प्राप्त पदार्थ के अणुओं के मध्य मे थोड़े २ स्थानो का व्यवधान रहता है और उन्ही व्यवधानों मे अणु समष्टि विन्यस्त करती है कठिन पदार्थों जैसे पत्थर आदि मे सब अणु आपस मे इतने जुटे हुए होते हैं कि उनके बीच मे कुछ स्थान का व्यवधान है यह बात मन मे आती ही नहीं किन्तु वास्तव मे कठिन तम प्रस्तर और सरूप तम धातु भी अविच्छिन्न अन्तराय विहीन नही हैं पर इनके अणुओं के बीच मे स्थान का व्यवधान बहुतही कम है और इसीथोड़े से स्थान

मे इन अणुओं का विकम्पन आवत है यही वैज्ञानियों का सिद्धान्त है किसी प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा वैज्ञानिक गण इस पूर्वोक्त सिद्धान्त को नहीं पहुंचे हैं क्योंकि परमाणु जिस तरह दृष्टि पथ के बाहर हैं उसी तरह अणु भी दृष्टि पथ अतीत हैं और उसी प्रकार अणु के विकम्पन पथ भी दृष्टि अतीत हैं सुतराम् ज्ञान द्वारा ही इसको निश्चित कर विज्ञान पूर्वोक्त अनुमान सिद्धान्त को पहुंचा है।

यदि यह समझा जाय कि कठिन द्रव्य के अणुओं के बीच मे स्थान का व्यवधान है तो साथही साथ यह भी समझना चाहिये कि साधारण रीति पर जिस पदार्थ की कठिनाई जितना कम है उतनाही उसके अणु दूर २ जमे हुए हैं—अर्थात् उन अणुओं के बीच मे स्थान व्यवधान की मात्रा उतनीही अधिक है अतएव कठिन पदार्थ के अणु विकम्पन-स्थान से तरल पदार्थ के अणु विकम्पन-स्थान अधिक हैं क्योंकि कठिन पदार्थ के अणु संयोग जितना घने हैं उतना तरल पदार्थ का अणु संयोग घन नहीं है—फिर तरल पदार्थ से वाष्पीय अणुओं के विकम्पन पथ और भी फैलाव से अधिक हैं क्योंकि पूर्वोक्त तीनो अवस्थाओं मे से वाष्पीय अवस्था मे ही पदार्थ के समस्त अणु सबसे अधिक दूर२ फटकते फिरते हैं

यदि वायु विरल शीशे के पात्र मे सबसे लघु वाष्प भरा जाय तो स्पष्ट है कि वहीं पर ऐसेही वाष्प के अणुओं का विकम्पन पथ अधिक होगा-कठिन पदार्थ के क्षुद्र तम विकम्पन पथ से लेकर पूर्वोक्त वाष्प के प्रशस्त अणु विकम्पन पथ तक वैज्ञानिकों को कुछ भी अविदित नहीं हुआ अनुमान के अतिरिक्त प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा इस सिद्धान्त तक पहुंचने को वे लोग भी सर्वथा असमर्थ थे अब प्रोफेसर क्रूक्स इस विषयमे ज्ञात कार्य ही विज्ञान का और ऊंची सीढ़ी पर पहुंचाया है—सच तो यों है कि आजतक किसी वायु निष्काषण यंत्र से शीशे के नल को बहुत वायु विरल नहीं कर सक्ते थे—क्रूक्स साहब ने जो नई उपाय निकाली उससे यह हुआ कि कोई नल हो उसमे से पहले के अपेक्षा वायु अब अधिक निकाली जा सक्ती है और इसी उपाय से एक शीशे के नल मे वायु अणु की संख्या इतनी कम की जा सक्ती है कि उस अवस्था मे शीशे के भीतर के अणुओं के विकम्पन पथ केवल नेत्रादि द्वारा स्पष्ट अनुभूत ही नहीं होते हैं बल्कि मापे भी जा स

ती हैं— अणुओं को ऐसीही दूर २ स्थित अवस्था कोही पदार्थ की चतुर्थ अवस्था कहते हैं और उसी को किरन्त पदार्थ * भी कहते हैं किरन्त पदार्थ इस स्थान मे किरण शब्द के अर्थ मे नहीं आया है— चतुर्थ अवस्था के पदार्थ कोई एक विशेष नियम से अपने को विकिरण करते हैं इसी विकिरण से क्रूक्स ने इसका नाम किरन्त अर्थात् वैकिरण रक्खा है—जैसा मधु मक्खी के छत्ते मे एक के ऊपर एक मक्खियां आ गिरती है इसी तरह और तीन अवस्थाओं मे स्थान के अभाव से एक अणु, दूसरे अणु के ऊपर आ गिरता है किन्तु इस चतुर्थ अवस्था मे एक अणु दूसरे अणु से टक्कर खानेका भारी रास्ता खुला पाकर स्वाधीन भाव से दूर तक चला जाता है और फिर वहां से लौट भी आता है और इस प्रकार की गति के समय उनके इस आने जाने का रास्ता प्रत्यक्ष देखलाई देता है—और अधिक स्पष्ट रीति पर समझाने के लिये कि किस प्रकार परीक्षा द्वारा यह विकंपन पथ देखलाई दे सक्ता है कुछ थोड़ा कहना आवश्यक है—

ख्याल कीजिये चारो ओर से बन्द हवा से भरा हुआ शीशे का एक नल है उसके दोनो अन्त मे प्लाटिनम् के दो तार छोड़ दीजिये—उन्ही दोनो तार के टुकड़ों को किसी तड़ित उत्पादक यंत्र के सम और विषम विद्युत् युक्त मेरुओं* से मिलाने पर नल के भीतर के तारके एक छोर से दूसरे तारके छोर तक आलोक की एक सम रेखा उत्पन्न होगी किन्तु वायु निष्काषन यंत्र द्वारा यदि इस नल से पचीस भाग मे २४ भाग हवा निकाल ली जाय तब उसी नल मे विद्युत का प्रवाह दौड़ाने पर समरेखा मे वह आलोक नहीं दिखलाई देगा बल्कि उसके बदले एक गुलाबी रंग की आभा सम्पूर्ण नल मे छा जायगी--किन्तु प्रोफेसर क्रूकस के नये इस आविष्कृत उपाय द्वारा उसी नल से और अधिक हवा निकलने पर एक बिल्कुल नई बात दिखलाई देती है अर्थात् २५ भाग से २४ भाग निकाल कर ४० भाग से ३९ भाग यदि हवा निकाल लें तो बिल्कुल नल एक अस्पष्ट आलोक से भर जायगा केवल विषम मेरु तार के पास एक स्थान मे कुछ २ अन्धकार मालूम होगा—किन्तु इस

---

* Radiant matter

* Positive and nagative poles

अन्धकार और विषम मेरु बिन्दु के बीच मे एकगाढा नीलवर्ण का एक ज्योति का टुकड़ा देखलाई पड़ेगा। इसके उपरान्त यदि ४० भाग मे से ३९ भाग निकालने के बदले १६० भाग मे से १५९ भाग वायु का निकाल लिया जाय तो सम मेरु का विस्तृत जो आलोक है उसी काली२ रेखा पड़ जायगी और पूर्वोक्त विषम मेरु के तार के निकटस्थ अन्धकार स्थान काली पर बढ़ता हो जायगा—उपरान्त और अधिक वायु निकालने से सममेरु तार के आलोक के बीच जो काली २ रेखा दिखलाई देतीथी उसका विस्तार अधिक होता जायगा और विषम मेरु के पास का अन्धकार स्थान भी बढ़ता जायगा—तब नल से और हवा निकालने पर विषम तार मेरु के पास जैसा अन्धकार पहले हुआ था वैसाही एक अन्धकार स्थान और होगा किन्तु इन दोनो अन्धकार स्थानो के बीच मे एक छोटीसी ज्योति मालूम होगी—पीछे कहा हुआ दूसरा अन्धकार स्थान क्रूकस के नाम से विदित है क्योंकि क्रूकस साहब ने विशेष रूप से इसके गुणों का अनुसन्धान किया है—क्रम२ और वायु निकालने पर यह अन्धकार सम्पूर्ण नल मे छाजायगा इस दशा मे भी नल बिल्कुल हवा से शून्य नहीं है और अब इस अवस्था मे जो नल के भीतर की हवा है उसी का नाम [illegible] दार्थ की चतुर्थ अवस्था है और अब [illegible] नल के भीतर की वायु लघु से लघु [illegible] और इसी अवस्था मे प्राप्त वायु के अणुओं का विकम्पन पथ इतना बढ़ जाता है कि उसको नाप सकते हैं—पूर्व कथित रूपसे नल का अन्धकार मय होने का क्या कारण है अब उसी को देखलाते हैं। यह एक वैद्युतिक नियम है कि जिन द्रव्यों मे विद्युत् रहती है उनके स्पर्श से दूसरा द्रव्य भी विद्युत युक्त हो जाता है इसी तरह वह द्रव्य विद्युत युक्त होकर अपनी विद्युत् दूसरे द्रव्यको स्पर्श मात्र ही से देदेता है और ऐसाही विद्युत ग्रहण के समय एक बार फिर विद्युत् दान करने के समय भी एक बार आलोक उत्पन्न होता है—तो अब नल के भीतर के वायु के अणु के इसी तरह पर मेरु तार के स्पर्श मात्र ही से एक आलोक प्रगट होता है और उपरान्त उस अणु से चल कर दूसरे अणु के स्पर्श मात्र से एक आलोक उत्पन्न होता है जब कि नल सम्पूर्ण वायु से भरा हुआ है तब एक अणु दूसरे को और वह दूसरा तीसरे को

और तीसरा चौथे को इसी तरह बराबर एक दुसरे को इतनी जल्द विद्युत् [illegible]न करता है कि नल के भीतर एक मेरु [illegible]र से दूसरे तार पर्यन्त आलोक का एक प्रवाह बहता हुआ देखलाई देता है किन्तु नल के भीतर के वायु के अणु की संख्या जितना ही क्रम २ विरल होती जाती है उतना ही एक अणु का मेरुतार से विद्युत ग्रहण कर दूसरे अणु के प्रति आने तक मे कुछ देरी होती है फिर उस दूसरे अणु को विद्युत दे मेरु तार तक लौट आने मे भी कुछ देर लगती है तो मध्यवर्ती इन दोनो समयों मे आलोक उत्पन्न नहीं होता किन्तु उसके बदले उन्ही स्थानों मे अब अन्धकार उत्पन्न होता जाता है—क्रम२ से नलके भीतर जितनी ही हवा कम होती जाती है उतनीही अणुओं के चलने का रास्ता बढ़ता जाती है और उतनाही एक से दूसरे का संघटन विरल होता जाता है और संघटन जनित आलोक का उत्पन्न होना भी क्रम २ से जब कम हो गया तो मेरु के पास का अन्धकार घना हो जाता है और इसी अन्धकार की गाढ़ता के कम या अधिक होने के अनुसार अणुओंकी संख्या का परिमाण किया जा सक्ता है।

इसी तरह अणुओं की संख्या कम करते२ जब नलको हवा चतुर्थ अवस्था के नियम के आधीन हो जाती है तब विद्युत प्रवाह एक दम से निस्तब्ध हो रहता है और नल के भीतर बिल्कुल अन्धकार छा जाता है तब अणुसब इतने कम हो जाते हैं कि एक अणु एक मेरु से होकर दूसरे तक जाने मे रास्ते मे किसी दूसरे अणु का स्पर्श करता ही नहीं ।

एक बार ऐसा अन्धकार होने के पूर्व उस नल के भीतर के आलोक की परीक्षा द्वारा पदार्थों के अनाविष्कृत कितने गुण जाने गये हैं। नल मे का प्लाटिनं तार का अग्र भाग यदि एक क्षुद्र बिन्दु न हो कर चकला सा हो और उसी चकले भाग को औन्धा के रक्खें तो वही सब अणु (जैसे आईने मे से अक्स निकल कर किसी चीज पर पड़ता है वैसेही) इस चकले भाग का गात्र स्पर्श कर सम रेखा मे विक्षिप्त होते हैं अथवा अपनी विद्युता लोक से तार के भीतर की सतह मे टक्कर खा कर अणु निर्झर प्रवाह की भांत खेलते से हैं। इसी समय* आलोक विश्लेषणी यंत्रद्वारा

* Spectroscope

उसी आलका के विश्लेषण करने से पदार्थों के बहुत से गुप्त धर्म आविष्कृत हुए हैं इस उपाय से इन्द्रियम नाम की एक नई धातु प्रगट की गई है। अब आगे अब पदार्थ विज्ञान का ज्ञान और भी बढ़ैगा यूरोप के पण्डित गण ऐसी आशा करते हैं— शेष

—०—

क्षमा शस्त्रं करे यस्य दुर्जनः किङ्करिष्यति।

ईश्वर ने मुह और उसमें बत्तीसनग की लम्बी सी ज़बान इसी लिये दी है कि जिसके जो कुछ गुण दोष आंख से देखे उसको प्रगट करने में किसी तरह का सङ्कोच और भय मनमें न लावै! साहब ज़बान बन्द करने का यह कोई ठीक तरीका न था आपको हमारे निश्चल और अटल सिद्धान्त की खबर रखनाही मुनासिब था। देहं वा पातयेयं कार्यं वा साधयेयं। पर हम भूलते हैं यह सब जिसके सामने कहना चाहिये जिसमें अकिल का कुछ दखल हो इससे क्या लाभ कि भैंस के सामने रोइये अपने दीदे खोइये टट्टी के आड़ मे शिकार की भांति छिप २ वार करना जनखों का काम है बहादुर लोग दूबदू सामने ललकार कर आते हैं नहीं २ हम फिर भी भूलते हैं चोर की बिसात कितनी झूठ की राहत कहां। सच फिर भी सच ही है सांच को आंच कहां "सत्ये नास्ति भयं क्वचित"। सत्य आग की चिनगारी की भांति घूरे पर पड़ी २ सुलगा करती है एक दिन आवैगा जब एक बारगी धधक उठैगी। हम यदि शुद्ध मन और अच्छे इरादे से अपने काम के ठीक ढर्रे पर चले जांयगे तो आप क्या आप के बाप भी हमारा कुछ नहीं कर सक्ते। बस अब चेत जाइये इसी मे खैर है बहुत हो चुका

—०—

नई रोशनी का विष।

पूर्व प्रकाशितानन्तर।

गुड मार्निङ्ग बन्दगी सलाम आदि शब्द का कोलाहल।

भानु—(आगे बढ़) Well my friends I hope I see you in good healths.

सब मिलके (उच्चस्वर से) Oh yes; हां हां! Thank you! oh prime.

भानु—Welcome to you all.

सब मिलके—All glory to our noble host.

भानु—(सब से अलग २ हाथ मिलाता है)

नौ कुमार (प्रमदा को देख कर) ओः हो प्रमदा! किस्को आशा थी कि भानुदत्त ऐसी अनोखी वस्तु हम लोगों के लिये रक्खे होंगी—ठीक है ऐसी सोने की चिड़िया आप के हाथ लगी तब रेस कोर्स मे आप कैसे आवें अच्छा हम लोगों को सूखे घाट उतार आप छिपरहे।

भानु। नहीं भाई रेसकोर्स मे न आने का कारण यहतो नहीं था। अधिक क्या कहें क्या आप लोगों से कुछ परदा छोड़ है जो छिपावें!

सं—नं—अच्छा २ जाने दीजिये अब गड़े मुर्दे मत उखाड़िये कहिए अब आप लोगों की क्या खातिर की जाय खैर बैठ तो जाइये (कुछ लोग बैठ जाते हैं कुछ लोग दो दो चार चार हो कर बाग मे टहलने लगते हैं)

(प्रमदा और भानुदत्त भी हाथ मे हाथ दिये अलग घूमते हैं)

प्रमदा। तो आज आपने बड़ा भारी जशन का सामान रचा है।

भानु। आपके बिना सब मिट्टी था अब देखिये आइये आप को जोड़े जूही के फूल तोड़ दें (दोनो केयारियों की तरफ उतरती हैं)

स—नं—(और लोगों से) भानुदत्त भी अजब किस्म का आदमी है कभी तो आप मे इतना रूखापन आ जाता है कि कैसीही चुटीली बात कहिये पर उस्का कुछ असर नहीं होता और कभी जो जोश मे आये तो फिर क्या कोई बात कहां लट्टू हो गये (नौकुमार से) मगर क्यों जनाब आप तो प्रमदा को बहुत दिनो से जानते हैं।?

नौ कुमार—क्यों नहीं जानते—क्या आपने इनको स्टेज पर नही देखा आगे तो आप का यह हाल था कि स्टेज मैनेजर ने चुटकी बजाया और वो लट्टू की तरह दो तीन फेरे स्टेज पर न लगाये तो फिर देखते क्या गत होती और अब तो मकान भी है घोड़ा गाड़ी भी है और आज देखिये आप की ब्रूहम * भी बाहर खड़ी है।

रसिक—लेकिन फिर स्टेज छोड़ क्यों दिया?

सच्चानन्द—यह तो आप को न मालूम है न कभी मालूम होगा (तारक चन्द को दूर से आते देख) (स्वगत) याद आ

ब खैर।

तारक चन्द का प्रवेश।

* एक तरह की नए फैशन की गाड़ी।

भानु—(तारक चन्द को देख) आइये २ बस आपही की देर थी।

प्रमदा—(ता—चं—से अलग) आप हमको यहां देख तअज्जुब मत कीजिये हम खुद आप के घर जाने वाली थीं मगर फिर हमको मालूम हुआ कि आप यहीं आते हैं इस लिये हम सिर्फ आप के वास्ते यहां आई।

(सच्चानन्द आदि भी वहीं आते हैं।)

स—नं—तारक चन्द जी आप आइये हमको आशा नथी कि आप आवेंगे हम तो समझे आप हमारा रिटर्न टिकट निगल बैठे।

ता—चं—जनाब मैं तो जहां वादा कर ताहूं वहां ज़रूर पहुंचता हूं।

भानु—(ता—चं—से अलग) यह तो सब हुआ अब बतलाइये रुपया हमारा आप लाये हैं?

तारक—हां यह लीजिये—(देता है)

भानु—और बाकी रुपया?

तारक—बाकी का बाजा वगैरा लाये हैं जो हाथों हाथ निकल जांयगी।

भानु—क्या? क्या?

तारक—हे लीजिये—लाओ नेपथ्य की ओर (इशारा करता है)

(एक बड़ी भारी सन्दूक दो कुलियों के सिर पर रखाये लालू का प्रवेश)

लालू—हुजूर यह माल रेल पर से आप के लिये आया है;

भानु—हमारे वास्ते?

तारक—आप इतना घबड़ा क्यों गये (नौकरों से) खोलो इसे।

सब दोस्त वहीं जमा हो जाते हैं।

सब—यह क्या है? भानुदत्त यह क्या है? यह क्या है? (सब लोग एक२ बाजा लेलेते हैं) वाह तारक चन्द जी [illegible] ख़ूब समझ के इन बाजों को आप लाये जोश बाजी निकले चौकड़ी आदमी हम थे सो (भानु से) आप भी एक ले लीजिये शर माइये मत—इसको अपनीही चीज़ समझिए—मिस प्रमदा आप का हाथ खाली रहे यह अनुचित है!

तारक—देखिये हमने कहा नहीं था कि देर न लगेगी सब चीजें हाथों हाथ निकल जांयगी देखिये ठीक वैसाही हुआ।

भानु—[स्वगत] scroundrel, more equivocal than Macbeth's witches.

स—नं—(ज चेस्टर से अपना कंसर्टीना बजाता हुआ) अच्छा आप लोग अपना २ बाजा ले चुके हों तो हम "प्रोपोज़" करते हैं कि जब तक खाना तैयार होता

है तब तक हम सब लोग अपना कांसर्ट दुरुस्त करें और सब बाजे एक साथ बजाए जांय।

सब—We all second this wise proposal.

भानु—And I beg to move the second resolution to install *Miss* Pramada to the rank of our band master.

सब—Agreed, Agreed.

(कुर्सियां लाला कर सब लोग अलदौर अर्द्ध [illegible]ा कर के रखते हैं बीच में प्रमदा [illegible] ने और भानु इत्यादि और बायें ओर स—नं—आदि बैठते हैं)

स० नं—(खड़े हो कर) Strike up.

प्रमदा गाती है सब लोग बाजा बजाते [illegible] बीच२ में „"All glory to our generous host"

॥ गान ॥

खिल्यो दिवस रैन सखि आई। प्रियतम हित नव साज सजाई ॥ नीला बसन ध-वल आभूषन सोभा कहि नहि जाई ॥१॥ तारागन नभ मंडल चमकत मख सिख अभरन सोई। "चीर जलधि" मुसक्यान मधुर मृदु रस में जगहिं डुबोई ॥ २ ॥ तिलमिलांय उडुगन सोइ हग की प्रगट त चञ्चल ताई। कर फैलाइ चन्द्र प्रिय भें टत लखि हिय नैन जुड़ाई ॥ ३ ॥

। लालू का प्रवेश ।

लालू—हुजूर खाना तैयार है।

सं—नं—अपनी२ कुर्सियों पर अपने २ बाजे रख दीजिये फिर आकर हम लोगों के नाटक के दूसरे अङ्क का अभिनय होगा।

सब तालों बजाते हैं बाजे रख २ हंसते हुए बाहर जाते हैं ?

इति द्वितीयोऽङ्कः ।

—०—

। कृतज्ञता स्वीकार ।

हम कृतज्ञता स्वीकार पूर्वक इस नगर के अपने दो सहयोगी साइस और प्रयाग समाचार को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमारे लिए बहुत कुछ सहानुभूति प्रकाश किया है।

—०—

बादशाह दर्पण ।

यह पुस्तक काशी के एक मात्र रत्न स्वरूप श्री बाबू हरिश्चन्द्र ने निर्माण किया है यह ऐसे उत्तम क्रम पर बनाई गई है कि थोड़े ही में दिल्ली के यावत् मुसल्मान बादशाहों का सब हाल पढ़ने वालों को सहज में मालूम हो जा सकता है और भूमिका तो इसकी अत्यन्त ही चटकीली है।

॥ भारतीय महा नवग्रह दशा चक्रम् ॥

ग्रह।	नामग्रह।	आयुध।
सूर्य	श्रीमान महामहिम लार्ड रिपन	न्याय सत्य दया-प्रकाशित पर इल्बर्टबिल के आन्दोलन में ऐंग्लोइण्डियन ग्रहण के समय सब गोठिल हो गए।
चन्द्रमा।	मिस्टर ह्यूम	न्याय सत्य-पक्षपात
मङ्गल	महा अमङ्गल की खान सकल गुण निधान गैदराज	खुशामद स्वार्थ साधन
बुध	विविध राजनीति विभूषित परम निदूंषित सैयद अहमद खां बहादुर	उर्दू को जड़ पुष्ट करने वाली उक्ति युक्ति काट छांट
गुरु वा बृहस्पति	साक्षात् वाचस्पति कल्प—शिक्षा कमिशन के गुरु घंटाल—हिन्दी के परम शत्रु—हंटर साहब।	चारों वेद अठारों पुराण सारा बोरासकारे साहनभतवा [illegible]
शुक्र।	मन मानी व्यवस्था देने वाले काशी के पण्डितों में सुखिया जो कोई हों!	अनर्गल विद्या
शनैश्चर	सर ग्रैंड डफ मद्रास के गवर्नर जो सेलम के निरपराधी रईसों पर जन्म भर के लिए आए और उन्हें काले पानी के खस द्वीप दिखाए	धींग धींगा
राहु	महामान्य रिभर्स टामसन ल॰ ग॰ बंगाल	अन्याय-अविद्या-असत्य कुढ़न
केतु	टामसन के सहयोगी महा ऐंग्लो इण्डियन	इल्बर्ट बिल में विरोध के हेतु पायोनियर इङ्गलिशमैन आदि अंगरेजी अखबार

कर्षकों का अश्रुपात।

बड़े सन्ताप और दुःख की बात है कि प्रजा समूह में सब से अधिक दीन दुखिया और कृपा पात्र कर्षकों का अश्रुपात जिस्में किसी प्रकार की चिल्लाहट या कोई दूसरे प्रकार की आहट हुई नहीं दूसरों की कौन कहे जिसे वे लोग दीन दुनिया का मालिक और प्रत्यक्ष देवता समान मान दिन रात जिस्की दोहाई मचाते रहते हैं वह सरकार भी कुछ नहीं देखती सुनती—हा इस्से अधिक क्लेश की और कौन बात होगी कि जो सीधी सादी सरल भाव संपन्न कर्षक मण्डली पशुओं की भांति अपना तन मन धन होम के मिट्टी मे मिली रहती है धूप वर्षा और जाड़ा सहकर सब मास और ऋतु के जगदुपकारी पदार्थ पैदा करती है चोकर खना भूसी साग पात खा के जीती है और सब उत्तम पदार्थ देवान्न को बेच २ ज़मीदार का पेट और सरकार का खज़ाना भरती है उस्के अश्रुपात की धारा रोकने वाला कोई नहीं है वरन जिन२ दुःखानल की आंच से अधिक कर वह गरम आंसू टपकाती है उस दुःख अनल के बढ़ाने वाले काम बढ़ते ही जाते हैं यह कोई पूछता ही नहीं कि तुमको कितना लगान देना पड़ता है और क्या फाइदा या नुक्सान तुम्हारा हुआ वरन इज़ाफ़ा लगान और वेशी के कानून रोज २ जोर पकड़ते जाते हैं। बेदखली का परिमाण Provincs इतना बढ़ गया है कि तहसीलों के चपरासी नोटिस ढोते २ थक पड़ते हैं जो भोली कार्षक प्रजा कालीवर्दी और लाल दुपट्टा देख डर से कांपने लगती है उस्को कहां इतना साहस कि ज़मीदार के मुकाबिले जिस्के वश मे पटवारी चौकीदार तहसीली के अमले और पुलिस के कार्य कर्त्ता जो समर्थ जमीदारों की पूजा अर्चा की रस्सी से बंधे रहते हैं कुछ चूं कर सके जब खेत को खोद समथल किया औ

र खाद पांस डालके धरती को बलिष्ट किया तो बेदखली की धूम मची मावजे का दावा हुआ मौरुसी खेत हुआ तो बेशी की दरखास्त करदी इन सब उपद्रवों का केवल इतनाही प्रभाव नहीं है कि अदालत की दौड़ धूप और वकील मुख्तारों की दरबार दारी से प्रजा क्लेश उठावे बरन उसी अदालत से जमींदार लोग अनेक प्रकार से उस खेतिहर बेचारे को सताते हैं—इसमें कुछ सन्देह नहीं अंगरेज़ी गवर्नमेंट ने दीनप्रजा की रक्षा के लिये एक हज़ार से लेकर १० हज़ार रुपये महीने तक के ओहदेदार नियत किये हैं पर उन महात्माओं में से कोई ऐसा न निकला जो इन गरीबों के अश्रुपात पर ध्यान देता तब क्या चारा है—राजा हरति सर्वस्वं भार्यां कस्य जायते ।

हिन्दुस्तान की चन्द भाषाओं की समालोचना ।

(१) हिन्दी—हिन्दुओं की ज़बान बेजान । उर्दू से कटाए कान । कमर टूटी हुई, लाठी पुरानी हाथ में बेमदद बेआक़ा । मुसीबत ज़दा । जगह २ मारी फिरती है ।

(२) उर्दू—शुतर बेमुहार । गर्दन पर लम्बे खयाल । कौम हिन्दू कौम मुसल्मान ज़रा २ दास्तान कायथों को प्यारी रैयत की जान की हत्यारी बड़ा खतरा बड़ा ज़ोर । सारे जहान में पड़ा शोर । आइस्तगी की नाक दूम दड़ाक उड़ावे हिन्दुस्तान की ख़ाक ।

(३) फ़ारसी—तमीज़ व अक़्लियत की आरसी । क़ाज़ी व मुल्लाओं की रोज़ी । मुसल्मानों की फ़ीरोज़ी । कायथों की हकीकी ज़बान । जौहरे हिन्दुस्तान । पुर लुत्फ़ किस्से । जो लोटपोट हो जिस्से । गुलिस्ताने इश्क़ । बोस्ताने मुश्क । " अहा ख़ालिक़

छिड़ा करदी बला अन्दर बला करदी!"

(३) अरबी—बदन में भरी बहुत चरबी। दांत तोड़ने गला फोड़ने का नुस्खा। मक्तबखाने में ऊंट को चरा देती है।

(४) अंगरेज़ी—बाबू लोगों की ज़बान। जहान क़दरदान Civilization सिविलिजेशन की मा! बुलन्द रुतबा! बंगालियों की फ़राग़। नादिहिन्दों की अक़ल की दरीग। बहबूदी हिन्दुस्तान। पूरा करे दिल के अर्मान।

(५) बंगाली—बंगाल कुल भूषणा। विमलकान्ति निंदूषणा। माधुर्य मृदुमल्लिका—लालित्य नव वल्लिका। यौवन मद गर्विता। महिमा प्रबल अखर्विता। गुण गण तन मंडिता। सकल शास्त्र पटु पंडिता। विद्वत्कुल विलासिनी। अखिला मनोल्लासिनी। अज्ञान तम नाशिनी। ज्ञान सूर्य प्रकाशिनी। सज्जन चित चोरिका। ज्ञान चन्द्र चकोरिका। विज्ञान सिंधु चन्द्रिका। चैतन्य रूप अतन्द्रिका। चन्द्रकला की तरह दिन२ बढ़ियाती जाती है।

(६) संस्कृत—Dead language बंगाली की माता; मरहठी की माता नहीं, गुजराती की प्रमाता नहीं हिन्दी की वृद्ध प्रमाता नहीं। श्राद्ध के समय याद आती है।

(७)—मरहठी पिंडारी की ज़बान। घस घस से भरी हुई, बंगाली के साथ लगता नाता मानती है।

(८) गुजराती—बम्बई बड़ोदा की बानी। सकल गुण खानी। अपनेको बंगाली की छोटी बहन बताती है।

(९) मदरासी—पूरी चुड़ैल खासी बोलने से होजाय खांसी। काली कलूटी कुबजा सी। सब भाषाओं की खवासी योग्य। कूड़ा करकट भरी, मरकटों के बोलने लायक। खूब तरक्की पर है।

(१०) पञ्जाबी—भरती कुआंटें मिलाती। सिक्खों की बोली; निहायत भोली। बड़ीमीठी। गुरमुखी में लिखी जाती है।

ये चन्द बोलियां मुख़्तसिर तौर से बयान कीं और ज़बानें फिर कभी बयान करेंगे। लेकिन इस वक्त हमको लखनऊ की बोली भी याद आ गयी जो सब से निराली है। इस लिये पाठकों के लिये उसका भी नमूना नीचे लिखते हैं ;।

अक्खड़ओं की बोली।

सवाल—जान मन सदके जाऊं
तेरी अदा पर मैं आज।

जवाब—हट निगोड़े तुझे बाज़ार
में भी शर्म नहीं।

श्रीधर पाठक।

—०—

बाल्य विवाह और विधवा विवाह।

आप के पाठक गणों में से अधिकांश ने बम्बई के इण्डियन स्पेक्टेटर Indian Spectator नामक समाचार पत्र के संपादक महाशय वह रामजी मालाबारी का सुख्यात नाम सुना होगा। और इनके विचार शीलता, गाम्भीर्य, देशहितैषिता इत्यादि विशेष गुणों से भी अनभिज्ञ न होंगे। यह महाशय वही हैं जिन्होंने भट्ट मोक्ष मूलर Professor Maxmuller के हिबर्ट लेक्चरों Hibbert Lectures का जिनसे इस देश के आर्य धर्म की उत्कृष्टता स्थापित होती है अनुवाद इस भारत भूमि के संस्कृत प्रभृति कः मुख्य भाषाओं में करने का उद्योग किया है यह हैं तो पारसी पर इनका प्रेम इस भरत खण्ड पर इतना है कि यह तनमन धन से इसके उद्धार और उन्नति में कटिबद्ध हैं अहर्निश इस भूमि के उपकारार्थ चिन्तन के पृथक् इनका कोई काम ही नहीं। संप्रति में इन्होंने अंगरेजी भाषा में दो नोट (विचार पत्र) लोगों के विचारार्थ लिखे हैं। इनमें से एक तो बाल्य विवाह Infant marriage के विषय हैं दूसरा Enforced widowhood बलात्कार का वैधव्य के विषय। इन दोनों में जो २ युक्ति और सूचना लिखी हैं उनसे इमें स्पष्ट ज्ञात हो जाता है कितने विचार पूर्वक यह पत्र लिखे गये हैं। मालाबारी महाशय ऐसे तीव्र नहीं हैं जैसे बहुधा यूरोपीय रिफार्मर हुआ करते हैं। वे ऐसा नहीं कहते की सर्कार हमारे इन दस्तूरों को बलात्कार उठा दे पर कहते हैं कि वस्तुतः जब देशी लोग इन रीतियों को बुरा कहते हैं पर उठा देने का यथोचित यत्न नहीं करते जब श्री ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा दीवान रघुनाथ राव इत्यादि प्रसिद्ध महोदयों ने सिद्ध कर दिया है कि अक्षतयोनि बालाओं के पुनर्विवाह में किञ्चित भी शास्त्रोक्त

दोष नहीं। इसी प्रकार कुछ दृढ़ प्रमाण बाल्य विवाह के विषय में भी नहीं। इनसे कितनी कुछ हानि हमारे गृहस्थों में, हमारे स्वास्थ्य में हमारे परस्पर व्यवहार में होती जाती है यह तो सब जानते हैं सर्कार की सहायता माला बारी महाशय इस प्रकार मांगते हैं कि विधवा विवाह के विषय तो पुनर्विवाह में विघ्न डालनेवालों को तथा पुनर्विवाहिता स्त्री और उसके पति को जाति से पृथक करनेवालों को दण्ड दिया जाय और बाल्यविवाह के विषय इसी देश के लोगों से मालाबारी महाशय बहुत निवेदन करते है पहला यह कि शिक्षितजन इस विषय में आन्दोलन करें। दूसरा इस विषय पुस्तक लिखें प्रस्तावों द्वारा लोगों को चितावें और विश्वविद्यालय University में विवाह होने से इंट्रेंस इत्यादि परीक्षाओं में जाना बन्द कराने का नियम करावें। इसी प्रकार अधिकार प्राप्त अफसरों से भी सहायता ले इन विषयों की आवश्यकता लोगों को बतावें। आपको प्रयाग में हिन्दू समाज से इस विषय में सहायता की बड़ी आशा रखते हैं नवशिक्षित अंगरेजी वेत्ताओं पर लोगों का ऐसा विश्वास नहीं जितना पुराने पण्डितों पर यदि हमारे पुराने ढर्र के देश भाइयों को इन दो बाल्यविवाह और विधवाओं के पुनर विवाह न होने की कुरीतियों के दूर करने की चिन्ता हो जाय तो फिर बात बन जाय। मालाबारी महाशय ने अपने लिखे यह दो नोट गवर्नर जनरल साहिब के कौंसिल के मुख्य २ मेम्बरों के समक्ष भेजे थे उन्में से २ दो तीन महानुभावों ने बड़े उदारता से अपनी मनोगत बातें लिखी हैं—पर सर आकलैंड कौलवीन Finance minietez) कोषाधिपति दो चार जली भुनी बातें देशी समाचार पत्रों पर कह कर अपनी नैराश्यता प्रकट करते हैं—और कहते हैं जब तक देशी सम्पादक अंगरेजों पर वृथा आक्षेप करना और राजकीय विषयों पर लिखना न छोड़ेंगे तब तक देशी कुरीतियां न उठैंगी। अस्तु —उनको अधिकार है अपना विचार कहै—देशी समाचार अपना कर्त्तव्य भली भांति जान्ते हैं और हमें पूर्ण आशा है वे इन दो कुरीतियों के उठाने में मालाबारी महाशय को यथा योग्य सहायता करेंगे।

अल्लापुर। हरीराम पाण्डे।

अग्रिम मूल्य २।) पश्चात ४।)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gpinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Nov. 1884. }
Vol. VIII.] [No. 3. }

{ प्रयाग कार्तिकशुक्ल १३ सं०१९४१
{ [जि० ८ [संख्या ३

दीवाली।

ब्राह्मणों की पोथी पत्राओं में इस दीवाली के सम्बन्ध में जो कुछ लिखा हो हम जानते नहीं पर इस तेहवार के बारे में अपनी खास अकिल हमने लड़ाया है और जैसी अकिल लड़ी उसका हाल यह है पहले हमने यह सोचा कि इस तेहवार के सबस अधिक धूम कौन मचाते हैं अर्थात यह किनका तेहवार है? थोड़ा ही सोचने में समझ गये कि सिवा जुआरियों के और किसी को यो बारह इसमें नहीं रहती साल भर बाद प्यार मि

चले हुए सरकार के प्रिय सन्तान महाराजकी पुलिस सेना के कारन न जुआरी लोग वे रोक टोक खुला खुली जुआ खेलते हीं हैं और जब इतने लाड़ प्यार पर भी सरकार का मन तृप्त नहीं होता तो हुक्म दे देती है कि अच्छा अब जाओ अपसरों के सिर पर चढ़ जुआ खेलो इससे इसका नाम दीवाली अर्थात जुआरियों का दीवाला निकालने वाली है। मगर फिर हमने सोचा कोई तेहवार हो उससे सिर्फ एकही किस्म के लोगों को खुशी नहीं होती बरन तेहवार से चाहिये सब शरीक हों फिर तो आगे अकिल का घोड़ा दौड़ाया तो मन मे आई कि औब कौम के लोग इसका अधिक उत्सव मनाते हैं जैसा देहात और शहरों मे भी अहीर लोगों का पटा खेलना सांड या कुत्तों की लड़ाई इत्यादि या गौकार चाकर इसके आने से बहुत प्रसन्न होते हैं मगर ऐसे लोगों का धूम धाम केवल उन के मालिकों की मेहरबानी और इनाम देने से होता है इससे इसका नाम दीवाली अर्थात् (इनाम दिलाने वाली) है पर आगे अकिल लड़ाने से यह बात खुली कि अभी बहुत से खुशी मनाने वाले रहे हैं जरा सोचा तो देखा कि यह बात सब लोग मानते हैं कि दीवाली का उत्सव वर्षा के अन्त मे और शरद ऋतु के आदि मे हमारे पुराने बुद्धिमानों ने इस लिये रक्खा है कि अब बरस त क फिर मेघराज के पुनरागमन की संभावना नहीं रहजाती लोग अपने २ मकानो की सफाई करें और साल भर का दलिद्दर और मैला २ बटूरा के जब यह बात है तो सफाई के काम से और दीवाली के नाम से क्या सम्बन्ध है ? इस प्रश्न की मीमांसा करते कुछ अपनी बुद्धि की चकराई पर आगे अकिल लड़ाने से यह बात खुली कि हमारे हिन्दुस्तानी भाई कभी अपने मकानों की सफाई न करते यदि बरसवें दिन यह तेहवार न आता अत एव कुढ़ कर इसका नाम उन लोगों ने दीवाली रक्खा कि इससे उनको मकान साफ कराना पड़ता है और दीवालों पर सुफेदी इत्यादि भी यह बात ते कर चुके तब भी तबियत न मानी कि हम सरीखे लोग रात को घूमने निकलते हैं रोशनी कराते हैं और चाहो शास्त्र में लिखा हो या नहीं पर दिल्लगी के लिए थोड़ा सा जुआ अवश्य खेलते हैं जिससे दिल बहलाव हो ऐसे लोगों का इस

अर्थों में कहीं भी ठिकाना नहीं है और अपना तो यह सिद्धान्त है कि सब तेहवार संसार के दोष को होली क्या बरन क्रिस्टमस भी अपनेही लोगों के आनन्द के लिए रक्खे गए हैं तो ऊपर के ये सब अर्थ तो ठीक न हुए इस लिए अकिल का टट्टू फिर रुक गया पर गौर के चाबुक के इशारे से उसे हांका तो चल निकला और तुरन्त यह अर्थ हाथ लगा कि हम लोग जुआ खेलतेही हैं बस इसी कारण इसका नाम दीवाली है अर्थात (दी वा ली) अपना दिया या दूसरे का लिया। अङ्गरेजों के मुंह से सुना तो मालूम हुआ कि वे लोग इस तेहवार को डवाली कहते हैं पर साहब लोगों से इसका अर्थ पूछने की हिम्मत न हुई इस लिए यह बात गुप्त की गुप्त रही। उपरान्त एक पण्डित जी से भी हम से भेंट हुई उन्हों ने कहा यह सब ख्याली अर्थ हैं वास्तव में दीवाली दीपावली का अपभ्रंश है पर उन्हों ने अपने भौंड़े दिमाग से ऐसा एक पेच के साथ इसे बयान किया कि हमें उसका अर्थ बड़ा रूखा लगा और बिलकुल न रुचा आप को की राय हो।

एक लाल बुझक्कड़।

धर्म।

(पूर्व प्रकाशितानन्तर)

धर्म के दो खण्डों का विवरण हमने ऊपर लिखा अब धर्म के तीसरे खण्ड का कुछ विचार किया चाहते हैं—पाठक जन मन लगाय के हमारे लेख को देखेंगे तो इस बातके मानने मे उनको कुछ कठिनता न होगी कि जिस ढंग पर हमारा लेख है उसमें यह असंभव है कि हम किसी एक धर्म की प्रशंसा करें और न हमारा यह तात्पर्य है कि दिखलावें कि फलाने धर्म की बातें बहुत उत्तम हैं इससे आप लोग उन्ही को स्वीकार कीजिये और सच्ची समझिये हमसे धर्म सम्बन्धी मत मतान्तरों के झगड़ों से कुछ प्रयोजन नहीं हैं हमतो झगड़े के रास्ते को छोड़ उनबातों की खोज किया चाहते हैं जो एक प्रकार धर्म की नेव समझी जाती हैं और जो भिन्न२ एक एक कर यदि परखी जांयतो कदाचित् संभव है लोगों मे यह मत भेद हो कि किसी धर्म संबन्धी तत्व या सिद्धान्त को कब और कहां तक मानना चाहिये पर यह सिद्धान्त या तत्व अवश्य माननीय और उपयोगी हैं इस वारे मे कुछ वाद विवाद होही नहीं

सका—तात्पर्य यह कि ऊपर जो धर्म बेर खण्डों का हाल हमने कहा है उसे की जरसी बातें कैसे २ लोगों के लिये कब २ आसक्ती हैं इस बारे में चाहा कुछ तर्क वितर्क हो पर उन दो खण्डों की वास्तविक स्थिति में तभी सन्देह हो सका है जब कि जिन धर्म से वे बातें संबन्ध रखती हैं या जिस धर्म की अङ्ग समझी जाती है उस धर्मही पर जब लोग आक्र जावें और जो धर्म पर आक्रमण कर आप उसी को जड़ पेड़ से उड़ा दिया चाहते हैं तो इसलिये छुट्टी हुई आगे वालही कहने का अवसर न रह गया—अतएव धर्म को बिल्कुल न छेड़ और तह सदा ध्यान में रखु कि धर्म सब बुद्धिमानो के बुद्धितत्व का परिपाक या फल है सुतराम उसकी बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ मनन करना चाहिये पहिले सबके सब धर्म्म तत्त्वों को जड अध्यात्म विद्या की समालोचना हम करते हैं बहुतेरे लोगों की यह समझ है कि जहा मनुष्य ने कुछ भी धर्म सम्बन्धी बातों पर ध्यान दिया कि तब वह विषय आध्यात्मिक हो गया और आगे अब उसी को बार२ पुस्तहा पुस्त मनन करते रहना उसकी शाखा प्रशाखा निकालना एक२ में से दूसरे २ मत मतान्तरों का फूट २ कर अलग २ निकलना बस इसी तरह की बातें बाकी रहीं—और ऐसे लोगों का यह सिद्धान्त है कि यह का विषय जिसकी बाबत मनुष्य अपनी बुद्धि काम में लावेगा वह धर्मही है क्योंकि लोगों की सामयिक और बीती हुई दशा पर ध्यान देने से यही बात लक्षित होती है कि चाहा भीतर२ के विज्ञान और पदार्थ विद्या आदि का लेश भी मनुष्य में नहीं पर धर्म सम्बन्धी विद्या या शास्त्र की स्थिति अवश्य पाई जायगी—अपिच उनकी बुद्धि में यह कभी नहीं आता कि सुनीति जनक विषय जो कि परिकल्पित (organises) और सुगठित समाज से संबन्ध रखते हैं पहले पूरी उन्नति को पहुंच तब आध्यात्मिक विषय पर देश या समाज की झुकावट होती है—सुतराम् ऐसे लोगों का यही दृढ सिद्धान्त है कि सुनीति तत्व के फैलाव के पहिले आध्यात्मिक विषयों का विस्तार लोगों में हो चुका था· क्योंकि स्वभावतः मनुष्य की मानसिक प्रवणता ऐसेही देखी जाती है कि पहिले धर्म्म सम्बन्धी विषयों की ओर ध्यान दे, और उसको थोड़ा बहुत पुष्ट कर तब और किसी विषय पर उसकी झुकावट होती है—और समाज की सुनीतिजनक बातें

जो एक भिन्न जन समूह से सम्बन्ध रखती है उस्से बहुत पीछे हुई हैं यह तो एक श्रेणी के लोग हुए—अब इस्के विरुद्ध कहने वालों का मत यह है—किसी विद्या, विज्ञान, या दर्शन का प्रचार या नेव डालने वाला चाहे एक ही आदमी हो और सम्मिलित समाज से अलग रह कर भी चाहे वह अपनी विद्या की दौड़ का परिणाम लोगों को देखलावें पर यह बतलाइये कि उस्को परखने वाले कौन होंगे ?—क्या स्वयं आप ही कोई बात चलाई और स्वयं उस्का फल उठाया और सिधार गये चलिये मामिला तै हुआ? समाज हीन मनुष्य एक बरसाती कीड़े की भांत है जो थोड़े दिन ठण्ढे२ घास में चैन कर एक दिन ऐंठ कर रह गये—या जङ्गल का शेर है कि जब तक ज़िन्दगी थी खूब गरजा किये जब मृत्यु ने आ घेरा नाम निशान तक न रहा—नहीं—समाज वह मनुष्य ऐसा नहीं है यदि वह मनुष्य कुछ सोच सक्ता है और अपनी बुद्धि का नई२ बातों पर या पुरानी ही बातों पर नये२ ढंग से दौड़ा सक्ता है [और जिनको न विद्या है न बुद्धि है पर संसार में केवल उदर पूर्ति मात्र से प्रयोजन है उनको हमारे लेख से कुछ सम्बन्ध नहीं] तो ऐसे मनुष्य के वास्ते समाज वह पृथ्वी है जहां वह अपनी छोटी मोटी घास फूस की चाहीं झोंपड़ी या मणि जटित महल खड़ा कर सक्ता है अथवा ऐसे मनुष्य के वास्ते समाज वह खेत है जहां वह अपने सूझ और समझ के बीये को फेंक जाता है कि और २ बीयों के साथ समय रूपी वृष्टि से बढे और विचार रूपी किरणों के द्वारा पुष्टता पावें—इस्के अति रिक्त अध्यात्म विद्या के यथार्थ तात्पर्य्य हो समझने को समाज को बड़ी देर लगती है और तब यह कैसे सम्भव हो सक्ता है कि धर्म्म बुद्धि की चरमसीमा के जो विषय हैं (अर्थात् अध्यात्म विद्या) उसी को प्रथम पद मान कर उत्कर्ष के सोपान पर लोग चढ़ना प्रारम्भ करें—अतः इन लोगों की दृष्टि से यही बात समीचीन ज्ञात होती है कि सुनीति सार (moral rules) के प्रति पालन से जब समाज पुष्ट पड़ चुकी हैं तब अध्यात्म विद्या की वृद्धि धीरे २ हुई हैं और जब उस बात के समझने वाले समाज में हुए है तभी इन बड़े२ विषयों के दार्शनिक भी हुए हैं।

क्रमशः

पदार्थ की चतुर्थ अवस्था या विरल पदार्थ।

श्री मती स्वर्ण कुमारी देवी लिखित "भारती" मासिक पत्र से।

पूर्व प्रकाशितानन्तर।

पदार्थ की अवस्था के सम्बन्ध मे आज योरप ने एक नया ज्ञान लाभ किया है किन्तु भारत को यह ज्ञान अत्यन्त प्राचीन समय से है यह बात शास्त्रों के अनेक स्थान के लेखों से स्पष्ट प्रतीत होती है वैशेषिक दर्शन के मत मे पदार्थ का इस प्रकार का संख्यात रूप और परमाणु रूप है "तत्र तावत् पृथिव्यादयो नित्या अनित्याश्च परमाणु रूपा नित्याः संख्यात रूपा अनित्याः" जो कुछ परमाणु के रूप से संहतित होकर घटित है उसी को इनके मत मे पदार्थ का संख्यात रूप कहते हैं सुतराम् कठिन तरल और वाष्पीय यही तीन अवस्था पदार्थ की संख्यात रूप है क्योंकि परमाणु के संयोग की अवस्था यही तीन हैं और इन्ही तीन अवस्थाओं के भेद से संयोग के परिमाण मात्र का भेद है योग शास्त्र इससे भी अधिक दूर गया है इस शास्त्र के मत मे पदार्थ की सात अवस्था हैं स्थूल (कठिन तरल वाष्पीय स्वरूप) सूक्ष्म अन्वय अर्थवत्व कठिन तरल वाष्पीय यही ३ अवस्था मे प्राप्त पदार्थ हम लोगों की सूक्ष्म इन्द्रिय द्वारा दृष्ट होते हैं इसी कारण इन्ही ३ अवस्थाओं को स्थूल कहा है ऐसी अवस्था मे प्राप्त पदार्थ जब कुछ कार्य करते हैं तब उनको स्वरूप अवस्था होती है जब पदार्थ परमाणुत्व को प्राप्त हो गये तब सूक्ष्म अवस्था है बाकी दो अवस्था आत्मा के सुख दुःख आदि सम्बन्ध से दूसरों से अलग की गई हैं इस तरह हम लोग योरप के नवा विष्कृत सत्य के सम्बन्ध मे आर्यों के स्थूल ज्ञान का परिचय पाते हैं।

किन्तु प्रश्न यह है यदि सब २ प्राचीन आर्य गण विज्ञान मे इतनी अभिज्ञता प्राप्त कर चुके हैं तब यूरोप के शास्त्रकारों के सदृश उन सब विषयो को अति सुस्पष्ट और विस्तार रूप मे लिपि बद्ध क्यों न कर रक्खा ? शास्त्रों मे ऐसा पहेली की तरह अस्पष्ट सा क्यों है ? इसके उत्तर मे पहले तो हमको यही कहना है कि हम लोग जो विज्ञान सम्बन्धी लेख शास्त्रों मे पाते हैं वह पुस्तक विज्ञान विषयक नहीं हैं दर्शन या पुराणो मे कहीं और २ विषयों की आलोचना की

गई है वहां प्रसङ्ग प्राप्त विज्ञान सम्बन्धी लेख भी हम देखते हैं इस लिये ऐसे स्थल में उन सब विषयों की विस्तृत आलोचना की क्योंकर प्रत्याशा की जा सकती है ? इसके उत्तर में यदि कोई कहे कि अच्छा यह तो सब सही किन्तु विज्ञान विषयक जो कुछ बचे बचाये ग्रंथ पाये जाते हैं उनमें भी तो योरोपीय शास्त्रों की भांत आलोच्य विषय पुंखानुपुंख रूप से सिलसिले वार नहीं हैं सुतराम् विज्ञान की जो सब पुस्तकें लुप्त हो गई उनमें भी विज्ञान की सुविस्तीर्ण आलोचना रही हो यह भी संभव नहीं है विज्ञानही की जो यथार्थ उन्नति इस देश में हुई होती तो क्या यह दशा होती ?

वास्तव में सोच कर देखिये तो यह बात नहीं है कि विज्ञान के न होने से हम लोगों की अवनति हुई है यह बात सत्य है कि संस्कृत के प्रकाशकी प्रणाली योरोपीय शास्त्र की प्रकाश की प्रणाली से भिन्न है क्या दर्शन क्या विज्ञान गणित के विषय में यूरोप के शास्त्रकारगण जिन२ सिद्धान्तों पर आरूढ हो गये वह सिढ़ी २ अन्तिम सिद्धान्त तक पहुचने का क्रम दिखला गये हैं किन्तु आर्य पण्डित गण किसी सिद्धान्त तक पहुंचने के लिये कोई सीढ़ी या कोई प्रणाली छोड़ न कर जाकर केवल उस सिद्धान्त ही को कहकर मानो निश्चिन्त हो गये इससे उनकी उन विषयों में अज्ञानता नही प्रगट होती किन्तु उस ज्ञान के प्रकाश की प्रणाली की असंपूर्णता अलबत्ता प्रगट होती है—उन ज्ञान शाली पण्डितों की पुस्तकों में असंपूर्णता का लेश भी नहीं था; इतना ही थोड़ा सा ढूंढ कर देखने से इसका कारण अच्छी तरह समझ में आसकता है—उस समय जो पण्डितों का सब ज्ञान लिपिबद्ध किया गया है सो कैसे अधिकारी के लिये ? साधारण पाठकों के लिये, न कि उनके वास्ते जो वास्तव में यथार्थ विद्याभ्यासी हैं जो लोग वास्तव में विद्या लाभ के आकांक्षी थे वे केवल पुस्तकही पढ़ कर उसका लाभ नहीं उठा लेते थे गुरु-कृपा की भी आवश्यकता थी गुरु स्वयं कृपा कर उसकी शिक्षा उन्हें देता था—जो लोग अच्छी तरह डूब कर शास्त्रों के उन सूक्ष्म विषयों के जानने को असमर्थ थे या जानने की इच्छाही नहीं करते थे उन लोगों को स्थूल ज्ञान देनेही के लिये शास्त्र सब रचे गये हैं—सुतरां ऐसे स्थल में उन सिद्धान्तों को सिल सिले वार

शास्त्रों मे सविस्तर आलोचना करने की आवश्यकताही उन्हो ने न देखी क्योंकि कितने परिश्रम से उन लोगों ने जो कुछ जाना पुस्तकों मे लिपि बद्ध कर शब्दों के द्वारा उसका बतलाना असंभव था सुतरां थोड़ी दर थोड़ी बतलाना यह थोरा थका गया क्रम स्वीकार न कर उनके परिश्रम का फल रूप ज्ञान का सारांश मात्र सर्व साधारण के जानने का उपयोगी और उचित उन्होंने समझा।

इसके अतिरिक्त उस समय के समाज की गठन भी कुछ औरहीं तरह पर थी—सभ्यता की प्रकृतिही कुछ भिन्नथी उस समय बाहरी पदार्थों की उन्नति को यथार्थ सभ्यता नहीं कहते थे आत्माही की उन्नति सभ्यता का मूल और यथार्थ उन्नति समझी जाती थी इस लिये जो ज्ञान वास्तव में आत्मा का उत्कर्ष साधन करता था उसी को पण्डित लोग साधारण शिक्षा का उप योगी समझते थे।

विज्ञान के जो सब भाग और सीढ़ियां हैं वे केवल पार्थिव पदार्थ के अन्त र्गत हैं और जिन्से केवल पार्थिव पदार्थ के अंग मात्र का उत्कर्ष साधन है उनको वे पण्डित लोग सर्व साधारण को खोलर कर समझाने की आवश्यकताही नहीं समझते थे—विज्ञान वृद्धिको पार्थिव सुख और स्वच्छन्दता के बढ़ाने का उपाय स्वरूप समझने को वे लोग घृणा करते थे—आर्य्य लोगों के आचार अनुष्ठान पद्धति विद्या शिक्षा ज्ञानो पार्जन की प्रणाली आदि सब तरह के सामाजिक नियमों से यही देखा जाता है कि आध्यात्मिक उत्कर्ष सिद्ध करनाही प्राचीन आर्य्यों का मुख्य उद्देश्य था—वे लोग खूब जानते थे कि मनकी उन्नति के साथही साथ पार्थिव सुख और शान्ति प्राप्त हो सकेगी यदि खाली सांसारिक सुख और स्वच्छन्दता की ओर झुक जाते तो उलटा परिणाम होता सुतराम पदार्थ विज्ञान मे अभिज्ञता प्राप्त करने पर भी उन्हों ने साधारण के लिये उस विज्ञान की कुछ उपकारिता न देखी और इसी लिये वह केवल पण्डित संप्रदाय के मध्य मे आवद्ध रह गया साधारण जिस्को सहज मे समझ सकें जिससे उनका यथार्थ उपकार हो और आत्मा के उत्कर्ष साधन मे जो सहाय कर सके उसी को उन लोगों ने विशेष कर ग्रंथोंमे लिपिबद्ध हो जाने से विचार के लायक माना।

सांख्य प्रणेता महर्षि कपिल ने कहा है

कि संसार के बाह्य कार्यों की उन्नति साधक जड़ विषयों material के गुण और स्थिति जानने से क्या होगा ? ये सब तो अनर्थ के मूल असार विवेक ज्ञान और तत्वज्ञान के बाधक हैं साधक होते नहीं सच्च संसार एक प्रकार की रज्जु विशेष है सुतराम् ऐसे दृढ़ बन्धन से आप ही अपने को बांधने की शिक्षा देना बिल्कुल मूर्खता है अत एव जिन लोगों को कुतूहल की निवृत्ति ही अभिलषित है शिल्प विद्यादी में उत्कर्ष प्राप्ति जिनका पुरुषार्थ है सदा बन्धन में पड़े रहने में जिन्हें क्लेश नहीं होता वेही जड़ पदार्थ का उत्कर्ष साधन करैं किन्तु जो ज्ञान के आनन्द का अनुभव किया चाहैं अध्यात्म तत्व में मग्न हो आत्मा को भी मुक्त किया चाहते हों वे लोग उन जड़ पदार्थों का उत्कर्ष रूप अनुसान में कभी न अपने को फंसावें विशेषतः आत्मा का साक्षात्कार रूप प्रत्यक्ष के आगे भासमान पदार्थ का उपदेश क्या ? महर्षि कपिलाचार्य दार्शनिक थे उनको यह कहना कुछ आश्चर्य नहीं है पर यह सिद्धान्त तो केवल उन्हीं का नहीं है किन्तु शास्त्रकार मात्र का यही मनोगत भाव है तब का विज्ञान दर्शन से रहित न था क्योंकि जो लोग विज्ञान आविष्कर्ता थे वेही दार्शनिक भी थे किसी विषय के अनुसन्धान में कृतकार्य होने को किसी सिद्धान्त तक पहुंचने में उनको जो अनेक छोटी २ रास्ता के खोजने में कष्ट और परिश्रम स्वीकार करना पड़ा उसी कष्ट और परिश्रम को जो स्वीकार न करैंगे वे केवल उनके कठिन परिश्रम के फल भोक्ता हों प्रत्येक व्यक्ति को उन्हीं क्षुद्र पथों पर चलने में जो समय व्यर्थ बीतेगा उसी को परमार्थ चिन्ता में लगाकर मन की उन्नति का साधन करैं (क्योंकि उनका यह विश्वास था कि गुरु की सहायता बिना केवल शास्त्र के पढ़ने से संपूर्ण ज्ञान नहीं मिलेगा) इसी अभिप्राय से आर्य शास्त्र के प्रकाश की प्रणाली यूरोपीय शास्त्र के प्रकाश की प्रणाली से भिन्न है ऐसा मन में आता है।

श्री स्वर्णकुमारी देवी।

—•—

पश्चिमोत्तर माहात्म्यम्।

अब की बार देवोत्थानी एकादशी के दिन जब कि विष्णु भगवान अपने सहस्र फण फणीन्द्र

की सचिक्कण मृदु पृष्ठ पर शयनानन्द में निमग्न खर्खे २ खर्राटे भर रहे थे तो वैकुण्ठ वासियों ने उनके कानों के पास जाके गान वाद्यादि द्वारा ऐसा कोलाहल मचाया कि भगवान् को हार कर जागना ही पड़ा और शान्ति गर्भित मृदुल वाक्यों से नारद और अर्जुन का सत्कार कर अपने सन्निकट आसन देकर पूछने लगे। हे देवर्षिपुङ्गव नारद जी और हे वीर धुरीण अर्जुन आप के देखने से मैं बहुत तुष्ट हुआ अब आप अपने आगमन का प्रयोजन कहिए।

अर्जुनउवाच। महाराज मेरा अहो भाग्य कि आज किसी रीत से आप के चरणारविन्द का दर्शन और स्पर्शन चिर कालानन्तर लब्ध हुआ॰ वह रीत वा हेतु श्री नारद जी अभी निवेदित कर देंगे।

नारद। महाराज, हमारे आने का हेतु यह है कि मैं आज प्रातःकाल वीणा को स्वर्ग में छोड़ गुप्त रूप से मर्त्यलोक की ओर इस अभिप्राय से गया कि देखूं इस कलियुग में अभी कुछ लोगों में भगवद्भक्ति और धार्मिकता शेष है वा सब विनष्ट हो गई वहां मैं ने पूर्वकालापेक्षा बहुत सी बातें उलटी पुलटी पाईं और उदास हो लौट आया परन्तु अर्जुन को किसी प्रकार ज्ञात हो गया कि मैं वहां गया था॰ और मुझ से भारतवर्ष का वृत्तान्त पूछने लगे मैंने जैसा देखा था कह सुनाया पर न जाने इनकी बुद्धि कैसी विकृत हो गई है कि मेरी कही बात एक भी सच न मानी और वृथा आप को परिश्रम दिलवाया अब आप कृपा करके इनके सन्देह को निवृत्त कीजिए।

इतना सुनके भगवान् जो अभी उनींदे ही से थे भू लोक की ओर एक बार दृष्टि करके भारतवर्ष की आधुनिक कथा (तथा मुसलमानी समय की भी) अर्जुन को सुनाने लगे और बंगालय, मगध, उत्कल, कर्नाटक, केरल,

तैलिङ्ग तथा सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, पंजाब, काश्मीर, नैपाल, आदि सब का यथावत् वर्णन और सामयिक महिमा अर्जुन की सुनाए गए इन देशों की आधुनिक संज्ञा तथा अन्य २ विलक्षणता भी कह गए परन्तु कलकत्ता, बम्बई, मद्रास आदि कलिकाल की पुरियों की भगवान् ने सविशेष वर्णना की।

हम अपने पाठकों के लिए यहां पश्चिमोत्तर देश का माहात्म्य जो भगवान् ने सब से पीछे कहा उद्धृत करते हैं इस माहात्म्य कहीं २ तो भगवान् के श्री मुख की संस्कृत ही रहने दी है पर कहीं उनके वाक्यों का भाषा अनुवाद लिख दिया है। प०उ० माहात्म्यम्।

श्री भगवानुवाच।

वंगादि नीवृतामर्थं स्वरूपं वर्णितं मया। पश्चिमोत्तर देशस्य माहात्म्यं शृणु पाण्डव ॥ १ ॥ गङ्गा यमुनयो र्मध्ये धन धान्य समावृतः। यो देशो विद्यते वीर सोन्तर्वेद इति स्मृतः ॥ २ ॥ आर्यावर्तस्य भागोऽसौ रम्योऽगम्यश्च दानवैः। प्रयागाद्यैर्महातीर्थैः पूतः पतित पावनः ॥ ३ ॥ उत्तरीयैः कतिपयैः प्रदेशैस्सश्च योजितः। विश्वनाथ पुरः पूर्वं पर्य्यन्तस्य पश्चिमोत्तरः ॥ ४ ॥ कलिकाले करालेतु युगानाम्धुरि कीर्तिते। माहात्म्यमस्य देशस्य श्रव्यं श्राव्य मनोषिभिः ॥ ५ ॥

भरत खंड की बीच देश यह परम अनूपा। पुरा काल जहां भये प्रबल परतापी भूपा ॥ नगर हस्तिनापुर बिलोकि जिहि सुर पुर लाजे। तथा मधुपुरी आदि गोप गोकुल व्रज राजे ॥ रम्यग्राम अभिराम चहुं दिसि धर्म प्रकासा। चतुर्वर्ण मर्याद युक्त सुख संपति बासा ॥ किन्तु दशा अब और कर्म आचरण हुं औरहि। देश और को और आज दीखत सब ठौरहि ॥

पृथी राज जैचन्द जय से भये हैं। उसी काल से इसके दिन फिर गये हैं ॥ परस्पर की विद्वेष की चण्ड ज्वाला। बढ़ी देश में भीम

रूपा कराला। किया नष्ट उसने प्रजा भारती को॥ बिगाड़ा सभों की विशुद्ध मती को। हुआ म्लेच्छ आवास सब देश भर में॥ अविद्या गई छाय प्रत्येक घर में। कहाए सभी आर्य "हिन्दू" औ "काफिर"॥ पताका विमल देश यश की गयी गिर।

भारत भूप भये अति दीना। पौरुष रोष रहित बल हीना॥ यवन राज्य छायो चहुं ओरा। बरु अधर्म डंका घन घोरा॥ जो दुख आर्य स्वप्न नहि जाने। तिन सहि २ निस दिन अकुलाने॥ मुगल बंश बन दंश समाना। दियो प्रजा दुख: बहु विधि नाना॥ नारी रूप वती जो पाई। कियो भंग व्रत करि निठुराई॥ छायो अन्ध कार अविवेका। भये यवन मत आर्य अनेका॥ आर्य आर्यता रूप बिसारी। भये अनार्य सकल नर नारी॥ भूत प्रेत की पूजा करहीं। सैयद पीर पुजें घर घर हीं॥ क्षत्री निज कन्या को मार हिं। भूतल पाप मार्ग बिस्तारहिं॥

इहि भांति अधर्म जबै उमडो। भयो नष्ट मलेच्छ को राज बड़ो॥ अंगरेज जु पश्चिम द्वीप बसै। तिन को तहां आज सुराज लसै॥ इन को बल तेज प्रताप घनो। सब भारत भूमि सु मध्य ठनो॥ सुख सम्पति भोग बिलास सबै। तिन को तहां वृद्धि समृद्धि भबै॥ तहां भूमि बिमान सु रेल बनी। रहै नित्य सु याचिन भीर घनी॥ हरि द्वार मझार सुगंग छटो। नहराख्य सु क्रत्रिम धार कटो॥ पुनि सौख्य प्रबन्ध अनेक किये। जिन भारत को सुख चैन दिये॥ चट शाल बिशाल अनेक रची। तिन में बहु बाल पढ़ें सुरूची॥

परन्तु हे अर्जुन, यद्यपि विद्या वृद्धि के अनेक उपाय वहां प्रस्तुत हैं, तथापि लोग विद्या को पूर्ण रीत्या न पढ़ के केवल थोड़ी सी अंग्रेजी वा उर्दू (और जो बहुत हुआ तो हिन्दी भी) पढ़ पढ़ाय छोटी २ सर्कारी नौकरी यों में लग जाते हैं, और अपने पुराने सनातन के व्यवसायों का

निरादर करते हैं किसी प्रकार की जातीय वृद्धि वा देशोन्नति में मन नहीं लगाते कृषि शिल्प वाणिज्य, आदि को नहीं बढ़ाते और न किसी सामाजिक संशोधन का उपाय करते हैं बाल्य विवाह का प्रचार और विधवा विवाह का निषेध जो कि उन्हों ने मुसल्मानी समयों में ग्रहण कर लिया था और जिस्को कि आज कल आवश्यकता नहीं हैं वरन अनेकों घोर हानि और पाप जिससे अब होते हैं अभी नहीं बदलते और फूट, द्रोह, ईर्षा आदि अवगुण जो इतने काल से देश में फैले हुए हैं, अभी दूर नहीं करते न बदमाशी चोरी, जूआ वेश्यागमन सुरापान आदि की वृद्धि को ही रोकते हैं धर्म की तो कुछ पूछही नहीं अनेक भांति के कल्पित धर्म उपधर्मों के दल के आगे उस्को कौन सुनता है केवल अपने २ स्वार्थ में तत्पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी आयु को क्षीण और देश को दिन २ दीन, हीन और मलीन किये डालता है है अर्जुन यही प० उ० का माहात्म्य है कि जो कोई इतर देशीय भी इस देश में पैर रक्खे तो येही पूर्वोक्त अव गुण उस्में भी अवश्य समाजाय ॥

कुछ थोड़ा सा और भी भगवान ने प० उ० के विषय में कहा था, पर उस्के उद्धृत करने का अभी अवसर नहीं है।

श्रीधर पाठक।

—•—

दिया सलाई बनानेकी तरकीब।

दिया सलाई एक ऐसी वस्तु है जिसके बिना हम लोगों का एक क्षण भी निर्वाह नहीं हो सक्ता और ऐसे कम घर मिलेंगे जिनमें एक या दो डिबिया सदा मौजूद न रहती हो और जिसके बदौलत करोड़ों रूपया हिन्दुस्तान का यूरोप में ढो गया इस लिये इसे दिया सलाई क्या बल्कि रूपये की चलाई कहैं तो कुछ अनुचित न होगा पर अफसोस हमारे देश के बहुत कम मनुष्य ऐसे होंगे जो

जानते हैं कि दिया सलाई क्या वस्तु है और कैसे बनती है ? यद्यपि इस विषय की बहुतेरी किताबें बन चुकी हैं और बहुधा पत्रों में भी मैंने इसके बनाने की तरकीब पढ़ा है पर स्मरण दिलाने को आज उसी की युक्ति मैं भी लिखता हूं । इसके बनाने में दो चीजें बड़ी कठिनाई से प्राप्त हो सक्ती हैं एक Phasphorus प्रस्फुरक और दूसरे सलाई की लकड़ी और इन्ही दो कठिनताओं के कारण दिया सलाई हिन्दुस्तान में बनाई भी जाय तो टके की मुरगी नौटकी अंकाई की मसल पर टके की ३ किसी तरह नहीं बिक सक्ती । मामूली दिया सलाई बनाने के लिये निम्न लिखित सामग्री चाहिये ।

फासफोरस Phaspharus ४ तोला ।

कलमीशोरा Nitre १६तोला

सिन्दूर Red lead ३ तोला ।

शीशे की रेत Lead ६ तोला

सरेस या बबूल का गोंद १६ तोला ।

पहले सरेस को ठंडे पानी में करीब २४ घंटे के भींगता रहने दो पीछे उसको किसी मिट्टी के बर्तन में आग पर चढ़ाओ और बराबर चलाते रहो गाढ़ा हो जाने पर आंच कम कर दो जब ठंडा हो जाय तो उसमें फासफोरस छोड़ दोनों को एक दिल कर डालो तदनन्तर बूका हुआ कलमी शोरा छोड़ फिर उसे एक दिल कर डालो इसी तरह और चीजों को छोड़ एक दिल करते जाओ जब सब चीजें अच्छी तरह मिश्रित हो जांय तब एक चिकने लोहे के पत्तल या तावे को आग पर चढ़ा दो तवा शीघ्र गरम हो जाने पर उन पूर्वोक्त मिश्रित द्रव्यों को उसपर फैला दो और सींक के टुकड़ों को उसमें बोर दो (इस सींक के टुकड़ों को पहले गन्धक में बोर रखना चाहिये)

फास फोरस तैयार करने की यह उपाय है ।

यह विशेष कर जानवरों की हड्डी से बनता है इसके बनाने के लिये २० हिस्सा हड्डी की राख को महीन कूटा उसमें ८ हिस्से गन्धक का तेजाब जिसमें ४० हिस्सा पानी मिला हो उसी राख में घोल दो और अच्छी तरह हिलाय किसी चौड़े चीनी मिट्टी के बर्तन में रख दो बाद दो या तीन घंटे के जब तल छट नीचे बैठ जाय तो ऊपर का पानी पसा लो अब इस पानी को किसी मिट्टी या चीनी के बर्तन में आग पर चढ़ा दो और धीमी आंच से धीरे २ पकाओ जब शीरे या चाशनी की तरह गाढ़ा हो जाय तो उतार लो और चौथाई हिस्सा कोइले की बुकनी (याने उतने का चौथाई हिस्सा जितना यह शीरे के आकार को गाढ़ी चाशनी तैयार हो चुकी है) के साथ उसी सान मिट्टी की हांडी में रख कर (लोहा और चीनी का बर्तन भी काम में आ सक्ता है) एक मिट्टी के ढपने से बन्द कर गीली मिट्टी से ऊपर से उसे कहिस दो और एक छिद्र जिसका व्यास दो इंच हो पहलेही उस ढपने में कर रखना चाहिये इस छिद्र में एक टेढ़ी बांस की पोपली लगा दो उस पोपली को भी गीली मिट्टी और कपड़े से मिढ़ दो । अब तुम फास फोरस बनाने के लिये भपका तैयार कर चुके । उपरान्त एक हांड़ी को आग में ऐसी गरम करो कि लाल हो जाय और इस हांड़ी को आग पर ऐसी युक्ति से रखना चाहिये कि उस पोली का मुंह (जो अब भपके के काम में लाई गई है) ५ इंच ठंढे पानी में डूबा रहे जो पानी किसी टीन या शीशे के बरतन में भरा हो । अब इस पानी के भीतर मटमैली ईंट के रङ्ग की वस्तु मोम के रङ्ग की जम जायगी इसी को फास फारस कहते हैं ।

यह बहुत सहज और सुगम

युक्ति इस रसायन के तैयार करने की जैसा हमने खुद बना के अनुभव किया है लिखी गई। यह हम अच्छी तरह जानते हैं कि जो तरकीब ऊपर फासफोरस निकालने की लिखी गई उसमे बहुत कुछ विड़म्बना करनी पड़ेगी। इसमे सन्देह नहीं कि वलायत के बने बरतन इन सब बातों के लिये बहुत अच्छे साफ और उपयोगी होते हैं पर दाम भी उसका इतना लगता है कि खरीदने के समय आंख निकल पड़ती है अभी भारत वर्ष की वह दशा नहीं आई कि ऐसी २ चीजें यहां ही बनने लगें और हम लोगों को सस्ती मिलें इस लिये जो चीज हमे अपने घर मे और सहज मे मिल सकें उसी को काम मे लाना चाहिये ज्यों२ आवश्यकता होगी धीरे २ सब चीजें यहां ही बनने लगेंगी ज़रा इधर हम लोग चित्त तो लगावें जो ऊपर भपका बनाने की रीति लिखी है उसको जिसने अरक उतारने का भपका देखा है अच्छी तरह समझ सकेगा। फासफोरस को सदा पानी मे रखना चाहिये और न इसे हाथ से छूना चाहिये क्योंकि यह हवा के लगते ही जल उठता है फासफोरस मे विष होता है इस लिये इसके धूएं को भी बरकाना चाहिये।

—•—

मृगाङ्क मौलि नाटक।

श्रीधर पाठक रचित

प्रथम अङ्क तृतीय गर्भाङ्क।

स्थान॰मुचकुन्द पर्वत के नीचे एक वाटिका।

(राज कुमारी भुवन मोहिनी और सखियों का प्रवेश)

भु॰मो॰ (सखियों से)। अहा, यह सरोवर इस वाटिका के बीच इस समय कैसा शोभाय मान हो रहा है जैसा आज मुचकुन्द स्नान करके हमारा चित्त स्वच्छ हुआ है, वैसाही इस स्फटिक सन्निभ तड़ाग गर्भ में पूर्ण चन्द्र का प्रतिबिम्ब देख कर हृदय प्रफुल्लित होता है। देखो कुमुदिनी की भी छवि इस समय कैसी

सुसज्जित है मानो अपने प्राण पति शशधर का मन सर्वतोभाव से अपने ही वशीभूत किया चाहती है। और यह चन्द्र बिम्ब नहीं है, किन्तु प्रेम पाश से बंधा हुआ मानो चन्द्रमा पाताल लोक से गुप्त रूप हो इसी कुमुदिनी के निकट आ रहा है। अहा, यह हृच और लताओं की डहक और मालती की महक! यह त्रिविध पवनों की सुगन्ध लिये शीतल और मन्द समीर जिसके स्पर्श से साक्षात् सुर पुरस्थ नन्दन वन का सुख अनुभव होता है!

मदन मालती—सत्य है, प्यारी जी।

(नेपथ्य में कोकिला का शब्द)

सब सखी। (चकित हो) यह सुरीला षड्ज का सा बोल कहां से आता है (पुनः शब्द श्रवण)

भु० मा०। अहा, कोकिला है! ठीक अब शिशिर का प्रस्थान और ऋतुराज बसन्त का प्रवेश समीप ही है।

कविलता। प्यारी जी, चित्रा सहित चन्द्रमा की शोभा इस समय शरच्चन्द्र को भी लजाती है। कालिदास ने भी दिलीप सुदक्षिणा को आजही के चन्द्रमा की उपमा दी है "काम्याभिख्या तयारासीत् चित्रा चन्द्रमसोरिव"

भु० भो० सच है, इधर आकाश में ये बड़े २ तारा गण तो चमक रहे हैं, पर छोटे २ कहीं दीखते भी नहीं। मानों आज द्विजराज ने अपनी प्राण प्रिया राज महिषी चित्रा के साथ चिर विरहो परान्त मिलन होने के आनन्द में महा सभा की है जिसमें केवल बड़े २ प्रतिष्ठित उडुगण अपना परिच्छद डार पर छोड़ निज २ आसन पर विराजित हो रहे हैं। आओ इस आमोद के अवसर पर हम भी निशापति को बधाई दें।

दें० गान। बिहाग। बढ़ी यह नाथ सदा रजनी की। मदन प्राणवल्लभा बदन द्युति दमन रमणी रमणी की। व्यथित कमोद मोद मन दायक नायक नभस्थली की॥ औषधपति अति मृदुल अंशु गुण आगर सिंधु सुमी की। फटिक प्रभा सर अम्बु मध्यगत बिम्ब लसत अति नीकी॥ चित्रा चित्त चकोर चोर यह घूंघट पट मलिनी की। त्रिभुवन धन आभा किती तरया बिन जग सब फीकी॥ बसहु सदा आनन्द सदन बन ह्वै ससि धर सिर टीकी। बढ़ी यह०।

(नेपथ्य में खम खम। कुन्द कली का प्रवेश)

कु०क० । प्यारी जी, वाटिका के द्वार माऊं कछू किलकार सी मच रही है ।

मृ०मो० । ऐं क्या कुछ उपद्रव हो रहा है जल्दी जा देख क्या कारण है ।

कु०क० गयी (पटोक्षेप)

(वाटिका का द्वार)

मृ०मो० । अरे भाई, हमें क्यों रोकते हो हम डाकू नहीं हैं पथिक हैं मार्ग भूल कर इधर आ निकले हैं रात भर नगर में ठहर सबेरे अपनी राह लेंगे ।

दरबान नहीं २, बस, आगे न बढ़ने पाओगे ।

मृ०मो० वो बुड़बड़े । देखो हमें न रोको इसी में तुम्हारा कल्याण है ।

दरवान । इसी में कल्याण है ? (एक दूसरे से) छीन लो इनके हथियार और बांध लो एक २ को ।

मु०च० अच्छा आओ छीनो (तलवारें चलने लगती हैं)

सु०मो० (वाटिका द्वार की अट्टालिका पर खड़ी हुई, स्वगत) अहा, यह कौन सूर्य की कान्ति सरीखा तेजस्वी पुरुष है जिसने हमारे उत्कट सिपाहियों को एकही प्रहार में हटा दिया । इसे देख कर तो मेरा मन हाथ से निकला जाता है यह विशाल वक्षस्थल, यह लम्बित भुजाएं, यह मनोत्पल दल सदृश नेत्र, यह गोड़ वर्ण, शुक तुण्ड नासा, गोल कपोल, रेखें भीनती हुई मानो यौवन अभी इसके देव तुल्य देह में प्रवेश कर अपने नाम की सफलता प्राप्त किया चाहता है यह अवश्य किसी राज कुल का दीपक है दरवान बड़े मूर्ख हैं जो इससे डाकू समझ युद्ध कर रहे हैं (मृ० मो० पर धरती से उठे हुए एक सिपाही का धांखे से घात करना देख; सातंक स्वर से) बस, कोई उन्हें न छेड़ो ।

मृ०मो० (ऊपर को देख, सविस्मय स्वगत) ऐं क्या चन्द्र देव ने आप आकर इस समय मेरी रक्षा की अथवा किसी अन्य देवता ने मेरे जीवन की आकाश वाणी दी किम्वा चन्द्र बिम्ब देख मुझे यह भ्रम मात्र ही हुआ है (स्तुति किया चाहता है, पर सचेत हो) मैं कैसा अचेत था यह तो इस उपवन की अधिष्ठात्री देवी को विभा थी जिसने मुझे इन पिशाच रूप पहरुओं के घात से छुड़ाया है यह निश्चय किसी बड़े राज्य का अमूल्य रत्न है आश्चर्य क्या जो इसका स्वरूप देख चन्द्रमा का भ्रम हुआ ।

परन्तु— पटतरि या नव चन्द को कहा करे नभ चन्द " सदा कलंकी राहु भित

प्रायश्चित करि मन्द"

(प्रकट, सिपाहियों से) भाई जवानो जिसकी आज्ञा से तुमने हमको छेड़ा है उसका कुछ वृत्तान्त हमें भी बतला सकों हो ?

सिपाही। ये त्रिपुरा पुर के महाराज श्री भुवन चन्द्र की राज कन्या हैं जो यहां सुख कुन्द तीर्थ में अपनी माता श्री महा रानी जगत ज्योति के साथ ठहरी हुई हैं इस वाटिका में आज चैत्री पूर्णिमा का उपवन विहार करने को आई हुई है।

सू-सी—अच्छा भाई, कहा सुना क्षमा करना—हमें ठैरने को कहीं ठौर भी बतादोगे ?

सिपाही—अपराध कुछ नहीं है, यह पासही महाराज की बावली है; वहीं धरम शाला में विश्राम कीजिये—

(सब गये)

—०—

॥ अभिलाषा ॥

दुनिया में हर एक को कुछ न कुछ अभि लाषा अवश्य हमेशा बनी रहती है जैसे गरीबों को यही अभिलाषा रहती है कि खाने को रोज गुड़ हीं गुड़ मिला करै रुपये पैसों का मेंह बरसे और मिह नत से बाज रहैं राजा बाबू हो जावे—बाबू लोगों की अभिलाषा यही रहती है कि विलायत का सारा सिविलि जीअन हासिल कर साहब लोगों का मर्तबा पावें—हाकिम लोगों की यह अभिलाषा रहती है कि देशी लोग किसी बात में उनकी बराबरी न कर सकें और सदा खादिम ही बने रहैं रूसियों पर यह अ भिलाषा सवार है कि ज़ाबुल हिन्दुस्ता न किसी तरह चंगुल में आ जाय ईसाई इसके अभिलाषी हैं कि सारा जहान अं जील का बादरदाग हो हजरत ईसा की पनाह में आजाय मुसलमानों की यह अभि लाषा है कि तमाम दुनिया कलाम इसलाम के इस्लाम से गुसल कर पाक परवर्दिगार की परिस्तिश में शरीक हों और दूसरी यह कि परीजाद खूब सूरत नाज़नीन व हसीन तिफ्ल हरदम उनकी खवासी के वास्ते मुहय्या रहैं; अब हिन्दुओं की अभिला षा यह रहती है कि जगत में धर्म की पताका फिर फहराने लगे और समस्त अन्याय और अत्याचार बन्द होकर राम राज्य का सा समय फिर भारत वर्ष में आवे उधर नवीन मतावलम्बियों को अप ना गोल बढ़ने की अभिलाषा रहती है फिर देखिये तो भडरी लोगों की यह

या पहुने या जिजमान पर अनैसर चढ़ने की अभिलाषा नित्य बनी रहती है; गङ्गापुत्रों की नहाने वालों की मथुरा के चौबों को भंग पिलाने " लड़आ " खिलाने वालों की और गोकुल के गुसाइयों की नित नये " आंख के अंधे गांठ के पूरे " अकिल के अधरे चेले मूंड़ने की अभिलाषा रहती है काशी के पंडित लोग इसी अभिलाषा में रहते हैं कि कोई सुरेन्द्र का सा मुक़द्दमा फिर चेते और व्यवस्था हमसे ली जाय जिस्से जरा हाथ गरम हो हमारे पश्चिमोत्तर वासी धनिक बनिये और सेठ साहूकारों को यही अभिलाषा लगी रहती है कि कोई ऐसी तजवीज निकले कि घर बैठेही औ के सवाये होजाया करें हमें हाथ सिवाय अपनी तोंद या मूछों पर फेरने के और किसी काम में न हिलाना पड़े और बड़े दिन के रोज़ साहब बहादुर को बढ़िया से बढ़िया डाली पहुंचा सकें; एडिटरों को यही अभिलाषा रहती है कि हमारे पत्र पर रीझ कर ग्राहक बढ़ें अब हम इस अभिलाषा को पारायण आप को सुनाते २ थक जांयगी और आप भी सुनते २ घबरा जांयगे इस्से यही तक रहने दीजिये ।

रामाज्ञास्ति परम्पदम् ।

हिन्दुओं को राम नाम की बराबर धरती पर कोई पदार्थ प्यारा नहीं इसे वह संपूर्ण धर्म का सार सब विद्याओं का भंडार और परम पद प्राप्त करने का सोपान रूप समझते हैं " रामाज्ञास्ति परो धर्मो रामाज्ञास्ति परन्तप: रामाज्ञास्ति परं ज्ञानं रामाज्ञास्ति परम्पदम् " जीवन दू और शक्ति उन्हें इन्हीं अक्षरों में भरी सूझ पड़ती है कहीं अन्यत्र उनकी दृष्टि में नहीं आती इस चराचर अखिल लोक त्रयी मात्र का आधार उनकी समझ में केवल यही राम नाम है संसार में जन्म लेने का जो कुछ प्रयोजन है इस नाम का रूप पहचानना मात्र ही है जिसे राम का नाम लेना आगया उसकी सन्मुख सम्पूर्ण विश्व की विद्या वशी भूत हो नृत्य करने लगती हैं परन्तु सब कोई को राम नाम लेना नही आता "राम नाम सब

कोई कहै दशरथ कहै न कोय। एक बार दशरथ कहे कोटियज्ञ फल होय" न हर कोई इस मस्ती लूट को लूटना जानता है 'राम नाम की लूट है लूटी जाय तो लूट। अन्त काल पछतायगी प्रान जांयगे छूट' न प्रत्येक नर इस अपूर्व मोदक का स्वाद ही पहचानता है 'राम नाम लड्डू गोपाल नाम खीर कृष्ण नाम मिस्री घोर घोर पी' पर जो हो यह सब समझते हैं कि 'राम नाम है हीरा जामें घुन लागै ना कीरा' और क्या लक्षाधीश और क्या निपट बुभुक्षित दरिद्र हिन्दुओं को व्यक्ति मात्र को यह दो अक्षर कल्पतरु कामधेनुवत् हैं और सम्पूर्ण हिन्दुत्व की मर्यादा की परमावधि रूप हैं जिसको स्थित रखने के लिये उन्हें अपना तन मन धन सर्वस्व वार डालना कोई बड़ी बात नहीं वरन हम तो यही कहेंगे कि यदि हिन्दुओं में अभी कुछ भी जान बाकी है तो वह इसी राम नाम के लिये है जब तक भूतल पर राम नाम जीता है हिन्दू भी जीते हैं जो यह नाम मिटा तो पहिले वे मिट गये।

अब हमारे समाज में इस राम नाम का सम्पर्क इस अधिकता से प्रविष्ट है कि लोगों के नाम ग्राम धाम और काम प्रायः सभी में इसका योग पाया जाता है यदि पूछा जाय कि किस लिये और नामों की अपेक्षा इस दो अक्षर के नाम की इतनी महिमा मानी जाती है तो यही कहा जा सक्ता है कि यद्यपि हमारे यहां परमेश्वर के (अवतार जन्य तथा अन्य) सहस्रावधि नाम विद्यमान हैं परन्तु यह नाम उस मर्य्यादावतार का है जिसके समय के तुल्य भारत वर्ष ने सृष्टि की आदि से अद्य पर्यन्त को इस मय ही नहीं देखा यदि इस पृथ्वी भर में कहीं सत्य धर्म न्याय आदि की मर्य्यादा कभी एक क्षण मात्र को भी स्थित रही तो वह

राम चन्द्र के राज्य में हमारे देश में थी जो सुख, सम्पत्ति, अमन, चैन, अभय आदि भारतीय प्रजा ने राम राज्य में अनुभव किया, फिर कभी उनके देखने में नहीं आया। केवल इसी एक कारण से हम लोगों में अभी तक वही राम भक्ति बनी है जो रामचन्द्र के राज्य में थी जिसकी प्रभूति आश्विन के शुक्ल पक्ष में प्रति वर्ष देख पड़ती है॥ ये रामलीला के दस दिन जो दशमी तिथि को दश बदन रावण के बध पर समाप्त हो जाते हैं हमारे प्रभु की उस अवस्था के स्मारक हैं जिसमें उन्हों ने सत्य, धर्म, धीरता और वीरता का अपनी लीलाओं से आप परिचय दिया था यही लीला उनके अवतारत्व की भी प्रति पादक हुई।

राम लीला का उत्सव प्रायः प्रत्येक स्थान में जहां धार्मिक हिन्दुओं का आवास है किया जाता है और अपनी २ श्रद्धा की २ द्रव्य सम्बन्धी शक्ति के अनुसार सभी उसे बड़ी राव ग्नित और धूम धाम से करते हैं कहीं २ शास्त्रोक्त मंत्रो की रीति से बड़ी विधि पूर्वक प्रत्येक दिन की लीला का अभिनय होता है कहीं २ अपनी धूम धाम ही मुख्य विधि मानी जाती है हमारे प्रयाग में भी चार स्थानों में लीला होती है पर खास शहर की जो दो होती हैं उनकी धूम धाम दर्शनीय गिनी जाती है मुख्य कर के हाथी राम की तरफ दाओं का। राम दल और रोशनी विशेष तर प्रशंसनीय है (यहां तक कि खर्च करके देखने योग्य कही जा सक्ती है) इस दल के परम पोषक हमारे यहां के खत्री हैं जो साल भर तक अपनी कमाई का कुछ अंश इस महोत्सव के लिये नित्य प्रति संचित करते रहते हैं दूसरी लीला बनियों की तरफ से होती है परन्तु इनमें उतना उत्साह दृष्ट नहीं आता जितना खत्रियों में क्योंकि किसी २ सा

स दूनकी तरफ था। हनूमान इस या रोशनी बिलकुल नहीं होती परन्तु खत्रियों ने जब से इस लीला का कार्य भार अपने ऊपर लिया है हर साल उसमें कुछ न कुछ नई बात और उन्नति ही दिखाई है दो भाग से वैश्य भी प्रशंसनीय लीला दिखाते हैं।

इति।

—•—

फूट की कल्प लता का कुछ इतिहास और पता।

इस बेल का।

बोने वाला—जयचन्द।

क्यारी सजाने वाला—पृथीराज।

जड़—अव्वल ही अव्वल कनौज में थी, फिर दिल्ली तक फैली फिर समस्त भारत के नगर, ग्राम, हाट, बाट, नदी, पर्वत झरनों में सेत बन्ध रामेश्वर से ले कश्मीर की परम उत्तरीय सीमा तक धरती के भीतर ही भीतर पसर गई।

अङ्कुर—प्रथम शहाबुद्दीन और पृथी राज की संग्राम भूमि में नजर आया।

रंग—उस अंकुर का, स्याही माइल सुर्ख, खून की तरह और।

मुंह—फटा हुआ।

डंडी—इसकी बड़ी मोटी मजबूत फौलाद की मात करने वाली हिन्दू राजा महाराजाओं की हाथ की छड़ी और हथियार इसी के बनते हैं।

पत्ते—फूट के "पत्रम्पुष्पं फलं तोयम्" इस महा मंत्र के अनुसार यात्रा विवाहादि कर्म कांड के समय देवताओं पर चढ़ते हैं ऐसी सूख कर शायद "तेजपत्ते" कहलाने लगते हैं जिन्हें पंसारी से ले तरकारी में खुशबू के लिये मिलाते हैं।

कुसुम—इसके, हर हिन्दू के दिल व दिमाग को ताजगी बख्शने वाले जात पांत के बगीचे में अकसर (खिले हुए) पाये जाते हैं या कलकत्ते के Botanical Gardens या आसाम के चाय बगीचों में इनकी इफरात है वहां के कुली लोग इन्हें खूब सूंघते हैं हाई कोर्ट और अवध

रियों में अकसर इनके गुन दस्ते देखने में आते हैं वकील लोग तो रोज एक ताजा फूल अपने कोट में लगाते हैं।

खुशबू—इसकी विलायत क्या सात विलायत पार रूस तक पहुंच गई जिसके मद से मस्त हो "रूस मस्ताना।" मतवाले की तरह चमन की तरफ झूमता चला आता है देखो संभलना हमारी सलाह तो यह है कि कोई ऐसा बदबूदार गास Gas) उसके रास्ते की तरफ छोड़ दिया जाय कि मारे गन्ध के उसे उलटा हो लौटना पड़े।

फल—इस फूट बेल के कहां तक गिनावें अकल हैरान है जबान परेशान है अगर धूए से चलने वाली छापे की कल विलायत से मंगाली जाय तो उसके जरिये से हजारों Volume छप सकी हैं लेकिन यह एक सदी का काम नहीं है खास फल इसके दुनिया में चलाक चोर लुटेरों को हिन्द लुटने का लजीज शगल है।

इस बेल की शाखा प्रशाखाओं की कथा फिर कभी सुनावेंगे।

इशतिहार।

दरख्वास्त बगरज़ बार बरदारी कोइला बज़रिये किश्ती इलाहाबाद से कालपी तक दरकार है कोइला रेलवे स्टेशन पर हवाले किया जायगा और मुकाम कालपी में उतार कर किसी किनारे पर हवाले होना चाहिये माहवार तादात कोइला की जो दिया जायगा १५० टन से कम न हो दरख्वास्त साहब एक्जक्यूटिव इंजिनियर किस्मत पुल कालपी व मुकाम कानपूर आना चाहिये उक्त इंजिनियर साहब पर लाजिम नहीं है कि सब से कम या कोई दूसरी दरख्वास्त मंजूर करें।

मूल्य का नियम।

अग्रिम २।=)

पश्चात् ४।=)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gpinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur, Allahabad.

THE HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—xxxx—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरे।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Decr. 1884. } { प्रयाग मार्गशीर्षशुक्ल १२ सं० १९४१
Vol. VIII.] [No. 4. } { [जि० ८ [संख्या ४

जाकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

ऊपर की यह उक्ति महात्मा लार्ड रिपन के सम्बन्ध मे बहुत सटीक जान पड़ती है इस्मे सन्देह नहीं ब्रिटिश राज्य की आदि से अब तक जितने गवर्नर आये उक्त श्रीमान के सदृश हिन्दुस्तान को तन मन से केवल भलाई ही चाहने वाले एक भी ऐसे न देखे गये। हां अलबत्ता प्रजा हितैषी लार्ड नार्थ ब्रूक के मन मे रिपन

बहादुर ने जिन २ बातों को कर दिखाया इन सबों का अंकुर अव-श्य जमा होगा पर मल्हार राव के साथ उनका अयुक्त बर्ताव देख हम लोगों का मन उनकी ओर से फीका पड़ गया था। हम लोग जो लिटन से क्रूर ग्रह को संकटा दशा झेलि बैठे थे भाग्यवान रिपन का सौम्य दर्शन पाकर परम उपकृत हुए और उन्हें अपना महोपकारी प्रजा वत्सल न्याय शील इत्यादि नामो से पुकार २ उनके सुयश की सहनाई बजा रहे हैं। निपट सङ्कीर्ण हृदय वही ऐंगलो इंडियन लोगों का समूह है जो लार्ड रिपन से इनकी यात्रा के समय तक भी केवल दोषही दोष देखा किये--अब और कुछ कहने को न रहा तो Weackness of mind कम ज़ोर दिली का दोष इनमे लगाते हैं जैसा कि ईल बर्ट बिल के मामिले मे डिफेन्स असोसियेशन की डांट से आकर उक्त बिल को कुपाकर कर तब उसे पास किया परन्तु यह उनकी मोटी समझ मे नही समाता है कि उक्त श्रीमान् को किस तरह पर यह काम करना पड़ा था सोचने की बात है कि लार्ड रिपन साहब ने अदना से लेकर आला तक बिना सर्व साधारण की राय लिये कब किसी राजकीय नियम या कानून को जारी होने की आज्ञा दी है क्या यह लिटन राज्य था कि एकही रात मे और एकही बार की कमेटी मे प्रेस ऐक्ट अथवा ड्रामेटिक एक्टपास कर दिये गये—फिर ऐंगलो इंडियन का समूह क्यों कर रिपन साहब की प्रशंसा कर सक्ता है जिस्का सब कुछ अन्याय ही पर निर्भर है जिसे अपना वैभव बढ़ाने मे पहले धींग धींगा ही परम सहायक होता है उस्से यदि वह अन्याय छीन लिया जाय तो वह कौन से काम उसे अब अच्छा लगेगा—किस भारतीय राजा या राज्य शासक ने लार्डरिपन के सदृश प्रजा की अनुमति लेकर कानून बनाने की प्रथा सिखा-

ली थी; क्या लार्ड रिपन के दोष दर्शियों को यह नहीं मालूम है कि हिन्दुस्तान के कानून अब हिन्दुस्तान ही मे बना करेंगे उसका पूर्व रूप पहलेही से सर्व साधारण की अनुमति के लिये मुद्रित हो जाया करेगा? इस उदार चित्त आर्यों से यह आशा कदापि नहीं हो सक्ती कि रिपन सरीखे उदार नीति के शासन कर्ता मे किसी प्रकार का दोष लगावें यह उन्ही संकीर्ण हृदय ऐंगलो इण्डियनो ही से बन पड़ता हैं कि परम निर्दोषी मे भी एक दोष की कालिमा लगाही देना—इसी से हमने कहा। जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरत देखी तिन तैसी॥

—— ००० ——

गज़ल।

माचना बी उर्दू का बीच हिन्दुस्तान के और बयान करना अह वाल अपना साथ दिलचस्प तान के।

अलबेली हूं अभूका हूं शरारत से भरी हूं। उर्दू है मेरा नाम ज़बानों मे परी हूं। है स्याह मेरा रंग बदलता कभी नहीं। बहका-ने भुलाने में जगाने से खरी हूं। इंसां की असल क्या है कि मुझ पर न हो मुश्ताक। हम शीरा हूं शैतान की मै जल्वे गरी हूं। अंगरेज़ी अदालत मे मेरा है बड़ा रुतबा। बतला तो दो भला मै किसी से भी डरी हूं। नाहक को नागरी ने मेरी की थी शिकायत। हंटर से साहिबों की मै नस नस मे भरी हूं। हिन्दू की हिमाकत से मेरा बस नहीं चलता। कायथ व मुसल्मां पे दिलो जांसे मरी हूं। फन्दे से मेरे कोई निकलने नहीं पाता। हर एक को फासा लेती हूं मै जादू गरीहूं। हिन्दी के होश उड़ते हैं एक मेरे नाम से ज़ाहिर है मेरा नाम खुद से नामवरी हूं। पो शीदा मेरा नाच किसी ने नहीं देखा। मै स्याह परी स्याह परी स्याह परी हूं।

वाक् चातुरी।

A brier is a brier, though it be in paradise; and a lily is a lily, though it grow in a wilderness.

"काचः काचो मणि र्मणिः"

True chastity is tongued so weak it over come ere it know how to speak.

"वचो लोकालभ्यं कृपण धन तुल्यं मृग दृशः"

Heaven is a temper not a place.

"स्वर्गः सत्व गुणोदयः"

It is the curious ambitions of many to be best or to be none.

"खाना गेहूं या रहना एहूं"

Learn as if you are to live for ever live as if you have to die to-morrow.

"अजरामरवत्प्राज्ञो विद्या मर्थं च चिन्तयेत्। गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्म माचरेत्"

Who well deserves needs not another's praise or recommendations.

"यदि सन्ति गुणाः पुंसां विकसंत्येव तेस्वयं। नहि कस्तूरि का मोदः शपथेन विभाव्यते"

Is this a time to plant and build,
Add house to house and field to field,
When round thy walls the battle lowers,
When mines are hid beneath our towers,
And watchful foes are stealing round.
To search and spoil the holy ground.

"सन्दीप्ते भवने तुकूप खननं प्रत्युद्यमः कीदृशः"

Everything is high in high minds,

"सर्वेहि महतां महत्"

"पानी की प्यास दूध से नहीं बुझती"। पिपासुता शान्ति मुपैति वारिजा न जातु दुग्धा न्मधुनो धिकादपि। नैषधम् "आग बान का भूत भी पानी भरता है कोगेग माप्नोति न भोग भाग्जनः। नैषधम्।

—०—

उचित दक्षिणा।

उपन्यास।

कचहरी अभी बरखास्त हुई थी। घर जाने की जल्दी में लोग एक के बाद एक कचहरी के कमरे के बाहर निकले चले आते थे—घर से आने और कचहरी से जाने के समयों का परस्पर तारतम्य लोग पूरी तरह पर इसी थोड़ा काल में अनुभव कर सक्ते हैं। इस समय साढे ग्यारह बजा होगा जिस दम कचहरी में लोगों ने पांव रक्खा था १ भी नहीं बजे थे—गिनती में तो कुल पांच छः घटे का देर मालुम होता है पर उस समय सब

अमलों के कुम्हलाये हुए चेहरे और उन हाव भाव इसी बात की गवाही दे रहे थे कि ग्रीष्म के प्रातःकाल और मध्याह्न में कितना ज़मीन और आसमान का अन्तर है। यद्यपि क्या छोटे क्या बड़े सभी अमलों के लिये आज की यह तकलीफ कोई नई बात नथी (शायद रोज से आज पौन घंटे की देर हो गई हो) और बल्के ग्रीष्म ज्यों २ पोढ़ा पड़ता जाता था त्यों २ लोगों को इसकी पीड़ा सहलेने की आदत भी बढ़ती जाती थी फिर भी मध्याह्न के प्रचण्ड चण्डांशु की खरतर किरने क्योंकर सही जा सकती हैं।

देर तक समय के इस कथोपकथन से पाठक जन समझ गये होंगे कि यह दृश्य किसी जिले की कचहरी का है—थोड़े ही दिन बीते बाबू गजानन अपनी जन्म भूमि छोड़ के उस जिले के सदर मुकाम से बहुत दूर पर नहीं वकालत जम जाने के कारण यहां आ बसे थे इनसे गरुड़ जी नामी उसी कचहरी के एक मुख्तार से बहुत बनती थी इन दोनों में कुछ दूर का रिश्ता तो था ही तबियत दोनों आदमियों की बहुत मिल गई थी खैर पर उस जिले का नाम देने की कुछ आवश्यकता नहीं है केवल इतनाही कह देना यहां पर काफी होगा कि अभी उस जिले में बाबू गजानन सरीखे दो चार अंगरेजी जानने वालों को छोड़ और बाकी सब फारसी ही जानने वाले वकील थे और यद्यपि ये दो चार अंगरेजी जानने वाले इस जिले के वकील ऐसे नथे कि इनका नाम भारतवर्ष भर में विख्यात होता अथवा कानूनी लियाकत के खंभ समझे जाते पर यह तो अवश्य कहेंगे कि जो कुछ अंगरेजी की शिक्षा का फल होना चाहिये वह इनमें किसी अच्छे विद्वान से कुछ कम नथा। जैसा कुछ इन दिनों के सुशिक्षितों में बुद्धि, वैभव, तेजी और गंभीरता होती है वह सब इनमें भर पूर थी और सब से अधिक प्रशंसा की बात तो यह थी कि मेहनत और ईमानदारी से अपना काम करते थे। सरे दस्त के थोड़े से लाभ मात्र से यदि आगे की भलाई में कुछ फर्क पड़ता नजर आता था तो उस समय की कुछ हानि सह कर अपनी पद का गौरव समाज में बढ़ाते थे। और तात्कालिक लाभ और आगे के लिये बड़ी भलाई इन दो सिद्धान्तों की जब कभी मन में लड़ाई आ पड़ती थी तो सदा आगे की भलाई को ध्यान में रख के उसी को करते थे जिससे बात कभी की कभी

झगड़े—बाहरी लोग इस पेशे वाले वकील चाहे यश न दें (क्योंकि ये काहे को अपने मुकाबिले दूसरे की तारीफ कर सके हैं) तो अपने मन को तो सन्तोष रहेगा क्योंकि सुशिक्षा के प्रताप से वे अच्छी तरह जानते थे कि वर्तमान समय के थोड़े से घाटे को सहलेने में कोई हानि नहीं है और वकील को अपनी वकालत जमाने का यदि कोई अच्छा ढंग है तो यही है जिस ढंग से हम चल रहे हैं इसीलिये बाबू गजानन इन सिद्धान्तों को अपना शिक्षा गुरु "Guide" मानते थे। सम्भव है कि इस चाल पर चलने वालों का तात्कालिक हानि देख दिल टूट जाता है। परन्तु इसके पूर्ण फल भागी वेही होते हैं जो सदा पूर्व कथित सिद्धान्त को ध्यान में रखते हैं और ऊंचे नीचे पांव पड़ने पर भी भर इधर उधर नहीं टसकते—इसमें कुछ सन्देह नहीं इन बातों को जैसा आज कल की हमारी सुशिक्षित मण्डली समझती है वैसा वे पुराने ढंग के वकील नहीं समझे थे इसी लिये हमारे नये वकील चाहे गिनती में थोड़े हों पर जहां घुसे वहां कचहरी में टो लड़ हो जाती है और तब वे बेचारे पुराने लोग नये लोगों के अजेय सिद्धान्त से अभिभूत हो पुराने ढंग को छोड़ कुछ २ नये बर्ताव की ओर झुकने लगते हैं। उस जिले में इस तरह के सुशिक्षित पांच या छ वकीलों का जो एक दल था उसके यही बाबू गजानन प्रधान थे और जब इन पुराने और नये दल में कुछ विवाद उठता था तो विजय लक्ष्मी सदा इन्हीं के सामने हाथ जोड़े खड़ी रहती थी।

ऊपर की बातों से आशा है हमारे पाठक जन बाबू गजानन के चाल चलन से भर पूर परिचित हुए होंगे—अब गरुड़ जी का भी कुछ परिचय देना आवश्यक है। इनके जोड़ का दिल्लगी बाज़ और रसीली तबियत का आदमी कम किसी ने देखा या सुना होगा यह आदमी चाल चलन का किसी तरह बुरा न था बल्कि बाबू गजानन से शुद्ध चरित्र के लोगों की दोस्ती के लायक था और कसौटी के समय चाल चलन की शिष्टता भी गजानन ही के टक्कर की इसमें थी पर गंभीरता या सङ्कोच का जानी दुश्मन था। मुख्तारी का काम एक मामूली ढर्रे पर कर लेना और जो कुछ मिले उससे लड़के बालों को खुश रखना न "ऊधो के देने न माधो के लेने" और लम्बी तान सो रहना यही मानो इनके जीवन

का उत्तम से उत्तम लचा था—अच्छा खाना अच्छा पहिनने का हद से ज़ियादा शौक़ कचहरी में अगर किसी दिन छुट्टी हुई तो आप खुशी से कूदते फिरते थे गो वह छुट्टी कुछ काम के न रहने ही से हुई हो। किसी के यहां ज़ियाफ़त में शरीक होने का बड़ा हौसिला। किसी के यहां कुछ काम पड़ने पर दावत खाना या उसको बेवकूफ बनाकर ज़ियाफ़त दिलवाने में आप बहुत कम फरक समझते थे क्योंकि मुख्य उद्देश्य उनका उसी से था जिसे कुछ हंसी या दिल्लगी हो पर उसका साथही यह भी नथा कि दूसरे के घर खाने की उनको लालच या चाट पड़ गई हो—सबों को खुश रखना यह आप का सिद्धान्त था इसी कारण आप क्या छोटे क्या बड़े सब उमर के लोगों से मिलते थे और अपने उचित और योग्य बरताव से उन सबों को प्रसन्न रखते थे जिस तरह अपने हम उमर के लोगों से हिलते मिलते थे उसी तरह कम उमर वाले और लड़कों से भी मिल उनको खुश कर देते। तारीफ़ यह कि इस चाल के मसखरे पन से बड़े बूढ़े लोग भी उनसे राज़ी थे और कोई गरुड़ जी को बुरा नहीं कहता था। यह बात तो आप के मन में कभी आती ही न थी कि ऊंचे पद और रुपये के कारण मनुष्य की प्रतिष्ठा और इज्जत में कुछ फर्क आ सका है इसी लिये जहां कहीं आप को चुटकी लेने का अवसर मिलता था बिना कुछ बोले नहीं रहते थे चाहो वह आदमी कौड़ी को मोहताज हो या करोड़पती क्यों न हो—संसार में यदि आप किसी से दबते थे तो केवल बाबू गजानन से—कारण इसका जल्दी समझ में नहीं आता कदाचित् बहुत साथ रहने से, या रिश्तेदारी से या बाबू गजानन के अचल और दृढ़ सिद्धान्तों के गौरव से जो हो गरुड़ जी के मन में उन बाबू का ऐसा रोब जमा था कि जिसे देख अचरज होता था यद्यपि कभी २ बाबू साहब से भी गरुड़ जी दिल्लगी छेड़ बैठते थे परन्तु संसार में किसी के कहने से यदि कभी को दो एक गभीर विचार की भावना मन में कुछ देर के लिये आ जाती थी तो इन्हीं बाबू गजानन के रोब से आकर। अपने मसखरापन का बर्ताव आप एक साधारण रीति पर सब के साथ रखते थे और मन में यही समझते थे कि हम बड़ी गुरुता के साथ लोगों से पेश आ रहे हैं पर बाबू गजानन के सामने आप चुप भी रहैं तो

भी यही सोचते थे कि बड़ी गुस्ताखी कर रहे हैं यह ईश्वर की माया है । गरुड़ जी मसखरे पन में लोगों के खिलौना थे तो क्या हुआ साथही इस्के यह भी था कि यह आदमी अपने को सृष्टि भर का सेवक समझता था और यह सब लोग जानते थे कि इनके इख्तियार के भीतर जो बात है उसमें जो किसी का कुछ उपकार हो सके तो गरुड़ जी उस्के करने में कभी मुह न मोड़ेंगे । घमण्ड का तो इस मनुष्य में लेश भी न था बाबू गजानन से इनकी अत्यन्त मैत्री के कारण बाहर वाले यही जानते थे कि यह भी नये ढंग की चालों पर चलते हैं पर वास्तव में ऐसा नहीं था समाज में उक्त बाबू का जो कुछ सुयश था वह गरुड़ जी की सेतही मिला सच है अच्छे लोगों के साथ का यही लाभ है ।

अब हम कचहरी से घर आने वालों का साथ देते हैं—जिस्से पाठक जन बाबू गजानन और गरुड़ जी से अच्छी तरह दोस्ती पैदा कर लें इस लिये इन दोनों की चाल और बर्ताव का हाल हमने यही लिख देना उचित समझा गरुड़ जी का मकान भी बाबू गजानन के मकान से लगाही हुआ था इस लिये दोनो एक साथ आते जाते थे—इक्के की सवारी उस ज़िले में बहुत वाजिब समझी जाती थी अच्छे २ सभी वकील अपना निज का इक्का रखते थे पर हमारे बाबू साहब ने एक कार्ट मोल लिया था उसी पर गरुड़ जी को लेकर घर आते थे कचहरी आप जानते ही हैं शहर के बाहर होती है बाबू गजानन का मकान कचहरी से कोई पौन घंटे की रास्ते पर था—बाबू को कचहरी के कमरों ही में छोड़ कार्ट के तलाश में गरुड़ जी बाहर निकले उस समय वह अन्धड़ चल रहा था कि कड़ी धूप की तेजी का होना न होना बराबर था गाड़ी कुछ बहुत दूर पर न थी परन्तु उस अन्धड़ में थोड़े तरद्दुद से मिली साईसों की सूरत देख गरुड़ जी अपने मन में बहुत हंसे और अगर जल्दी में न होते तो कुछ दिल्लगी उन लोगों से भी करते या शायद यह सोच चुप रहे हों कि हमारी सूरत भी तो इस समय ऐसी ही भूत कैसी बन रही है—बस्ता साईस को देकर गाड़ी पर सवार हो बाबू गजानन घर की ओर मुड़े—जब एक बार आंख के सामने से गर्द उड़ाता हुआ हवा का झकोर सड़क साफ करता गुजर जाता था तो दूर तक यही मालूम होता

था कि यह सड़क नहीं किन्तु स्वेत स्वच्छ जल से पूर्ण कोई विस्तृत जलाशय वा झील है। जिन पेड़ों से पत्तियां झर गई थीं वे पथिकों से अपनी दशा के वास्ते माफी सा मांगते थे और ऐसा मालूम होता था कि जिन पेड़ों में कि कुछ बची बचाई पत्तियां रह गई थीं वे छाया शून्य पेड़ों के वास्ते सिफारिश सा करते थे। ऐसी कड़ी धूप में भी पेड़ों के नीचे दो एक भीख मंगे भीख मांगते हुए दिखाई दिये और कहीं२ इक्का दुक्का थके थकाये बटोही भी थोड़ा सा छांह पाकर लेटे हुए थे और इतने शिथिल हो गये थे कि सूखी२ पत्तियां जो उड़ कर ऊपर आगिरती थीं उन्हें हटाने की भी शक्ति हाथ में नहीं पाते थे—कहीं २ कोई दूकानदार फटे हुए टाट के परदों का आड़ किये तेलकी मिठाई और तख्तोतुखरी खाट पर रक्खे ऐसी धूप में भी इस आशा में थे कि कोई कुछ सौदा लेने आवेगा—क्या जानवर क्या आदमी सभी गरमी से व्याकुल थे और प्रकृति की प्रचण्ड आज्ञा के वशवर्ती हो घंटे के लिये विश्राम किया चाहते थे—बस्ती के समीप पहुंच कपड़ों पर मजदूर जो कावर्श के लिये लगाये गये थे किसी की निगाह बचाय सूर्य की ओर से मुंह फेर बेधड़क हो आध घंटे की नींद ले रहे थे—सच है "नत सुखी संसार" पका ये है कि यदि सोने पावें तो ऐसी दशा में भी एक झपकी लेही लें वहां एक हमारे रईस लोग हैं कि बाद खश और टट्टी पंखे पर भी आराम नहीं पाते जरा सा आंख लगी भी तो किसी ने धीरे से परदा खोला कि पहर भर की नींद उचाट गई-बस्ती में आधी रात को भी इतना सन्नाटा न रहता होगा जितना इस जूनमें—परन्तु यह सब किसने देखा ? जिसकी आंखें खुली रही हों हमारे नकड़जी सोने में जिसे कहिये शर्त बदामें चलती ही गाड़ी में ओढ़न आंखबन्द कर दो ही एक मिनिट में आप को कुम्भकरण की नींद आवेगी और कचहरी की काररवाइयों का एक स्वप्न आप देखने लगे—आप देखते हैं कि बड़ी मेहनत से एक बड़े अमीर उम्र के पट्ठे को जाल में फंसया है उसके पास दो तीन मकान शहर से पंद्रह बीस कोस पर थे जो रेल तीन चार स्टेशन की राह थी—आपने उससे यह ते किया कि आपको अगर मुकद्दमा जितादें तो उससे वे एक मकान हम लेलेंगे—मुकद्दमा जीत गये—अब आप उन मकानों को देखने के लिये रेल

पर जा रहे हैं—मगर गरुड़ जी को ऐसा मालूम हुआ कि आप गाड़ी में इंजिन के आड़के पासही बैठा दिये गये हैं—मकान के पानेकी खुशी में आंच से जो तकलीफ होती थी उसका कुछ खयाल न था एक बारगी क्या देखते हैं कि सामने से दूसरी इंजिन मेंगाड़ी के चला आता है—अब गरुड़ जी के होश भी ठिकाने आगये और उसी झपकी में चौंक पड़े [चौंकने के साथही बाबू गजानन के हाथ से धक्का भी लगा और रास हाथ से छुट गई] इतने पर भी छुटकारा न हुआ और दोनों इंजिने लड़ी तो गये गरुड़जी घबड़ा कर फिर चौंका चाहते थे कि बाबु गजानन ने इनका हाथ पकड़ कर हिलाया और कहा—" गरुड़जी ! गरुड़जी ! उठिये घर पहुंच गये गरुड़जी घबड़ाये से जाग उठे और देखा तो इंजिन त नहीं है पर घर अपना सामने देख पड़ता है और रेलके खतरे से बच जाने का ईश्वर को धन्य वाद देते गाड़ी से उतर घर में गये— क्रमशः—

—०—

लावनी चेतावनी।

निज देश दशा किन सोचहु सब मिलि भाई। किहि रीति कुमति पथ मिटै सकल दुख जाई॥ पण्डित प्रवीण नर कुल धुरीण गुण राशी। सब सुनहु आयँ वर भारत भूमि निवासी। कितने पातक नित होत तिहारे घर में। कितनी अबला जन गिरत दुःख सागर में। बालक विवाह कितने ही नित होते हैं। जिनके फल लखि लखि कौन नहीं रोते हैं॥ यह खोटा चाल अति बुरी देश में छाई। किहि रीति कुमति पथ मिटै सकल दुख जाई॥ १॥

जब तक यह खोटी चाल दूर नहि कीजै। नहि होय देश कल्याण जान यह लीजै॥ पहले तुम बालक ब्याह रीति को तोड़हु। पाछे विधवा त्रिय कष्ट हरन मन जोड़हु॥ सब सुख सम्पद को तुहि सदा मन धारो। निज पतित देश को भ्रात वेग उद्धारो॥ फैलावहु विद्या विविध गेह अपने में। जिन होहु आलसी कबहु

तनिक सपने मे ॥ यह शुभ अनुमति हमने तुमको समझाई । किहि रीति कुमति पथ मिटै सकल दुख जाई ॥ २ ॥

धिक्कार तनक भी समझ इन्हें नहि आती । हम टेरि टेरि पच मरे हाय दिन राती ॥ कहु कौन आर्य्य दिन आज वीरता धारी । जो तुरत मिटावे भरतखण्ड की ख्वारी ॥ नित होत बाल बिधवा अनेक अबला जन । जिनको जग जीवन वृथा भार तन मन धन ॥ लखि लाखन कुत्सित कर्म पाप निज देसा । नहि लावत मन मे तनक ग्लानि लवलेसा ॥ इनकी चरित्र अवलोकि फटति है छाती । धिक्कार तनक भी समझ इन्हें नहि आती ॥ ३ ॥

—— ००० ——

कभी हमारे भी दिन फिरेंगे ।

उस बड़े मालिक की मेहर का एक छींटा कभी इधर भी आवेगा ? हिन्दुस्तान के कायर डरपोक हमारे देशी जन अपनी प्राण प्यारी भीरुता से कभी मुह मोड़ैगे ? निरुत्साह और पस्त हिम्मती से रुखसत ले कभी इज्जत की कदर कभी समझैंगे ? हा ये अपने आप मे आप कब अपने को अपना समझेंगे ? यह उजाड़ जर्जरित भारत जो प्रचण्ड ऐंगलो इंडियन के चाम से तर्जित हो रहा है कभी फिर भी स्वास्थ्य और स्वच्छन्दता का स्वाद चीखेगा ? धन्य हम ! धन्य हमारे भाग ! धन्य हमारे हिन्दू भाई आहा गम खोरी—क्या नेकनीयती---क्या अमनमन साहत---क्या नर्मई---क्या आधीनता---क्या सबर क्या सन्तोष क्या सीधापन जिसे देख कोई २ भूले भटके भीम धनंजय के से द्रोण परशुराम के चेले चाटी अधबधाये देशानुरागियों की छाती धड़कती है हृदय का कपाट फटा जाता है वेगवान प्रबल प्रवाह के साथ विलायती कारीगरी के पंप द्वारा भारत लक्ष्मी का सर्वस्व विदेशियों मे खिचा जाता है और हमा

रे उन्नीन्दे कुलाङ्गारों की जी मे यह सब बात कभी एक पल भर के लिये भी स्थान नहीं पाती हमारा परम पूजनीय जातीय गौरव अजेय पराक्रम चिर लालित स्वच्छन्दता नीच से नीच तुच्छ से तुच्छ विदेशियों की कुटिल नीति असिधारा से छिन्न भिन्न हो गई बल्कि से हम तो अपनी रक्त से वह्निनोशिराओं मे बरफ घोल बैठें खून से जरा भी गरमी इसी लिये न रख छोड़ा कि कहीं ऐसा न हो कि कभी उचित प्रतीकार के लिये ढाढ़स बांधना पड़े---प्राण के साथ अपना इक अपनी जातीय प्रतिष्ठा मे धब्बा न लगने पावे इन सब समझदारियों का अंकुर यूरोप की सभ्य मण्डली को सौप हम कुम्भकर्ण की निद्रा का आवाहन कर लम्बीतान सो रहे फिर अफसोस हमारी समझ मे नही समाता कि तख्ते सुलेमान और अटक से इस तरफ ही के इंसानों को यह बद दुआ दी गई है ? हम योरप का नाम ऊपर ले गये क्या एशिया मे इक की कदर नहीं ? चीन और तातार भला बतलाइये किस महा-द्वीप मे हैं और अफगानिस्तान तो हमारा द्वार का पड़ोसी होकर भी काबुली आदमियों पर सिंह सा टूट पड़ता है शायद जिन्नों के पादशाह हजरत सुलेमानकी मंशा से यह सब self respect का जोश अटक के उसी पार अटक रहता है---इधर नहीं भटकने पाता---नहीं तो क्या मानसून सरीखी प्रचण्ड हवा जिसके बल से करोड़ों भार मेघ मंडल रुई के गल्लों की तरह पल भर में सैकड़ों कोसों के फासले पर फिक जाता है यह हवा भी जोश मजकूरह को हमारे घरों तक नहीं ला सक्ती ? इसी तरह की बातो को प्रत्यक्ष देख कर हमसे आज यही कहते बन पड़ता है कि "हमारे दिन कभी न फिरेंगे"।

श्रीरिपनाष्टक ।

छप्पै

जय जय रिपन उदार जयति भारत हितकारी । जयति सत्यपथपथिक जयति जन शोक बिदारी ॥ जय मुद्रास्वाधीन करन आसम दुखनाशन । अवृत्तिप्रद जय पीड़ित जन दया प्रकाशन । जय प्रजा राज्यस्थापन करन हरन दीन भार तबिपद । जय भारत बासिहि देन नव महा न्यायपति प्रथम पद ॥ १ ॥ जयजय हिन्दू उन्नति पथ अवरोध सुत्राकर । जय करबन्धन अस्थर कर जयजयति गुणाकर॥ जय जन सिच्छन हेत समिति सिच्छा संस्थापक । जय जय सतासेत बरन सम संमत सापक ॥ जय राज्य धुरंधर धीर जग भारत शिल्पाबति करन । जय परम प्रजावत्सल सदा सत्य प्रिय जय श्रीरिपन ॥२॥ राजतंत्र के पंडित तुम जानत प्रयोग खट ॥ स्तम्भन कीनो राज बाक्य करि अटल नीति भट ॥ जनदुख भारन उच्चाटन ह्वै बिद भाग जग । बिद्वेषण स्वारथी मिलित दल मह न्यायमग ॥ आकर्षण अब सब जनन को निज उदार गुण प्रगटकर । जय मोहन मंत्र समान निज बाक्य बिमोहित देश बर ॥ ३ ॥ जय भारत नभउदित रिपन चन्द्रमा मनोहर । शुक्ल छाया सम तेज तदपि जस अपजस बिधि कर ॥ जस चन्द्रिका बिकासि प्रजा श्री उन्नति मारन । बाक्य अमृत बरसाइ किए आल्हादित नर जग ॥ सत्यांक बगबिल सो लसत अमसन कुमुद प्रफुल्ल तर । सताइस रैन प्रवास सम सजाइस शुभ कर्मकर ॥ ४ ॥ जय हीरयपति रिपन प्रजा अघशोक बिनाशक ॥ गङ्ग जमुन सम मिलित तदपि जान्हवि मरजादक ॥ अक्षयवट सम अचल कीर्ति व्यापक मन पावन । गुप्त सरस्वति प्रगट कासीअन मिस दरसावन ॥ कलिकलुष प्रजागन भीति कों सब बिधि मेटन नाम रट । जय तार न तरन प्रयाग सम जस चहुं दिसि सब पै प्रगट ॥ ५ ॥ जदपि बाहुबल क्लाइव जीत्यौ सगरो भारत । जदपि और लाट नहूं को जन नाम उचारत ॥ जदपि हेसटिङ्ग आदि साथ धन लै गये भारी । जदपि लिटन दरबार कियो सजि बड़ी तयारी ॥ पै हम हिन्दुन के हीय की भक्ति न काहू संग गई । सो केवल तुमरे संग रिपन छाया सी साथिन भई ॥ ६ ॥ शिबि दधीच हरिचन्द कर्ण बलि नृपति युधिष्ठिर । जिमि हम इन के नाम प्रात उठि सुमिरत हैं थिर ॥ तिमि तुम हूं

कहं निसहि सुमिरि हैं तुव गुन गाई।
यासों बढ़ी अनुराग कहां का सकाग दि-
खाई॥ इम राजभक्ति को बीज जौं अब
लौं उर अन्तर धरयौ। निज व्यावहार सौं
सींचि कै तुम तामें अंकुर करयौ ॥ ७ ॥
निज सुनाम के करन किए तुम सफल
समहि विधि। रिपु सब किए उदास दई
हिय राजभक्ति सिधि॥ महराजी कों पन
राख्यो निज नवल रीतिबल। परि सब
न्याय तुला के मध्य राख्यौ सम दुहु दल॥
सब प्रजा पुंजसिर आप को रिन रहि है
गइ सर्व क्षम। तुव नाम देवसम नित
जपत रहि हैं हम हे श्रीरिपन ॥ ८ ॥

हरिश्चन्द्र।

धन्य इलाहाबाद की भाग्य।

न जानिये किस शैतान की साया इस नगर पर आ पड़ी है कि जिधर नजर उठाकर देखो उधर अंधेराही अंधेरा देख पड़ता है। सेल्फ गवर्नमेंट हुई नये इलेक्शन से लोग कूद २ म्यू,निसिपल मेम्बर होने की कोशिश में उतारू हुए किसी ने कहा हम डाक्टर हैं हमे चुनोगे तो नगर की सफाई में कोई कसर बाकी न रहेगी। किसी ने कहा हम रईस आज़म हैं हमारा सब तरह का दाब सब लोगों पर है तब यह क्योंकर मुमकिन है कि हमे छोड़ कोई दूसरा मेम्बर चुना जाय---किसी ने कहा हम कई साल से इस काम को कर रहे हैं और म्यु,निसिपालिटी की रग २ नस २ से वाकिफकार हैं अत एव हमारा होना अति आवश्यक है; इस जुद्दा हो सब की बहुरो चवाने लगे कि अब हमे आत्मशासन मिला अब इस नन्दन वन के विहार करने वाले देवता तुल्य हो जांयगे--पर तीन महीने बीत गये कोई करतूत अब तक देखने में न आई--रात का अन्धकार वैसाही बना रहता है मैली गलियों मे मेहतर साहब का साम्राज्य जैसे का तैसा बना ही है खुली नालों की बदबू हमारे सिर चढी गाजती हो है; हाय जब इस खुली नाली की सुध करते हैं तो रोंगटे खड़े हो

जाते हैं--ईश्वर इस खुली नाली ईजाद करने वाले को जहन्नुम रसीदा करे हजार २ सिर पटका पर एक भी सुनाई न हुई--आशा थी कि मोहल्ले २ पैसाइश हुई है पानी की कल निकाली जायगी तब उसी के साथ इस खुली नाली का बन्दोबस्त हो जायगा सो अब सुनने मे आता है कि वह सब सपने की बातें थीं—टांय टांय फिस-- व बोल गई बाबा की चारो दिशा--तो अब निश्चय हुआ यह खुली नाली अवश्य सेवप्राण की गांहक है यहां तक तो म्युनिसिपलिटी दुश्चरित्र की अध्याय हुई—अब पुलिस की लीजिये जिसका चरित्र गाते २ हमने उमर की उमर खेडाली यह किसे मालूम नहीं कि हाल मे जो हमको बड़ी भारी दक्षिणा मिली थी वह इसी चरित्र के गान की बदौलत--परन्तु इस पुलिस गान महा नाटक के मुख्य नायक और उनके परिकार चाकर के चूकर सिंह श्वान आदि हिंस्त्रों का यहां चिरस्थायित्व कण्ठ गत प्राण होने पर भी दूर होने वाला नहीं है—हम तडकीक कहते हैं यहां की वर्तमान पुलिस का whole staff दल का दल बहुत दिनो से एकही जगह स्थायी रहने से वेरोब और रूपया अधिक जमा कर लेने से काहिल पड़ गया है इनमे थोड़ी सी अदला बदल बहुत जरूरी हैं। नहीं तो चोर और बदमाशों का जो हम पर इतना जोर है वह कभी न घटेगा।

अब दूसरी कथा आरंभ करते हैं नाजानिये क्या हाल मे कहता है कि इस अन्धा धुन्ध को शिक्षा विभाग के कोई प्रधान महाशय कभी ध्यान नहीं देते काई सरकारी महकमे या शरिस्ते ऐसे नहीं है जिनमे टट्टी पंखे का खर्च सरकार की ओर से न मिलता हो टूटे से टूटा महकमा है वहां भी गरमियों मे पंखा कुली के खर्च मे सरकार को कभी उजर नहीं होता पर यहां के सरकारी

स्कूल मे इस लिये लड़कों एक एक आना उगहनी होती है-छि: ऐसी छोटी बात कहते भी शरम आ-ती है—खैर गरमी गई जाड़ा आया पंखेकी जरूरत बाकी न रही तो अब पांच पैसा फी महीने फी लड़कों से अलावा फीस के किस बात का लिया जाता है? जान-ते नहीं यह क्रिकेट का ५ पैसा है यह बरेली आदि स्थानो का स्कूल नहीं है कि क्रिकेट का आधा खर्च फीस से दिया जाय—मागा छोटे लड़के अभी क्रिकेट खेलने लायक नही हैं तो बड़े होने पर तो गेंद तोड़ेंगे और फिर सब के ऊपर हमारा मन धीग धींगा तो है तुह्मारा साझा गरीबों के लिये तो सरकार की मनसा ही नहीं है कि उनके लड़के भी ता-लीम पावें--ऐसी तंग दस्ती मे तु-ह्मारा कहां ठिकाना लग सक्ता है सालमे ३ बार unnecessary बिना जरूरत की किताबें इस-को जारी करना ही चाहिये वला से किताबें रद्दी हों—हम अपने मातहतों की खुशामद का क्यों कुछ खयाल न रक्खें शर्िस्त तालीम मे सबो लोग बड़े सुनभो और आलिम ठहरे किनको अव-ज्ञा और निरादर करें बस इतने ही से घबड़ा उठे अभी तो कित नी गुप्त बातें हैं जिस्का तुम पता भी नही पा सक्ते--तब इसी लिये तो हमने कहा कि इलाहा बाद के धन्य भाग हैं।

—ooo—

पृथ्वी के महाद्वीपों की अपूर्व व्युत्पत्ति।

एशिया--असल मे ऐशिया अर्था त् ऐश की जगह।

योरूप "यो रूपो विद्यते अन्द्र सबको ले जांयगे हमी" रूपया या रूपा चांदी को कहते हैं बस सारी दुनिया की चांदी लूटने वालों की वास भूमि।

आफरिका असल मे "काफ-रिका" अर्थात् काफरों की जन्म भूमि कालान्तर होने से काफरि-का का ककार उड़ गया।

आमेरिका असल मे "आमेरुक" अर्थात् मेरू पर्यन्त प्रसारित देश कोई २ "अमेरिका" अर्थात् अमर देवताओं की ज़मीन कहते हैं---और दिहाती हक़ बन्दो मद सों के लड़के इस्के अन्त से की मिलाकर--आ--मेरी---काको पढ़ कर खूब हंसते हैं बहुतेरे इस्का "आम्वेरिका" पुकारते हैं और समझते हैं इसमें आम और बेर बहुतायत से होते हैं।

आस्ट्रेलिया---असल मे "अस्त्रालय" हिन्द के प्राचीन अस्त्र मुसल्मानो के आने पर इस महाद्वीप को भाग गये-लेकिन चूंकि अपने खास वतन का मुसीबत के वक्त दगा देकर दूसरे मुल्क मे भाग गये इस लिये खुदा के यहां से हुक्म हुआ कि इन सभों को अंगरेज़ों के हवाले कर दो---पस अब उन्ही के पास हैं आस्ट्रेलिया भी उन्ही के कब्ज़ मे हैं।

बीमार हिन्द के लिये सिहतावर जोशांदा।

फूट के कड़ुये दाने ६ माशे।

तुख्म कुढंग १ तोला।

ज़िद्द और काहिली की सूखी फली २ तोला।

रोगन फसाद ८ माशा।

गुल गुलामी ३ माशे।

मग्ज पंडिताई---३ तोला।

इन सब दवाइयों को कूट पीस कपर छन कर ५ सेर काले पानी मे चढ़ा दो जब पानी जलते २ छटांक रह जाय तब सेर भर बर्फ और सोडा वाटर मे मिलाय मियां हिन्द को पिला दो और नीचे लिखा मरहम उस्के बदन भर मे पोत दो तो ज़रूर सब नसूर फोर न दूर हो घावों को पुरा देगा।

मरहम।

विलायती कुतिया की ज़बान।

अंगरेज़ी लियाकत का तेल।

लाल समुद्र का पानी।

काले आदमी की मोमियाई।

यकीन कामिल रक्खो इन दो दवाइयों से हजरत हिन्दुस्तान को

ज़रूर आराम हो इस बुढ़ापे मे भी एक बार फिर पहले की से हट्टे कट्टे संड मुसंड हो उठैंगे ।

हकीम—पस्त दिल—शिकस्त ख़्याल—खफ़गान । लुकमान ।

—०—

गटा परचा ।

गटा परचा जोरवर के नाम से बिदित है एक प्रकार के वृक्ष का जमा हुआ दूध है यह वृक्ष हिन्दुस्तान के पूर्व मलाया देश और उसके निकटस्थ टापुओं मे होता है डाक्टर बिलियम मान्ट गोमेरी और सरजोज़ डी आलमोडा ने पहले पहल यूरोप मे इसका प्रचार किया । ये दोनो साहब बहुत दिनो तक मलाया देश मे रहे हैं । सन ईसवी १८४३ मे सरजोज़ आलमोडा ने थोड़ा सा गटा परचा बतौर नमूने के लण्डन की एशियाटिक सोसाइटी को भेजा था परन्तु डाक्टर बिलियम मान्ट गोमेरी साहबने इसके गलाने और उत्तम २ वस्तुओं के ढालने की युक्ति निकाली इस लिये उक्त साहब को इसका प्रधान समझना चाहिये । डाक्टर साहब ने इसके गलाने और ढालने ही की युक्ति नही निकाली वरन उस वृक्ष के बढ़ने और दिन प्रति दिन वृद्धि होने की भी उपाय सोंचे नही तो ऐसो ही खींच इस लाभ दायक वस्तु की रहती तो कुछ दिनो मे ये वृक्ष निर्मूल हो जाते और फिर गटा परचा का मिलना दुर्लभ हो जाता और सैकड़ों चीजें जो इससे बनती हैं कहीं मयस्सर न होती । गटा परचा के प्रचार के थोड़े दिन बाद तक बिलायत के लोगों को भी इसके निकालने की रीति इसकी उत्पत्ति और यह क्या वस्तु है यह सब एक भेद रहा जैसा आजकाल हम लोगों को है; प्रायः यहां के सर्व साधारण यही समझते हैं कि यह किसी जानवर का चमड़ा या किसी जीव का जमाया हुआ रुधिर है इसी प्रकार अनेक तर्क बितर्क उठा करते हैं । इसका वृक्ष ४० से ७० फुट

तक ऊंचा होता हैं मलायाप्राय द्वीप के देश भर में यह उगता है परन्तु पहाड़ों की तराई में विशेष होता हैं पत्तियां इसकी विलायती सेहुड़ के समान होती हैं ऊपर की तरफ हरी और नीचे रोंयेदार भूरे रंग की होती है। गटा परचा जमा हुआ दूध है जो इन्हीं वृक्षों की नसों में भरा रहता है। मलाया वाले इन वृक्षों के धड़ में खड्ढा बना देते हैं जिस्मे से दूध चूने लगता है और काछ २ मिट्टी के बर्तन में रखते जाते हैं। उसी प्रकार जैसा ताड़ी काछी जाती है। एक वृक्ष से एक बार लग भग १० सेर के दूध निकलता है तद्देशीय लोग उन वृक्षों में से निकालते हैं और उन वृक्षों की नसों को भी भली भांत पहचानते हैं। यह दूध काछने के उपरान्त घाम में सुखाया जाता है और तब गटा परचा तैयार होता है। सच्चा गटा परचा कुछ सफेदी लिये रहता है पर बाजारू मैला भूरे रंग का होता है यह पानी में नहीं गलता और आग में भी बहुत काम गलता है पर राल के योग से जल्द गल जाता है और कोई ऐसा तेजाब नहीं है जो इसे गला सके सिवाई सलफाइड आफ कारबन By Sulphide of carbon के दो तीन प्रकार के तेल भी हैं जिस्मे यह गल सक्ता है जैसा बेनजाईन Benzine और न्यापथा Neptha इत्यादि यह बडी उपयोगी वस्तु है इस्से वार्निश लेई। सांचे। कंघी। पेंसिल का लिखा मिटाने के लिये रबर इत्यादि बनते हैं जिनका अलग २ हाल हम आगे के अंक में प्रकाश करेंगे॥

—•—

नया इतिहास।

मान्यवर।

प्राय: दो वर्ष हुए आपसे निवेदन किया था कि राजा शिवप्रशाद के इतिहास तिमिर नाशक को इन प्रदेशों के स्कूलों से उठाने का निश्चय प्रयत्न कीजिये

आपने इस विषय का पत्र अपने प्रदीप मे छाप मुझे कृतार्थ तो किया पर राजा साहब की जघन्य इतिहास के उठाने का आज तक किसी ने कुछ उद्योग न किया भाग्यवश हंटर साहब का इतिहास ऐसा उत्तम बन कर तैयार हुआ कि युनिवरसिटी ने इसे इंट्रेंस परीक्षा मे नियत करना उचित समझा इसी कारण इस हत भाग्य पश्चिमोत्तर और अवध के शिक्षा बिभाग के अफसरों की भी दृष्टि इसपर पड़ी और आज राम राम कर दो युग पीछे राजा सितारे हिन्द के इतिहास तिमिर नाशक का निष्कासन यहां के शिक्षा विभाग से किसी तरह पर किया गया। हम आशा करते हैं यावत् देशानुरागी मात्र इस बात से प्रसन्न हुए होंगे। पर खेद अब यह है कि हंटर साहब के इतिहास का अनुवाद यथा योग्य नहीं हुआ। उर्दू से तो हमे कुछ प्रयोजन नहीं पर जो हिन्दी का अनुवाद देखने मे आया उससे एक बात और दृढ़ तर हुई कि कैसी असावधानी से यहां के शिक्षा विभाग का काम लुढ़क रहा है हम प्रमाण पूर्वक कह सक्ते हैं कि शिथिल स्वभाव ग्रिफिथ साहब के अधिपत्य का यही फल प्राप्त हुआ कि शिक्षा विभाग मे इतनी असावधानी और शिथिलता आ गई फिर स्कूलों मे पढ़ने पढ़ाने की पुस्तकों मे तो नितान्त असावधानी पाई जाती है। हम नहीं जानते इस इतिहास का अनुवाद किस अनोखे विद्वान ने किया है इसके भद्दे लेख से ऐसी उर्दू हिन्दी की खिचड़ी पकाई गई है कि राजा साहब को भी लज्जित कर डाला। गढन्त भी ऐसी बेढंगी कि अनुवादकारक महाशय की योग्यता सराहते ही बनता है जैसा "आस्मान के पिंड" "Heavenly bodies" "खोगई अंगूठी" last ring प्रेम रंज "Love and sarrow" इत्यादि—यदि ऐसे २ वाक्यों को छांट के इकठा किया

चाहें तो आप के प्रदीप के कई पृष्ठ भर जांयगे जिन बातों के लिये सरल कोमल हिन्दी शब्द विद्यमान हैं उनकों स्थान में भई उर्दू के वाक्य हम जानते हैं किसी हिन्दी पाठक को न रुचेंगे जैसा वफादार बीबी के स्थान में पतिव्रता स्त्री क्यों न हो "आदमी का बलिदान" न रख कर "नरबली" क्या बुरा है "बुद्ध का बनवास" न रख कर "बुद्ध की जंगल की जिन्दगी" लिखा गया है धन्य है अनुवादकारक की जंगली अकिल ऐसी २ कितनी अनर्गल गढ़न्त उस पुस्तक में भरी हैं। शिक्षादित्य और शुद्धोदन के तालव्य श को दन्त्य स से बदला है। अब अन्त में अनुवाद कारक महाशय से निवेदन है कि उर्दू शब्द जितने कम हो सकें उतने कम कर इस पहले खण्ड को फिर से भली भांत शुद्ध कर छपवावें—अंगरेजी पढ़े अध्यापकों के हाथ में इस पुस्तक के रहने में कम डर है पर जो केवल हिन्दी जानते हैं वे उसका आन का तानही अर्थ करडालेंगे—ऐसे उत्तम पुस्तक के अनुवाद के लिये तो चुने २ विद्वान रक्खे जाने चाहिये जिस्में यह अनुवाद पठन पाठन के योग्य हो पर किस्से कहैं हमारे यहां के शिक्षा विभाग में तो खास कर ग्रिफिथ साहब के जमाने में योग्यता की standard परिभाषा ही कुछ और है इत्यलं।

शिक्षा विभाग का एक हितैषी
अल्मोड़ा।

—•—

मुकरी श्रीहरिश्चन्द्र चन्द्रिका से।

॥ रत्नं समागच्छतु कांचनेन ॥

यद्यपि इसे समाचार पत्र उद्धृत कर चुके हैं परन्तु यह इतनी उत्तम और कामप्रिय है कि इसे यहां स्थान देने के लिये पाठकों से क्षमा चाहते हैं। १।

सब गुरु जन को बुरी बतावे। अपनी खिचड़ी अलग पकावे॥ भीतर तत्व न झूठी तेजी। क्यों सखि सज्जन नहिं अंगरेजी १।

तीन बुलावे तेरह आवे। निज २ विपदा रोइ सुनावे। आंखो फूटे भरम पेटा।

क्यों सखि सज्जन नहिं ग्रेजुएट ॥ २ ।

सुन्दर बानी कहि समुझावैं। विधवा गनकों नेह बढ़ावैं। दया निधान परम गुण आगर। क्यों सखि सज्जन विद्यासागर ॥ ३ ।

मोटी देकर पास बुलावै। रुपया लेतो निकट बुलावै। लै भागै मोहि खेलै खेल। क्यों सखि सज्जन नहि सखि रेल ॥ ४

धन लेकर कुछ काम न आवै। ऊंची नीची राह दिखावै। समय पड़े पर साधै गुंगी। क्यों सखी सज्जन नहिं सखि चुंगी ॥ ५ ।

मतलब ही की बोलै बात। राखै सदा काम की बात। डोले पहिने सुन्दर समला। क्यों सखि—अमला ॥ ६ ।

रूप दिखावत सरबस लूटै। फन्दे मे जो पड़ै न छूटै। कपट कटारी हिय मे हुलिस—पूलिस ॥ ७ ।

भीतर भीतर सरबस चूसैं। हसि हसि के तन मन धन मूसैं। बाहर बातन मे अतितेज। क्यों सखि—अंगरेज ॥ ८ ।

सतयें अठयें मो घर आवै। तरह २ की बात सुनावै। घर बैठाही जोड़े तार। क्यों सखि—अखबार ॥ ९ ।

नई २ नित बात सुनावै। अपने जाल मे जगत फसावै। नित २ नई करे बल सुम। क्यों सखि—कानून ॥ १० ।

उनको उनकी खिदमत करो। रुपया देते देते मरो। तब आवै मोहि करन खराब। क्यों सखि सज्जन नहीं खिताब ॥

मुहजब लागै तब रुढ़ि छूटै। जाति मान धन सब कड़ लूटै। पागल करि मोहि करे खराब। क्यों सखि सज्जन नहीं शराब ॥ १२ ।

रसिक ग्राहकों से प्रति निवेदन।

हम हिं—प्र—की तीसरी जिल्द से सातवीं जिल्द तक के बारहों नम्बर पूरे २ फी जिल्द से पोस्टेज १) मे देंगे इसमे इतिहास परिहास दर्शन विषयक अनेक उत्तम २ प्रस्ताव कई एक नाटक तथा उपन्यास छप चुके हैं और समय २ की राजनैतीक बातों की समालोचना भी उत्तम ढंग से की गई है जिन लोगों को लेना हो शीघ्र ही मूल्य भेज कर मंगा लें। एक रुपया कुछ बड़ी बात नहीं है सिर्फ हिम्मत बांध टेंट ढीली करना पड़ेगा।

सम्पादक महाशय ।

बड़े हर्ष की बात है कि २२ नवम्बर के लोकल गवर्नमेन्ट गजट से ज्ञात हुआ कि ग्रिफिथ साहब के स्थान में व्हाइट साहब एक सिविलियन जो हाल में ज्वाइन्ट मजिसटरेट के पद पर थे अब शिक्षा विभाग के डइरेक्टर नियत हुए—इसको पूर्ण आनन्द तब होगा जब इंस्पेक्टरों की जगह भी असिटेंट कलेक्टर नियुक्त होते देखेंगे--आशा है ये साहब भत्ते के रूपये का उचित और यथार्थ वर्ताव कर शिक्षा विभाग की पोल और अन्धेर का जो अब तक हमारा पिण्ड नहीं छोड़ती और सहस्रों अन्याय का कारण है समूल उच्छेद कर देंगे अब शिक्षा विभाग के पदाधिकारियों को ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिये कि अब उनके अच्छे दिन आये अब कानून के अनुसार उनका न्याव होगा और उनके हक का खयाल हुआ करेगा उनका काम अच्छी तरह देखा जायगा केवल अपसरहो की लिखा पढी पर डेमी अफिशल कारखाई से किसी को हानि न की जायगी लायक और ईमानदारों को यथोचित प्रतिष्ठा और कदर की जायगी और २ शरिस्तों के समान अब यहां भी कोड से न्युएल रूल और रिग्युलेशन तैयार होंगे जिसके द्वारा हर एक आदमी अपना २ काम बाखूबी समझेगा और उसका जिम्मेदार रहेगा--सब जगह एक सा काम एकसी परिपाटी एक सी पुस्तकें एकसी जांच रहेगी और मन मानी घर जानी दूर होगी ग्रेड का प्रबन्ध भी जारी कर दिया जायगा जो अब कहीं पर और किसी बात में पाया जाता है कहीं विल्कुल नहीं है इत्यादि अनेक बातें इस शरिस्ते के सुधराव की होंगी इति ।

शिक्षा विभाग का मर्मज्ञ ।

—•—

प्राप्ति ।

झांसी की लक्ष्मी बाई का वृत्तान्त ।

उचित वक्ता पत्र के संपादक पं—दुर्गा प्रसाद संग्रहीत यह छोटी सी पुस्तक देशानुरागियों के लिये बड़ी उत्तम है झांसी की लक्ष्मीबाई का हाल सुन या पढ़ कर कौन ऐसा का पुरुष होगा जो ब्रिटिश गवर्नमेंट के अविचार संकलित बर्ताव पर दुःख और क्रोध के आवेश में आय उत्तेजित न हो भाषा इसकी अत्यन्त संस्कृत पूर्ण है अत एव क्लिष्ट हो गई है ।

जगदेव ।

ओरकी लाल चौधरी अध्यापक कलहगांव एम—ई—स्कूल कटंक—इसे तो यह पुस्तक बड़ी उत्तम नहीं जचती खैर लड़कों के लिये है अर्थात न कि प्रौढ़ पाठकों को इसकी कुछ आवश्यकता है मूल्य =) ।

“किस तरह मनुष्य की सन्तान में सुन्दर रूप बल बुद्धि और अङ्गों का सुडौलपन उत्पन्न किया जा सक्ता है” यह छोटी सी पुस्तक जोन साहब के लेक्चर का अनुवाद है जिसे मिरजा निवासी बाबू काशीनाथ ने सरल हिन्दी में किया है—गोर वर्ण हो जाने के परम अभिलाषुक नवशिक्षित बङ्गालवालों के लिये हमारे उक्त बाबू साहब का यह बड़ा सहज लटका है—मूल्य =)॥

लण्डन का यात्री ।

इसमें यह दिखाया गया है कि कोई देश कैसा ही सभ्य क्यों नहीं परन्तु प्रकृति सम्बन्धी कार्य वहां भी वैसेही होंगे जैसा किसी असभ्य देश में इस बात को सुस्पष्ट करने को इङ्गलैंड की महा राजधानी लण्डन का कुछ वृत्तान्त इसमें लिखा गया है और २ हिन्दुस्तान की रीत बर्ताव रहन सहन भी उसी प्रसङ्ग में को दरसाया है सो मानो इस पुस्तक के अनूठे लेख में गोट सी लगादी गई है अलबत्ता ऐसे २ लेख हमारी भाषा में बन कर तैयार होते रहैंगे तो कुछ दिनों में हिन्दी भी किसी गिनती में हो सक्ती है इस मास में हमारे पास जितनी पुस्तकें आईं उनमें यह सब से अधिक रुचती है प्रौढ़ पाठकों को इस प्रकार के लेख में अवश्य दिल लगाव हो सक्ता है मूल्य =)॥ कानपूर निवासी बाबू भगवान दास लिखित ।

देवाक्षर चरित्र ।

हास्य रस प्रधान रूपक पं—रविदत्त शुक्ल रचित बलिया आर्य देशोपकारिणी सभा की अनुमति और सहायता द्वारा प्रकाशित उर्दू अक्षरों की दुर्गति इसका मुख्य उद्देश्य है अपने ढंग पर अच्छा लिखा गया है मूल्य डांक व्यय सहित ॥)

मूल्य का नियम ।

अग्रिम २।≤) पश्चात् ४।≤)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

रह सबों का मन आकर्षण कर लिया और इन्हीं को अपना परम हित समझा वैसाही हम सब लोगों को भी समझना उचित है इन्हीं से हमारा प्रश्न था कि हम क्यों रिपन पर इतना मोहित हुये ?

—•—

कवित्त।

A रे।
B र।
C रे ना परहु रण खेत मांहि।
D ल तो निहारो निज दिग्गज ख-खात है।
E य क्यों मनाइ।
F G हत विचारि देश, तुरत विदारि।
H म्नू कितेक बात है ?॥
I J मलेच्छ सेन।
K तो हैं बिचारी भला, खरि।
L राई भाई प्रजा अकुलात है।
M द माने सूर नाम पे न डारो धूर।
N युद्ध औसर पै ढोल ना सुहात है।

एरेबीर धीरेना परहु रण खेत मांहि डील तो निहारी निज दिग्गज अखुलात है। देश को मन हर्य फजीहत बिचारि देश, तुरत विदारिये अम्नू कितेक बात है ?॥ आई जी मलेच्छ सेन केती हैं बिचारी भला खरिये लराई भाई प्रजा अकुलात है। ऐ मद माते सूर नाम पे न डारो धूर ऐन युद्ध औसर पै ढोल ना सुहात है॥

यह ऊपर को कवित्त हमारे परम सहायक पं—श्रीधर जी ने बनाय अवशिष्ट अक्षरों को भरती दूसरी कवित्त के लिये रख छोड़ा है। हमारे रसिक पाठकों में कोई दूसरे महाशय भी इस पर अपना बुद्धि वैभव प्रकाश कर सकें तो उसे भी हम कृतज्ञता पूर्वक स्थान दे अपने को अनुग्रहीत मानेंगे।

—०—

धर्म।

पूर्व प्रकाशितानन्तर।

कला उत्पादन Artist composition के प्रधान अङ्ग प्रायः लग चार प्रकार के मानते हैं मन्दिर या स्तम्भ, चित्र, मूर्त्ति, और पुस्तक इन चारों में से किसी एक निर्मित वस्तु को देखने से मनुष्य के मन में सब के पहले क्या बात आती है ? सोचने से ज्ञात होता है कि यह निर्मित वस्तु केवल चिन्ह या लक्षण मात्र है—फिर तब यह जिस वस्तु का लक्षण है वह क्या है ? यह वह conception ध्यान गम्य वस्तु है

को बहुत दृढ़ रीति पर पहले निर्माण करने वाले के मन में होना आवश्यक है उदाहरण की रीति पर जैसा दुष्यन्त ने शकुन्तला का चित्र और माधव ने मालती का चित्र खींचा था अथवा नीचे लिखा हुआ उत्तर रामचरित के इस श्लोक को लीजिये जिसमें उस प्रकार के चित्र की प्रशंसा की गई है जिसमें केवल कोई स्थिति दिखाई नहीं वरन चैतन्यता भी पाई जाती है।

"अयन्ते वाष्पौघ स्त्रुटितइवमुक्तापरिसरो विसर्पन्धाराभिर्लुठति धरणींजर्जरकणः। निरुद्धोप्यावेगो स्फुरदधरनासापुटतया परेषामुन्नेयो भवतिचिरमाध्मातहृदयः" ॥

इस श्लोक के तात्पर्य समझने वाले जान सक्ते हैं कि कैसे सजीव चित्र का वर्णन हुआ है—फिर क्या कभी सम्भव था कि कागज पर उस वस्तु को उतारे कर वे लोग साफ २ देखला सक्ते जो उनके मन ही में नहीं थी? कदापि नहीं हमारे यहां के स्तूप और स्तम्भ आदि को देखिये जिनके निर्माण की रीति Architectural style को विश्व के किसी विभाग के स्वच्छ कारीगरी में पाते ही नहीं जिनके दबे दबाये टूटे फूटे टुकड़े अब भी कहीं मिल जाते हैं तो उन्हें Antiquarian प्राचीन विवरणविद बड़े आदर और प्रतिष्ठा के साथ रखते हैं—बौद्ध धर्म की मूर्ति अब तक मिलती है जिनसे केवल बाहर की आकृति और रूपही नहीं वरन मानसिक चेष्टा भी सूचित होती है—तब क्या बिना जड़ पेड़ के यह सब रचना हुई थी या होती है? कदापि नहीं।

ठीक इसी तरह पर पुस्तक बनाने या अपने सिद्धान्तों को लिपिबद्ध कर छोड़ जाने को लीजिये—क्या पुस्तक बनाने की संसार में यही रीति है कि लाख दो लाख अक्षरों को काट २कर बाद कांच के पेट में छोड़ दे और उसकी पछियाघुमामा शुरू कर दे और उसमें से जो २ अक्षर निकलते आवें उनको लेले कर इकट्ठा करता जाय जब उनको जोड़ देगा तो सुन्दर पुस्तक बन जायगी कि पढ़ने वाले फड़क उठें? क्या इसी तरह संसार में काव्य और दर्शन बनते आये हैं? कदापि नहीं—अंगरेजी की एक कहावत है "Behind the work is the worker" यदि हमारी यह इच्छा है कि किसी काम को समझें तो उस काम के करने वाले के मन की दशा को भी समझना चाहि-

ये अर्थात कार्य का पता बिना कारण के नहीं लगेगा और यही नियम धर्म संबन्धी बातों मे लगाना चाहिये सुतरां धर्म सम्बन्धी विषयों मे जैसा कि और २ जगह भी पहली बात यही होनी चाहिये कि यदि हम कोई सिद्धान्त को (बिल्कुल सूक्ष्म रीति पर भी) प्रवीन देखते हैं तो भी उस्के यावत् अर्थों का समझने वाला और उस्के सम्पूर्ण अङ्ग उपाङ्ग का वेत्ता कोई अवश्य रहा होगा और यदि वह विषय ऐसा है कि उस्मे सोचने की नही बल्कि कुछ करके देखला ने की भी आवश्यकता है तो ऐसे और २ विषयों पर भी लोगों के लिखे हुये सत्य मिलते हैं तब अवश्य यह विश्वास हो सक्ता है कि उन लोगों ने काम करके अपनी परिपक्व बुद्धि का फल लिखा है क्योंकि उसदे और जचे हुये खयालात कोई ऐसी चीज नहीं हैं जो लोगों को पड़े पड़ाये राह चलते मिल जांय।

यह तो एक बन्धी हुई प्रणाली हुई किन्तु इस विषय के मण्डलही से यह बात निकली कि सब लोगों को उसी राह पर चलने मे आराम नहीं होगा वरन हम तो यह भी कहैं गे कि यदि धर्म सम्बन्धी विषयों पर मनुष्य अपने जी से कुछ सोच सक्ता है और ऊपरी बकवाद या दुनिया दारी को दूर कर किसी ठीक बात का पता लगाना चाहता है और धर्म सम्बन्धी झगड़ों को केवल इसी बात से ते नहीं करता कि लाल चन्दन लगाना चाहिये या सुफ़ैद माथे मे खी की सीधी रेखा देना चाहिये या त्रिपुण्ड की आडी देह भर मे सेर भर राख पोतना चाहिये या डेढ़ सेर इस दूर तक सोचने से तो यह फल होगा कि लोगों की श्रेणी की श्रेणी को कौन कहै दो मनुष्य का भी मत कभी एकमन न होगा—आपने कृपा कर एक राह खोल दिया इस्का हम आप को सदा धन्यवाद देंगे पर साथही हम अपना शोक भी प्रगट करते हैं कि हम आपके साथ नहीं चल सक्ते—इस मत भेद के प्रमाण के लिये हमारे ही यहां के दर्शनो को देखिये पहले एक दर्शन का जन्म हुआ कुछ काल उपरान्त एक दूसरे दर्शन का प्रचार हुआ फिर और भी—थोड़ा सोचने वाले नाहक इस बात को तकरार करते हैं कि आप मीमांसा के मत के हैं आप न्याय दर्शन के सिद्धान्तो पर आरूढ हैं इत्यादि—हम से पूछिये तो हम सब दर्शनो को एक मानते हैं क्या हुआ जो एक की बात दूसरे से नहीं मिलती

जब हम जानते हैं कि सब एकही वस्तु की खोज में लगे हैं तो और दूसरी जिस बात से लाभ हो वह करें आपस में कलह करने से तो कुछ न होगा वरन आपस में एक दूसरे का साथी समझना चाहिये—एक दूसरे का अङ्ग हैं और एक बिना दूसरे के खण्डित है—दो पथिकों को आपस में केवल इसी बात के लिये लड़ना न चाहिये कि उनका रास्ता एक नहीं है यदि लड़नाही है तो सब मिल कर झूठी बातों के साथ लड़ें बनावट को दूर कर उसके बदले सच्ची बातें लावें यहां पर हमको एक अंगरेजी कहावत बहुत ठीक मालूम होती है "Man is born to wage war against the empire of falshood or insincerity"— अर्थात मनुष्य का जन्म हो इस निमित्त है कि वह मिथ्या और पाखण्ड के साम्राज्य के विरुद्ध सदा बैर भाव रक्खे और लड़ा करे।

लोग बहुधा पूछते हैं "आप ईश्वर को मानते हैं या नहीं" हमारी समझ में इससे बढ़ कर व्यर्थ का प्रश्न दूसरा न होगा और यदि इससे बढकर निरर्थक कोई बात है तो इसी प्रश्न का उत्तर इसके उत्तर में न हम हां कह सक्ते हैं न नहीं क्योंकि यह सब प्रश्न सोचने के पकड़ी बन्दगी इसका उत्तर आप नहीं दे सक्ते एक दो दिन में आप उसको न समझेंगे किन्तु बरसों तक लोग इसके एक २ खण्ड को सोचा करते हैं और हमारे यहां के ऋषियों से पूछिये तो कहेंगे कि लाखों वर्ष इसके लिये बहुत नहीं है— धर्म के इसी Higher aspect को हमने अपना तीसरा खण्ड माना है ऊपर की बातों से स्पष्ट है कि भिन्न २ मानसिक शक्ति के लोग भिन्न २ रास्ते से इस बात को सोचेंगे परन्तु एकही अन्त सब का है अर्थात् The great unknowable अलक्ष्य अगोचर अचिन्त्य अपरिमेय की थोड़ी सी झलक पा जाना।

क्रमशः।

—•—

नई रोशनी का विष।

पूर्व प्रकाशित नम्बर।

तृतीय अङ्क। प्रथम गर्भाङ्क।

स्थान।

विश्व मित्र के मकान का एक कमरा ताखों पर मिट्टी के देवताओं के खिलौने पुराने घड़ी—दो तीन देहाती आरपाइयां जमीन पर चटाई का फर्श।

दो देहाती लड़कियों का प्रवेश।

१ स्त्री—जा बाहर से पूजा का फूल तोड़ ला—बैठी २ क्या करती है—आग्र-

र न लगे पेत मे खाने को मिलता जाय।

२ री—जा तूही नहीं तोड़ लाती—चुडेंा इतना दिन चढ़ाकर उठी है तो अब लगी हमें घोटने निगोड़ी नही तो मुझको वहन ने बुलाया है मैतो जाती हूं (बाहर गई) (सरला का प्रवेश)

सरला—भैया कहां हैं?

१ ली—लड़की—अभी तो न भैया आये और न बड़े बाबूजी।

सरला—(घडी को ओर देख) साढ़े ग्यारह बज गये और अभी तक कोई न आया—मा आसरा परखते २ थक गईं (खिड़की से देख) हो आ तो रहे हैं भैया) चल मा से कह दें कि उकताय नहीं (दोनो गई)

भानुदत्त का प्रवेश।

भानु—क्या यहां कोई नही है (बैठ कर) अहा! अगर सदा ऐसही जिन्दगी कटती तो फिर क्या था—इम्तिहान मे उमदा तरह से पास होने को भी हमको उतनी खुशी न हुई थी जितनी कि हम चार चार दिना से घर मे चुपचाप बैठे रहने से हुई—इस प्रान्त मे जब से हम आये तब से आस्मान साफ़ बहुत कम रहता है पर अपने मन को ओर जो देखते हैं तो उलटो बात दिखलाई देती है कलकत्ते मे तो इसके लिये नित्य दुर्दिन था—कलकत्ते का रहना बुरा स्वप्न था और बहुत देर तक हम उस दुस्स्वप्न को देखते रहे—खैर अब चौंके हैं तो फिर उसी बुरे स्वप्न को फिर २ याद करना कुछ ज़रूर नही है। (उठ खड़ा होता है)

(सौमन्तिनी का प्रवेश)

भानु—(आगे बढ़ कर) सरला कहां हैं मां? हम कब से यहां बैठे उनको इन्तिजारी कर रहे हैं।

सौमन्तिनी—वाह बेटा उलटा हमीको उलहना देते हो हम और सरला दोनो कब से आसरा परख रही हैं तुम्हारे लिये बैठे २ जी ऊब गया।

भानु—क्या कहें मां—लोगों से मिलने का ऐसा काम आ पड़ा है कि पल भर की छुट्टी नहीं मिलती।

सौमन्तिनी—बेटा तुम से तो छिन भर के लिये भी भेंट होती है तो ऐसी २ बातें कहने लगते हो कि हम से चुप रहते भी बनता है (मुस्करा कर) हम नहीं समझती कि कलकत्ते का इम्तिहान दे इसी लिये घर आये हो कि घर के लोगों की बात चीत की कौन कहे दरसन तक मोहाल हो गया और बाह-

रहो के लोगों से मिलते फिरो तीन बरस तक बाहर रहने का यही फल हमें क्या मिला ?

भानु—मां दिन रात तो तुम्हारी ही सेवा में रहते हैं सिर्फ शाम सुबह जरा पिता जी के साथ बाहर—

सीमन्तिनी—कहां दिन रात यहीं रहते हो—क्या कानून का इमतिहान दे झूठ बोलने में भी पक्का होना उचित है ?

अपने पिता जी को कहां छोड़ आये ? आज आवें देखो हम लड़ती हैं कि लड़का को कलकत्ते इसी लिये भेजा था कि तीन बरस बाद आया भी तो हमारे पास न रहने पावे।

भानु—आप जो चाहें सो कहें (सिर नीचा कर लेता है)

सीमन्तिनी—सरला— सरला — यहां आ बेटी देख तेरे भाई आगये।

सरला का पुनः प्रवेश।

सीमन्तिनी—जा देख तो पिता जी क्या करते हैं ? आज खाने के लिये बड़ी देर किया।

सरला—अभी बोला लाती है (गई)

(विश्वमित्र का प्रवेश)

सीमन्तिनी (विश्वमित्र से) कौन स ऐसा बड़ा काम तुम्हें लगा रहता है कि लड़का को लिये बाहरे बाहर घूमा करते हो—तीन बरस मेहनत करते २ पच मरा घर में आया तो बिचारे को सांस भी नहीं लेने देते कि दो चार दिन आराम से घर बैठे तो ?

विश्वमित्र—काम तो कुछ नहीं लगा रहता—है क्या ?—पर क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे साथ पैर बांध घर ही में चुप चाप बंधा पड़ा रहे और तुम्हारे गोद में बैठ कर कानून की कारवाई करे—जाओ बेटा तुमको भूख लगी होगी हम भी आतेही हैं यह झगड़ा तो होता रहैगा।

सीमन्तिनी-अच्छा २ फिर कोई जून बात करलेंगी।

(सीमन्तिनी, भानुदत्त, सरला गये)

विश्व। (स्वगत) पच्चीस वर्ष बीते होंगी एक वह दिन था कि पिताजी सुरधाम सिधार गये और थोड़ी सी पृथ्वी हमारे लिये छोड़ गये। परन्तु तब इस गांव में हम किसी गिनती ही में नथे और सदा यही भय मन में रहती थी कि यदि कोई अदालती झगड़ा उठा तो फिर किसी काम के न रहेंगे परन्तु अपने मि-

न के अनुभव से हम यह कह सक्ते हैं कि लड़ने वालों से लड़ाई करवाने वाले अच्छे रहते हैं। हमारे छोटे भाई हम से अलग हो दूर जा बसे तो क्या हुआ अपना प्रेम प्रतिनिधि स्वरूप हमारे सहारे को छोड़ गये। और भानुदत्त को तो वह अपनेही पुत्र के समान समझते हैं (ठहर कर) कुछ पिता जी के दबाव से कुछ अपनी ही नेक चलनी से और २ हमने उस बाप दादों की मीरास को यथावधि बढ़ातेही रहे। भानुदत्त को यहां आये कुल पांचही दिन हुए हैं परन्तु वेही लोग जिनसे हम दबते और डरा करते थे अब दौड़ २ कर हमसे आय मिलते हैं और जब से भानु आया है लोगों से उस्की भेंट मुलाकात कराते २ हमें छुट्टी हो नहीं मिलती कि घर का कुछ काम काज देखें भालें (फिर थोड़ा ठहर) जिस कानून के बल से हमारे पट्टीदार कूदते फिरते थे वह अब हमारे हो हाथ में आ गया है। हम जब २ ईश्वर से पुत्र के लिये प्रार्थना करते थे त्यों यही मनाते थे कि ईश्वर ऐसा पुत्र दे जो हमारी इज्जत को पट्टीदारों के नित्य के लड़ाई झगड़ों से बचावे (हाथ जोड़) धन्य प्रभू तूने बड़ी दया को कि अब हमको कुछ और मांगने की लालसा हो न रही हमारी जो कुछ इच्छा रही वह पूरी हो गई यदि अब और कुछ अभिलाषा है तो यही कि घर बार सब अपने सपूत लड़के को सौंप एक कोने में बैठ अपने अन्त समय तक माला जपा करें और लड़के वालों का सुख देखें। बहुत अतिकाल हो गया चलें अब हम भी भोजन करें (गया) क्रमशः

—०—

पुलिस की निद्रा भंग।

ऐसा जान पड़ता है कहते २ अब यहां की पुलिस ने कुछ २ सावधानी ग्रहण किया है। यद्यपि चोर और बदमाशों का तो अब तक कोई तदारुक देखने में नहीं आया पर रोज रौंद के घूमने और दो एक ठौर जुआ खाने की कुछ चौकसी से बोध होता है कि पुलिस अब अपनी दीर्घ निद्रा से चौंक पड़ी है। अब इस समय इस महकमे वाला अफसर को चाहिये इन का सहायक हो इन्हें इस काम में बढ़ावा दे जिस्में इस महकमे की अवतरी दूर हो-

कर जो रोष हम सब भले मानुषों को त्राण दे रहा है वह बदमाशों पर जा गिरे शहर साफ़ हो जाय खल कुढंगों से हमारी रक्षा हो। म्युनिसिपालिटी को चाहिये गली २ रोशनी का बन्दो बस्त कर दे तो चोरों के भय से जो हम लोगों को रात रात भर जागते बीतता है सो क्लेश निवृत्त हो क्योंकि जब तक गलियों मे यमद्वार का सा ऐसाही अन्धकार छाया रहेगा तब तक पुलिस हजार चौकसी करे कुछ नहीं हो सक्ता।

—०—

प्रेरित ।

सम्पादक महाशय ।

इन प्रान्तों का शिक्षा विभाग जो इन दिनो अति दूषित और अप्रतिष्ठित हो रहा है उसपर सरकार की नजर पड़ने की जो हाल मे दो एक चुटकुले आप के पत्र मे छपे उन्हें पढ़ मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई यद्यपि हमारी तुच्छ बुद्धि मे सरकार की पालिसी तो कुछ औरही तरह की लखती है पर तौ भी भलाई के लिये कहने मे जिसे अपना और देश का लाभ हो हिचकिचाना उचित नहीं है कभी तो इसका फल निकलैहीगा आपने इस महकमे की बहुतसी बातों पर लक्ष्य नहीं किया इस लिये मै भी आप को दो एक बात लखाये देता हूं जैसा कि कम तनखाह वाले अध्यापक जिनसे कुलियों की भांत काम लिया जाता है और लड़कों को समरत हद से जियादह जो काम दो या तीन आदमी से हो सक्ता है उसे एक आदमी अच्छी तरह क्योंकर अंजाम दे सक्ता है बहुत सा काम केवल डिपुटी इनस्पेक्टर और हुज्य, केशनल कमिटी के सिक्रेटरी की रिपोर्ट पर होता है तब फ़ी जिलों मे एक इन्स्पेक्टर और उन के अमलों की क्या आवश्यकता है यही खर्च तोड़ स्कूलों ही की तरक्की और कहीं २ उनकी खामोपुरी करने मे क्यों न लगाया

जाय अधिक तनखाह के अध्यापक नियत हों तो लोग लायक मिलें और पढ़ाई अच्छी हो। हम आशा करते हैं हमारे सुयोग्य डइरेक्टर क्रफ्ट साहिब बहादुर इन बातों पर अवश्य ध्यान देंगे और ग्रिफिथ साहब के समान अपने मातहतोंही पर सब छोड़ निद्रा में पड़े २ सोया न करेंगे सब के पहले तो दिया के तले का अन्धेरा दूर करें और अपने ही आफिस डइरेक्टरी में चुन २ कर योग्य से योग्य मनुष्य जहां तक ढूंढे मिलें उन्हें भरती करें क्योंकि यह विद्याविभाग का सब से बड़ा दफ़्तर है तो इसमें जो लोग विद्या में भी सब से बड़े हों वही इसमें प्रधान रहैं इसमें लाभ यह होगा कि वे लोग उक्त साहब को अच्छी तरह सुझा सकेंगे कि क्योंकर उत्तम शिक्षा की वृद्धि हो। वही मसल ।

एक अनोखे सैलानी की अनोखी कहानी।

इसवरे की तातीलों में जब कि शरद ऋतु अपनी यौवनावस्था में प्रवेश कर चुका था, एक दिन निर्मल प्रकाश और धुली हुई स्वच्छ वनस्थली की शोभा से वञ्चित हो मैं टहलते २ नर्मदा के गंभीर सलिलों का कुतूहल देखता एक ऐसे स्थान में जा निकला जो मैं ने पहले कभी नहीं देखा था वहां एक देव मन्दिर था और एक छोटी सी वाटिका में अनेक प्रकार के सामयिक पुष्प और अन्न का उज्ज्वल खिला बिछी हुई थी। नीचे सोमतनया अपनी रम्य लहरियों के क्रीड़ा व्याज से जगत के पापों को घसोटती हुई मदमाती नाग कन्या की भांति सरित्पति के भवन की ओर मन्द२ गमन कर रही थी। इस सब शोभा को देख मैं ऐसा विमोहित हो गया कि थोड़ी देर तक तो अपने आपे को भी भूल गया उक्त वाटिका के बीच एक शिला पर पालथी मार बैठ गया। विचार में मग्न हो गया। मैं बहुत देर तक सोच में डूबा रहा यहां तक कि जब दिनकर ने अपनी हेम डोरी तुल्य कान्तिमती किरणों को पृथ्वी से खींच अस्ताचल पर संध्योपासन

के हेतु आसन ग्रहण किया और मेरे चारो ओर संध्या की श्यामता छा गयी, मैं एक साथ चौंक पड़ा और अपने तई यों झिड़कने लगा "अरे मैंने बड़ी बेवकूफी की कि यहां बयाबान में शाम को बक्त आकर खयालात में ऐसा मस्त हो गया कि बिलकुल रात कर डाली, अब यहां से कैसे घर पहुंच सक्ता हूं ?" लेकिन मन्दिर जो पास था इस्से आशा थी कि यदि बहुत रात्रि हो गयी तो उसी में विश्राम कर लूंगा। परन्तु जाके देखा तो मन्दिर का ताला बन्द है, न कोई वहां पुजारी है और न कुछ "संध्या आरती" आदि का सामान है चित्त बहुत व्याकुल हुआ अब क्या कर सक्ता था ? अगर घर को चल दूं तो रास्ते में व्याघ्र वा वृक का भय है साथ एक श्वान भी नहीं तो अब सर्वथा इसी स्थान में रात्रि वास करना पड़ा।

मन्दिर के बाहिरी बरंदे में एक काठ की चौरस और चिकनी चौकी सी बिछी हुई थी उसी पर बिस्तरा जमा दिया और अपने बाजू का तकिया बनाय बांये करवट हो सोने लगा इस समय यद्यपि शरत काल की विमल चन्द्रिका चारो ओर छिटक रही थी पर मैं स्वभाव का भीरु होने के कारण उस उज्वल चन्द्रिका की अपूर्व छटा देखने को मन्दिर के पास ही अांदे बाग तक न जा सका किन्तु चुपका चौकी ही पर पड़ा रहा घर से चलती समय कुछ भोजन कर लिया था इस्से भूख की पीड़ा तो न थी पर डर था कि कहीं ठंढ न सतावे क्योंकि मेरे पास कुछ ओढ़ने को न था मै पड़ा २ इसी तरह का सोच विचार कर रहा था कि एका एक एक महा भयानक गंभीर नाद पहले सुन पड़ा और फिर मन्दिर का केवाड़ आप से आप खुल गया और अहा आश्चर्य ? रूपकी परमावधि दिव्य कान्ति की तीन युवतियां उसमे से निकल आईं क्या मै उन अदृष्ट पूर्व ललनाओं का यथार्थ वर्णन लिख सक्ता हूं या उनके दर्शन से मेरे मन पर जो असर हुआ उसे बतला सक्ता हूं ? उन्हें देवाङ्गना कहूं तो थोड़ा अपसराओं को समता दूं तो मूर्खता ठहरे पर इतना तो मुझे अवश्य निश्चय हो गया कि देवाङ्गना या अपसरा उनके सामने ऐसी लगेंगी जैसी यहूदी या अंगरेजी मेम के आगे हवश देश की स्त्री अथवा बिजली की रोशनी के आगे रेंड़ी के तेल का टिम टिमाता हुआ दिया सम्पूर्ण बनस्थली मे उनके तेज का

प्रकाश छा गया और मन्दिर तो मानो सूर्य मण्डल सा दीप्य मान हो गया अब मुझे उस समय क्या करना चाहिये था इस उद्यतेजोमय दृश्य की चका चौंधी मे मुझे कुछ न सूझा यद्यपि मे स्वभाव से भीरु था पर न जाने इस समय मेरी बुद्धि की स्थिरता और धीरज कहां से आगया धीरे से सांप की नाई चौकी के नीचे सरक गया और वहां ही से सब तमाशा देखने लगा वे तीनो युवतियां पहले तो थोड़ी देर तक उस बाग मे सेर करती रहीं फिर वहां से टहलती २ नदी के कनारे दक्षिण की ओर जाय मेरी दृष्टिपथ से अन्तर्ध्यान हो गईं उपरान्त देखता हूं तो एक फौज की फौज विलक्षण रूप के नर नारियों की देख पड़ी मुझे अनुमान से ऐसा ज्ञात हुआ कि वे सब उन्ही युवतियों के पारिषद या परिकर वर्ग थे जो उस मन्दिर के चारो ओर फैल गये थे लोग भांति २ की बोलियां बोलते थे और पलही भरमे उस झारखण्ड को उन्हीं ने ऐसी अद्भुत रङ्ग भूमि रच डाली कि जिसे चाहो समस्त भूमंडल के मनुष्य बडी रुचि से कि खाथ आकर बैठ सक्ते थे लाखो झाड फानूस लेम्प जलने लगी और सैकड़ों तरह के चित्रतस्वीर औरपरदे जिनको गिनते २ मे हैरान हो गया उसमे लगा दिये गये कहां तक कहें महा माया का पूरा पार्लियामेंट हाल ही उसे समझना चाहिये बीचो बीच उस महा मण्डप के एक चौड़े चौरस तखत के ऊपर तीन मणिमय मसनद लगा दिये गये जो अपने मणियों की श्वेत पीत और रक्तिमा गर्भित दमक से संपूर्ण सभा मण्डप को प्रकाशित कर रहा था और तुरंतही इस रंग शाला को बनाके वे सब पारिषद गण न जाने किस लोक को सिधार गये और वहां अब बिल्कुल सन्नाटा बोलने लगा उपरान्त मेरी नज़र नदी की ओर जा पड़ी तो देखता हूं कि अन गिनत नौका और कश्तियां नदी के इस पार से उस पार तक ऐसी सजी सजाई छा रही हैं जिनके आगे काशी का बुढवा मंगल पसंगा भी न था और इस नदी से रंगशाला तक कार चीजो के काम का काम मियाना टंग गया जिसमे अद्भुत कारीगरी के अनेक लटकते हुए बिमान देख पड़े-प्रिय पाठक जिस समय मे इस उमंग में था कि अब कोई बड़ा अनोखा तमाशा देखने मे आवेगा कि एक महा भयावनी सूरत का दानव मेरे पास आकर चौकी

सहित मुझे गङ्गा में फेंक दिया पर खैर यही हुई कि मुझे ज़रा चोट भी न आई और थोड़ी दूर बह कर किनारे आ लगा और बाहर निकल भीगे कपड़ों को सुखा रहा था कि एक वृद्ध मनुष्य मेरी ओर आता हुआ दिखलाई दिया रंग हलका गेहुआं मुख पर दीनता छाई हुई आकार देख बोध होता था कि यह बूढ़ा मानो किसी के जङ्गल में फंस गया है स्वच्छन्द होने को हजार २ चेष्टा करता है एक लम्बी धवली नाभि तक लटकती हुई सफेद बुर्राक डाढ़ी और एड़ी तक चौगा लबादा ओढ़े हुये है मैं उसे देख चौंक कर कुछ बोलनेही पर था कि उसी मृदुता पूर्वक मेरा हाथ पकड़ धीरज के साथ उसने मुझसे कहा प्यारे मैं तेरा भाग्य हूं और इस निर्जन स्थान में तेरी रक्षा के निमित्त प्रगट हुआ हूं आ अब तुझे भारत देवियों का उत्सव दिखला दूं जहां से तू अभी फेंक दिया गया है न जानिये उस वृद्ध को क्या खेचरी विद्या आती थी कि उसने एक बार मेरे सिर पर हाथ फेर दिया कि मुझमें आकाश गमन की शक्ति आ गई और पल भर से भी कम में हम दोनों साथही साथ उड़ उस उन्नत रंग शाला के मध्य में सिंहासनों के आ खड़े हो गये भाग्य महाशय ने कहा कि हम तो सब को देख रहे हैं लेकिन हमें कोई नहीं देखता इस समय रंग भूमि में बड़ी सजावट हो गई थी असंख्यों अपसरा गन्धर्व गणों से सारा फर्श और कोठे भर गयी थीं सैकड़ों तरह के अजीब बाजों का एक कोने में ढेर लगा था, और बहुत से बजवैये अपने २ बाजों के स्वर मिला रहे थे रंग शाला की भीतरी चारों सीमाओं पर परम रूप वती दिव्य आभरण भूषिता षोडश वर्ष की नव यौवनाओं की चार पलटनें खड़ी हुई थीं प्रत्येक के हाथ में नग्न खड्ग जिसकी प्रभा से मानो बिजली भी पाताल में मुंह छिपाले और जाहिरी जहां पर बड़े २ दीर्घाकार और शरीर अस्त्र शस्त्र सज्जित योधाओं की पंक्ति खड़ी हुई थी परन्तु अभी तक वे तीनों देवी नाट्य शाला में नहीं दिखाई दीं।

हमको अधर में खड़े कोई दस ही मिनट बीते होंगे कि दो सुन्दर युवतियों ने आके देवियों के सिंहासनों के तकिये उठा कर उनके स्थान में एक बहुत बढ़िया जड़ाऊ कुर्सी बिछा दीं और उसके आस पास छोटी २ कई एक कुर्सियां गेर दीं और दो कनक मय चौकी बिछाकर

उनपर मसनद रख दिये बस ज्यों यह हो चुका कि बड़े वेग के साथ एक हवाई बन्नी अम्बर में जाती हुई नज़र पड़ी और कोई एक विपक्षी के पर्से में देखा तो तीन कामिनी, और कई एक बालक बालिका उस कुर्सी और चौकियों पर आ सुशोभित हुए इस समय सभा की दिव्यता में क्या कोई त्रुटि कही जा सक्ती थी? परन्तु पाठकजन ! आप पूछेंगे कि ये तीन कामिनी वेही थीं जिनका पहले चर्चा हो चुका है ? हां, वेही थी पर पोशाक उनकी अब और थी एक तो पीले रंग की बिलायती पोशाक पहने हुए थी और उन लड़के लड़कियों में से बहुत से मिस बाबा लोगों के लिबास में थे शेष का पहनाव हिन्दुस्तानी चलता था दूसरी रेशमी श्वेत साड़ी पहने थी और तीसरी का पहनाव काले रंग का था परन्तु जब मैं ने भाग्य महाशय से इन स्त्रियों के नाम पूछे तो मुझे बड़ा ही अचम्भा और विस्मय हुआ क्योंकि उनके नाम क्रम से लक्ष्मी, विद्या और एकता निकली क्यों पाठक, आश्चर्य का विषय था न ? लक्ष्मी, विद्या और एकता ये नाम किन के ? भारत देवियों के जैसा कि भाग्य पहले कह चुका था परन्तु वे छोटे २ लड़के लड़की कौन थे ? भाग्य ने कहा " ये बिलायती पहनाव वाले सब बालक लक्ष्मी के हैं, और जिन्हें तू आज यहां देखता है उनके नाम आराम, आनन्द, आडम्बर, ऐश इत्यादि हैं शेष को लक्ष्मी आज यहां नहीं लाई है और वे जो जामदार कोट पहने बैठे हैं जिनकी भुजाओं पर पट्टे के अक्षर लिखे हुए हैं विद्या की छोटी बहन जिसका नाम युक्ति है उसके लड़के हैं नाम उनके Science, Telegraph, Telephone, Telescope इत्यादि हैं और यह बाकी दो जिनका नाम साहस और धीरज है एकता के भतीजे हैं इन बच्चों के नाम सुनकर मुझे और भी अचम्भा हुआ मैं कुछ और भी प्रश्न भाग्य महाशय से किया चाहता था परन्तु रंग शाला का प्रथम अभिनय आरम्भ होगया यह अभिनय लक्ष्मी की Honor में था अब क्या पाठक आप अभिनय का सारा वृत्तान्त मुझ से सुना चाहते हैं ?—हूं हूं !—अच्छा मैं सुना दूंगा, लेकिन इस शर्त पर कि तुम मेरे पास दो मास तक बराबर बैठ के मनो योग करो तो मैं उसका Prologue आप से कह

हूं परन्तु Performance का वृत्तान्त कह ने को तो एक ज़िन्दगी की जिन्दगी चाहिये परन्तु संक्षेप यह है कि सृष्टि की आदि से ले इस रिपन महोदय के समय तक जो कुछ भारत वर्ष में धन का एर फेर हुआ उस सब का यथा वत् रूप इस अभिनय में दिखाया गया था परन्तु जिस समय एक गीत उन्हों ने गाया खुद लक्ष्मी की आंखों से अश्रुधारा बहती थी—मुझे सिर्फ इतनाही याद रह गया है सो लिखता हूं:—

गीत—इतौ दुख नाहिन कबहुं भयो। भये कपूत पृथी जेचंद जिन भारत सीस नयो॥ मुगल मलेच्छ हुन्द बहु कीनो विविध कलेश दयो। पै धन भारत को भारत के बाहिर कछुन गयो॥ क्षुधित किसान प्रान निज राखत करि श्रम कठिन अयो। तज दिन २ तिहि लगत टिकस नव विषम घोर समयौ॥

अब लक्ष्मी के प्रीत्यर्थ अभिनय हो चुका विद्या भिनय आरम्भ हुआ—उसका भी एक गीत मुझे आधा सा याद है:॥

यह भूमि भारती—अब क्या पुकारती। इस्के ही पाप से तो हुई इस्की दुर्गती? होते हैं पाप घोर—लाखों अरब करोर! युवती विपत्ति भोगी हैं घोड़श सतावती॥ सब भ्रष्ट होगये—कर पाप नित नये। अति दीन हीन होके करी अपनी अवन- ती? रोवे हैं अब सभी—अब देखो तुम तभी। नहि होय उन्नति—नहि होय उन्नति॥ सब शोर करते हैं—पच पच के मरते हैं। नहीं होता कुछ भी लाभ है यह काल की गती॥

इस गीत का तात्पर्य मुझे ठीक२ सम- याऽनुसार सूझा इस नाटक के उपरान्त एकता के लिए अभिनय हुआ उस्में भी अ नेक गान और अनेक लीला देखी—और अनेक सतोंने भिन्न२ रूपधारण करके नाट्य किया शंकराचार्य, रामानुज, बुध इत्या० अनेक आचार्यों के दर्शन हुए—फिर आज कल के बोंगा पंडित तथा दयानन्द केशव चन्द्र, ईसाई पादरी इत्या० सभों की लीला देखने में आई—शाक्त, वैष्णव श्री वैष्णव, शैव, शाक्त, दंडी, सन्यासी, जैनी, मौनी, नानक पंथी, दादू पंथी, रांगड़े, नागे, बैरागी, योगी, सयोगी, इत्या० जोर सम्प्रदाय भारत वर्ष मे विद्य मान हैं सभी के चरित्र किये गये—परन्तु यह पीछे का अभिनय ऐसा भयानक हु- आ कि मैंने डर के मारे अपनी आंखे बन्द करली—क्यों कि उस्में कभी शिव सम्प्रदायी वैष्णवों को गाली देते थे उधर

आज अपनी वारुणी के आनन्द में मस्त अपनी ही तान गारहे थे—कभी नागे लोग धोती लंगोटी फेंक२ नितंग नंगे हो शैव और सन्यासियों पर हल्ला करते थे उधर दयानन्दी लोग पोपों को गाली सुनारहे थे और पादरी साहब हिन्दुओं के सारे धर्म्म सम्प्रदायों की निन्दा करते थे एक और यह भी तमाशा देखा कि बहुत सी बरातें निकल रही हैं, ब्याह हो रहे हैं, पर ज्योनार के वक्त ब्याह वालों में जूते चलने लगे कहीं २ जाती पंचायतें हो रही हैं कहीं जात में मिलने के लिये बड़े २ प्रायश्चित्त और भोज हो रहे हैं कहीं विलायत से लौटे हुए हिन्दुओं की निन्दा और बेकदर हो रही है कहां तक कहें एकता वाले अभिनय में कुछ आनन्द न आया वरन देखते २ मेरा जी भी उकता गया मैंने भाग्य महाशय से पूछा कि ये तमाशे क्यों किये जाते हैं, परन्तु जब तक वे उत्तर देने को हुए रंग शाला में एक साथ हाहा कार मच गया और जितने नाटक करने वाले गवैये, बजवैये, और जितने दर्शक लोग थे सब अपनी २ जगह छोड़ कर भाग गये और लक्ष्मी अपने बच्चे बच्चों को लेके हवा की बग्गी पर सवार हो पश्चिम की ओर को उड़ गयी और विद्या और एकता के भतीजे Science आदि भी उस की गाड़ी के पीछे की तरफ़ चढ़ चलदिये विद्या अपनी चौकी समेत आकाश को उड़ गयी एकता देखते २ धरती में समा गयी और शायद पाताल को चली गई होगी और मेरा भाग्य भी मुझे छोड़ न जाने किधर चल दिया और मैं अपनी आकाशी बैठका से ऐसा गिरा कि आंख के देखूं तो मन्दिर के बरंडे में उसी चौकी के पास पृथ्वी पर पड़ा हूं सूर्य नारायण की किरणों से चमचमाही जगमगाय रही है हवा पर पक्षी कलोलें कर रहे हैं मन्द २ शीतल पवन बह रही है !!! मैं थोड़ी देर तक अथाह अचम्भे में डूबा रहा और फिर कहने लगा " ओफ़ हो, यह क्या ? अभी क्या [illegible] था, आह क्या अजब सपना था ! " पर इस समय मेरा बड़ा बुरा हाल था, सिर भिन्ना रहा था, शरीर की नस २ में पीड़ा हो रही थी, पर ज्यों त्यों घर पहुंचा पाठक वर, अभी तक इस सपने की याद नहीं भूलती !

एक अनोखा सैलानी " पाठक "

!!! —हा— !!!

२७ दिसम्बर के पायोनियर में महा शोक वृत्तान्त पढ़ मालूम हुआ कि आज आर्यावर्त्त कुल कमल पर भारी तुषार पात हुआ—श्री सज्जन सिंह जी के साथही हमारे देशानुरागी सज्जनों की आशा लता एक बारगी मुरझा कर नाश भाव को प्राप्त हो गई—हा राजस्थान की बहु मूल्य रत्नों की खान बेदाम लुट गई—कुछ ध्यान में नहीं आता यह आकस्मिक काल बैठे बैठाये क्यों ऐसी बे सुरी तान छेड़ उठा—हा भगवान मृत्यु, क्या तुझको कोई दूसरा ग्रास नहीं मिलता था जो ऐसे बड़े गुण ग्राहक की आशा मन्दिर ढाह दिया—कभी इसका ख्याल गुमान भी न था कि दुर्घटना पिशाची हमारे कान तक ऐसा घोर दारुण वृत्तान्त पहुंचाय हमें [illegible] स्तब्ध और मगध कर डालेगी—लार्ड रिपन महोदय के वियोग ताप से हम तो आपही सन्तप्त थे [illegible] का [illegible] यह सन ८४ विदा होते २ भारत को कालिमा का टीका अपने माथे पर लगा चला और महिमहेन्द्र आर्यवंशीयकुल कमलप्रभा कर श्री महाराणा उदैपुर को सुर धाम का पाहुना बनाय oblivion विस्मृति रूप भयंकर अन्धकार पूरित गड्ढे में आप भी ऐसा जा गिरा कि अब कभी न लौटेगा हा! हा! हा!

वाक् चातुरी ।

आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास ।

इन नयनों को यही परेख यह भी देखा वह भी देख ।

खाई मोल की माई ।

गाई गीत का गाना क्या ।

जबरदस्त का ठेंगा सिर पर ।

भलो भार कबीर को चित से दिया उतार ।

हरि जैसे को तैसा ।

हरि पूजत हाथ खियाय ।

हरिरिच्छा बलीयसी ।

हाथ पांव के आलसी मुंह में मोछें जांय ।

हितं मनो हारि च दुर्लभं वचः ।

[illegible] साध्यते [illegible] शिशुभिः स्यामि का पिबा ।

होनहार बिरवान के होत चीकने पात

होनहार हिरदै बसे बिसर जात सब सुधि । जैसी होय भवितव्यता तैसी उपजे बुद्धि ।

क्षणे क्षणे यन्नवतां विधत्ते तदेव रूपं रमणीयतायाः ।

के महासंरम्भ से न आये हों और जो विचार स्थिर किया गया उस्पर तनमन से एकमत हो उस्को पूरा करने से कभी भूल जायगे। हम कभी आशा नहीं करते थे कि हमारे इस आर्यावर्त मे भी इतने मनुष्यों के जोमे अपने देश के सुधराव और उद्धार करने की चोट है और फिर क्या यह कभी खाली जाने वाली है यह अङ्कुर अवश्यमेव एक दिन महा वृक्षके रूपमे परिणत हो अपने फूलों से देश को सुवासित और अमृत फलों से सबों की चिर वांछित अभिलाषा पूरा करेगा ईश्वर वह दिन शीघ्र हमारे दृष्टि गोचर करावे।

—०—

आज रात मुझे एक ख़्वाब हुआ।
जिस्से दिल जलके कबाब हुआ॥

वाह वाह! क्या कहना है प्रयाग में हिन्दुओं के समाज का जल्सा ४ रोज तक बड़ी सज धज से हुआ। बड़ी कैफियत रही बड़े२ लेक्चर, बड़ी२ स्पीच सुनने में आयी। हिन्दो के लिये बड़ी धूम रही। महाजन व साहूकारों की खूब हजूम रही। समाज के न्योते हुए अनेक नगरों के प्रतिनिधि आये। एका, विद्या, कारीगरी वगैरह वगैरह पर खूबही लपटा झपटी मची। मगर हाय! अफसोस! मैं बेहया बे न्योताही वहां पहुंचा। क्या करूं तमाम हिन्दुस्तान की बाल विधवाओं की आज्ञा को कैसे टाद सक्ता था उन ने कहा तुम हमारे प्रतिनिधि होकर जाओ। खैर, पहुंचा और हि०स० के अधिष्ठाता एक अपने भ्राता से हिचकते २ कान कान में मतलब बयान किया। पर हैं! वे तो सुनते ही चौंक पड़े। बस, मैं एक साथ चौकन्ना होगया और बा०वि० का संदेशा दिल की जेब मे ही पड़ा रक्खा।

जब चौथे रोज की शाम को (पानी कल) जब जल्सा तमाम हुआ मैं घर आके सो रहा। लेकिन् समाज की धूम धाम का ध्यान मन में ऐसा भर गया था

को नींद में भी उसने पीछा न छोड़ा। मैं क्या देखता हूं कि एक बड़ी भारी विराट सभा हिन्दूओं की तरफ़ से अखण्ड पट पड़ में जुड़ी है। दूसरी बड़ी कि उसमें बाईं ऐक प्रयाग हिन्दू समाज सभा सती हैं। और उसमें उसी ढंग के व्याख्यान और वक्तृताओं की तयारी होरही है जैसी कि राजा बनारस के बाग में दिन में देखने में आई थीं। लेकिन् अकस्मात् ही एक स्त्रियों का बड़ा भारी दल सभा में आन पहुंचा और सब की सब स्त्रियां एक स्वर से समाज से यों कहने लगीं।

—हे सारे हिन्दुस्तान के हिन्दूओं हे सारे आर्यावर्त के आर्यो ; हे समस्त गुण गण गरि परमोदार, सर्वशास्त्र पारावार पारंगत विप्र वर्यों ; हे महाराजा, महाराजा, राजा, G, C, K, C. आदिक बड़े बड़े ख़िताब धारी बड़े भारी धनियो ; हे सारी दुनिया की सम्पत्ति वाले, हीरा पन्ना से हरियाले, देव के वाले, धन के मद में मत वाले महाजन साहूकारों हे प्यारो, तनक इधर भी तो निहारो ; हे नव सिक्षित नव युवक वृन्द ; हे M. A. ; हे B. A. हे B. L. ; हे लीडरो ; हे वारिस्टरो, और हिन्दू हो, जरा इधर भी नजर तो करो। हैं! यह क्या? हिचकते क्यों हो, सिसकते क्यों हो? हमारे इतने कहने पर पीले क्यों पड़ गये, चिहरा क्यों सूख गया? हैं घबराते क्यों हो? सभीते क्यों हो? निगाह नीची क्यों करली? हमने अभी तुमसे कुछ कहा भी तो नहीं। पर तुम्हारे चिहरों पर स्याही क्यों छाती जाती है? तुम्हारी छाती क्यों धड़कती है? बाईं आंख क्यों फड़कती है? हे आर्य वंश संभोद्भूत प्रभूत यश शाली आर्यगण, तुम काहे से झिझका गये? अभी हो अभी यह किसने टोना तुम पर कर दिया? क्या हमारे तरफ न देखोगे? क्या हमारा डर लगता है?

(आकाश वाणी होती है)

हे भारत सुता गण ; हे आर्य्य अंश धारिणी, रति मद विदारिणी, प्रजोन्नति सञ्चारिणी, सर्व्व धर्म सहकारिणी, मनोहारिणी, तथाच, सौन्दर्य्य सुख धामिनी कामिनी गण ; ये पुरुष जिन्हें तुम आर्य्य आदि बड़े २ सम्बोधनों से पुकार रही हो किस मुंह से तुम्हारी ओर देख सक्ते हैं और किस मुंह से तुम्हारे साथ बोल सक्ते हैं ? तुम्हारे वचन इनके कानों पर वज्र प्रहार की तुल्य गिरे हैं तुम्हारे तेजो मय मण्डल की चका चौंध से ये आंख तुम्हारी ओर नहीं उठा सक्ते ; मारे भय के इन के मुख पीले पड़ गये हैं, हाथ पैर स्तब्ध हो जहां के तहां जकड़ गये हैं और तुम्हारी आभा के आतप के मारे इनके चिहरे भुर्सर कर और शरीर भुर्सर कर काले पड़ते जाते हैं । इनकी सामर्थ्य कहां कि तुम्हारी ओर दृष्टि कर सकें ।

(बाल विधवा गण)

नहीं २ आकाश वाणी, तुम कठोर वाक्य कहती हो; ये हमारे पूर्व्व पुरुष आर्य्य वर्य्यों की सन्तान हैं ; ये गर्ग, गौतम, भृगु, वशिष्ठ, कुत्स, कपिल आदि के बीज हैं; ये काकुतस्थ श्री रघुकुल कमल प्रभाकर यौवदार्य्य कुल दिवाकर, श्री यादव वंशोत्पन्न अविच्छिन्न वंशावली सम्पन्न, विविधविरदावलीं वन्दित समस्त शूर वीर सामन्त मल्ल भट्ट प्रभृतिभि रभिनन्दित, हमारे भारत की सर्व्व धर्म मर्यादा के रक्षक हैं ये हमारे सम्पूर्ण कला कौशलादि शिल्प विद्या विदग्ध पूर्व्व पुरुषों के पोते पड़पोते हैं इन्हें आकाश वाणी तुम क्यों इतनी लज्जा दिलाती हो ये लज्जास्पद नहीं ये हमारे पूज्य हैं, हमारे नाथ हैं हमारे प्राणपति हैं ; हमारे दुःख हर्त्ता पोषण कर्त्ता हैं इन्हें तुम यों मत कहो ।

(आकाश वाणी)

लेकिन यह तुम्हारी कोई बात न सुनेंगे देख लेना केवल अपना ही ताना बुनेंगे अपनी ही उन्नति

के लिये फिर घूमेंगे और तुम्हें अंधेरी काल कोठरी में छोड़ नई रोशनी की तरफ भागने में आप ही अगुआ बनेंगे।

(बाल विधवा गया)

अच्छा हम कहैं तो सही न सुनेंगे न सही हमारा क्या बिगड़ेगा ? (प्रार्थना करती हैं)

हे नवीन प्राचीन कालीन विविध विद्या विभूषित शिष्ट आर्यगण हमारी परम बिनय पूर्वक आप से प्रार्थना है कि आप अब हमारी भी सुधि लीजे, जरा हमारी ओर भी दृष्टि कीजे, हमारे भले में चित्त दीजे आप अपनी उन्नति में, अपने देश की उन्नति में, अपनी भाषा की उन्नति में जैसे समुन्नत चित्त हुए हो और अपना सारा तन मन और वित्त उनपर वारे डालते हो उसी तरह हमारी ओर भी कृपा कटाक्ष कीजिये ; आप गो आदि पशु हिंसा निवारण में तत्पर हुए हैं तो हमारी हिंसा की भी निवृत्ति सोचिये; आप अपनी प्रतिष्ठा की वृद्धि पर दत्त चित्त हुए हैं तो हमारी प्रतिष्ठा पहले रखनी चाहिये; आप अपने को Civilized Nation बनाने पर उद्यत हुए हैं तो पहले हम को Civilation की सूरत दिखाना चाहिये ; आप यदि अज्ञान के अंधेरे से निकल विज्ञान के प्रकाश में पहुंचगये हैं तो हमको भी उस उंजियाले का रंग दिखाना योग्य है; यदि आप में दया आदि गुण प्रचुरता से समा गये हैं तो हमारे साथ भी उनको आचरण में लाइये; यदि पूरी मनुष्यता (इंसानियत) का सौरभ आपने तृप्ति से सूंघा है तो हमें भी सुघाइये; यदि आपने वह देश देखा है जहां विवेचना देवी बसती है तो हमें भी दिखाइये; यदि आप ने विद्या पीयूष पीया है तो हमें भी पिलाइये ; यदि सद्ज्ञान का अमृत फल खाया है तो हमे भी खिलाइये, यदि आपने British नीति का मर्म समझा है तो हमें भी बताइये यदि आप को

पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांचों कर्मे न्द्रियों का बाह्य वा आन्तरिक तत्व सुझा है तो हमें भी सुझा हुये; यदि तृष्णा लगने पर आप से पानी पिये बिना नहीं रहा जाता तो यही दशा हमारी सम झिये, यदि आप को भूख लगने पर बिना भोजन चैन नहीं पड़ ता तो उसी तरह हमारी क्षुधा भी बिना कुछ खाये नहीं शान्त होती; यदि आप से कोई मान सिक वा शारीरिक दारुण वेदना नहीं सही जाती तो हमसे भी नहीं सहारी जाती; यदि आप अपनी किसी प्रबल उमंग को नहीं थांभ सके, अपनी किसी बलवती इच्छा को बहुधा नहीं रोक सके, वही हम भी नहीं कर सकीं; यदि आप में से हर एक पुरुष योग शास्त्र निर्दिष्ट कठिन साधनों को नहीं साध सका वैसे ही हम में से प्रत्येक स्त्री वह कठिन साधन करने को सम र्थ नहीं तो फिर क्यों तुम हम से इस कठिनाई के साथ बर्ताव क रते हो? क्या हम संकोच छोड़ खुल कर कह दें? क्यों हमारा विवाह हमारी बे समझी में कर देते हो? और क्यों हम को विध वा होने पर पुनर्विवाह का अधि कार नहीं देते? इसका आप के शास्त्र में भी तो कहीं * * * * बाल विधवाओं का यह पिछला वाक्य पूरा नहीं होने पाया था कि एक ऐसी प्रचण्ड करतालि ध्वनि कहीं से हुई—(सुनने वाले हिन्दुओं में से नहीं हुई)—कि मैं एक साथ जाग पड़ा—फिर क्या था? "पाठक" एव

हाय! हाय! हाय! महाअनर्थ!!!

सठसम्वतउनईससे पचासाकोसमधार ।
माघकृष्णषष्ठीनिसा दसयजतेकुअमार ॥
श्रीबाबूहरिचन्दजू वैश्यवंशअवतंस ।
पञ्चतत्वतनत्यागिकै गएधामपतिहंस ॥
मणिकर्णिकापादुका सौरभचितारचाइ ।
दाहक्रियाकैनिहतभै बुधदिनरविदुतिपाइ
हिन्दीकेआचार वा व्यसिन्धुकनहारका[illegible]
सर्वथात्रपतवार कल्पतरुकलिकाकामदु[illegible]
भयोमहैमलिनोदहै भारतभूमिसमाज
हरीचन्दकविकुलमुकुटसभिजलसहुतस्त्रवेहार

मूल्य अग्रिम ३।) पश्चात ४।)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

THE HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st Feb. 1885. Vol. VIII.] [No. 6

प्रयाग माघ शुक्ल १४ सं० १९४१ [जि० ८ [संख्या ६

प्राकृतिक अन्याय के मिटाने को प्राकृतिक उपाय।

कोई बात जो कारण पाकर प्रगट होती है और जिसका होना स्वाभाविक नहीं है मिटाने से मिट सकती है। पर जिस बात की उत्पत्ति प्राकृतिक है उसका मिटाना भी बिना प्राकृतिक उपाय के किसी तरह संभव नहीं है। तात्पर्य यह कि इन दिनों इस पश्चिमोत्तर देश में और मुख्य कर इसकी राजधानी तथा और २ शहरों में भी जैसा सुना जाता है भांत २ के अन्याय चोरी बदमाशी ब-

लाचार मिथ्या भाषण जालसाजी आदि की रुचि दिन प्रति दिन बढ़ती ही जाती है और इन अन्यायों को हम प्राकृतिक अन्याय कहेंगे जिसके मिटाने को कृत्रिम उपाय काम में लाना निरी मूर्खता है वरन उन अन्यायों का मिटना तभी सम्भव है जब प्राकृतिक उपाय भी काम में लाई जाय। डंडा मार कर नोच खसोट से राज्य करना एक प्रकार का कारचोप है पर सच्चे सूत्रधार की भांति जो राजा प्रजा रूपी ऐक्टरों से उनके मन का चतुर्गुण उत्साह बढ़ा के कर लेता है वह इस संसार महारंगशाला में कीर्ति का असंख्य खजाना सहज में जमा कर ले सकता है। अफसोस हमारी गवर्नमेंट जान बूझ कर कैसी गफलत में पड़ी है जिस ने यह समझ रक्खा है कि जिनका मन पाप पङ्क से कलुषित है और जिनके मन वच कर्म में अन्यायही बसता है वह राजकीय उग्रदण्ड के कृत्रिम उपाय द्वारा निर्मूलित हो सकता है। इस प्राकृतिक अन्याय और पाप का मूल मूर्खता है जिसके बढ़ने से मन में यही भावना निरन्तर छाई रहती है कि पराये का धन ऐश्वर्य स्त्री आदि हमें मिल जांय तो अच्छी बात हो। और इस प्राकृतिक अन्य

वा मानसिक भावना को रोकने वाली प्राकृतिक उपाय विविध विद्या की महासेना है जिसका संस्कार मात्र भी खराब और मन से अन्याय वा जघन्य आचरण की ओर मनुष्य को नहीं झुकने देता जिन लोगों को अपनी निर्विद्य अज्ञान दशा का स्मरण होगा वे अच्छी तरह समझ सकेंगे कि उस समय उनका मानसिक भाव कैसा था अन्याय पूर्वक पदार्थों के मिलने की कैसी दृढ़ लालसा उपजती थी वही विद्या हो जाने पर उसके विपरीत अन्यायोपार्जित पदार्थ में कैसी घृणा और अनुचित कर्म के आरम्भ में कैसी लज्जा होती है सो यह सब किसका प्रभाव है वही विद्या की महासेना का जिसके अनादर का हम अपनी न्यायशील गवर्नमेंटही को ओलहना देते हैं उस विद्या की महासेना का दो भेद है एक प्राकृतिक दूसरा अप्राकृतिक प्राकृतिक विद्या अपनी मातृभाषा है जो हिन्दी नागरी अक्षरों के द्वारा बिना डांट डपट के थोड़े परिश्रम में प्राप्त हो सकती है और जिसके अनादर और अपमान का कलङ्क गवर्नमेंट के चेहरे पर फैलता जाता है और उसका इलाज बतलाने वाले नादान समझे जाते हैं। अप्राकृतिक विद्या वह है

को कोतवाली तहसीलदारी सरिश्तेदारी वकालत मुख़्तारी के द्वारा धन बटोरने की लालच से पढ़ी जाती है और फारसी अक्षर उर्दू बोली में लिखी जाती है। इस अवसर पर इतना कहना अवश्य है कि इन ओहदों की लालच और नाम के मीठे लड्डुओं के दिखाने पर भी उस प्राकृतिक विद्या की सेना अधिक है जो अपरिणाम दर्शी और बड़ा ओछा पाकर भी प्रपञ्चाकुल धूर्तों के दिये हुए मीठे लड्डुओं का तिरस्कार कर सूखे चने चाब कर पढ़ती ही जाती है। न केवल आम पाठशालाओं में वरन सरकारी शिक्षा स्कूलों में भी मीठे लड्डू की लालच की फटकारे हुये हैं। हमने इसे मीठा लड्डू इस लिये कहा कि अभी थोड़े दिन हुये बनारस कालिज के विद्यार्थियों को ग्रिफिथ साहब डाइरेक्टर ने यह जवाब दिया था कि उर्दू के काफी लिखनेवालों को इस लिये दूना इनाम दिया जाता है कि वे दफ्तरों में काम करेंगे और हिन्दी वाले दफ्तरों की विपरीत भाषा के अनुशीलन के कारण इनाम से विमुख किये गये। इसमें कुछ सन्देह नहीं यदि यह प्रार्थना किसी सिविल सर्वेंट ओहदेदार से आमली गुजरती यह चिट्ठा कैसा ही उग्रशासन क्रोध प्रकृति और दुर्व्यसन ग्रस्त होता तो भी बड़ी निठुराई के साथ ऐसी हृदय विदारक आज्ञा देता मानो पढ़ने की सफलता केवल नौकरी ही ठहरी जिसकी जिम्मेदार भी सरकार नहीं बनती नौकरी उत्तम पदार्थ समझी गई न्याय और ईमानदारी के खयालात कुछ न ठहरे। इन २ बातों से अन्याय निवारिणी उस प्राकृतिक विद्या का महा अपमान होता जाता है जिसके कारण दिन दूना रात चौगुना अन्याय का प्रभाव बढ़ता ही जाता है। हमारी भोलानाथ गवर्नमेंट की दृष्टि का कपाट इतने पर भी नहीं खुलता कि एक और नौकरी के लड्डू की लालच दूसरे वकालत मुख़्तारी में रुपये की झनाझन की भाभा तोभरे डाक्टरी और इंजीनीयरी के ओहदों की प्राप्ति का मोहन मंत्र के वश होकर जो विद्या के नकली तपस्वी बना चाहते हैं उनको बापिका उन सूखी रोटी खाकर केवल न्याय और धर्म की श्रद्धा से विद्या व्रत के व्रतियों का मानसिक भाव कैसा बढ़ा हुआ है और उनमें कैसी शुद्ध ईमानदारी की भरोसा हो सकता है तात्पर्य यह कि "अमृत राज सम्मान" की लालच छोड़ परम राजा की अवज्ञा

और झिड़की सहकर इसी भोला नाथ राजा के हित के लिये हमारी मातृभाषा हद से जियादह मारी पड़ी जाती है और उसकी दुर्दशा देख जिन महानुभावों को प्रमुदित होना चाहिये जब उनकी चेष्टा इस्से विमुख पाई जाती है तो हम दुष्ट स्वप्न देख कर शङ्कित के समान दुष्टागम की शान्ति के लिये जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि चाहि भगवान हमारी दयालु प्रजा वत्सल महारानी पर तू सदा क्षमा रख जिसमें अपरिणाम दर्शी वा अल्पज्ञ राज पुरुष कृत अन्याय को महारानी के राज्य शासन का प्रधान अन्याय मत समझें नहीं तो फिर कल्याण की आशा नहीं रह जायगी । हा बड़े दुःख की बात है कि हमारे शुद्ध भाव का निवेदन सुनने वाला कोई भी नहीं है हम अपनी प्रधान स्वामिनी महारानी विजयिनी के सहज न्याय भाव को संबोधन कर निवेदन करते हैं कि हे सत्य न्याय प्रभाकर तू स्वार्थ प्रसार निशा के संसर्ग से सम्पुटित गवर्नरों के हृदय अरविन्द को क्यों नहीं विकसाता और उस प्राकृतिक विद्या की सेना हमारी मातृ भाषा को क्यों नहीं चमकाता जो छोटे से छोटे चपरासी चौकीदार गोड़इत तक उसी प्राकृतिक विद्या सेना के सिपाही होते तो चोर और साहु दोनों के मिताई न करते साहु को जागने की बात और चोर को सूसने की बात न सुझाते वरन क्या अचरज था कि उन्ही सिपाहियों के संसर्ग से चोर उचक्के और वंचकों का समुदाय भी उस विद्या सेना का वालंटियर बन जाता । माल के ओहदेदारों की परीक्षा हिन्दी में होती है हफ्ते दो हफ्ते के अभ्यास से तहसीलदार लोग हिन्दी में पास हो जाते हैं ऐसी सहज भाषा की परीक्षा दीवानी में बिल्कुल नहीं होती । कितने घोंघा बसन्त मुंसिफ सदरआला ऐसे हैं जो फैसले के समय इधर उधर के लोगों से खीस काढ़ पूछने लगते हैं देखो तो सही हिन्दी में क्या लिखा है कोई हम सरीखा कहने वाला होता तो अवश्य कह देता कि हिन्दुस्तान की बदनसीबी और खंठ दालों की नेक नसीबी लिखी है बैठे न्याय की गद्दी पर काटें रकम जेर ज़बर के सिर्फ एक शोशे में मतलब सिद्ध होता है तब हमारी अच्छी हिन्दी में उन की [illegible] सकती है इसी से इस महकमे का सार्थक नाम दीवानी अर्थात् पागल या उलटी समझ है हम नहीं जानते ऐसी भी समझ सीधी करने का

रूल हम किस लकड़ी का बनवावें जिस्से वह उलटी समझ मार डाली औंधी कर दी जाय और वह रूल सदा के लिये दीवानी की परीक्षा का " रूल " कायदा समझा जाय। सोचने की बात है कि सिवाय अरबी और फ़ारसी के कितने और २ अंगरेजी कानून इस परीक्षा में दाखिल हैं पर जिस देश के न्याय की सुगमता का यह सारा प्रबन्ध है वहां की मातृ भाषा हिन्दी का इस परीक्षा में न दाखिल करना मानो परीक्षा रूपा नारी की नाक काटना है। यदि सरकार को हमारे देश में चोरी आदि दुष्कर्म और अन्याय मिटाना मंजूर है तो नागरी के प्रचार का अवश्य प्रयत्न इस ढंग से करे कि हर एक सरकारी नौकर को हिन्दी सिखने का नियम कर दे लिखना जानना कुछ बड़ा दुष्कर भी नहीं है दो हफ़्ता या एक महीने में बड़ी सुगमता के साथ सब कोई सीख सक्ते हैं और यह भी नियम हो जाय कि सरकारी दफ़्तरों के चपरासी या दफ़्तरी और पुलिस के कानस्टबिल बिना नागरी में परीक्षा दिये भरती न किये जांय इस उपाय से गवर्नमेंट को हिन्दी के प्रचार के लिये दमड़ी कौड़ी भी न खर्च करना पड़ेगा और प्रकृतिक विद्या की अच्छा सेना सर्वाङ्ग परिपूर्ण हो दुष्कर्म और अन्याय के मिटाने में तत्पर रहेगी और महाराणी की कीर्तिस्तम्भ को अचल रख देश का सब तरह शुभ और कल्याण करेगी।

हिन्दी अब तेरी क्या गति होगी।

हा ! ! ! हिन्दी के सच्चे प्रदीप का निर्वाण हो गया वह भाषा जिसको सब लोग आज दिन हिन्दी हिन्दी पुकार मचाये हुए हैं क्या यह वही हिन्दी है जिसमें चन्द्र कवि का पृथ्वीराज रासा लिखा गया था अथवा यह वह हिन्दी है जिसमें सूर तुलसी बिहारी पद्माकर से कवियों की कवित्व शक्ति का खजाना भरा हुआ है या यह वह हिन्दी है जिसे लल्लू लाल ने अत्यन्त मधुर और परिष्कृत कर आज दिन हमारे स्कूल और पाठशालाओं की छात्र मण्डली के कण्ठ का हार बना दिया। या यह वह हिन्दी है जिसका बानी सुबानी आ

आर्य से ठगी सी हो दुःख से कम्प
मान हमारी लेखिनी सुगृहीत
नाम धेय श्री हरिश्चन्द्र को बतला
ती है जिन्हों ने इसके उद्धार के
लिये क्या २ नहीं किया कौन २
रंग नहीं रंगे किस २ विपत्ति
को नहीं झेला कहां तक कहैं
इसके प्रेम में अपना सर्वस्व गंवा
य आप निष्किंचन बन बैठे इनके
पुरखों इसे चलाया नोटिस और
इश्तिहारों में इसे छपाया ब्याह
शादी के निमंत्रण पत्र भी इसी
हिन्दी में लिखवाये काव्य सभा
इसके लिये स्थापित किया पेनी
रीडिङ्ग क्लब में भेष बदल मूसा
पैगम्बर इसके लिये बने सुधा के
आकार में इसे परिणत किया
जगत उजागर उस चन्द्र की च-
न्द्रिका भी सब ओर इसी लिये
छिटकाया और फिर कितने का-
व्य नाटक इतिहास परिहास छन्द
प्रबन्ध रचे कि यदि सब के सब
गिनाये जांय तो पत्र के पत्र उस
की गिनती ही में भर जांयगे—
यह कौन कहता है कि उर्दू को
ई दूसरी वस्तु है सच पूछो तो
उर्दू भी इसी हिन्दी का एक
रूपान्तर है जब हम हिन्दुओं ने
इसका अनादर कर इसे त्याग
दिया तब मुसल्मानों ने इसकी
दीनता पर दया कर इसे अपने
मुल्क के लिबास और जेवरों से
आभूषित कर इसका दूसरा नाम
उर्दू रक्खा तात्पर्य यह कि इस
नारी का कुल और गोत्र सदा
एकही रहा समय २ इसका रंग
रूप और भेष अलबत्ता पलटता
गया अन्ततो गत्वा जिस समय
यह तारीकी के भारी गार में
गिर बेजान और बे आसरे हो
गई थी उस समय उक्त बाबू सा-
हब ने अपनी सुधावर्षिणी कल्प
लतिका सी लेखिनी के सहारे पर
हम लोगों के घर २ और असूर्यं
पश्या अन्तःपुरचारिणी अबला
ओं के बीच से निकाल २ इसे
सभ्य जन गोष्टी के आमोद की
उत्तम उपाय कर दिखाया-यद्यपि
अब तो भारत वर्ष के हर एक
कोनो में और प्रत्येक नगरों से

हिन्दी के सुलेखक और रसिक हो गये हैं पर भारवि कवि की उक्ति के अनुसार "सतुलनविशेषदुर्लभः सदुपन्यस्यति कृत्यवर्त्म यः" बने बनाये रास्ते पर चलने वाले सभी होते हैं दुर्घट को रास्ता का बना देना है—हिन्दी के लिये उस रास्ता के बनाने वाले हमारे प्रेमके सर्वस्व श्री हरिश्चन्द्र ही थे और इसी का इनको असख्य धन्यवाद है—जो ढिठाई और स्वच्छन्दता इन मे थी उसे हम अपनी नकटी समाज मे नाक कहेंगे जैसा दस नकटों मे एक नाकवाला नकू बनता है ठीक ऐसाही बर्ताव बनारस की अभारसिक और कातर समाज की ओर से उक्त बाबू साहब के साथ किया गया नहीं तो क्या कभी संभव था कि जिन्हे वे सदा अपने गुरुवर कह सम्बोधन करते रहे वेही महापुरुष कई बार इनके लिये बगाल की कुरी बने और देशानुराग राजभक्ति आदि उनके पुरुषोत्तम गुणो पर आक्षेप डालने से गुरुवर महात्मा मौका पाय न चूके पर न चूके अब पूछो तो इन्ही पापों का फल है कि अब अन्त मे सब गुरुवर के कपट नाटक का सब परदा फाश हो गया और स्वार्थपरता के बालू की नेव पर बनी भीत ढे गई तो सहज अप्रतिष्ठा के साथ अयश का ऐसा टीका लगा कि ईश्वर ऐसा किसी के मुह मे न लगावे अस्तु इन बातों के उद्घाटन मे अब क्या लाभ है प्रियतम हरिश्चन्द्र के वियोग सन्तप्त हम लोगों के हृदय मे अब वे सब बातें शूल सी बेधती हैं इससे उन्हें छोड़ ईश्वर से यही प्रार्थना करें कि परलोक मे उनकी आत्मा का सदा कल्याण रहे और वर्तमान समय को जिस प्रचलित हिन्दी का पौधा लगा गये हैं वह फले फूले और अपने लगाने वाले की आत्मा को आनन्दित करे—अब इस चन्द्र के अस्त होने पर उनके उत्कट लेख को बची बचाई कणिका यदि कहीं बच रही है तो काल

पुर निवासी ब्राह्मण सम्पादक के लेख में देखी जाती है इसी यह भार हम अपने मित्र उक्त सम्पादक पर छोड़ते हैं कि उनको जो वंश वृत्तान्त का पद्य रचना से एक हरिश्चन्द्र शतक लिख कर अपने पत्र में प्रकाश करें जो मानो हम लोगों के लिये जो अपने को उनकी शिष्य परम्परा में मानते हैं वही निवापाञ्जलि होगी।

—०—

पुलिस।

पुलिस क्या है इसका क्या काम है यह हरएक मुल्क और हरएक जमाने में रही और है—यद्यपि ये हथियार बन्द होते हैं और कवायद आदि भी इन्हें सिखाई जाती है पर इनका काम तभी पड़ता है जब देश में सब तरह अमन चैन और स्वास्थ्य है इसके द्वारा प्रजा के जान माल की भरपूर रक्षा हो सकती है और सरकार का रोब रियाया पर जमा रहता है—अब सोचना चाहिये जो काम इस महकमे के सिपुर्द है उसका भरपूर अञ्जाम इन दिनों की पुलिस देती है या नहीं हम समझते हैं विचारवान् कोई पुरुष इस बात के स्वीकार करने में कभी एक मत न होंगे कि इस महकमे के लोगों में काम के अनुसार गुण भी हैं वरन सच पूछो तो इस अंगरेजी राज्य के उत्तम प्रबन्ध और न्याय गुण में जो कभी २ धब्बा और कलङ्क लगता है तो पुलिस ही के कारण और कूड़ा करकट की भरती से जैसा यह महकमा बदनाम और अबतर है वैसा कोई दूसरा महकमा नहीं है—पुलिस यह यूनानी भाषा का शब्द है जिसका मुख्य अर्थ नगर है और इसी शब्द से पोलाइट जिसके माने सभ्य या नागरिक हैं और पालिसी जिसके अर्थ नीति हैं वे भी निकले हैं तो इन शब्दार्थों से निश्चय हुआ कि राजकीय प्रबन्ध के उस विभाग का नाम पुलिस है जिसके द्वारा नगर निवासियों के

क्षेम और शान्ति की रक्षा हो सकैं पुलिस और पोलाइट इन दो शब्दों के ऐक्य से बोध होता है कि पुलिस सभ्यता का एक अङ्ग है इस्के अधिकारी जहां तक सभ्य और नागरिक हों उतनाही पुलिस का प्रबन्ध उत्तम से उत्तम होगा—तो अब हमारे शासन कर्ताओं को उचित था कि इस महकमे मे चुन २ कर ऐसे लोगों को प्रधान प्रबन्ध कर्ता नियत करते जो सभ्यता और पुलिस दोनो के तात्पर्य को अच्छी तरह जानते रहते क्योंकि पुलिस और पोलाइट का बहुत ही निकट सम्बन्ध है पर यह ब्रिटिश राज्य जिसने सभ्यता और समाज के उत्तरोत्तर वृद्धि का बीड़ा उठाय इस आरत भारत को अपनी शरण मे लिया है उस्का इस ओर कुछ ध्यान न देख और पुलिस का ऐसा जघन्य और निकृष्टतर प्रबन्ध देख मन मे भांति२ की कल्पनायें उठती हैं कि क्या कारण जो राजकर्म चारियों मे कोई उस्के संशोधन की ओर चित्त नहीं देता और इस्के महा अत्याचार को देख सुन भी ऊपर के ओहदेवाले हाकिम सुनी अन सुनी कर देते हैं—कदाचित् हमी भूलते हैं कि पुलिस शब्द के अर्थ पर ध्यान रख इसे सभ्यता का अंग माने बैठे हैं और सरकार की इस गुप्त पालिसी का खयाल नहीं करते कि देखाने के दांत अलग होते हैं और खाने के अलग-अजी साहब आप सच २ भूलते हैं जो सभ्यता को पुलिस के अर्थ के साथ ठूंस रहे हैं यह कहिये जिसे हाकिमों की खुशामद करने खूब आता हो मुह पोंछने के रूमाल से साहबों के बूट की गर्द झारना अच्छी तरह जो सिखे हो उसे पुलिस का पूर्ण अधिकारी कहना उचित है अथवा प्रजा को हर तरह पर त्रास और पीड़ा पहुंचाय रुपया बटोरने मे बड़ा व्युत्पन्न हो ईमान दारी को जिस ने काली के खप्पर मे झोंक दिया हो शहर के आवारा लोगों

का जो परम पूज्य देवता हो अथ वा आपही उनसे दब कर उनके वशी भूत हो गया हो और जात का हिन्दू किसी तरह पर न हो इत्यादि गुणो की कामिल सार्टि-फिकेट जिसे हासिल हो वह पु-लिस के ओहदे का हक्कदार हो सक्ता है पुलिस के द्वारा प्रजा की रक्षा हो यह तो हमारी गवर्नमेंट का केवल बाहना ही मात्र है वा-स्तव मे इस्का कुछ औरही प्रयो जन है जिसे हम फिरके प्रकाश करेंगे ॥

गटा परचा पहले से आगे।

पहले इस्के कि हम आगे बढ़ें इतना जताना बहुत अवश्य है कि रबर की कितनी किस्म और उनके रूप रंग तथा परिणाम से कुछ भेद है या नहीं यद्यपि सब प्रकार की रबर वृक्ष के दूधही हैं परन्तु भिन्न २ देशों में होने के कारण पृथक् २ नाम से विख्यात हैं और उनके रंग रूप तथा परि णाम मे कुछ अन्तर है—रबर दो प्रकार के होते हैं गटा परचा और इण्डिया रबर गटा परचा मलाया प्राय द्वीप और इंडिअन रबर दक्षिण अमेरिका और उस्के आस पास के टापुओं मे होता है।

गटा परचा का सरेस।

दो हिस्सा काले रंग की राल और एक हिस्सा गटा परचा एक ढपनेदार डब्बू मे रख आंच पर गलने दो जब राल गल जाय तो एक बार उसे चला दो और पक ने दो। एक दोबार और२ उसे और भी चलाते रहो जब दोनो मिल कर पानी ऐसे हो जांय तब सांचे मे ढाल लो या उस्की गुल्ली बनाकर रख छोड़ो यह सरेस बड़ा उत्तम और बहुत सी चीजों के जोड़ने मे काम दे सक्ता है।

गटा परचा की वार्निश।

आधसेर गटा परचा १ सेर काली राल १ सेर तीसी का तेल पहले तेल के साथ राल को गलाओ जब अच्छी तरह गल जाय तब उस्मे गटा परचा छोड़ दो और आध घंटे आंच पर

उसे पढ़ा रहने दो तब पीतल की चलनी मे छान थोड़ा सा तारपीन का तेल उस्मे मिला दो यह वार्निश बड़ी उमदा और पानी पड़ने से खराब नही होती लकड़ी पर बहुत चमकती है।

(इंडिया रबर की लेई)

चाकू के फल मे पानी लगा रबर के छोटे २ टुकड़े काट लो क्योंकि रबर विना पानी लगाये कितनाही तेज चाकू हो नहीं काट सक्ता १०० हिस्सा रबर का टुकड़ा १५ हिस्से राल १० हिस्सा लाह यह सब तौल मे जितना हो उस्का दूना बाईसल फाइड आफ कार्बन मिलादो इस्से चमड़ा बहुत अच्छी तरह जुड़ सक्ता है रबर के गेंदे और कंघियों के जोडने मे भी यह लेई काम देसक्ती है। पेंसिल मिटाने का रबर इण्डिया रबर और गन्धक से बनता है।

इलाहाबाद के हल्काबन्दी मदर्सों की बदकिस्मती।

इस्मे कुछ सन्देह नहीं हल्काबन्दी मदर्सों की निगरानी का कुल दारमदार डिपटी इंस्पेक्टरों की योग्यता और मुस्तैदी के आधीन है इस लिये इस ओहदे पर अच्छे अंगरेजी दांका होना बहुत आवश्यक है। हाथ कंगन को आर्सी क्या सन १८७९ के पहले इस जिले के मदर्सों मे कैसी अवतरी थी रियायती मुदर्रिस मुकर्रर किये जाते थे किसीन किसी तरह डिपटी इंस्पेक्टर साहब की मेहरबानी हासिल करलेना काफी था मुदर्रिसों की योग्यता पर कुछ ध्यान नहीं था बल्कि मुदर्रिस लोग महीनो तक मदर्सों मे सूरत नही दिखाते थे कितनी जगहो मे तो फर्जी लड़के रजिस्टरों मे दर्ज थे और वर्सों तक लड़कों का नाम एकही दर्जे मे लिखा चला जाता था यह सब हाल डिपटी और सब डिपटी इन्स्पेक्टरों को मा-

लूम था पर वे जान बूझ कर रियायत करते थे एक तो नागरी के मदर्से ही बहुत कम थे जो थे भी उसमें मुसल्मान नागरी पढ़ाने वाले नियत थे। सोचने की बात है मुसल्मान भला क्या नागरी पढ़ावेंगे पर तरफदारी रियायत और शिफारिस का यहां तक जोर था इस सब का हेतु हम यही कहेंगे कि सन ७६ के पहले यहां दो डिप्टीइंस्पेक्टर बराबर अंगरेजी जानने वाले नहीं रहे—अंगरेजी जानने वालों मे शिक्षा के अनेक उत्तम गुण चाहे न भी हों पर यह तो हम अवश्य कहेंगे कि अपने काम की जिम्मेदारी और ईमानदारी का बड़ा खयाल हो जाता है और यह बात प्रत्यक्ष भी देखने मे आई कि जब से पं—दीनदयाल यहां के डि इंस्पेक्टर नियत हुये तब से पूर्व कथित उन सब बुराइयों का संशोधन कर मदर्सों को बड़ी रौनक दियो—उक्त पण्डित साहब बरेली कालेज के सुयोग्य छात्रों में से हैं और अंगरेजी की अच्छी योग्यता रखते हैं इनके समय मे जहां तक मिल सके लायक मुदर्रिस रक्खे गये जो लायक और कार गुजार थे उन की तरक्की कराई गई फर्जी लड़कों के नाम खारिज किये गये शिफारिस का जोर तोड़ा गया मुदर्रिसों के साथ पक्षपात रहित वर्ताव किया गया इस जिले से जहां मिडिल क्लास की परीक्षा मे केवल दोचार उत्तीर्ण होते थे वहां अब बीस और तीस होने लगे—हम लोगों के दौर्भाग्य से उक्त पण्डित जी अब कानपूर के जिले मे तबदील होते हैं और इनके स्थान मे जो महात्मा आने वाले हैं वे अंगरेजी का एक अक्षर भी नहीं जानते—इस समय बहुत सी कारखाई इस महकमे की अंगरेजी मे होने लगी है इसी से सुगम और उत्तम होती है एक बड़ी भारी बात तो यह है कि वे अंगरेजी पढ़ा अफसरों के सामने अपनी राय आजादी से

नहीं दे सक्ता और न शिफारिस की जोर का मुकाबिला कर सक्ता है सिवाय दो के जितने डिपटी इंस्पेक्टर यहां आये सब अंगरेजीदां थे हम निश्चय कहते हैं इन्ही दोनों की वजह से यह जिलह तालीम की बारे मे खराब हो गया और परिणाम से वे दोनो भी बदनाम हो कर यहां से निकाले गये और अंगरेजीदां न रहने से उन सब बातों की आशङ्का फिर हो सक्ती है-पण्डित जी की मेहनत से जो कुछ सुधराव हुआ था वह फिर पहिले का सा हो जाय या इसी से हम कहते हैं यहां की इल्काबन्दी मदर्सों की बदकिस्मती है।

वसन्त।

सरस वसन्त नवल पुनि आयो। पुलक प्रफुल्ल भई तरुवल्ली नव अवला मनमोद बढ़ायो। उमगे मन मतंग स्वाभाविक अंग अंग नव रंग रंगायो। बिरहिन खोजि खोजि मृगया प्रिय कर अनंग शर चाप चढ़ायो। सरसों पीत पीत केसर सोई संध्या ओस मोत मसि छायो। पीतम पीत वसन भूषण सजि निज प्यारिन संग रंग जमायो। प्रकृति रीति अपनी निबाहि जग सब कों प्रीति उछाह सिखायो। हम हतभाग्य बाल विधवा तिय लखि वसन्त हिय जाल तपायो।

श्रीधर पाठक।

वसन्त

॥ बिरह निवेदन ॥

अब रितुराज साज सजि आयो। सरस समीर सुगंधित डोलै सुखमा शिशिर सुहायो॥ पल्लव लसत रसाल ललित बहु घौंप घनो बौरायो। फूली कुसुम खितारिन सरसों अरुन पीत रंग छायो॥ इन्द्रीनंग रंग रस रांचे सुधि सरीर बिसरायो। जित देखो तित वसन बसंती नारी नवल रंगायो॥ पहिरि पहिरि मन मोदित ह्वै कै रजनी रसिक रिझायो। कामकला कलोल ललना

करि सुख समूह सरसायौ ॥ राग मल्हार बसंत कंत संग गाइ सुनाइ गवायौ। हा हतभाग्य अहैं हम विधवा पिय सुरसदन सिधायौ ॥ शिशुपन ब्याह किए पितु बाउर तन मद ज्वाल जरायौ। बड़ जस पैहै जो केदार जग पुनर्विवाह चलायौ ॥ १ ॥

स्त्रियां और उनकी शिक्षा।

नये खयालात के फैलने से हम अपने सब शिक्षितों को थोड़ी हानि देखते हैं। जब कभी दो चार पढ़े लिखे इस समूह के लोग इकट्ठे होते हैं तो शिकायत को और २ बातों से सब से पहले स्त्री शिक्षा ही का प्रसङ्ग छेड़ अपने ही समूह को यों निन्दा करते हैं--"बालकों की शिक्षा तो हमारे देश में धूम धाम के साथ चल निकली लोग अंगरेज़ी तथा और २ भाषाओं को पढ़ लायक हो गये आंखें जो खुलीं तो पहले उन्हें यह मालूम हुआ कि उनके पास पास की स्त्रियां चाहो घर बार के और२ काम काज लायक हों पर अपने पुरुषों को सम्भाषण का सुख देकर चित्त प्रसन्न करने लायक कदापि नहीं हो सकीं। अब देखते हैं कि मानसिक व्यापार से जितनी बातों का सम्बन्ध है उनसे स्त्रियां कोसों दूर हटी हैं वरन विद्या और बुद्धि के दौड़ से विषयों के पास भी उनकी स्त्रियां नहीं फटक सकी और मनुष्य को बोलने की शक्ति जो ईश्वर ने दिया है वह इसी वास्ते कि अपने खयालात को एक दूसरे के साथ अदल बदल कर अपने सिद्धान्त रूपी पूंजी का मूल्य परखे अथवा तर्क के द्वारा उसकी कचाहट दूर करे दूसरों को फायदा पहुंचावे और अपनी भूलों को सुधारे जब देखते हैं कि बातों ही बातों में कितने बहुमूल्य रत्न एक मित्र दूसरे को दे देता है सो देने की कौन कहै स्त्रियों में उसके ग्रहण करने की भी सामर्थ्य नहीं है तो क्या यह कहना कुछ अनुचित होगा कि यह सब परिणाम जिसका दुःख वे सुशिक्षित लोग उठा रहे हैं वह उन्हीं पुरुषों की सुस्ती और स्वार्थ तत्परता से हुआ है। विदेशीय सभ्य जाति में देखते हैं तो बुद्धि वैभव के प्रकाशक संभाषण का अमृत रस पान करने वाले स्त्री और पुरुष दोनों जाति के लोग हैं पर हमारे यहां उसके विपरीत दृश्य देखाई देता है। इस समय यह देश और पारसी दो एक महा भागिनी स्त्रियों को

प्रशंसा से अपनी ज़बान रोक अपने टूटे हुए भारत वर्ष की असली हालत पर ध्यान दीजिये और काठ पुतली से यह कहना छोड़ कि "यहां की स्त्रियां भी पढ़ी हुई हैं बल्कि लियाकत में विलायती परियों के कान काटने को तैयार हैं" उन स्त्रियों की दशा का खयाल कीजिये जिनसे आप का हर दम काम पड़ता है जिनको आप दिन में सौ बार देखते हैं। यों तो हम जानते हैं कि मैत्रेयी लीलावती सरीखी दो चार विख्यात स्त्रियों का जीवन चरित्र आपने याद रक्खा है परन्तु फिर भी क्या आप इस बदनामी को अपने ऊपर से दूर कर सक्ते हैं कि आपने जान बूझ उभय जाति में बुद्धि वैभव की समता का प्रभेद स्वयं पैदा किया है ? और जो बात आप चाहते हैं वह स्त्रियों में नहीं है तो यह आपही का कुसूर है। आपने अपनी रुचि और समझ पर सान रख खूब तेज़ कर लिया है आप की भांत २ की मानसिक कल्पना ये आप के समाज की चीज़ें नहीं हैं जिस बात से आप का चित्त प्रसन्न और सन्तुष्ट हो वह आप के यहां मौजूद नहीं आंखों में आप के विदेशियों का सा स्वच्छन्द रहना बस रहा है प्राप्त दशा पर हर दम घृणा और असन्तोष आप प्रगट कर रहे हैं यहां का गंवारपन दूर करने को आप जान दिये देते हैं एक २ बर्ताव एक २ व्यौहार में आप को घृणा उपजती है वक्तृता में अपने समाज पर आप अनुदारता का दोष आरोपण करते हैं अपने ही समूह को आप यह दोष भी देते हैं कि बातें अलबत्ते बड़ी लम्बी चौड़ी हांकना आता है स्त्रियों की दशा सुधारने और उनकी भलाई करने की धुन तो आप को है पर बर्ताव में जो देखते हैं तो अपने मन की उन जंगी उमङ्गों को व्यवहार दशा में लाने का कुछ भी उद्योग कभी आप नहीं करते। अपने देश की रीति और बर्ताव में स्त्रियों पर अत्याचार की आप बाहर बड़ी निन्दा करते हैं पर घर में जैसा बर्ताव आपका उनके साथ है उसे जौ भर भी नहीं बदलते। बाहर आप परदा नशीनी के बड़े भारी दुश्मन हैं पर अपने घर की स्त्रियों को ज़रा भी चौखट के बाहर निकलने दें यह कभी न होगा। अपनी स्त्रियों की मन्द बुद्धि को आप बाहर बहुत झींखते हैं परन्तु आप यह नहीं सोचते कि हम कैसे इस लायक हुए को दूसरों को ऐब समझाने लगे? क्या खाली

स्त्री को जाति मे जन्म पाने के भेद से बुद्धि बलमे भी भेद आ जाता है? कदापि नहीं। आपने खुद ऊंचे दरजे की शिक्षा पाया है तब इस योग्य हुये कि दूसरों की न्यूनता समझें तब फिर वही शिक्षा फैलाने का प्रयत्न आप उनमे भी क्यों नहीं करते"।

हम इस तरह की शिकायतें आज कल सुपठित समाज की शिथिलता की हम बहुत सुनते हैं उनही सबका उत्तर देना हमारे इस लेख का प्रयोजन है। पहले इस बात को सोचना चाहिये कि दुनिया के किसी दरजे के लोगों पर अत्याचार के क्या माने हैं? इस अत्याचार का झीखना कौन झीखता है? वही सुपठित समाज के थोड़े से लोग। पर हम को तो यही सूझता है कि हमारे देश के आज कल के पुरुषों का बर्ताव आज कल की स्त्रियों के साथ अत्याचार नहीं है। दृष्टान्त लीजिये काबुल के कुपथ गामी लुटेरों को सभी जानते हैं उस देश मे आप कहेंगे कानून को कोई नहीं पूछता दिन रात नमकी मची रहती है। इसीके मुकाबिले न्याय रक्षित विलायत को लीजिये जहां कि राजकीय प्रबन्ध सुव्यवस्थित होने के कारण कानून का कोई बड़ा भारी व्यतिक्रम छोड़ा नहीं जाता। ऐसे देशमे इतमिनान के साथ रहनेवाले यह कह सक्ते हैं कि काबुल से बड़ा अन्याय होता है पर काबुल वाले खुद आप यह कभी न कहेंगे कि हमारे यहां जुल्म है क्योंकि काबुल वाले यदि यह खुद समझते होते कि उनके यहां जुल्म है तो कदापि जुल्म मे न पड़े रहते लूट मार छोड़ के भी सभ्य नागरिक लोगों के समान रहते यही बात इस ओर लगाइये आदमी जान बूझ तकलीफ मे नहीं रहता खास कर खास जिक्र तकलीफ अगर समाज की सामान्य रीति पर उसे समझ जाय तो फिर क्या। इस अत्याचार की शिकायत करने वाली अगर स्त्रियां होतीं और वे समझ जांय कि हम पर जुल्म होता है तो निश्चय जानिये वे कभी इसमे न पड़ी रहतीं। शिकायत न करतीं बलके सब बुराइयों को दूर करके देखना देतीं हम नहीं समझते किसी देश के इतिहास मे आप यह देखला सक्ते हैं कि किसी समाज ने समाज की रीति पर किसी बुराई को समझा और फिर भी उसी मे पड़ी रही। स्त्रियों को स्वच्छन्द करने वाले मतके पोषक शायद इस मसल को

नहीं जानते Liberty is a gift which not even the gods can give अर्थात् स्वच्छन्दता। खुद अपनी काबूलियत से पैदा की जाती है। निश्चय जानिये स्त्रियों के दोष पुरुषों के किये कभी नहीं दूर हो सकते जबतक वे अपने को आप न सुधारें- तब क्या यह महा अन्धकार जो हम अपने चारों ओर देखते हैं ऐसाही बना रहेगा ? जब हम देखते हैं कि दुनिया की पढ़ी हुई स्त्रियों के सेन्सस में यूरोप के किसी २ भाग की पढ़ी हुई स्त्रियों की संख्या ९२ और ९४ सैकड़ा पीछे हो गई हैं वहीं भारत वर्ष के किसी २ हिस्से में सैकड़ा पीछे३ वा४ से अधिक नहीं बढ़ने पाई तो क्या हम को दुःख न होगा ? और क्या तब आप यही कहते हैं कि इस दुःख का दूर होनाही दुर्घट है ? स्त्रियों को स्वच्छन्दता आदि देने के प्रयत्न में जो लोग लगे हुये हैं आप उनके परिश्रम ही को क्या व्यर्थ कहैंगे ? जी नहीं। हम लोगों को निराश होने की कोई बात नहीं है बल्कि सब तरह पर ढाढ़स बांधना चाहिये जिस ईश्वरने पुरुषों को बनाया है उसीने स्त्रियों को भी। पुराने लोगों से पूछिये तो वे यही कहेंगे कि कलकत्ते के बड़े २ कालिजों के एक वे दिन भी थे कि माष्टर लोग खुशामद कर लड़कों को बुलाते थे तौभी लोग अंगरेज़ी पढ़ना मंजूर नहीं करते थे अभी अब लड़कों की इतनी कसरत स्कूल और कालेजों में पाई जाती है कि बैठने की जगह नहीं मिलती। एक किसी घराने में एक आदमी पढ़ लेता है तो अपने दूसरे भाइयों को उसी रास्ते पर चलने में बहुत सहारा लगा देता है इसी तरह समाज का एक भाग यदि पढ़ा हुआ होगा तो उसके तजुर्बे का फ़ायदा दूसरा हिस्सा अवश्य उठावेगा इसी से पढ़े हुये लोगों की सहायता से हमारी समाज से सब दोष हाथों हाथ निकल जांयगी। परन्तु जब तक में धीरे २ यह काम सिद्ध हो तब तकके हमारे नवशिक्षितों को चाहिये कि स्वच्छन्दता और विदेशी विद्या के प्रचार पर मोहित हो अपने यहां की चीज़ों को नाचीज न समझें निश्चय जानिये समाज की मानसिक शक्ति के बढ़ने के साथही साथ उसी में लिपटी हुई बुराई और भलाई दोनो रहती हैं विद्या के एक और उच्चतर पद पर जाने से पहली बुराइयों का साथ छूट जायगा और भलाइयां पुष्टतर रीति पर मिलती जांयगी।

गण वस्त्र भूषण रहित हो गये— आपने अपने लिये भी कुछ न रक्खा सब अपने सेवकों को अर्पण कर दिया। इसी से नग्न आप का रूप है।

आपका स्वेच्छाचार इस लिये है कि आपके भक्तजन अपनी इच्छा से चाहैं सा कर गुजरें कोई उन्हे न रोके भक्त वात्सल्य इसी का नाम है आप उसी से प्रसन्न रह ते हैं जो आपके सेवकों के अपमानं से पीड़ित हो कभी पुकार नहीं करता इसी से आपने एक महा ब्रह्मास्त्र जिसका नाम प्रेस—है चलाया था परन्तु राक्षसों की प्रबलता से उसका प्रचलित रहना दुर्घट हो गया आशा है आप अवतार ले उस ग्रन्थ का फिर उद्धार कर अपने सेव कों का सब कष्ट दूर कर उन्हे सन्तुष्ट रक्खैं गे। आप की एक बार की कृपावर्षिनि-नी दृष्टि के पात मात्र से ब्रीड़ा रोग संसार मे जड़ पेड़ से उच्छिन्न हो गया इसी से है शुष्क मांस तिभैरवि आप अपनी लम्बोदर पेट मे एक चिन्ह उसी ब्रीड़ा का धारण किये हो। मा हम आपके सेवकों के प्रतिकूल होने की कभी स्वप्न मे भी चेष्टा न करेंगे हम पर सदा अनुकूल रहना। इति ॥

कवित्त।

पं० श्रीधर पाठक रचित।

O कौर्ड सवैया नाहिं
p रको सुनैया कांज औरण धरैया भैया एका ना दिखात है॥ कर
Q लर देश में फिरायो कलि राज आज
R त अवस्था भूठ भारत की बात है॥
S ढील आलस को
T का लगायो सिर
U थल के यूथ आयं
V ज के नसात हैं॥
W न पास एक टेक्स
X इज अनेक पोत ड्स
Y देत देत
Z रात है॥

ओओ है सवैया आहिं पीर को सुनैया कोज औरण धरैया भैया एका ना दिखा-त है। क्यूकर देश में फिरायो कलि राज आज आरत अवस्था भूठ भारत की बात है॥ एस ढील आलस को टीका लगायो सिर यूथल के यूथ आयं वीज के नसात हैं। डबलज न पास एक टेक्स एक्स इज अनेक पोत ड्स वाई देत देत जी डरात हैं॥

उन्नति पतवार का पतन।

काशी निवासी बाबू हरिश्चन्द्र का सुरपुर गमन।

छन्द चौपइया।

हा! कविवचन सुधा की नायक हा! चन्द्रिका प्रकाशी। हा! हिंदी की अंकुर करता हा! सबु बार बिलाशी॥ हा! असंगती त्यागन करता हा! सबनाम हुलासी। हा! बल्लभ पदकञ्ज मंजु वर मधुकर निसि बसु बासी॥ हा! नास्तिक से आस्तिक करता हा! भारत उपकारी। हा! भारत की पूर्ण कलाधर हा! षोडश गुन धारी॥ हा! चौदह विद्या जनवैया हा! भारति की ताता। हा! कवि मुकट वैश्यकुल भूषण हरीचन्द सुखदाता॥

दोहा।

हा बाबू हरिचन्द जू कविगन की सिर मौर। अबही थोरि उमर में क्यों? चलिगे हरि ठौर।१। को नरपुर नर मोहिके नभ सुर मोहन हेत। कछुक कहि नहि चलि गए कारि जग जनहि अचेत २ के पत्री पठवाइ दृत शक्राहि कीन बोलाइ। दयानन्द मत खंडने तुव प्रति लिव कराइ। ३। के कोउ नाटक मंडली भई इन्द्र आगार। ता कौतुक लखिवे हित गए शक्र दरबार। ४। कै उदयेश उदारहित तरत त्यागि निज देह। गए तेरहो दिवस में सज्यान ढिग बिधि गेह॥ ५॥

कवित्त।

सुघर सिरोमणि सुजान रसिकाऽधिराज कच घघरारे श्याम रंग सरसायगो। मीठो बैन बोलि मन मनुज लुभाइ लीन्हें जग सौ मिलाप को वियोग दरसायगो॥ कविता प्रकाशि रसपूरित प्रमोद वारी नारी नर भारत कीदार तर सायगो। हाय! हरिचंद कवि कोविद प्रशंस छंद गुण सणि पखंवार पारखी परायगो॥ १॥

ब॰ का॰ प्रेम कीदारशर्मा

आत्म त्याग।

॥ पं० श्रीधर पाठक लिखित ॥

आत्म त्याग पदार्थ क्या ? किसका है यह नाम ? किधौं साहब किस तरफ़ है इसका ख़ास मुकाम ? क्या यह कोई देव है ? या दानव का नाम ! या कोई अंगरेज़ है याकि अहल इस्लाम ? हमने तो अब तलक कभी सुना नहीं यह नाम ! हमसे इससे आज तलक पड़ा न कुछ भी काम ! क्या कोई उमदा चीज़ है या है शै एक आम ! नई रोशनी का फ़कत याकि नया एक नाम ? अथवा यह वैराग है या स्वदेश अनुराग ? अश्वमेध नरमेध या नया कोई यह याग ? या कोई तीरथ है नया भया प्रगट इस काल ! जिसमें न्हाने का हमें हुआ न अब तक ख़्याल ? अथवा कोई यह नया सन्त महन्त समाज जिसका हम तुमको फ़क़त पता लगा है आज ? अथवा निकली है कहीं यह सोने की खान ! रहा न जिसका आज तक कुछ भी ध्यान गुमान ? या यह कोई द्वीप है या नक्षत्र नवीन। जिसके आविष्करण में सफल हुआ दूर्बीन ? कौन अजूबा चीज़ है जिसका है यह नाम ! क्या आसकती है कभी २ हमारे काम ? आत्मन् अपने आप को कहते हैं बुध लोग, त्याग नाम है छोड़ना अथवा विरह वियोग ? अपने तन का त्यागना अथवा मन का त्याग ! या धन का दे डालना करना अटल विराग ? आत्म शब्द से पुत्र भी समझैं हैं विद्वान्। तो क्या उसका त्याग ही इसका अर्थ सुहान् ? बुद्धि भेद नहिं राखना या स्वभाव का फेर। अहंकार का नाश या जीवन का निरवेर ? अपनी तो इस विषय में वहि न आवै काम ? आत्म त्याग पदार्थ क्या किसका है यह नाम ? (शेष आगे)

प्रेरित।

आपदा अापतन्ती वा ह्रियमाणा वा तितुहेता। मातृ जंघा हि वत्सस्य स्तम्भो भवति बन्धनी॥

यद्यपि हमारा लेख हमरे अधिकारि

को निरस और छूंछत जचैगा क्योंकि इनका अपनी मातहतों की कार गुज़ारी की रिपोर्ट ही पर विश्वास है तब खुद जाकर उस रिपोर्ट की बनावट को याद विनोद करने मे दर्दसरी अपने ऊपर क्यों लें पर हम जैसा अन्तर्गत वृत्तान्त देखते हैं उसे दीन दुखियों के दुःख दूर करने की आशा से शुद्ध चित्त हो अपनी सरकार के कर्णगोचर कराने से क्यों विलम्ब करें। जो विषय हम लिखा चाहते हैं उसका मुख्य उद्देश्य हमारे देश के निर्धनों और चोटी पसीने की मेहनत से रोटी कमाने वाले खेतिहर लोग हैं जिनके उपकारार्थ और देश को दुर्भिक्ष से बचाने को सरकार ने ठौर २ नहरें निकाली हैं और निकालती जाती है पर इन नहरों से जैसा लाभ हुआ है वह वेही जानते हैं जिन पर बीतती है हम पुरानी नहरों के महसूल की अपेक्षतही थी नई नहरें जो निकाली हैं उनमें पहले से अधिक कर लगाया गया है इससे तो जमीदार भी न बचे जितना काश्तकार दे सका तिहाई जमीदार को भी देना पड़ता है और सुनते हैं अब पुरानी नहरों पर भी उसी शरह से महसूल लिया जायगा। फिर इस नहर के महकमे के सदर का भी कुछ ठीक पता नहीं है जहां गरीब खेतिहर जाय फ़रियाद करें बेहतर होता कि परगने के तहसीलदार या जिले के कलेक्टरों को इख्त्यार रह निर्धार दे लिया जाता; हम कोई फसल ऐसी नहीं देखते जिसमें किसानों को बेफ़ायदा सिचाई का डांड़ न देना पड़ता हो वरन इस पापिनी नहर के कारण ढोर और बैल की कौन कहै कितने किसानों को घर भी रहने को न रहा परचे जो आसामियों को मिलते हैं ऐसे खुशखत फारसी अक्षरों मे लिखे होते हैं जिनको लिखने वालाही पढ़ सक्ता है हिन्दी मे होता पटवारी भी पढ़ लेता पर फारसी पढ़नेवाला कहीं दो चार गांव मे भी ढूंढने से नहीं मिलता; क्या इन्साफ है परचे मे लिखा रहता है कि परचा मिलने से बीस या इक्कीस दिन के भीतर यदि कुछ गलती हो असामी अफसर को इत्तिला दे पर यह कोई नहीं देखता कि परचे की तारीख से मुद्दत मुकर्रर बीत जाने पर बहुधा परचे मिलते हैं जिसके बदले असामी को कुछ तावान भी देना पड़ता है। इस नहर के द्वारा सरकार का भरपूर भला है पर खेतिहरों को तो एक गुना हम हानि समझते हैं दूसरी बड़ी हानि और तकलीफ देहातवालों को नीलवरों से पहुंचती है गांवों से मिली हुई नील की कोठियां बनाने की इजाजत सरकार दे देती है नील की दुर्गन्धि से गांव वालों का नाकों दम आ लगता है मक्खियों की अधिकाई इसी नील के कारण बरसातों मे इतनी हो जाती है कि गांववालों को दिनको भोजन करना

महा कठिन हो जाता है सिवा इसके नील जिन खेतों में एक बार भी बो दी जाती है वे ऐसे बिगड़ जाते हैं कि कई साल तक गेहूं आदि अच्छे अन्न उसमें नहीं उपज सके इस बात से भी हम अपने देश की एक प्रकार की हानि ही समझते हैं अतएव सरकार से निवेदन है कि वह दीन दुखिया प्रजा के हित के लिये नहर और नील दोनों का ऐसा उत्तम प्रबन्ध करै कि पूर्वोक्त सब लोग निवृत्त हों और सीधी सादी ग्रामीण प्रजा सुख से अपना कालक्षेप करती सरकार को सदा असीस दे रहे। एक देशहितैषी॥

प्राप्ति।

होशंगाबाद निवासी बाबू हरिश्चन्द्र कुल श्रेष्ठ रचित निम्न लिखित ४ पुस्तकें हमें प्राप्त हुई हैं जिन्हें क्रम से हम प्रकाश करते हैं और ये चारो पुस्तकें गोपालप्रसाद खत्री सकली बाजार होशंगाबाद के पते से मिलैंगी।

नल दमयन्ती नाटक।

करुणारस प्रधान रूपक एक तो राजा नल का इतिहास ही करुणा पूर्ण और चित्त को द्रव करने वाला दूसरे हमारे मित्र उक्त बाबू साहब की कलम की कारीगरी कौन ऐसा रूखी तबियत का मनुष्य होगा जिसे न रुचेगा मूल्य भी बहुत कम कुल ।) है अवश्य देखने योग्य है।

सत्यासत्य नाटक।

नीति सुधारस पूर्ण यह नाटक बाबू हरिश्चन्द्र कुल श्रेष्ट की बिलकुल नई उक्ति युक्ति से भरा है यह नाटक पहले नाटक से भी मुझे उत्तम जंचता है अवश्य संग्रह करने योग्य है मूल्य ≈)

ठगी की चपेट बग्गी की रपेट।

यह प्रहसन रेल का विकट खेल जो एक बार हरिश्चन्द्र मेगजीन में एक अंक छपकर रह गया उसी की परती पर लिखा गया है हास्य रस का परम उद्दोधक है मूल्य ‍/) आना

गुरु नानक स्तोत्र।

सरस पद्य रचना में गुरु नानक के शिष्य संप्रदाय में जो लोग हैं उनको यह पुस्तक अवश्य लेना चाहिये मूल्य ‍/)॥ आना

मूल्य अग्रिम ३।≈) पश्चात ४।)

Printed at the 'Light Press' Benares, by Gopinath Pathuk anp
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ लो को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकासि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st March 1885. Vol. VIII.] [No. 7

प्रयाग फाल्गुणशुक्ल १५ सं० १९४१ [जि० ८ [संख्या ७

हिंदुस्तान की विद्या और कला की घटती काला।

संसार के अनेक प्रकार के घमण्डों मे हम दो घमण्ड को प्रधान कहते हैं एक विद्या का घमण्ड दूसरा धन का--इन दो विषयों को छोड़ शायदही किसी और तरह के घमण्ड पर लोगों के खयालात का पिष्ट पेषण हुआ हो सच पूछिये तो ये दो मद ऐसे हैं कि इनमे अन्धे हो लोग न जानिये क्या २ कर्म कर डालते हैं पर हम यहां पर केवल इतनाही कहा चाहते हैं कि विद्या के घमण्ड से हमारा उस तरह

के घमण्ड से अभिप्राय है जो मनुष्य को अपने बाहु बल से संपादित किसी काम पर होता है और धन के घमण्ड से उस प्रकार की बड़ाई का जो बाप दादे छोड़ गये हों—हम अपने लोगों में इस समय इन दिनों कुछ थोड़ा सा हेर फेर देखते हैं जो नितान्त हंसने के लायक है हमारे यहां के लोगों में विद्या का घमण्ड तो है पर धन के घमण्ड की रीति पर अर्थात् अपने बाहु बल से सम्पादित विद्या का नहीं किन्तु उसका जो हमारे पुराने लोग छोड़ गये हैं—सो भी उस विद्या रूपी धन को हम वैसी ही दशा देखते हैं जैसा किसी महाजन की बड़ी भारी कोठी है, और पूंजी के हेर फेर से उसका नित्य काम काज बढ़ता ही जाता हो, और वही कोठी उसके लड़के वालों के हाथ आ जाय, वे चलते व्योहार को रोक, रुपये के सदूकों में ताला लगाय, कोठी बन्द कर, सुख सों, केवल पुराने समय की बाप दादों की बड़ाई पर सन्तोष कर, अगले समय के काम काज को याद रख रोया करें, और अपनी बड़ाई और प्रतिष्ठा के लिये उसी को काफी समझें, जहां काम पड़े उसी को पेश करें विद्या की पूंजी को यदि आप धन की पूंजी समान मानते हैं तो पहली शर्त उसके बरकरार रखने की यह है कि उसका हेर फेर हो परन्तु यहां इस ढंग के बर्ताव की कौन कहै इससे बिल्कुल ही उलटा पुलटा कारखाना देखा जाता है आप के घर की बड़ाई को प्रकाश करने वाले कौन हैं ? फ्रांस देश के बुद्धिमान और इंगलैंड के परिश्रमी लोग जिन्हों ने अपना जन्म इसी काम के लिए अर्पण किया आप को भी अब अपने यहां की बारीक बातों और सूक्ष्म विचारों पर कुछ कहना सुनना होता है तो उन्ही के यहां दौड़े जाते हैं—अब अपने यहां के शास्त्रीय सिद्धान्तों को सुलझाना समझना होता है तो आप अपने यहां के पण्डितों के पास नहीं जाते बल्कि मेक्स म्यूलर के लेक्चरों को खोजते हैं—आप के यहां के बड़े २ खियालातों की फिलासफी को बतलाने वाले कौन हैं ? जर्मनी के हजारों विद्यालय से लोग जो खासी “अन्वेषणा वर्द्धिक” वाली शिक्षा की लत है नहीं करते किन्तु असल बात को ढूंढते हैं—यहां इतना अवकाश कहां है कि विदेशियों की मेहनत के देखा देखी हमारे यहां के पढ़े लिखे लोगों को भी अब अपनी खुली आंखों [illegible]

अस्तु यदि जर्मनी की खोज से आप की यहां की पुरानी विद्या की ओर कहीं २ योरप की दृष्टि से आप के देश की कारीगरी की कदर हुई भी तो हमारे यहां के वर्तमान समय के लोगों को इस से क्या लाभ है ? आप के यहां के दर्शनों की अगर तारीफ हुई तो आप का उस से क्या बन गया ? हम आप की भी प्रशंसा करते हैं कि वेदान्त आप फिर से छौंकने लगे मगर याद रखिये कि शांडिल्य का भक्ति और सांख्य फिर से बघारने लगे । खूब वह चीज नहीं जिसको आप रोटी के संग खा सकें या भात दाल के बदले कणाद और कपिल के सूत्रों को काम में लावैं—रोज की रोटी देने वाली विद्या संसार छुटा देने वाली विद्या से बिल्कुल न्यारी है „ संसार मिथ्या है " इतना कह देने ही से काम न चलेगा क्योंकि फाके कशी के बाद जब आप को कड़ाकी की बड़ी भूख लगेगी तो यह मालूम हो जायगा कि संसार केवल सत्य ही नहीं है बल्कि बड़ा मजबूत सत्य है—निर्वाण प्राप्त करना बहुत अच्छी चीज होगी परन्तु जब कभी जीविका के सहारे ही के निर्वाण पद मिल जायगा तो इसकी प्रसन्नता न होगी—" मूल प्रकृति " का ठीक अर्थ समझना बहुत अच्छी बात है पर उस से भी बढ़ कर एक अच्छी बात और है वह अपने और अपने कुटुम्ब को सहारा पहुंचाने की खोज करना है ।

आगरे में एक कमिटी इसी निमित्त स्थापित हुई है कि भारतीय विद्यमान शिल्प विद्याओं का नष्ट हो जाने से बचावे विलायत की सी कलें आदि बनाने के कारखाने हिन्दुस्तान में भी जारी करै इंजीनियरिंग वगैरा का फन सीखने के लिये अपने रुपये से योग्य लोगों को विलायत भेजे इत्यादि इत्यादि—इस कमिटी के उद्योग की पूर्ण प्रशंसा करना प्रस्तुत में हम अपना उचित काम समझते हैं इसकी प्रासपेक्ट के देखने से मालूम हो जायगा कि हिन्दुस्तान में आज कल सब पेशों की क्या हालत हो रही है—विद्या पढ़ केवल नौकरी करना एक बड़ा भारी पेशा है और पढे हुए लोगों की जैसी दुर्दशा हमारे देश में है उसका विस्तीर्ण वर्णन करना इस समय हमारा उद्देश्य नहीं है—आज कल के मीटिंग या सभाओं का जो कुछ ढंग निकल चला है उसे हम अपने सुशिक्षित भाइयों के आगे प्रगट करने में केवल पिष्ट पेषण मात्र समझते हैं क्योंकि वह तो उनके रोज का बायें हाथ का खेल है—एक

साहेब ने बड़े जोर शोर के साथ देश की उन्नति ? 'प्रपोज' किया—दूसरे साहब ने उसको 'सेकिण्ड' किया—"हियर! हियर!" के शब्द से छतें और दीवालें गूंज उठीं—चलिये "क्यारिड यूनानिमसली" लोग थपोड़ी बजाते हुए, सभापति को धन्यवाद देकर उठ खड़े हुए और घर पर आकर सो रहे—दूसरे दिन फिर इसी खेल का अभिनय और हुआ। एक नये तरह से 'भारत वर्ष की भलाई' का दूसरा प्रपोजल हुआ—और फिर उन्हीं तालियों का पीटना और बोलना हुए—और लोग घर पर आकर फिर सो रहे—इन सब बातों से आज तक किसी बात की पूर्णता न देखने में आई 'मनी' अर्थात रुपये के वास्ते सब लोग अपने२ बिल ढूढ़ने लगे—स्पष्ट है कि इस किसिम के कामों में धूम धाम और जोश की उतनी जुरूरत नहीं है जितना कि सच्ची मदद की इस लिये देश की भलाई के वास्ते अब जो कुछ लोगों ने इस काम को उठाया है तो उनके उद्यम को लोग वित्त की सहायता से यथा शक्ति पुष्ट करेंगे।

माधुर्य ।

इसका वह असर है जो हमारे मन और आत्मा को मुग्ध और विवश कर देता है ६ रसों में केवल यही एक रस है जो मन को विश्राम और अत्यन्त सुख का अनुभव कराय उसे जड़ प्राय कर देता है—इस माधुर्य से आप पेड़े बर्फी की मिठाई मत समझिये जिसके लिये हमारे ब्राह्मणों की जीभ चट चटाया करती है वरन कुदरत की वह कारीगरी जिसका रस या स्वाद मन की पांचों इन्द्रियों के द्वारा पहुंचता है—अच्छी बात अच्छा गान सुन कान को जो आनन्द प्राप्त होता है वह क्या जीभ की मिठाई से कुछ कम है ? सुन्दर रूप सुडौल वस्तु के देखने से आंख को जो सुख मिलता है वह चटोरी जबान को कभी मयस्सर हो सका है—खुलासा यह कि प्रत्येक इन्द्रियों के द्वारा हर एक रस का असर जो मन को पहुंचता है उन सबों में माधुर्य एक अद्भुत पदार्थ है—और ५ रसों से जीव या आत्मा सुखी होकर प्रगल्भता activity प्राप्त करता है पर माधुर्य के असर से प्रगल्भता प्राप्त करना तो एक ओर रहा अपने आपे के बाहर हो बेकाबू हो जाता है—रसिकों को बहुतेरी यौवनवती के रूपसे

नमक का मजा मिलता है कितनों के कटु वचन और कड़ी बोल मन को मिर्च से अधिक तीखी लगती है बहुतेरे कुटिल मनुष्यों के कुटिल बर्ताव से मन खट्टा है को तलखी भी भुला देता है पर माधुर्य रस में मग्न हो मन फिर आपे में नहीं रह जाता इसी से बुद्धिमानों ने कहा है जब तुमको किसी से कुछ काम निकालना हो तो मीठी बातें करो जिस्से सुनने वाले का जी तुम्हारे काबू में हो जाय "कागा काको धन हरे कोयल काको देय। मीठी बचन सुनाय के जग अपनो कर लेय" मीठे आदमी से लोग कम डरते हैं इसका यही हेतु है कि वह तलख मिजाज कड़ुए आदमी की भांति मन को किसी तरह की बिलोबिया नहीं उपजा सका—मिठाई से जब मुंह भरा और जीभ बन्द हो जाती है तो बिना खटाई या तिताई का पुट दिये एक ग्रास भी आगे नहीं खसकता हमारे कहने का प्रमाण आप को न हो मोदक प्रिय किसी ब्राह्मण से पूछ लो—कड़ुआ मांड़ा हवा से बातें करता है मीठा मांड़ा अशर्फियों की कदम चलता है मीठी पुलिस से यह नतीजा होता है जो कुछ दिन पहले इलाहाबाद में था कड़ुए कोतवाल ने भहोगों को भर में शहर साफ कर दिया लोग सुख की नींद सोने लगे—बातों में मीठे होना मन को मैल की बड़ी भारी पहचान है लोग कहते हैं बातों के बड़े मीठे हैं अर्थात मन में इनके गन्दे नाली का सौ मन मैला ठभा हुआ है—प्रसाद ओज माधुर्य काव्य के ३ उत्तम गुणों में यह भी एक है—जैसा कालिदास की कविता प्रसाद गुण के लिये प्रशंसनीय है वैसे ही कोकिल कण्ठ जय देव की कविता गीतगोविन्द माधुर्य गुण के लिये—भाषा की कविताओं में सूरदास की अनूठी कविता माधुर्यगुण शालिनी है—लल्लू लाल के प्रेमसागर में अधिकांश माधुर्य गुण है—जैसा शूरता उदारता आदि शरीर के गुण हैं वैसाही माधुर्य ओज प्रसाद तीनों काव्य के गुण होकर उसके एक अङ्ग समझे जाते हैं साहित्य दर्पणकार ने माधुर्य का यह लक्षण लिखा है "चित्त द्रवी भाव मयो ल्हादो माधुर्यं उच्यते। संभोगी विप्रलंभे शान्तेऽधिकं क्रमात्" जो परम आह्लाद रूप जाति चित्त को पिघला दे वह माधुर्य गुण है—संयोग और विप्रलंभ दोनों प्रकार के शृङ्गार रस में हास्य रस में और शान्त रस में यह अधिक पाया जाता है—सूर्य

श्य वर्ण टवर्ग षकार आदि अक्षर इसके साधने वाले हैं—चित्त को जो विस्तार करे वह ओज गुण है और वीभत्स रौद्र रस में विशेष ओज गुण होता है माधुर्य गुण में जो टकारादि वर्ण निषिद्ध हैं वही ओज के उद्बोधक हो जाते हैं—जैसा सूखे ईंधन में आग झट्ट फैल जाती है वैसाही पढ़ते या सुनतेही जो कविता चित्त में जलद व्याप जाय वह प्रसाद गुण है अपने २ ढंग पर तीनो गुण काव्य के अङ्ग हैं पर काव्य में लालित्य विशेष केवल माधुर्य गुण से होता है दण्डी के काव्य में पद लालित्य इसी लिये समझा गया है कि उसमें विशेष माधुर्य गुण है।

आओ साहब बड़ो दिल्लगी रही ॥

हम तो आप जानते हैं कि अपनी खासी खास खयाली में रसिया मस्त रहते हैं कल रात को एक जलसे में पहुंचे देखा कि अब हो रहा था जलसा क्या था इन्दर सभा की कैफियत बयान करना ताकत से बाहर है बड़े २ परीजाद नाजनीन और बड़े २ माहरू गुलबदन रौनक अफरोज थे तमाशा बीनों में बस हम सरीखे अफीमची सैकड़ों दिखाई देते थे—मगर अफसोस चन्द अर्से में तो वहां कुछ और का और ही हो गया—बड़ा लड़ाई झगड़ा मचा—और सभी नपतपीस होने लगे लेकिन जब एक काला मुस्टंडा दाढ़ी में डाटा बांधे हुए, एक कंधे पर जनेऊ और एक कन्धे पर चाम के फीते में सनीवेग सा लटकाए हुए, एक हाथ में शराब की बोतल लिये झूमता हुआ जलसे के दर्मियान आन पहुंचा, यकीनन समझिए आधी से जियादा महफिल भाग गयी—पर चार लोग कहीं हटने वाले थे—वहीं दीवट हो डटे रहे—इस भड़ भड़ को देख एक बुड्ढा जिसको उमर अस्सी से कम न होगी, कांपता हुआ कड़ खड़ाती जबान से यों रोने लगा—(सच कहता हूं मुझे बड़ा रहम आया क्योंकि यह बुड्ढा "हिन्दुस्तान" था!)

बुड्ढा हि०—मेरी जान अब तो मुसीबत में डाला फसी है फसी है फसी है फसी है।

इतने में वह शराबी मुस्टंड, जिसके आने से सारे आदमी भागगये थे मुंह बना के कहने उसी धुन में लगा (इसका नाम मकासम खिदरखाखां बहादुर B. B.I.C.T. बताई था)

म० हि० यह सुन करके मुझको यकीनन समझना। खुशी है खुशी है खुशी है खुशी

है ! हा हा हा !

[और बोतल से पीकर कूद २ कर नाचने लगा]

इस पर एक औरत जो कि वेश का लिबास पहने हुए थी तड़प के बोल उठी (इसका नाम "हिन्दी" था !)

हिन्दी०—अरे दुष्ट मकनून मत हीं तेरे क्या बकी है। बकी है बकी है बकी है ॥ अरे संग दिल क्यों भरत खंड भर को या मर अपने पंजे में तूने गसी है ?

यह औरत कुछ और कहा चाहती थी, लेकिन एक बढ़िया पोशाक और जेवर से जगमगाती हुई नाजनी ने आकर उसका गला भींच लिया और उसी गुस्सा झाड़ने (यह मकनून की प्यारी बीवी "उर्दू" थी)

उर्दू—य है कौन गुस्ताख लौंडी जो इस दम। मकां में मेरे बेइजाजत घुसी है ? निकालो इसे ऐ मेरे जां निसारो अभी इसको करना मुझे तसल्ली है, बद जात, हराम जादी कहीं की ! [और कहते २ गर्दनी दे ऐसा धक्का मारा कि हिन्दी बिचारी आहि २ करती फर्श पर औंधे मुंह गिर पड़ी]

इस माजरे को देख कर एक मेम साहिबा जिनके चिहरे पर विद्या की रोशनी झलकती थी और जिनकी आंखों से बूंद बूंद आंसू टपकते थे आकर यों समझाने लगी (इनका नाम "अंग्रेजी" था)

अंग्रे०—नहीं है मुनासिब तुम्हें ऐसे लड़ना बड़ी इससे होती तुम्हारी हंसी है लड़ाई का छोड़ो रहो प्यार से तुम नहीं फेंज है ये बरग दिल कुशी है—छिः छिः तुम्हें ऐसे रहना चाहिये ? क्या बहनों के बीच रंज बर्ताव होना अच्छा लगता है ? अफसोस अफसोस ! उठो प्यारी हिन्दी और उर्दू से हाथ मिलाओ—जो हुआ सो हुआ—(हाथ पकड़ के उठाती है)

हिन्दी—(फर्श पर पालथी मार के बैठ कर—अंग्रेजी से आह भर के) अजी क्या कहूं मैं तो चुप ही रही हूं—इसी ने कमर मेरे ऊपर कसी है। य नागिन है इसका जहर है रसीला—सभों की सरल बुद्धि इसने डसी है ॥ मना आरती की य रहे करके झांसा—कचहरी में देखो सरासर धुसी है। करे है दुराचार निस दिन यह नें की—कुटिलता जगत भर की इसमें ठुसी है ॥ हमारी भला क्या चले इसके आगे मददगार इसकी उधर फारसी है। अगर आप सुझ से न इसे खफा तो—यही आप को भी नज़र में कसी है ॥ भुलाया है हमको तो खुद आपने भी—अजब क्या

को होती हमारी हंसी है। भला आप कहिये भला कैसे होगा।—बहर हाल अब अखत ये बेकसी है। नहीं है सगा अपना कोई भी अब तो—नहीं हिन्दुओं में कोई साहसी है, जिसे देखिये दरबदर इश्क उट्ठे—जि हालत को लेकर पड़ा आलसी है॥ इन्हीं हिन्दुओं का भला सोच नेकी—फिकर में मेरी उम्र सारी खपी है। मगर ये रहे वेही कोद्दन के कोदन सभों को समझ हाय ऐसी घिनी है॥ नहीं देख सक्ती मैं इनकी बुराई—य आदत मेरे दिल में कुछ आ बसी है। दुखी देख भारत की जलता कलेजा—मगर बस नहीं क्या करूं बेबसी है।

(और जार जार रोने लगती है)

मकसूम हिन्द की बहादुर तो मेम का खिया के आतेही कूदना फांदना भूल गये थे अंतत उनके हाथ से गिर पड़ी थी नशा उतर गया था—बदन कांपने लगा था—और दोनों हाथों को बांध बड़ी आजिजी के साथ सिर नीचा किये एक कोने में जा खड़े हुए थे—लेकिन जब हिन्दी की स्पीच खतम हुई और दोनों शुरूम हुआ जब मेम साहिबा से भी न रहा गया आंखों में आंसू भरल ही आए और बड़े क्रोध से जब ये चाबुक लेकर मकसूम की तरफ चली उसी वक्त बादल से ऐसी बिजली चमकी और साथही ऐसी भयंकर घोर गर्जना हुई कि मैं चार पाई पर literlly चौंक पड़ा और देखता हूं तो अपने कमरे के आगे की खुली छत पर मालोट अपना बहार कार्यं कार रही है! श्री—प०

ऐंग्लो इंडियन संहिता इण्डियन ईको से।

महाशय।

मेरे एक मित्र इस असार संसार को त्यागने के समय अपने सब माल असबाब की वसीयत मेरे नाम लिख आप सिधार गये उसी वसीयत मे यह भी एक आदेश मुझे लिख गये कि मैं उन के लेखों को सर्वसाधरण पर विदित कर दूं उन्ही में से एक ऐंग्लो इंडियन संहिता नामक अति प्राचीन लेख आपके पाठकों के विनोदार्थ भेजते हैं आशा है आप अपने पत्र के किसी कोने मे इसे स्थान दे मुझे बाधित करेंगे।

सृष्टि क्रम अध्याय १।

(१) उस सर्व नाशक देव ने आदि में इंगलैंड और भारत को उत्पन्न किया पहले का नाम स्वर्ग और दूसरे का नाम पृथ्वी रक्खा।

(२) पृथ्वी पर बड़ा अन्धकार कलह और फूट छाया हुआ था और चारों ओर इसके सिवाय स्याही के और कुछ न था और ऐंग्लो इंडियन लोगों की स्वार्थ तत्परता की रूह इस्पर आगे और डोल रही थी।

(३) और उस देव ने स्वर्ग को सुफेद लोगों से और पृथ्वी को काले अर्द्ध शिक्षित से आबाद कर दिया।

(४) उस देव ने सुफेद लोगों पर अनुग्रह की और उनसे कहा मेरी स्वर्गीय सन्तति तुम फूलो फलो और पृथ्वी के रहने वाले काले हब्शियों पर मन मानी हुकूमत करो।

(५) और काले हब्शियों को उसी देव ने आज्ञा दी देखो मैंने तुमको सुफेद लोगों के अधिकार मे रक्खा है इस लिये तुमको नि-धड़क और अविचारी मत हो जाओ कि सुफेद लोगों के हक और बराबरी का दम भरने लगो।

(६) तब उस देव ने नजर फैलाय के देखा कि प्रत्येक वस्तु जो उसने रची सब अति उत्तम थी।

॥ अध्याय। २ ॥

(१) परन्तु पृथ्वी पर प्रकाश नहीं था तब उसने आज्ञा दी कि पृथ्वी पर विदेशी शिक्षा का प्रकाश फैलाओ और तत्काल किरानियों की एक जाति पैदा हुई कि जिनके हाथ मे अंधियारा दूर करने के लिये मशालें थीं।

(२) परन्तु देखो इस पश्चिमी शिक्षा के साथही उंजियाला सब ओर छा गया और थोड़े समय तक यह प्रकाश अच्छा और मनोहर समझा गया।

(३) फिर तो जल्दी ही से यह रोशनी ऐंग्लो इंडियन लोगों की स्वार्थ तत्परता वाले नेत्रों मे चकाचौंधी उपजाने लगी और

उन लोगों ने इसके बुझा देने की बहुत चेष्टा की परन्तु वह अत्यन्त प्रदीप्त हो चुकी थी।

(४) इस प्रकाश से काले लोगों को मालूम हुआ कि हम नंगे हैं और थोड़े दिनों तक इस बात की उनको कुछ शर्म न मालूम हुई और न कुछ सोच सके कि हम क्यों नंगे हैं।

॥ अध्याय। ३ ॥

(१) अब पश्चिम देश की शिक्षा का सर्प उस दैत्र की सृष्टि में सबसे लायक था और उस सर्प ने काले आदमियों से कहा देखो तुमको पिता ने आज्ञा दी है कि तुम सुफैद लोगों की बराबरी का कभी दम न भरना॥

(२) और उन काले लोगों ने भी उस सर्प से कहा—हां उस पिता ने हम लोगों को आज्ञा दी है कि हम सभों को श्वेताङ्गों की बराबरी का दम नहीं भरना चाहिये नहीं तो हम मर जांयगे और सर्वस्व खो बैठेंगे।

(३) तब सर्प ने काले वर्ण के लोगों से कहा—तुम हरगिज़ नहीं मरोगे क्योंकि वह दैत्र जानता है कि जब तुम श्वेताङ्गों की बराबरी का दावा करने लगोगे तब तुम्हारी आंखें खुल जांयगी और तुम लोग श्वेताङ्गों की बराबर हो जाओगे और भला बुरा समझने लगोगे।

(४) जब कालों ने मालूम किया कि श्वेतों की बराबरी का दावा करना अच्छा है तब उन्हों ने वैसाही किया।

(५) एक दिन काले गोरों का सृजने वाला वही दैत्र पृथ्वी पर आ उतरा और काले लोग उसके पावों की पैदर सुन उसकी नज़र बरकाय पेड़ों में अलग २ छिपने लगे।

(६) तब उस दैत्र ने काले आदमियों को पुकार के कहा अरे पापियो तुम सब कहां हो।

(७) उन कालों ने उस दैत्र से कहा हम लोगों ने तेरे पैदर की आवाज सुना पर हमको डर हुआ कि तू हम लोगों को पकड़ २

जेलखानों मे भेज देगा क्योंकि हम सब नंगे हैं इसी लिये और तेरी आज्ञा के भंग करने से लज्जित हैं।

बस अब कि बार इतनाही अपने पाठकों से कहिये धीरज रक्खें तब आगे और बतलावेंगे।

Price of peace.

शान्ति का निष्क्रय।

इस विषय पर लिखने का मुख्य तात्पर्य यह है कि अंगरेज़ी गवर्नमेन्ट के बड़े २ अफ़सर और प्रशंसक सदा यही कहते हैं कि "इस देश मे शान्ति और इम्न अमान हमी लोगों ने आकर स्थापित किया जो इस देश की दिन २ उन्नति का प्रधान कारण है यह हमाराही राज्य शासन का प्रताप है कि अटक से कटक तक और हिमालय से कुमारी अन्तरीय तक कोई सिर उठाने का साहस नहीं करता अदनासी बुढ़िया सोने का गोला उछालती मन्दराज से पेशावर तक निर्भय और निरातङ्क जा सकती है—रेल तार नहर सड़क गांव २ डाकखाने मदर्से और अस्पताल इत्यादि के ऐसे उत्तम प्रबन्ध नियत किये जिस्से यहां वालों को होनहार उन्नति और भलाई मे अब कोई कसर बाकी न रही"।

जी हां इसे स्वीकार करने मे कब किसी को कसमस है--पर विचार शील मनुष्यों को साथही इस्के यह भी अवश्य सूझा होगा कि हमे इस शान्ति और सभ्यता का निष्क्रय मूल्य देना होता है इस्मे सन्देह नहीं कि यह शान्ति और सभ्यता बहुमूल्य है और बिना मोल के हाथ नहीं लगी अब देखना चाहिये हमे इस्का क्या निष्क्रय देना होता है प्रथम तो सेना इस देश मे जो एक लाख अस्सी हज़ार है सो तृतीयांश के लग भग गोरों की है इनका कि ताना कुछ खर्च इस अभागे देश को देना होता है हमारे देशी भाई भली भांत जान जांयगे जब यह बिचारेंगे कि कैसी उमदा भड़कदार बारिकों

में एक अदना सा गोरा रहता है और कितना बहु मूल्य खाना खाता है कितने गाय बैल बकरे साल भर में उसके पोषण के लिये चाहिये कैसी २ बड़ी दाम की औषधियां उन्हें नीरोग रखने को दी जाती है गरमियों में कितने टट्टी पंखों की ज़रूरत इन लोगों के लिये होती है अब इसी के मुकाबिले हिन्दुस्तानी सिपाहियों की पलटनों को देखिये फी सिपाही पीछे १२) या १५) से अधिक खर्च सरकार का न पड़ता होगा। यही उनके अफसरों को देखिये एक २ कप्तान कर्नेल मेजर आदि के पीछे कितना अधिक खर्च सरकार का होता है कितनी ऊंची तनखाहें इनको दी जाती हैं और कितनी पेंशन इनका देकर बिदा करना पड़ता है-यहां की पलटनों का सालियाना खर्च प्रायः १७ या १८ करोड के लगभग होता है-कदाचित् हमारे पाठक जन इस बात को अच्छी तरह न जानते होंगे कि यह १८ करोड़ इस देश के समस्त आय income का तृतीयांश से अधिक है-फिर देखिये गोरे और काले सिपाहियों की इतनी पलटन पर भी पूरा नहीं पड़ता शहरों में सब प्रकार की शान्ति और कुशल रखने को पुलिस का दल अलग ही रहता है सब मिला के पुलिस का दल डेढ़ लाख से कुछ कम होगा और सालियाना खर्च इसका दो करोड़ से कुछ अधिक होता है अब कहिये २० करोड़ रुपया साल में गांठ से निकल गया तब इस देश के मनुष्यों को शान्ति मिली भी तो कौन सी बेहबूदी की बात हुई खैर कदाचित् इतना ही होता तो सहन के योग्य भी था जब हम देखते हैं गवर्नर जेनरल से लेकर ज़िले के कलक्टर और जंट तक सब अंगरेज़ ही अंगरेज़ भरे हैं देशी लोगों का कहीं एक ओहदा भी ऐसा नहीं मिलता अच्छे २ सुपठित कुलीन और योग्य देशी जन स्कूलों में टीचरी दफ्तर और कचहरियों में मुहर्रि

री या कीरानी गोरों के लिये भी तर्स रहे हैं सरकार की बड़ी अनुग्रह हुई तो मुंसिफी सदरअ मीनी या डिपटी कलक्टरी हमारे कुलीन सुयोग्य हिन्दुस्तानियों को देकर फुसला लिया सो भी अब जब कि हाकिमों की उलटी सीधी ऊंची नीची खुशामद करते २ मरे—अब कहिये यह सब क्या उस शान्ति का निष्कृय नहीं हुआ? पचीस करोड़ मनुष्यों से एक भी क्या इस योग्य न समझा जाय जो कलक्टर के समान जिले का शासन कर्ता देशी लोगों में से किया जाय? कंपिटीशन के प्रभाव से विलायत के निरे अविवेकी और अपरिणाम दर्शी छोकड़े हम पर मन माना शासन करें और हम बड़ी २ लियाकत हासिल कर भी बैठे २ मुंहताका करें—इतनी पलटनों में एक भी देशी मनुष्य कप्तान या मेजर आदि के पद पर न नियत किया जाय-धन्य शान्ति तू कितनी ही प्रिय हो पर इतनी दुर्दशा भोग कर तेरा मिलना तो नहीं भावता-अब सोचना चाहिये इस शान्ति का बिल्कुल निष्कृय हम अभागे हिन्दुस्तानियों ही के सिर पड़ता है अथवा और लोग भी जो देशी लोगों की अपेक्षा अधिक लाभ उठाते हैं कुछ देते हैं? हम समझते हैं इस शान्ति के कारण फालतू अंगरेज़ किरानी व्योपार करने वाले चाह नील अफीम इत्यादि की काश्तकारी करने को अथवा वकील बारिस्टर सन झांड के झांड प्रति वर्ष चले आते हैं और बिना पैसा कौड़ी खर्च किये इस शान्ति और अमन के कारण अधिकांश लाभ उठा कर अपने देश को चंपत होते हैं इस अमन चैन का सब से भारी मूल्य जो हमें अत्यन्त गढ़ाय रहा है वह यह है कि इस शान्ति के कारण हम दिन २ बल और पौरुष विहीन उद्यम शून्य होते जाते हैं—माना कि सर्कार हमें माई बाप की नाईं चाहती है उसकी यही इच्छा है कि हम अपनी पुत्र

वत् भारतीय प्रजा के लिये सब
कुछ करें-इनकी लड़ाई भी इन्हीं
लड़दें-इनके शत्रुओं का दमन
कर आवें-इनकी आपस के उपद्र
वों को भी शान्त रक्खें इनका
व्योहार वाणिज्य शिक्षा इत्यादि
२ का सब प्रबन्ध इन्हीं करदें और
ये बैठे२ खांय और सोवें-पर भार
तीय प्रजा यह सब नहीं चाहती
क्यों कि इसका परिणाम अच्छी त
रह देख चुकी है और यदि राज्य
का ऐसाही प्रबन्ध कुछ दिनों तक
और रहा तो यहां तक निकम्मी
हो जांयगी कि दानो को तरसने
लगेंगे—क्या यही देशी लोग
मरहठों के दिनों तक और इसी
अंगरेजी राज्य में गदर के पहिले
न थे कि कैसी २ लड़ाइयां लड़ीं
और कितनी बार दुश्मनों के दांत
खट्टे कर दिये वही अब हैं कि
पास लाठी तक न रही जरा
किसी ने दरवाजा खटखटाया
कि छक्के छूट गये हांथ पांव ढी
ला हो गया-अंगरेज और किरानी
तो वालंटियर भी होते हैं पर
देशी जन लाठी भी बिना सरका
र की आज्ञा के नहीं बांध सक्ते
इस कड़े प्रबन्ध ने देश को कैसा
शिथिल करडाला—शान्ति तो है
पर वह पुरुषार्थ वीर्य और उद्य
म सब को इस दुष्टा शान्ति ने
चूस कर इन्हें निःसत्व कर दिया-

नई रोशनी का विष ।

तृतीय अङ्क—द्वितीय गर्भाङ्क ।

स्थान !

कलकत्ते में तारक चन्द के मकान का
एक कमरा !

तारक चन्द और प्रमदा बैठे हुये ।

प्रमदा—यह तो आप को जरूर मान
ना पड़ेगा कि भानुदत्त सा अशराफ आ
दमी फिर आपको न मिलेगा ।

तारक—छ्! ! हम नहीं समझते अश
राफ तुम किसे कहती हो—तुमको यह
समझना अभी बाकी है कि दुनिया में
जो भलमनसाहत के खयालात हैं अगर
हम लोग उनपर चलें तो एकही दिन
में यह कोठी और सब मकानभी साफ
सिफाट कर रख दें—ऐसा दुनिया में
भला आदमी आज कल वह कहलाता
है जो हाथ खोलकर दूसरों को अपनी

कमाई दे और रुपये पैसे को हाथ पैर की मैल समझ उसके ज़रिये से दूसरों को खुश रक्खे—अच्छा फिर हम अगर किसी को कुछ दे तो बताइये अपने यहां के बही खातों में उसे किस मद्द में लिखेंगे—खैरात का कोई मद्द तो हमारे खाते में कहीं हई नहीं—फिर हम लोगों के हिसाब से तो वही भला मानुस है जो एक ले और चार का दस्तावेज़ लिख दे और सूद पर सूद चढ़ाता जाय—जिस लुगत को हम लोग रोज़मर्रे के अपने कारोबार में काम में लाते हैं उसमें पक्का आदमी वह है जिसके यहां अगर सौ बरस को रुपया छोड़ दिया जाय तो भी अन्त में सेमूद के मिलाने में कुछ कसर न पड़े बल्कि एक एक का दस दस हो कर आवे—और फिर यदि इस तरह के भले मानुस बन बैठें तो रोटी कैसे चले हम लोगों को तो किसी अमीर बड़े आदमी का बिगड़ना मानो अपने घर शादी ब्याह है—कहो है न ? तुम तो इसे बाख़ूबी समझ सकती होगी क्योंकि हम तुम तो एकही तरह का चट्टा बट्टा लड़ाया करते हैं और नहीं तो क्या खिलाई के भैंस लगती है ।

प्रमदा—अब समझती हूँ—मगर हमने तो आप के मुंह से यह कभी नहीं सुना कि आप ने आनन्ददत्त को धक्का दिया और पीछे से शिकायत के साथ आपको यह कहना पड़ा हो कि उस कंजूस ने एक का एकही लिया—वरन आपही के मुंह से हमने यह भी सुना है कि "आनन्ददत्त आज तक जानते भी नहीं कि उनके नाम मेरे काग़ज़ों में क्या २ रक़म पड़ी है" आप ने जो कुछ कहा उन्होंने आंख बन्द कर गऊ की तरह मान लिया। आपकी उस बोली में ऐसे ही आदमी का नाम बुद्धिमान का पर्याय शब्द है न ?

तारक—नहीं—सुनो—बात यह है कि आनन्ददत्त हम लोगों के पंजे में है भी और नहीं भी है—तुमने यह ठीक कहा कि सोने की चिड़िया हाथ लगी है—तब सोने की चिड़िया का तो यह ख़ास ही होता है कि सदा दूसरे के हाथ रहे पर बीच २ वह बदमाश सत्यानन्द ऐसा दाल भात में मूसल सा आपड़ता है कि कुछ अकिल काम नहीं करती न इधरही जाते बनता है न उधरही—इस आदमी का पारे सा मिज़ाज कुछ समझ में नहीं आता न जानिये सत्यानन्द को आनन्ददत्त के साथ इतनी दोस्ती उगने का कौन

का वैकुण्ठ हाथ लगैगा मेरी समझ मे तो भानुदत्त की दोस्ती से कुछ फ़ाइदे की उम्मैद रखना मानो दूध की आशा से बैल को पालना है।

प्रमदा—हम ऐसा नहीं समझतीं—अगर सत्यानन्द ने आप का क्या बिगाड़ा हमको तो उन्में कोई ऐसी खराबी की बात नहीं नजर पड़ती।

तारक—तुम्हारी समझ से तो सत्यानन्द कुछ नहीं करता पर हम कहते हैं आज वह दूर हो जाय तो हमारे भाग्य खुलैं।

प्रमदा—दूर हो जाने से आप का क्या मतलब है?

तारक—खैर इस समय तो हमें कुछ काम है छुट्टी नहीं है कि तुम से बातचीत करैं परन्तु कल रात को ग्यारह बजे (कान मे कुछ कहता है) समझे—उसी बाग मे मिलना तब तुमसे बहुत कुछ इस बारे मे कहैंगे—पर सच पूछो तो तुम से अभी थियेटर की बू बास नहीं गई क्योंकि तुम अभी तक दूसरों ही का सिखा हुआ नाटक कण्ठाग्र कर स्टेज पर सुनाने लायक हो अपने निज के नाटक का अभिनय इस संसार रूपी रंग शाला मे बिल्कुल नहीं कर सक्ती हो खैर कल रात को—और हां! अगर भानुदत्त के साथ आप की दोस्ती ऐसिही अच्छी पड़ती हो तो जब हम उनके चरण कमलों की धूल अपने मस्तक पर चढ़ा कर अपना जन्म सफल करने को उनके घर जावेंगे तो वहां तुम भी हमारे साथ चलना [हंसता है] पर इस समय हम जाते हैं -देखो कल रात को ग्यारह बजे (हाथ से और आंख से कुछ इशारे करता बाहर जाता है)

प्रमदा (ज़ोर से हंसकर) अबे वाह वे बनिये! हां! हम से जभी से जानकर हैं अच्छा रहो बचा! (चारो ओर देख कर) आहा इस कमरे का सामान तो ऐसा मालूम होता है कि हमने कहीं देखा है हां! यह तो सब भानुदत्त जी की कोठी का सामान है—वाह! तारक चन्द "कल युग नहीं कर युग है यह इस हाथ दे उस हाथ ले" इस मसल को ठीक पूरा उतारने वाले तुम्ही इस संसार मे हो तुम्ही ने पहले इन असबावों को भानुदत्त को दिया और तुम्ही ने उसे फिर ओका सी ले लिया-वाह! क्या दोहरा नफा कमाया चालाकी इसी का नाम है-हम समझती हैं तुम्हारे बाप दादा भी इन्हीं मेज कुरसियों का ऐसाही हेर फेर किया

करते थे तब तो आपके लिये इतनी हराम की रकम छोड़ गये और आप पुश्तेनी अमीर बने बैठे हैं--न जानिये कितने अमीर उमराव इन्हीं अखबारों के ज़रिये फांसे गये और कितने अभी और फसेंगे तब भानुदत्त बेचारा क्या चीज़ है [गाती है] "मुर्गे दिल क्यों न फसे दाना भी हो दाम भी हो" [इसी को दो तीन बार गाती है] जैसा किसी बड़े गीध के पंजे मे लवा फसे—चलें हम भी-(गई)

तृतीय गर्भाङ्क।

रात का समय चांदनी खिली हुई।

स्थान कलकत्ते मे एक बागीचा।

फूलों की क्यारियों के बीचो बीच एक बेंच पर सत्यानन्द बैठा हुआ चुरट पी रहा है।

सत्यानन्द-सर वाल्टर स्काट एक बड़ा भारी पहाड़ी जानवर था जो बहुधा यह कहा करता था कि "अगर साल भर मे भी एक बार अपने देश के पहाड़ों की हरियाली हम न देख पावें तो अवश्य मर जांय" (चुरट बेंच पर फेंक और घुटने जमीन पर टेक) कोटि २ धन्यवाद ईश्वर को है कि हम इस अर्ज से अलग ही रहे और इसमे न पड़े--और कोटि २ धन्यवाद हमारी माता को है जिसने अपने स्तन के दूध के प्रत्येक बूंद के साथ हमारी नस २ मे खूब घनी बस्ती के नगरों ही के सुखों के अनुभव करने की अभिलाषा मन मे पैदा करदी-इस नगर की पाठशाला मे रहकर हमने अपनी जिंदगी को समझने की शिक्षा पाई-जिन्दगी की लज्जतें क्या चीज है उनको हम यहीं समझे-किन्तु वाहरे कलकत्ता जहां हम सब तेरी तारीफ करेंगे वहां शिकायत की राह पर यह भी कहेंगे कि तूने बस हमारी आंखें खोल दी!! अब हम क्या किसी दूसरे शहर मे रहने लायक हैं? कभी नहीं--बस एकही दिन मे घबड़ाय यहीं आकर दमलें--हमारे बूढ़े लोग जिनके दिमाग मे न जानिये किस २ समय के किस्से भरे हुये हैं अपने लड़कों को यह सिखलाते हैं कि अच्छे लोगों का संग करो—खैर हमने अपने ढंग से अच्छे लोगों का संग किया—पर इसका नतीजा भर पाया कि अब उनसे दूर होकर रहना हमारे वास्ते विष हो गया है—इसी लिये हम कहते हैं कि पुरानी समय की नसीहतें आज कल की नई ज्योति फैलाने वाले—बरन धुआं फैलाने वाले (चुरट खूब जोर से पीता है) के

खांसने खिलखिला रही है (ज़ोर से खांसता हुआ चुरट को फेंक देता है)

(प्रमदा का प्रवेश)

प्रमदा—(एक आदमी को खांसते देख) आः हा ! यहां तो कोई और भी मौजूद है—यह तो तारक चन्द नहीं है (गौर से देख) यह तो सत्या नन्द है—इस से ज़रूर मिलना चाहिये।

स—नं—(प्रमदा को न देख कर) आं ! हो ! और अब ज़ोर से कान पकड़ते हैं कि बूढ़ी की कभी शिकायत न करेंगे क्योंकि तत्काल फल मिला कि खांसते २ आंत निकला चाहती है (कान पकड़ता है)

प्रमदा—(आगे बढ़ कर) क्यों साहब यह क्या हुआ जो अकेले बैठे आधीरात को आप अपने कानों को सजा दे रहे हैं अगर हम से कुछ खिदमत हो सके तो हम हाज़िर हैं।

स-नं—अख़ आह ! मिस प्रमदा ! अच्छा हुआ जो हम इस वक्त तक ठहरे रहे कि आप से मुलाकात हो गई। कहिये इस वक्त किस्को शिकार ठहराने के लिये इस बाग पर अकेले २ रात के समय आपने हमला किया ? भला इस जुन कौन बेवकूफ आप से बाज़ी यहां ठहरा होगा ?

प्रमदा (हंस के) आप ही ऐसे लोगों से इस वक्त यहां मुलाकात हो सक्ती है पर आप यक़ीन जानियेगा कि हम आप से मिलने का बिलकुल इरादा कर घर से नहीं चलीं मगर हम बनावट को राह से नहीं कहती इस वक्त जैसी खुशी हमको आपके मिलने से हुई वैसी किसी दूसरी बात से कभी न होती बल्कि सच पूछिये तो हम आप से मिलने का मौका ढूंढ रही थीं।

स-न (स्वगत) ईश्वर बचावे ! आधी रात का समय भी है देखा चाहिये इस वक्त कौन सी इंजील हमारे लिये खुलती है (प्रकाश) आइये बैठिये जाइये आपने जो हमारा इतना ख्याल रक्खा तो उस्से हमारा कुछ न कुछ फ़ाइदा ही होगा। (दोनों एक ही बेंच पर बैठते हैं)

प्रमदा- बैठिये आप से तो बहुत बात पूछनी है यों तो आप यक़ीन कीजियेगा मगर सच जानिये जब से भानुदत्त यहां से गये तब से हमारी मिट्टी ख़राब है।

स-नं—(स्वगत हां और क्या ! भानुदत्त सा आदिमी अब काहे को हाथ

जानता है (मुस्काय) सच कहिये? पर हमारी जान में तो तारकचन्द बड़ी खूबियों का आदमी है और यदि आपकी उनकी न पटै तो दुनिया से दोस्ती का नाम उठ जाना चाहिये क्योंकि दोस्त परवरी के माने हम जहां तक जानते हैं इस ज़माने में सिर्फ़ तारकचन्दही समझे हैं बल्कि दोस्त परवरी उनके खान दान में बराबर होती आई है केवल बात इतनी है कि तारकचन्द जी अपने बाप दादों से भी बढ़ कर निकले। भला हम आपसे पूछते हैं ऐसे कितने घराने आप इस कलकत्ते में जानती हैं जहां पुत्र पिता के नाम को केवल स्थिर न रक्खे बरन उसका यश संसार में दिन दूना रात चौगुना करता जाय? आपही बतलाइये? तब यदि आपही ने तारकचन्द की ओर से जी खट्टा कर लिया तो निश्चय मानिये जो ये असंभवित बातें न हों वही थोड़ा है "भक्तिः प्रतीच्येषु कुलोचिता ते पूर्वान्महाभाग तयातिशेषे। वाह वाह धन्य हैं"।

प्रमदा। (थोड़ी देर चुप रह कर) हम आपसे बिनती करती हैं कि इन बातों से आप इस जून हमारा मुंह मत बंद कर दीजिये बरन तारकचंद जी का कुछ हाल हमको सुनाने दीजिये क्योंकि हम नहीं जानतीं हमको कितनी कलक रह जायगी अगर हम बिना उनकी सब बात कहे घर चली जायगी।

स० नं०। कहिये२ सौदफा कहिये। पर तारकचन्द से हमसे क्या वास्ता कोई लोग तो श्रीमन्तों की चरण रज भी अपने सिर पर चढ़ाने को नहीं पाते। हमने तो अपने मन में यही ठान लिया था कि तारकचन्द से अब हमसे कोई वास्ता न रहा परन्तु मालूम होता है वे आज अभी हमें भूले नहीं हैं॥

प्रमदा। ठीक है! ऐसेही भाग्य हों तो फिर क्या। बरन हम यहां आज तारकचन्दजी की बुलाई आई हैं यहीं पर मिलने को कहा था परन्तु जिस जून उन्होंने बुलाया था उसे एक घंटा जियादह हो गया हम समझती हैं अब वह मकार नहीं आवेगा। और हम अब भी समझ गई कि क्यों॥

स०—नं०—वाह! वाह! मरक भी ती ठेसी ठेसा होता है। कहिये इस समय उनको कौन बड़ा काम है?

प्रमदा। आप रसिक बिहारी और नीकुमार कोठी शायद न भूल गये होंगे॥

स० नं० भला ऐसी गलती इस जिन्दगी में कभी हो सक्ती है।

प्रमदा। उन दोनों को भी आप एकही विषकी गांठ समझिये और हमारा जो गया हो देता है इस समय उन्हीं से हमारे महाभाग्य तारकचंद्र जी का कुछ नया काम है। कलके रोज से आपको पूछते थे और यह भी कहा कि भानुदत्त और उनके बीच आपको कूदने से क्या मिल जायगा। बरन भानुदत्त के साथ दोस्ती का सच्चा बर्ताव रखने से आपको क्या लाभ है।

स—न—यह सब बातें जो हमारे बारे उन्होंने कहा इच्छा उनको बहुत रं अब वाद है और यदि आज्ञा दें तो हम उन से कहैं कि इससे भिन्न मत भी हो सक्ता है।

प्रमदा—खैर यह सब बातें तो आप जानिये—पर उसने कहा (धीरे से) कि आप अगर इस बीच से दूर हो जाते तो अच्छा था और हम समझते हैं शायद उनका इरादा है जबरदस्ती यह काम आप से लें।

स—न—(धीरेसे) हां! उन बदमाशों का ऐसा इरादा है! हम सच कहते हैं प्रमदा यह सब गुप्त भेद आपके मुंह से सुनने की हमको कभी आशा न थी और अब हम अपने जी को समझा सक्ते हैं कि भानुदत्त का भला चाहने वाले और लोग भी इस संसार में हैं।

प्रमदा—इसी लिये तो छिप कर इस वख्त हमने आप से मुलाकात किया।

स—न—तो इस बात से आप बे खटके रहैं थोड़े दिन पहले तारक चन्द्र का हमसे कुछ सम्बन्ध रहा पर अब हम पर उनका उतना ही दावा है जितना कदाचित चन्द्र लोक में रहने वालों पर उनका हो सच पूछिये तो भानुदत्त पर भी उन का बहुत कुछ दबाव अब बाकी न रहा और जो कुछ उन्होंने चाहा था सो एक भी न हुआ मकान और माल आप जान ते हैं हमारे ही वजह से कितनी अच्छी तरह से बिका और अब जो कुछ दबाव तारकचन्द का भानुदत्त पर रह भी गया है वह चुटकी बजाते दूर हो सक्ता है बल्कि हम तो चाहते हैं जितनी जल्द दूर हो उतना ही अच्छा और हां अब समझो! हमको भानुदत्त के [illegible] वार अब आप फिर से गिरी हुई इमारत खड़ी किया चाहते हैं। सो अब तो (प्रमदा

का हाथ पकड़ कर) जब तक हम जीते हैं कभी न जाने पावेगा।

प्रमदा-मगर तो भी जब चिनगारी बाकी है तो आगके फिर भड़क उठने का डर रखना ही चाहिये।

सं—न—आप बेखटके रहैं देखिये बात की बात मे हम उस बदमाश तारक चन्द को दूध की मक्खी सा निकाल कर फेंके देते हैं पर आज आपको हमने रात को यहां बड़ी देर तक बैठाया सो कि इसका कुछ खयाल न आपको होना चाहिये न हमी को है [मुसकिराता है]

प्रमदा—कुछ हर्ज नहीं हमारा जो काम था वह हो गया—अब हम जांय जो देखिये तारक चन्द अब तक न आया।

स—नं—जाइये हम भी यहां पर आप से फिर भी मिलने की हम आशा रखते हैं।

प्रमदा—जरूर देखिये भूलिये मत।

स—नं—यह कभी हो सक्ता है (दोनो अलग २ गये)

प्राप्ति।

शिक्षा सोपान—दूसरी पोथी गोविन्द नारायण मिश्र रचित इसमे हिन्द अक्षरों के शब्द बहुत अच्छे ढंग पर दिये गये हैं जो बालक अच्छी तरह अक्षर पहचान गये हैं उनके लिये संयुक्त अक्षरों के अभ्यास करने के लिये यह पुस्तक अत्युत्तम है दाम ―)॥ कलकत्ता उचित वक्ता प्रेस मे मिलेगी।

सूचना।

जिन महात्माओं के पास आधे मूल्य मे पत्र जाता है वे कृपा कर मूल्य भेज दें क्योंकि आधे दाम मे पत्र देना उसमे भी कई दरजन तकाजों मे वसूल हो यह कौन इनसाफ है ऐसे लोग अपना आधि म दाम इस मास के भीतर न भेज देंगे तो आगे से पत्र उनके पास न जाया करेगा।

हिं—प्र—के सम्बन्ध मे नया नियम।

जो लोग हमारे पत्र के रसिक हैं पर दाम [illegible] सुभीता नहीं रखते ऐसे असमर्थ लोगों को यह पत्र आधे दाम १।≥) मे दिया जायगा पर मूल्य पहले अग्रिम भेज देने का नियम है क्योंकि पीछे दाम वसूल करने मे बड़ी खट खट और जोखिम सहना पड़ता है।

होली का भडुआ है ॥

पहिलो अच्छर जिन पढ़ो पढ़ि फिर करो न रोष।
फागुन को लच्छण यही यामे मोर न दोष ॥

होय रही धूर उड़ाई इसे जग लोग लुगाई।
लीन्हे विषय रंग संग अपनी बल बुधि सबहि गँवाई।
काज न लाज शरम सी कतहूं धीरज धर्म नसाई ॥
भली यह रीति चलाई।
डुली भूमि नहि जाय भार सहि-भारत विपद फसाई।
वाद्य गान धुनि सबहि त्याग अब सोचहु अपन भलाई।
है न कछु और उपाई।

दोहा।

हा हो हाला हो रही नंदराइ की द्वार।
लीन्हे पिचकारी फिरैं जसुमति राज कुमार।
काहे बैठी हो सखी तुमहू करो न साज।
भरि २ मटकी रंग की झोरी सकल समाज।
डुब की देहैं श्याम को लेहैं छीन गुलाल।
आज देखिहैं सेतु है और कौन नंदलाल।
है भरोस घनश्याम को हलधर को मन माहिं।
रेवति पतिहूं आज सखि निकास न कैसेहुं जाहिं।

हो हो होरी मचाई नई यह रीति देखाई
भरी अविद्या धूल पोटरी कुकर्म तड़ा सुहाई।
ले ले हाथ चले भारत जन मूरखता फैलाई। कहो यह कौन भलाई।
वृथा गर्व मद ह्वै मतवाले सुध बुध सब बिसराई।
कुमति बराती संग न थोड़े दुलहा भारत भाई। लाज मब दई गवाई।
चढ़े दुराशा गधी जात हैं अद्भुत स्वांग बनाई।
दे दै तारि हसत नर नारी तनक टूट मन नाही। देश कहँ लाज लजाई।
नये नये रंग रचे भारत मे पड़ली दशा भुलाई।
यातें अधिक और का करिहौ वाक्य देहु बताई। खाई सब संपत अकप्रभुताई।
अहयशील हुव बीते वह दिन कर्म विवश अधिकाई।
यह दुख अवतो सह्यो न जात है हरि बिनु कौन सहाई। छोड़गौ हमरो भाई।

समदर्शी।

आगामी वार्षिक मूल्य १।)।

राज्य शासन—साहित्य—दर्शन तथा अन्य उपयोगी विद्या—समाचारावली आदि विविध विषय सम्पन्न—एक मासिक पत्र आगामी वैशाख से प्रकाशित होगा परन्तु १०० ग्राहक हो जाने का औसर है जिनका इसका ग्राहक वा एजेंट बनना स्वीकार हो कृपा पूर्वक लिखें—बाबू गोपाल प्रसाद खत्री–मछली बाजार

हौशंगाबाद।

भेद कौमुदी।

मुंशी भुन्नीलाल सुन्दरिम स्कूल [illegible] खाबाद कृत यह पुस्तक मिडिल क्लास और नार्मल स्कूलों के विद्यार्थियों के बड़े ही उपकार की है हिन्दी मे ऐसे २ ग्रंथों की बहुत आवश्यकता है उक्त मुंशी साहब को इसका अनेक धन्यवाद है मूल्य ।=)

मूल्य अग्रिम ३।=) पश्चात् ४।=)

Printed at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

—XXXX—

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है ।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ।
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st April 1885.
Vol. VIII.] [No. 8.

प्रयाग चैत्र शुक्ल २ सं० १९४२
[जि० ८ [संख्या ८

अशरफियों की लूट और कोइलों पर मोहर ।

थोड़े दिन हुए एक अपने मित्र से हमने पूछा " कहिये गङ्गा स्नान का नित्य नेम चला जाता है की नहीं " हम आप से सच कहते हैं इतना दुःख से भरा हुआ चेहरा हमने अपने मित्र का कभी नहीं देखा था जैसा उस दिन हमारे इतने पूछने पर उन्होंने

बनाया और पहले बड़े गुस्से से
घर गृहस्थी के धर्म्मों को बहुत
बुरा भला कहते बड़े ही शोक
पूर्वक उन्होंने यह प्रगट किया
कि इन थोड़े दिनों से वह सब
नित्य नेम उड़ पुड़ कर बेबाक
हुए खैर जब हमने देखा कि इस
विषय पर अधिक बातचीत कर
ने से उनको रंज होता है तो
बात बदलाने की रीति पर हमने
यह कहा खैर मालूम किया अब
आप को धर्म कर्म की ओर से
कुछ अरुचि हो गई है तो मित्र
जी की अर्द्धाङ्गिनी ही अपने पु
ण्योपार्जन से गङ्गा स्नान का
आधा पुण्य आप को देती होंगी
यह तो और अच्छा कि बिना मे
हनत ही आप को बिहिश्त नसीब
होगा इतना हमारा कहना ही
था कि उसी क्षण हमको मालूम
हुआ कि मानो बारूद के ढेर मे
किसी ने आग की चिनगारी
रख दिया हो और तुरन्त ही
मित्र का शोक गहरा क्रोध मे
बदल गया—उस क्रोध मे जो
कुछ हमारी बातों का उत्तर उन्हो
ने दिया उसे प्रति शब्द लिखना
कुछ बहुत आवश्यक नहीं समझ
ते परन्तु अभिप्राय हमारे मित्रजी
का यह था कि स्त्रियों को गङ्गा
नहाने या किसी बहाने से बाहर
जाने देना बड़ी बेवकूफी है बल्कि
उनको इस बात का एक तरह
का घमण्ड था कि आज तक उन
के घर की स्त्रियों को बाहर कि
सी ने नहीं देखा—बड़ी देर तक
वे स्त्रियों के प्राकृतिक गुण चाञ्चल्य
और कपट आदि पर व्याख्यान देते
रहे और पुराण इतिहास तथा
और २ किस्से कहानियों से उन्हो
ने यह अच्छी तरह साबित
कर दिया कि स्त्रियों की जातिही
में बहर जोखिम की बे तरह बातें
भरी हैं कि उन्हें निरङ्कुश कर
देना किसी प्रकार कल्याणकारी
नहीं है और फिर इसी प्रसङ्ग
मे उन्होंने यह भी प्रगट किया
कि अंगरेजों का इस देश मे आ-
ना इतना हानि कारक नहीं हु-
आ और न हो सक्ता है जितना

इसी लोगों मे अंगरेजी खयालों का भर जाना नई २ बातों के फैल जाने से हमारे मित्र बहुतही भयभीत थे मरांश यह कि इन्हो सब बातों को सोच विचार उन्हो ने सिद्धान्त निकाला कि देश की वर्तमान दशा और स्त्रियों के स्वाभाविक चांचल्य पर दृष्टि रख उनको घर के बाहर निकलने देना केवल अपनी मूर्खताही नहीं प्रगट करता किन्तु एक बारगी घर का नाम डुबोना है फिर उन्हो ने हँसी मे यह भी कहा कि जिस दरवाजे से स्त्रियां बाहर निकलीं उसी दरवाजे से घर की बुराई और छिद्र भीतर घुसते हैं हम नही समझते कब तक हमारे मित्र साहब इसी ढर्रे पर लेक्चर देते रहते यह तो भला हुआ कि हम किसी आवश्यक काम के बहाने से उनसे गला छुटाया-क्योंकि न जानिये कब के सालों साल के खयालात बटोरे हमारे मित्र जो बैठे थे कि जरा सा छेड़तेही एक बारगी बरसही तो पड़े।

हम आशा करते हैं इस बात को स्वीकार करने से हमारे पाठकों को कुछ एच पेच न होगा कि हमारे मित्र साहब जिनका हाल हमने ऊपर लिखा है अपने खयालात की दुनिया मे एकही नहीं थे वरन उनकी ऐसे और भी सैकड़ों हजारों बल्कि लाखों करोड़ों पड़े हैं उनकी दशा देख जो २ सोच हमारे मन मे उठा उनको हम संक्षिप्त रीति पर नीचे लिखते हैं।

एक तो भारत वर्ष के वह दिन थे कि हमारे यहां की विद्या केवल दोही चार मनुष्यों मे सिमटी हुई विराजती थी उस समय समाज के अग्रणी कहिये तो वे थे, देश को नियमबद्ध रखने को कानून जारी करने वाले थे तो वे थे, गूंगे देश के देश की जबान थे तो वे थे, अर्थात् यदि वे न बोले होते तो हिन्दुस्तान भी और बहुतो मुल्कों की तरह विदेशियों की दृष्टि मे गूंगा समझा जाता, जैसे संसार के और २ देश हैं उन्हो मे

इसकी गिनती भी होती अपने देश के लोगों को लोक पर लोक संबन्धी बातों पर सोंचने के लिये बड़े २ गूढ़ विषयों के देने वाले थे तो ये थे—अपनी भावी सन्तति की चाल चलन सुधारने वाले थे तो यही थे यहां तक कि हजारों वर्ष बाद भी अपने देश के हित चाहने वालों के हृदय को सहारा देने वाले थे तो यही थे—देश हितैषियों की आंख से आज दिन हम जो कुछ जगह पाते हैं सो सब भी उन्ही का हाल्य है—"गुणिगणगणनारंभे" इत्यादि श्लोकों का अर्थ जो एक पुरुष के लिये सत्य है यह स्थालीपुलाक न्याय से देश भर के लिये सत्य हो सक्ता है—यह उन्ही की कृपा है कि आज हम बड़े घमराड से कह सक्ते हैं कि पूर्व काल की विद्या कला आदि को तन मन से खोजने वालो बुद्धिमान मराडली मे भी जैसा हमारी मातृ भूमि की विद्या हर्ष सन्मान और आदर के साथ देखो जाती है वैसा और किसी देश की नहीं फिर जिनकी कारण बुद्धि मान मराडली मे हम इस ऊंचे पद को पहुंचे हुए हैं वे के मनुष्य हैं? उनके नाम हम अंगुलियों पर गिन सक्ते हैं-यह कोई अचरज की बात नहीं है कि अति विस्तृत जन समाज मे सोचने वाले दूर दर्शी गंभीराशय के मनुष्य दर असल दो ही चार होते हैं यह सदा का नियम चला आया है इसी तरह पर गतानुगतिक जन समूह मे पथ प्रदर्शक या राह के देखलाने वाले भी दो ही एक होते हैं अनुयायी जो केवल एक बड़ी बात या बड़े नाम का सहारा ढूढते हैं वे हजारों लाखों हैं क्योंकि यह क्योंकर संभव है कि देश का देश फिलासोफर या उत्कृष्ट दार्शनिक हो जाय? परन्तु इन्ही बड़ी बातों पर एक मजबूत कील ठोक दी गई जिसने प्राय: उन बातों को मानो एक बारगी पृथ्वी मे गाड़ही दिया इस कील का नाम वर्णं विवेक

और अभिज्ञाभिख्य का अखिड़ कहते हैं जिसने विद्याभ्यास की प्रवृत्ति और विस्तार का चौथाई से भी अधिक मनुष्यों में अङ्कुर भी न जमने दिया हमने तो अपने आप अपने यहां की बातों को भुलाही दिया वरन अपने भर सक तो उनको संसार से मिटा देने में कुछ चूक न किया पर देखिये महिमा कि उस कस्तूरी की महक हमारे दबाये न दबी हमारे बन्द किये वे रत्न तालों में न बन्द हो सके उसकी महक उड़ २ कर हजारों कोस तक पहुची और इन रत्नों को जिनको बहु मूल्य ता हमने कुछ भी न समझा उनके पहचानने वाले अति दूर देश में वे लोग निकले जिनको हम म्लेच्छ के घृणित नाम से पुकारते हैं और जिनके अङ्ग स्पर्श में सचैल स्नान से अपनी शुद्धि समझते हैं हम दीक्षित की फक्किका रट २ तोता के तोताही रहे अथवा शुष्क तर्कवादी नैयायिकों की घट पट में टर २ करते मेंढक बने उछला किये हमने तो अपने यहां की स्त्रियों को पर्दे में कैद रखने ही पर तमाम अकिल का खातिमा समझ लिया और इसी देश भर को हलक बुझती माना कि यदि कोई जरासा भी उनकी झलक पा जायगा तो नाक जड़ पेड़ से कट जायगी परन्तु इस बात पर आंख मूंद कर वरन फोड़ कर अन्धे बन बैठे कि हमारी विद्या रूपी चिरकालिता ललना का केश पकड़ कर विदेशी जन हमारे घर से निकाल ले गये और हम बैठे २ पागुर करने के सिवाय जरा भी उसके लौटाने की कभी फिकिर नहीं करते-विद्या के झूठे घमण्ड में मरे वाले हमारे कोरे पण्डित लोग अहं माना कि आचरणी को परम पुरुषार्थ माने बैठे हैं इसी से हम कहते हैं अशर्फियों की लूट और कोइलों पर मोहर--सिद्धि रही सो भोरन्ह लेगये खाक उड़ावैं चेले-

---

आजकल यह सब क्या हो रहा है?

आज कल यह सब क्या हो रहा है? जिधर आंख उठा कर देखिये उधर धुआंधार लड़ाई झगड़ों ही का सामान देख पड़ता है—काल चक्र के मन में न जानिये क्या समाया है कि हम लोगों के जेता अंगरेज बहादुरान पर बरसों से आंख लगाये ताक रहा है जहां २ के नाम को भी कायम हैं वहां २ उनके लिये हैरानी परेशानी सामना करने को मुस्तैद खड़ी है न जानिये किस क्रूर ग्रह की पंजे में उनके भाग्य का सितारा फंसा हुआ है कि जहां देखिये वहां घच कहट तरद्दुद और अरमनी से मुटभेड़ आ पड़ती है पहले उनके घर ही का हाल सुनिये विलायत के पत्रों को पढ़िये तो उसमें अधिकांश यही रहता है आज फलाना स्टेशन उड़ा दिया गया कल लंडन की बड़ी २ इमारतों पर हमला हुआ परसों पारलियामेन्ट का मकान जड़ पेड़ से हिला डाला गया—हमारे यहां के कवि लोग आफ मूद श्मशान मुर्दे खोल मांस मनुष्य की खोपड़ी पिशाच राक्षस आदि का वर्णन (जैसा मालती माधव प्रभृति नाटकों में पाया जाता है) बेधड़क लिख डालते थे परन्तु इन दिनों के डाइनमिटर्स अर्थात् क इमा महल उड़ाने वालों का कुछ भी हाल सुने होते तो कानों पर हाथ रख आहि २ पुकारते-पहले तो आप देखिये यह फिर का लिखो दिल को न जानिये किस शैतान ने गढ़ा है ऐसा नहीं है कि इन्हें जो लोग शामिल हैं केवल इंगलैंड ही में कहीं २ दो चार मिल जाते हों वरन देश के नस २ में घर २ में क्या बड़े क्या छोटे क्या निरक्षर क्या साक्षर क्या गरीब क्या अमीर क्या बेकार क्या काम में लगे हुये सबों पर शक हो सक्ता है कि शायद ये भी कुछ भेद न ले रहे हों कदाचित ये भी किसी को उड़ा देने को फिकिर में न लगे हों उड़ा देने की दिल्लगी विलायत में इतनी बढ़ी हुई है कि अब सुख कहीं पांव रखते डर लगता है एक बड़े प्रतिष्ठित अखबार के एडिटर जिन्हों ने सैकड़ों प्रजा की भलाई के आर्टिकिल लिखे जिस दिन से पार्लियामेंट का मकान उड़ाया गया है उस दिन से गायब हैं यह कौन कह सक्ता है कि डाइनामाइट सोसाइटी के जासूस उक्त एडिटर साहब न थे? सोचने की बात है कि जिस समाज में एक मनुष्य इतना माननीय और विश्वास पात्र हो गया है और बाहर से

सदा लोगों से मित्र भाव रक्खें पर भीत
र से दिन रात उनके मृत्यु की उपाय
सोचता रहै ऐसे समाज की क्या दशा
होगी और उसे क्या अनर्थ न होंगे?
हिन्दुस्तान के सीधे सादे लोगों के मन
में इन बातों को सुन बड़ा ही अचरज
होगा। जिनको पूर्व काल में अपने देश में
थोड़े से चोर और ठगों ही के किस्से सुन
अचम्भा होता था तब इन डाइनामाइटसं
लोगों का महा बीभत्स और अति निष्ठु
र कर्म कर्ण गोचर होने से क्या २ कल्पना
यें चित्त में न उठेंगी? धन्य वह देश! धन्य
तेरी सभ्यता! कहां गये चंगेज हलाकू और
नादिर क्यों नहीं दोजख से निकल इन
पर हजार २ लानत भेजते? पुराने ठग
अपनी उपास्य देवी चामुण्डा को मनुष्यों
के मुण्ड का माला पहिनाना अपना धर्म
समझते थे इस लिये हम उन्हें महा पा
पिष्ट और नराधम कहते हैं पर इन लो
गों को क्या कहना चाहिये? अंगरेजी पढ़े
हुये यह कहैंगे कि जब तक मनुष्य में
बुद्धि और विद्या नहीं आती (और विद्या
से सदा उनका अङ्गरेजी विद्या से प्रयोज
न है) तब तक यह सब वहशीपने के चिन्ह
उन में रहते हैं हम पूछते हैं विलायत में
तो पढ़े ही लिखे सब इस वहशीपने में
काम में तत्पर हैं? इन से बढ़ कर एका
और किनमें होगा? इंगलेंड से फ्रांस तथा
फ्रांस से रूस तक रूस से अमेरिका के
यूनाइटेड स्टेट तक इन डाइनामाइट
वालों का तांता लगा है—रोज कान
फेंरन्स और कांग्रेस "सभा" इन लोगों
की हुआ करती है इनके अखबार निक
लते हैं देश में बड़े २ बुद्धिमान इनकी
मण्डली में हैं तब बतलाइये विद्या और
आप किसे कहते हैं? हमारे यहां देवता
ओं की गणना में ग्राम देवता, नगर, देवता,
कुल देवता, इत्यादि माने गये हैं-न्यूयार्क
में जो डाइनामाइट लोगों का अखबार
छपता है उसमें उनके देवताओं का वर्णन
इस प्रकार है "हम लोग अपनी आत्मा
के मोक्ष के लिये डाइनामाइट को मानते
हैं और इसका साधनी पाय गन्धक की
बनी हुई दिया सलाई है यदि उस डाइ
नामाइट को हम अपना पूज्य देवता न
मानें तो ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि
हमारा सत्यानाश हो जाय और हम
लोग इसे भी अवश्य स्वीकार करेंगे कि
बन्दूक और तोप के गोले साहब हमारे
बड़े ही फायदे की वस्तु हैं और हाथा
बाहीं की लड़ाई से हमारे मशुवर चाकू
छुरा हथौड़ा से बढ़कर संसार में हमारा

कोई दूसरा ऐसा उपकारी नहीं है"

इत्यादि इत्यादि ।

अब इङ्गलैंड के भाई आयरलैंड का हाल सुनिये ऐसेही महात्माओं से जिनका हमने ऊपर हाल लिखा है और जो सृष्टिमात्र का नाश करने में निष्कपट भाव से दिन रात चौकस रहते हैं आयरलैंड का देश का देश कितना भरा हुआ है इसको ते करना तो हम समझते हैं गौड स्हैव न क्या बरन आयरलैंड के बड़े हितैषी पारनेल की शक्ति से भी बाहर है यह देश बराय नाम अंगरेजों का है कबज़ा कहिये तो अमलदारी कहिये तो इख्तियार कहिये तो इसपर बिल्कुल आयरलैंडके उन्नत पुरुषों का है जैसा हिन्दुस्तान का कोई गांव का जमीन्दार जो अपना कबज़ा हाईकोर्ट से हार गया हो और केवल लाठी के जोर से अपने गांव पर काबिज़ बना हो फर्क सिर्फ इतनाही है कि हिन्दुस्तान के लोग जो ब्रिटिश गवर्नमेंट के प्रताप से सब तरह पर लुंडे कर दिये गये हैं ऐसे मौकों पर केवल काठ की लाठी का भरोसा रखते हैं और उन बड़े २ सभ्य देश के बुद्धिमान् लोग मनुष्य सृष्टिके नाश करने की फिकिर में तत्पर हैं उनसे एक बढ़ बढ़ कर विज्ञान विदा के जोर से सृष्टि नाशक औज़ार निकाल रहे हैं— आयरलैंड की रय्यत अमीर अंगरेज जमीन्दारों को अपने हिस्से का रुपया जो देदेती है तो समाज में कायर समझी जाती है नक्कू बनती है और लोग उसके अपु हो जाते हैं वहां के लोग जो इङ्गलैंड की पार्लियामेंट में मेम्बर हैं विघ्न की मूर्ति समझे जाते हैं अंगरेजों का दम नाक में करने ही के वास्ते इन लोगों ने अवतार लिया है अंगरेजों को उनके सामने यही कहना पड़ता है "तद्विघ्नराजं न भजामि किन्तु पदद्वयं प्रणमामि नित्यं"—यह तो हमारे नेताओं की हैरानी नाटक का पहिला अङ्क हुआ—

अब उनके घर अर्थात् इंगलैंड से आगे बढ़िए तो आधी रास्ते पर मिस्र देश मिलता है कुछ महीने दो महीने बाद जो कुछ अदल बदल हो जाय वह तो हम नहीं जानते पर इस समय मिस्रकी जो वर्तमान दशा है उसपर हम लोग किस गिनती में हैं विलायत के बड़े २ अगाध बुद्धि दूरदर्शी लोग थर्रा रहे हैं—इस लड़ाई का पूरा हाल लिखने से हमको कुछ मतलब नहीं है और न हमारे पाठकों को इसकी कुछ जरूरत होगी क्योंकि और २ पत्रों में उसका बहुत कुछ हाल लिखा जा चुका है परन्तु यह तो सबको प्रगट होगा कि इस

बिल्कुल उलझाव का कारण यह है कि मिस्र मे खदेव के विरुद्ध बलवाइयों का गड़बड़ होने देख अंगरेज लोग डरे कि कहीं ऐसा नहो कि हिन्दुस्तान का रस-का रास्ता सुएज पर बन्द हो जाय सो इसी के बचाने को मिस्र के मामिलों मे कूदे और अब जाहिर होगया कि कूदना आसान था पर बाहर निकल आना अति दुर्घट जान पड़ता है—गये थे मिस्र का बखेड़ा मिटाने और खदेव का राज्य दुरुस्त करने पर ऐसे चक्कर मे फस गये कि अब उस भंवर से निकलना सख्त मुशकिल हो गया मसल है—ऐब न छोड़ घसीटन मे पड़े—रुपया फौज बड़े २ लोगों की जान इंगलिंड का नाम इज्जत और हमारी जान तो यहां के दूर दर्शी मंत्रियों की बुद्ध को भी इस मिस्र की लड़ाई ने धूर मे मिला दिया विलायत के कितने प्रिय सन्तानों को यह मि-स्र का घड़ियाल निगल बैठा कितना रुपया कितनी फौज इनकी खदेवायनमः स्वाहा हो गई—मंत्रियों पर खोटाई की न्योछावर उतर रही है कोई उनका विश्वास नहीं करता मिस्र का खबर सुनते थे पर हम तो समझते हैं उनने अंगरेजों ही से खूब काम लिया खैर हमको हेरा फेरी के नाटक के अभिनय का दूसरा अङ्क इस धूम धाम से मिस्र मे हो रहा है अब आगे चलिये तो आलू की शकल मे शियार की खसलत उस वे हुश मे जानवर रूस का सामना हो रहा है इन रूसियों की बनावट से अपनी कारस्तानियों को छिपाना आताही नहीं राजाओं के लिये चाणक्य की नीति को बिल्कुल झूठ करने वाले यही निकले खुलेबाजार काम करते हैं दिन दोपहर चोरी करते हैं कह कर लूटते हैं अपनी राजनीति का मर्म छिपाना जानतेही नहीं लोगों को शक था रूस का किसपर दांत है कितने लोग समझतेही नहीं थे कि किस सोने की चिड़िया के लिये यह रूस इतनी उपाय कर रहा है लीजिये ऐसेही लोगों की खातिर करने को एक पूरा प्रोग्राम छाप दिया जिसमे बड़ी शेखी के साथ आप अपनी सब तरह की फौज का वर्णन कर अंगरेजों से पूछते हैं "बतलाइये जनाब आप के पास इस सब के मुकाबिले को क्या चीज़ है"? लीजिये अब भी किसी को कुछ शक बाकी होगा कि रूस साहब का किसपर दांत है आगे फिर आप लिखते हैं हमने रेल बनाया जिन लोगों को जीता उनको भी अपनी मुठी मे कर

किया—यह नाटक अंगरेज़ों को कभी सूझा ही नहीं हमने यह इन्तिज़ाम किया कि रूस और मध्य एशिया को एक कर डाला अब बतलाइये यह सब काम हमने बैठे बैठाये मुफ़्तही किया? क्या हमको कुत्ते ने काटा था? क्या हमारे मनमें बरसों से जो बात चुभी हुई है उसे भूल जांयगे? आपने हिन्दुस्तान का अपने बाप दादों की जागीरही तो समझ लिया है इत्यादि बातें रूसियों का कथन है सारांश यह कि जिससे यदि एक छोटासा होम हो रहा है तो मध्य एशिया में रूस बड़े यत्न से अश्वमेध की तैयारी कर रहा है। यह अंगरेज़ों की हेरानी के नाटक का तीसरा अङ्क हुआ इसका प्लाट चतुर्थ अङ्कमें और खुल जायगा इस लिए आगे बढ़िये।

अब आगे तो हमारे परम मित्र काबुली हैं। इनके समान भी सज्जन इस भू मण्डल पर दूसरा नहीं विराजता आप गंभीरता का अवतार हैं अगर अंगरेज़ लोग हर साल बारह लाख की भेंट और भांत२ के हथियार आदि तोहफ़ों की नज़र देते हैं तोभी आप कुछ नहीं समझते और अगर रूस आप से सुलह करके अहदनामा लिखाया चाहता है तो आप उससे भी खुश हैं निरीह निस्पृह ममता शून्य जो कुछ कहिये सब विशेषण आप के लिये योग्य हो सक्ते हैं। आपही के देश में आजकल वह उत्कृष्ट प्रहसन जिसका नाम बौंडरी कमिशन है अभिनय हो रहा है। कई एक बुद्धिमान राजनीति कुशल लोगों को मैं फ़ौजके हमारी सरकार ने काबुल में इसी लिये भेजा है कि वे लोग तैकर आवें कि बालाक़ अमीर काबुल का है या रूस का है इंगलैंड के मंत्रियों के द्वारा तो यह मालूम होता है कि रूस कुछ नहीं कर सक्ता उससे बेखटके रहना चाहिये परन्तु जो इस सब खलबली का मुख्य स्थान हीरात है वहां से खबर आती है कि हीरात तो सदासे रूस काथा काबुल का कभी रहाही नहीं अभी तक हीरात में रूसी तोप चालीस मील पर थे पर अब मालूम हुआ कि वहतो सदा से उनकी मौरास थी और इंगलैंड के मंत्रियों को कहला भी भेजा कि कमिशन अपना डेरा डंडा उठाय चलता हो नहीं तो इस कमिशन के कारण जो कुछ गड़बड़ होगा उसके वास्ते रूस जिम्मेदार न होगा। ऐसी२ मीठी बातों से रूस अंगरेज़ों को खुश कर रहा है। सुनते हैं अ

और काबुल रावलपिण्डी में बोलाये गये हैं यहतो प्रगट ही है कि यह कुत्ता इस के रास्ते मे इसी लिये पाला गया है कि उधर से रूस बढ़ा नहीं कि इसने टंगड़ी पकड़ा—इसी वास्ते लाट साहब से सलाह करने को अमीर बुलाये जाने वाले हैं कि वशीकरण मंत्र इनके कान में और अच्छी तरह जोर से फूंक दिया जाय।

अब इसके आगे बढ़ने को बहुत से लोग जोखिम समझेंगे पर क्या किया जाय आखरी अङ्क लिख हमें यह नाटक अवश्य ही पूरा करना है—इस कारण इस अङ्क को मुख्य रंगभूमि हिन्दुस्तान का भी कुछ हाल लिखते हैं इसी कमबख्त हिन्दुस्तान के कारण दुनिया के भिन्न २ लोगों में ये सब अद्भुत खेल हो रहे हैं जिनका वर्णन ऊपर कर आये हो रही है—इसी हिन्दुस्तान को विलायत वाले कोसते हैं कि इसी कमबख्त की बजह से हमको कितनी तरद्दुद उठाना पड़ता है—इन लोगों की विपरीतदर्शिनी क्षुद्रबुद्धि में यह कभी नहीं आता कि अंगरेजों के हाथ से यदि आज हिन्दुस्तान निकल जाय तो इङ्गलैंड यूरोप मे दूसरे दर्जे का राज्य हो जाय—फिर इंगलैंड का वैभव तिजारत से है और उस तिजारत की जान केवल हिन्दुस्तान है—येही लोग यह भी कहते हैं कि "इधर दस पांच वर्ष मे हिन्दुस्तान में एक प्रकार नया वृत्त फैलती जाती है और यहाँ अङ्गरेजी पढे लोग जने २ की बात मे इन लोगों का मुकाबिला करने को तैयार हो जाते हैं ये सब अच्छे आसार नहीं है—इन लोगों से हम यह पूछते हैं कि किसी हिन्दुस्तानी अखबार में उन्हों ने अङ्गरेजों के इस देश से निकाले जाने का कोई प्रसंग कभी देखा है? बरन राजद्रोह का ख्याल इस बात से लिखे जाते आ रहे हैं कि महारानी राज राजेश्वरी की प्रजा जैसे अंगरेज वैसे हिन्दुस्तानी भी हैं सबको बराबर के इख्तियार मिलने चाहिये अगर महारानी के हृदयेश इनकी एक आंख है तो [illegible] भी दूसरी आंख है जैसा [illegible] सुरे[illegible] ों साहब इन्होंने अपनी लेक्चर्स मे कहा करते हैं "हम लोग अब ५८ वाले महारानी के प्रोक्लेमेशन का अपना पता ला बना कर छोड़ेंगे" यही सब हमारे नाटक का आखरी अङ्क है—सच पूछिये तो अपने इख्तियारात पाने के लिये लड़ने वाले हिन्दुस्तानियों से हमारे जेताओं को वे खौफ रहना चाहिये और खुश रहना चाहिये क्योंकि यह सब अच्छे

लक्षण हैं जिससे यह सूचित होता है कि नीति विद्या जो हमारी सरकार ने इस देश मे फैलाया है उसे यहां वाले दिन प्रतिदिन दृढ़ रीति पर समझते जाते हैं खैर जोहो इस लम्बे लेख को अब समाप्त करते हैं और संसार की तरह २ की अद्भुत लीलाओं मे चकित चित्तभी अस्त पे हम फिर भी यही पूछते हैं यह सब क्या हो रहा है ?

कीमियां कीमियां—कीमियां।

मै अपने बचपन से सुनता आता हूं बड़े २ किस्से बड़ी २ कहानियां इस बात की प्रसिद्ध हैं पर किसी ने [illegible]ाज तक न जाना कि [illegible]ह से कीमियां बनता है और न किसी को आज तक बनाते देखा यह मे नहीं कहता कि इसके बनाने की युक्ति किसी को मालूम नहीं थी परन्तु यह बड़े खेद का विषय है कि जो लोग इसे बनाने जानते थे किसी को न बतलाया और अन्त को मर कर अपने साथही इसके बनाने की युक्ति ले गये यही क्या बरन इस देश की बड़ी २ विद्या इसी कमबख्ती के मारे लुप्त हो गई अब इस समय की सभ्यता के यह बात विरुद्ध समझी जाती है कि इन बातों को जान कर भी गुप्त रक्खें मैने एक अंगरेजी पुस्तक मे सोना बनाने की युक्ति देखा है और उसे अजमाया भी तो ठीक निकली इस लिये उसे यहां प्रकाश करता हूं पहले इसके कि इसकी रीति ब्यौरे वार लिखूं इतना और कहा चाहता हूं कि यह सोना वैसा न बनेगा कि असिली सोने से मिल जाय पर ५) से १५) या १६) के दर का सोना तैयार होगा।।

सोना बनाने की रीति।

शुद्ध तांबा—१०० भाग।
जस्ता या टीन--१७ भाग।
म्यागनी शिया--६ भाग।
नोसादर बूका--३०६ भाग।
चूना बूंका हुआ--१०८ भाग।
टार टार---९ भाग।

पहले तांबे को गलाओ जब गल कर पानी सा हो जाय तब उसमें

मैगनीशिया--नौसादर-चूना और टारटर एक की बाद एक छोड़ो और उसे चलाते जाओ तब जस्ता उस्में मिला दो जब उस्मे से धुआं निकलने लगे तो मिट्टी के ढपने से उसे ढांप दो और ३५ मिनिट आंच पर रहने दो अब सोना तैयार हो गया और जो चाहो सो ढार लो ढरी हुई वस्तु बनाने मे यह सोना बहुत उत्तम होता है इस्पर चमक भी खूब आती है।

कृत्रिम चान्दी बनाने की रीति।

टीन--३ छटांक--तांबा शुद्ध दो सेर-दोनो धातुओं को साथही गलाकर एक दिल कर डालो।

जरमन सिलवर या विलायती चांदी।

यह चांदी ३ प्रकार की होती है जिसके बनाने की रीति पृथक २ नीचे लिखी जाती है।

१ प्रकार उत्तम।

शुद्ध तांबा--२५ सेर।

जस्ता-१२॥ सेर।

निकल-१२॥ सेर।

२ प्रकार मध्यम।

शुद्ध तांबा-२५ सेर।

जस्ता-१० सेर।

निकल-५ सेर।

निकल एक धातु विशेष है जो बड़ी कड़ी आंच मे गलता है-इस लिये पहिले इस्के छोटे २ टुकड़े कर डालो और तांबे के भी टुकड़े कर लो दोनो को घरिया मे गलाओ जब गल कर पानी हो जाय तो उस्मे जस्ता डाल दो और २ माशे सोहागा भी उसी के साथ छोड़दो और सब को खूब मिला डालो।

घरिया बनाने की यह रीति है दिल्ली की मिट्टी जो हर एक पनसारी की दुकान मे मिलेगी उस्मे चौथाई भाग रुई मिलाकर पानी मे सान खूब कूटो जब दोनो एक दिल हो जांय तो जितना माल गलाना हो उतनी बड़ी घरिया बनाकर धूप मे सुखाओ और जो धातु गलाना हो उसका तिहाई हिस्सा सोहागा मिलाय खूब आंच दो जैसी नरम धातु

होगी उतनीही जल्द गलैगी जैसा तांवा एक घंटे मे और चांदी २० मिनिट मे।

मैगनीशिया एक प्रकार की धातु है अंगरेजी सौदागरों की दूकान मे मिलैगी।

टारटर एक प्रकार का नमक है जो शराब की तल छट से बनता है।

दरबार गनहूसान हिन्द।

लीजिये हुस तो अब आप की दरवाजे ही पर आन पहुंचा अब क्या करना चाहिये इसका बिचार करने का आज पहली अपरैल की दिन एक बड़ा भारी दरबार सोंचा गया है जिसके मुख्य प्रवर्त्तक यकुम एप्रिलफूल के पुराने चंडूगा निश्चय किये गये हैं-इसमें हिन्दुस्तान की कुल बनिया बक्काल महाजनान सेठ साहूकारान शामिल हैं इनकी इस बड़ी कानफ्रेंस मे जैल की ये सब लोग तलब किये गये हैं दिल्ली आगरे की रंडियां और लखनऊ की खोजों के लिये तो कतई हुक्म निकला गया है कि पकड़ २ कर यहां बैठाये जांय सिवा इनकी राजपुताने के अफीमची कायस्थाने के शराबी मथुरा के भंगेड़ी बनारस के गुंडे मिरजापुर के सडे विन्ध्याचल के पंडे गया के अमीर गयावाल प्रयाग के उजड्ड प्रयाग वाल बघेलखण्ड के बघेले बुन्देलखण्ड के अकबेले रुहेलखण्ड के कबीले बंगाल के बडे२ बेले पंजाब के सिक्खड़ लाहौर के रोड़े मराठों के रांगड़े गोकुल के गुसाईं "कायम मुकाम कृष्ण" ब्रज के रासधारी अयोध्या के राम फटाकाधारी द्वारिका के पुजारी जगन्नाथ के उड़िया बुढ़ान पुर की बुढिया बम्बई की पारसीनाटक कम्पनी मन्दराज की करनाटकी वगैरह वगैरह—सब की सलाह से बात यह ते पाई है कि पहाड़ व उजाड़ झाड़ झंखाड़ बयाबान मुल्क हिन्दुस्तान बस्ती या मैदान सब स्थान मे न्यौता भेजा जाय सुनते हैं कोकी फूट हिन्दुओं मे से मजहबी सर गरमी सु

सल्मानों में से और विलायत को व अंगरेजों में से अपने २ मामले या माय की कोविदा कर दी जांयगी और जब सब फसाद की बानी मुबानी ये औरतें निकाल दी जांयगी जिनके सबब से खान पान रहन सहन में इतना फसाद रहा करता है तो सब लोग मरदाना बाना पहिन एक दिल हो रूम मनहूस का खून चूसने को अपने २ दांत विलायती पौडर से तेज करेंगे और उसी दिन से हिन्दुस्तानियों को हथियार भी मिल जायगा वाह क्या अच्छी बात है—और भी सुनिये हिन्दू मुसल्मान और क्रिस्तान तीनों के दरमियान गमी शादी त्योहार बार खान पान संमान सब एक सा जारी हो जायगा मगर कालि हबशी किरानियों को यह इखतियार न मिलेगा क्योंकि उनसे मसल में स्याही लगने का खौफ है यार दरहकीकत यह तो बड़ा मज़ा होगा अभीही जाकर तमाम चंडूखानो व मदकखानो सरायों व अकलों में अपने दोस्त तीतरबाज कबूतरबाज़ पिद्दीबाज़ों से कह दें तमाशा देखने लायक है—यह जलसा आसमान के तीसरे तबक़ में होगा फ्रांस से सौ सौ गज़ के लम्बे बहुत से बेलून मगाये हैं उन्हीं पर चढ़कर जाना होगा किराया बेलून का माफ़ है मटियाबुर्ज के शाह वाजिदअली इस जलसे के प्रेसिडेंट और चेयरमेन नियत हुए हैं बाबू चंडूलचन्द मजुंदार मनहूस आफिस से जाने वालों के लिये टिकट इश्यू करेंगे जिन्हें जाना हो जल्दी करें वखत बहुत कमती रह गया है।

नई रोशनी का विष

तृतीय अङ्क—चतुर्थ गर्भाङ्क।

स्थान—उसी बाग का एक दूसरा हिस्सा—समय वही—रसिक विहारी और गौकुमार बैठे हुये।

रसिकवि—और सुनिये तो सखी—पानी आदि के छोटे से छोटे कीड़े भी जिन को हम केवल [illegible] कांच के द्वारा

देख सकते हैं उनसे लेकर आदमियों के दर्जे के ऊपर देवताओं तक सब में यही बात देखने में आती है कि यह सृष्टि कार्य्य साधन की लड़ाई के लिये एक संग्राम भूमि है—तब हम विद्या का फल यही मानते हैं कि आदमी उसे लड़ाई में अस्त्र की जगह काम में लावे।

गौकुमार—खूब कहा यह! क्या कहें इस समय कलम दवात हमारे पास नहीं है नहीं तो इस बात के डवलून में को लिख देते कि "यह शख्स खूब पढ़ा लिखा है पर अपनी सामर्थ्य भर विद्या का नशा घोटने में बिल्कुल न चूका और विद्या के उत्तम गुणों को ज़रा भी अपने पास न फटकने दिया"

रसिक—चुप! चुप! देखो हम लोगों के कपटैन साहब आ रहे हैं।

तारक चन्द्र का प्रवेश।

तारक—[दोनों को देख] हमको बड़ी खुशी होती है कि जिस समय हमारा आपका मिलना ठै पाया था उसी पर ठीक प्रकार आप लोग यहां पर तैयार हैं इसके लिये हमारा करोड़ों धन्यवाद आप दोनों साहबों को है।

रसिक—वाह! आप तो हमारे पुराने कपटैन हैं—आप के हुक्म से हम लोग कभी बाहर हो सकते हैं—पढ़ने लिखने से क्या कोई दूसरे ढांचे हो गये?

कौकुमार—पूः! पूः! इस सब की क्या जरूरत है हम लोग एक दूसरे को समझते हैं—शाइस्तगी का इतना खून करने से इस आधीरात को क्या मिलेगा—खैर असल बात को ते कीजिये।

तारक—बहुत अच्छा परन्तु जैसा कि आप लोगों ने अपने पुराने साथी सत्यानन्द आदि का संग छोड़ हमारी सहायता करना विचारा है।

रसिक—जी हां—हमतो अक्लमन्दों के साथ बेवकूफ बन कर रहना अच्छा समझते हैं न कि बेवकूफों के साथ अक्लमन्द बनना।

नौकुमार—क्योंकि किसी के साथ क्यों न हो अक्लमन्दी बनने का आपको दिमाग और शऊर होता तो फिर क्या था?

रसिक—खैर अब मैं अपने मित्र बाबू सत्यानन्द साहब का कुछ हाल सुनना चाहता हूं।

तारक—सत्यानन्द या "बाबू सत्यानन्द साहब" जैसा आपने अभी कहा आगे नाथ न पीछे पगहा—बैल न कूदा कूदी गोन—भला आज कल उनकी

क्या पूछना है ? उनका कोई रिश्तेदार था ईश्वर उसका बुरा करे—उसे इसी बहुत अहमक का पाहुना बनाना था और वह मरने के उपरान्त बहुत सा धन सत्यानन्द के लिये छोड़ गया—अब क्या एक तो तीतलौकी दूसरे नीम चढ़ी नहीं तो उसके साथ हमने क्या २ भलाई और सुलूक न किये होंगे।

श्री कुमार—जी हां रुपये पैसे से जान से रिहा कर देना कहां तक उमदा सुलूक है इसे कौन न मानेगा।

तारक—नेकी का दुनिया नहीं है इसी सत्यानन्द को अब देखिये सब अहसानो को भूल जिस थाली में खाया उसी में छेद करता है।

रसिक—तो अब आप को इसमें कौन बड़े रंज की बात है ?

श्री कुमार—(स्वगत) काको क्यों दुख हो शहर के अन्देशे से संसार मात्र के साथ भलाई करने वाले और होते कैसे हैं।

रसिक—और श्री भानुदत्त ?

तारक—अब आपने पिता जी के घर पधारे हैं।

रसिक—वाह ! आपने उनके पिता जी का दर्शन अभी किया है ?

तारक—जी अभी कहां—आपही लोगों की राय पर छोड़ रक्खा था तो अब आप की सलाह है कि अब हम देर न करें।

रसिक—नहीं बिल्कुल नहीं जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी कीजिये।

तारक—मगर किस ढंग से उनसे मिलें इसकी भी तो कुछ सलाह बतलाइये।

रसिक—भला आप यह पूछते हैं ? लीजिये ढंग भी सुनिये—पहले कलकत्ते की तारीफ कीजिये कि ऐसे शहर में कोई बच कर रह सक्ता है ? और कहिये कि भानुदत्त न मालूम किन २ खतरों में आंख मूंद कर कूद चुके होते यह तो खैर हुई कि आप की उनकी जान पहचान हो गई तो आपने उनको बचाया बस यही सब और क्या ? अक्किलमन्दों के लिये तो एक इशारा काफी है (जब तक इन दोनों की बात होती है, श्रीकुमार बाग में टहलता हुआ फूलों को देखता है)

तारक—और सत्यानन्द ?

रसिक—उसकी बदकिस्मती कि हम लोगों के साथ नहीं है।

तारक—नहीं हमारा मतलब यह कि सत्यानन्द और भानुदत्त का सम्बन्ध तो

आप जानती ही होंगी ?

रसिक—आप ऐसा बुद्धिमान इस तरह की बातों के लिये फिकिरमन्द हो ? तब ताज्जुब की बात है—तो अब आप सब समझ गये ?

तारक—हां !

रसिक—गोकुमार आओ चलें—(तारक से) क्यों साहब तो हम लोग अब जायं न ?

तारक—जी हां—अब हमको कुछ काम नहीं है—आप लोगों को बड़ी तकलीफ हुई ।

गोकुमार (आकर फूल सूंघते हुये मैं मन का सा) जी कुछ नहीं अहा ! क्या चांदनी छिटकी हुई है !

रसिक- आओ २ चलो ! इस शख्स के दिमाग को कवियों ने चाट कर पागल कर डाला ! आओ चलो !

[तारकचन्द्र बन्दगी करता है और दोनो जाते हैं]

तारक (स्वगत)-अहा ! हमने प्रमदा को इस समय बोलाया था ! यह तो हम खूब जानते हैं कि वह यहां मौजूद हैं ! पर इस वक्त इन सब बातों ने हमारे दिमाग को बिल्कुल परेशान कर दिया है उः ! अब हम तो सीधे घर की राह लेते हैं अहो २ टापनी दो उधेयहां ! हा ! हा ! बड़े दिमाग में फूली थी उसे भी क्या मालुम होगा ? नौकरी बजालाने का ढंग सिखलाते हैं [हंसता हुआ जाता है]

सोना ।

सोने की बराबर सुख मे जानता हूं शायद दूसरा नहीं है अनेक आधि व्याधि पूरित जगत मे मनुष्य को यदि कोई सच्चा आराम है तो सोने मे परन्तु वह आराम तभी मिलता है जब सोने का ठीक २ बर्ताव किया जाय इस सोने को आप चाहे जिस अर्थ मे लीजिये निद्रा या धन बात यही है फर्क सिर्फ इतना है कि रात का सोना मन को मनमाना मिल सक्ता है धात वाला सोना सब के पास उतनेही अन्दाजि से नहीं आता दूसरे बड़ी मिहनत से मिलता है बिचार शील पाठक इन दो प्रकार के सोने मे आप किसे अच्छा मानते हो ? क्यों रात वाला ही अच्छा है न ? हम समझते हैं आप को भी यही राय होगी क्योंकि हमे पूरा विश्वास है कि ममता धन को विविध संसार के भागी आप खसको टट्टी से आती हुई पंखे की ठंढी हवा को कभी अच्छा

न कहियेगा परन्तु जैसा हम ऊपर कह आये सोने के ठीक ही ठीक बर्ताव से सब सुख प्राप्त हो सकते हैं और इसके ठीक २ बर्ताव में गड़बड़ कीजिये तो सोचिये यही सोना आपका जानी दुश्मन खड़ा हो जायगा और आपको सकार के काम में भयानक रुकावटें सूझ पड़ेंगी पर जो किफायत के साथ इससे काम लीजिये तो "सोना और सुगन्ध" का मसला आप के ऊपर ज़रूर पूरा हो जाय एक सोने वाला जुआरी था वह एक दफे बहुत सा रुपया हार गया तो सोचा क्या परवाह है दूसरे दांव में इसका दूना आ जायगा पर दूसरे दांव में जो कुछ उसके पास था सो भी निकल गया इसी तरह पर एक सोने वाला विद्यार्थी भी था बड़े होने पर बहुधा अपने मित्रों से कहा करता था मैं जवानी में सोने से इतनी देर से उठता था कि अब हिसाब लगाता हूं तो ३० वर्ष में २२ हजार के लगभग घंटे मैंने बेफायदा खोए। याद रखिये अगर आप रात वाले सोनेका वाजिबी बर्ताव करोगे तो प्रात वाला सोना आप से आप आमिलेगा निश्चय जानिये मनुष्य के लिये कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है अगर हम दिल से उसे लिया चाहें। सोना वह चीज़ है कि इसमें रोगियों का रंज दुखियों का दुख थके हुओं की थकावट दूर हो जाती है—खैर यहां तक तो हमने लिखा कि कहा अब अलग२ सोचिये रात को बिना सोए बादशाह भी आराम नहीं पा सक्ता सारी दुनिया का सोना चाहो घर में भरा हो जबतक न सोइयेगा चैन न पाइयेगा सब दौलत और माल असबाब को ताक में रख दीजियेगा और इस आराम दिह फरिश्ता के अकर कैदी बनियेगा अगर आपका दिल सदहा झौंझट और फिकरों से लदा है यहां तक कि उस बोझको अलग फेंक घड़ी दो घड़ी कहीं पेड़ की ठंडी छाया में बैठने तक की फुरसत नहीं मिलती ऐसे आदमी को उस फरिश्ते की हवालात में भी जहां जीव मात्र को स्वास्थ्य और आराम मिलता है उसी तरह की बेचैनी और बेकरारी रहेगी तात्पर्य यह कि सच्ची गाढ़ी नींद उन्हीं को आती है जिनके दिलों में कोई वेसवासी शिकायत नहीं रहती—अकसर देखने में आता है ऐसा आदमी देरसे सोते हैं और देर करके उठते हैं इसी के विरुद्ध विद्याभ्यासी १२ या १ बजे रात किताबों में आंखें फाड़ा करते हैं ४ हो

कभी उठ खड़े होते हैं। बहुतेरे ऐसे भी भाग्यवान् हैं जिनको स्वभावही से बहुत थोड़ी नींद आती है और ऐसों के लिये इस तरह का जागना स्वास्थ्य में कोई हानि नहीं पहुंचा सक्ता परन्तु अधिकांश ऐसे लोग हैं जिनको यह बे मामूली जागना बहुत ही बिगाड़ करता है। कम सोना जैसा मुज़िर है अधिक सोना भी वैसाही और फिर रात को देर से सोने से जैसा बुरा असर तन्दुरुस्ती में होता है उस्से अधिक भोर को देर से उठने से होता है पढने लिखने वालों को तो देर से उठना अत्यन्त ही हानिकारक है। जो लोग पहले सवेरे उठते रहे पर पीछे से देर तक सोने की आदत में पड़ गये हो उन्हे याद होगा कि सूर्योदय के पहले उठकर जरा बाहर की तरफ टहल आने में कैसा सुख मिलता था। आहा! उस समय प्रातः परि भ्रमण से चित्त को कैसी शान्ति और प्रसन्नता प्राप्त होती है। उषा देवी के प्रसाद का अनुशीलन करने वाला स्वच्छ शीतल वायु। वनस्पतियों पर मोती सदृश ओस के विन्दु। पक्षियों का कलरव। अरुण किरण के मिस से मानो लाल झालर टकी हुई आकाश वितान की अनूठी छवि दिखाती की मनोहरता मनको प्रमोद और अङ्ग २ रोम२ को कैसी फुरती और सन्तोष देती हैं—वहीं बड़ी दिन चढ़े तक ऐंड़ाय ऐंडाय खाट तोड़ने वाले के मन और शरीर में कैसा आलस्य शान्य और शैथिल्य व्याप्त रहता है कि सम्पूर्ण दिन का दिन नष्ट बीतता है इसी से हमारे पुराने आर्यों ने लिखा है "अरुण किरण ग्रस्तांशाखां विलोक्य स्वयात्" माघ कवि ने शिशुपाल वध के ग्यारहें सर्ग में प्रातः काल का बड़ा ही अनूठा वर्णन किया है जिस्को पढने वाले को प्रातः परि भ्रमण का पूर्ण अनुभव घर बैठेही प्राप्त हो सक्ता है।

अब धात वाले सोने को लीजिये इस सोने से हमारा मतलब धन से है संसार के बहुत काम व्यौहार ऐसे हैं जिस्मे इस का काम न पड़ता हो क्या फकीर क्या अमीर सभी इस्की चाह में दिन रात मरा करते हैं—इक कंचन इक कुचन पर किन न पसारो हत्य—सर्वे गुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति—इसी सोने की लालच में पड़ मनुष्य कभी को यह काम कर डालता है जिस्से उस्की मनुष्यता में धब्बा लग जाता है इस्से दुनिया सोनेही को ऐब लगाती है अर्थात् पाप कर्म करने

वालों को तो बचाती है और उसको व रच को जो एक जड़ पदार्थ है सम्पूर्ण अधर्म और अन्याय का मूल समझती है—यानी केवल आदमी राई को पर्वत और पर्वत को राई कर दिखाता है परन्तु संसार की और सब वस्तुओं के समान यह भी च ञ्चल रहै बराबर देखते सुनते चले आये हैं कि लक्ष्मी बड़ी चंचला है और एक पति से सन्तुष्ट नहीं रहती। जिस राह में इसे डालिये सोना एक बार अप ना पूर्ण वैभव प्रकाश कर देगा परन्तु अफसोस नेकराह में यह बहुतही कम डाला जाता है और इसी से संसार के कामों में अनेक गड़बड़ देखा जाता है। कोई२ विरक्त विरागियों को तो हम कहते नहीं पर संसार के असार प्रपञ्च में फंस ना जन इसको लिये कोई ऐसा प्रयोग काम नहीं बच रहा जिसे वे न कर गुजरे हों इसके लिये भाई२ काट मरते हैं बेटा बाप की जान का ग्राहक हो जाता है हिन्दुस्तान में कई एक मुसल्मान बादशाह इसकी मिसाल हैं इसी विषय पर यहां हम एक अंगरेजी कवि का कथन उद्धृत करते हैं।

......,'the knowing and the bold
Fall in the general massacre of gold
Wide spearding pest ! that rages snd confined
And crowds with crime the records of mankind
For gold his sword the hireling ruffian draws
For gold the hireling judge distorts the laws
Wealth heaped onwealth nor truth nor safety buys
The dangers gather as the treasures rise."

लड़ाई२ चीजों के लिये होती है पर ज़मीन ज़न परन्तु सच पूछो तो संपूर्ण झगड़ा और बिगाड़ का मूल केवल ज़र है हमारा हिन्दुस्तान इस सोनेही के कारन धूर में मिला हमारे बाहिरे के लिये ही हमारे अपरिमित सोने पर इतर देशी यवन अहमदि वाज़ भी चील की तरह झपट्टे मारते गये आखिर को आखिरी बाज़ अंगरेज़ उसपर अपने मज़बूत पंजों से जम ही तो गये अब रूस इसके लिये मतवाला हो रहा है न जानें० न जानें कितनी जान इस होनहार घोर संग्राम में होमी जांयगी। ऐ मगरूर रूस हमारा सोना तो इंगलैंड ने पहले ही से चूस लिया है तुझे क्या पागल पन सूझा है यहां आकर क्या ईंट रोड़े पावेगा। खैर इन सबातों से हमें क्या सोना निस्सन्देह संसार में सार पदार्थ है यदि सोने वाला खुसार ग्राही हो उसे नेक राह में लगावे

एक सोने वाला "प ठक"

विज्ञापन।

मान्यवरो। इस जगत् में निष्ट और काल ख्यान गान समझति पिटा पण्डित मन्त्री के सिवाय ऐसा होगा जो परम पद निवासी न् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के अनुपम अगण्य अपूर्व सद्गुण का उनका अपरमित धन्यवाद होगा। कहने को अब स्वामी राज न रहे परन्तु नेक सोचोंगे कहोगे कि वे अमर होगये।

अमरत्व उनको कैसे प्राप्त हुआ ? इस का उत्तर यही होगा कि जितने महापुरुष इस पदवी को प्राप्त हुए वे सब सहिष्णुता सदाचरण और परोपकारादि सद्गुणों के स्वीकार से ही प्राप्त हुए और होंगे यही सिद्धांत अपने वेदादि सत्य शास्त्रों का है इसी के अनुकूल पूर्व काल में समस्त ऋषि मुनि और इस काल में श्री स्वामी जी महाराज सदा सर्वत्र सब को अपने वक्तृत्व और लेख में आदेश और उपदेश कर गये हैं।

धन्य हैं वे नर जिन्होंने अपना चित्त ऐसे सदुपदेशों पर बड़ी दृढ़ता से लगा रक्खा। कितने ही लोभ बाह बैठते हैं कि आर्य समाजियों में तो सब उभय भ्रष्ट और परोपदेश कुशल ही देखे जाते हैं हम भी नहीं कह सक्ते कि यह कथन उनका सर्वथा निर्मूल है। परन्तु सब से ही नहीं हैं। तनक अभी फिर देखो तो सब भ्रम दूर हो जायगा। दूर ना सको तो हमारे नगर निवासी युत पण्डित गोपाल राव हरि जी राज कोठी आकर देख लो कि पर होकर भी किस प्रकार अपना सम सदाचरण और परोपकार में [illegible]र रहे हैं यद्यपि इनके पुरुषार्थ [illegible]र धनी भागी अधिकारी और में जिस काम का धैर्य न देखा ने मन चलाते ही सिद्ध कर और चमत्कार यह कि उसको लपेट से सदा आप पृथक अर्थात् न उसके सुख से सुखी न दुख से दुखी॥

इन महाशयों की स्तुति विशेष कर इन दो वाक्यों पर सब से सच रहती है इनके अपुन से तो रुक जाइये। झूके अपुन से तो झूक जाइये भरत खंड भर में कौन प्रसिद्ध स्थान ऐसा है जहां सुयश के साथ इनका नाम न लिया जाता हो नगर से लेकर जिले की चारो सीमा तक इन्हीं ने बहुत से समाज स्थापित किये। बहुत कम ग्राम जिले में ऐसे होंगे जिन में इन के किये कम से कम दस या पांच आर्य न हो सैकड़ों द्विज गण इनके उपदेश मात्र से जहां संध्या पासनादि नित्य कृत्य करने लगे। कई लोकोपकारक पुस्तक बना कर छपवाए और धर्मार्थ विद्वानों को बांटे उसके परिवर्त्तन में सब ठौर से अनेक प्रशंसा पत्र इनको आये। इनके संयोग से कितने ही युवक उचितानुचित के ज्ञानी कितने ही व्याख्यानी और कितने ही इन के समान सुलेखक सूचित विषय के तैयार होगये और होते जाते हैं। कितने ही अच्छे समाचार पत्रों की बिक्री बढ़ाई और हिन्दी प्रदीप को पारसाल से सवा सौ रुपया के लगभग उपजीविका उपस्थित कर चिरजीवी किया। कितने ही प्राध्य और दो श्रमा धीमों को देसाई होते से बचाया। गत वर्ष में चन्दा कर के ब्राह्मणों को दो ऐसी बड़ी कन्याओं का विवा

ह कराया कि जिसको चिन्ता में उनके बाप चाचा आदि बारह वर्ष से अति व्याकुल थे। इसी प्रकार चन्दा कर चौबे लालाराम के सब घर की कन्या विवाह नैमित्तिक ४०० रुपया ऋण रूप महा सागर में डूबते से उबारा अर्थात उनके सब कर्जदारों का दाम २ व्याज सहित चुका देकर इन्हें जन्म भर को सुखी कर दिया।

गो रक्षार्थ विज्ञापन यातेही स्वामी जी के समीप अति अल्पकाल में ७२ हजार मनुष्यों के हस्ताक्षर जब यारा भेजे तो वहां से श्री मान् स्वामी जी महाराज के हस्ताक्षरों से अलंकृत द्वितीय श्रावण की द्वादशी शनिवार सम्वत १९३८ लिखित एक परमोत्तम धन्यवाद पत्र पाया उसकी समाप्ति पर यह भी आज्ञा थी कि हमको पूर्ण आशा है कि इसी प्रकार तुम आर्य भाषा अर्थात् नागरी के उद्धार में भी स्व पुरुषार्थ को प्रकटता करोगे। अवसर पाते भी तदनुकूल इन दिनों १० मास में उस में जैसे कुछ आसक्त हैं यह सब प्रयाग हिंदूसमाज के प्रत्येक पत्र के धन्यवाद है। वास्तव में ऐसे सज्जन देशोप कारक सत्पुरुषों की जो कोई जितनी स्तुति करे वह सब उचित होगी। इतना सुयश पाने पर भी जिनको किञ्चित मात्र भी अभिमान छू नहीं जाता, कोई इनसे व्यर्थ भलेही द्वेष करे परन्तु इनको उनका भी अन्तःकरण से पूरा शुभचिन्तक जानो॥

सारांश ऐसे २ उत्तम उपकारक व्यक्ति हमारे आर्यों में जहां तहां कितने हैं जिनका नाम हम यहां विस्तार के डर से प्रकाशित नहीं कर सके जो कुछ लिखा उसका हेतु केवल यही है कि लोग ऐसों को अच्छे प्रकार जाने और उनके उदाहरणों पर चलें तो भी जगत का बड़ा उपकार हो, बड़ा शोक है हम लोगों को इस बात का कि प्रशं सित महाशय का शरीर छः मास से रोग ग्रस्त रहता है दो तीन बार उनको प्रा णांत कष्ट हो चुका अब भी परमेश्वर इ को जल्द आनन्दित करे॥

इतना खेद रहते भी उन्हों ने प्रति मास कभी ४० कभी ६० रु० हिंद उद्धारक चंदे का जमा किया [illegible] फर्वरी के अंत तक नीचे लिखे सार ५८१।।।≶)॥ वसूल हो चुका। १०१) रु० हमारे परम उदार [illegible] पति श्री मान् लाला जगन्नाथ [illegible] साहिब रईस शिरोमणि और [illegible] इतर अनेक सत्पुरुषों [illegible] हुआ दान है—आशा है कि दान संख्या और बढ़े —अब [illegible] समस्त भाइ यथों अर्थात सब [illegible]

यों से बहु बिनय पूर्वक यह प्रार्थना करके इस प्रसंग को समाप्त करते हैं कि आप भी सब लोग श्री मान् स्वामी जी महाराज से इस परम अभीष्ट हिन्दी उद्धारक कार्य में तन मन धन से सहायक हो जावें और जहां तक जिनसे जितना बदा करते बने करके इस कार्य को पूरा करना अपना परम धर्म समझें। इति॥

८ मार्च सन् ८५ ई०॥

हा प्रयाग से औदार्यगुण उठ गया

हा! इस प्रयाग से औदार्य गुण प्रयाण कर गया—रियासत की जड़ कट गई---शील पालन का लालन करने वाला अब कोई न रहा। अकाल जलदोदय की [illegible]न्ति देवता और ब्राह्मणों के सत्कार पर करका पात हुआ यहां [illegible] बड़े प्रतिष्ठित कायस्थ कुल का[illegible]म सुगृहीत नाम चौधरी रुद्र[illegible] राय बहादुर चैत्र कृष्ण [illegible]म्या को इस संसार की [illegible]ा प्रगट करते श्री विश्व[illegible]री में तन त्याग अलका[illegible] पाहुने बने—पुराने क्रम [illegible]ने वालों में जितने प्रशंसनीय गुण होने चाहिये उन सबों के उक्त चौधरी साहब आवास वृक्ष थे। हा? जघन्य दैव क्या तूने यही ठान ठान रक्खा है कि हमारे देश में पुरानी पद्धति की दिन२ अवनति और ह्रास होता जाय क्योंकि हम इस बात को बराबर देखते आते हैं कि पुरानी सम्प्रदाय के स्तम्भरूप जब एक महाशय उठ कर चले गये तो फिर दूसरा उस स्थान को नहीं पूर्ण करता हम आशा करते हैं हमारे कैलाश बासी चौधरी साहब के सुयोग्य सुपुत्र अपने सुयोग्य पिता की कीर्ति पताका को चिर स्थापिनी रखने में कदापि मन्दादर न होंगे वरन हम लोग तो यही आशा रखते हैं कि औदार्य आदि गुणों को पुष्ट रखने में ये अपने पिता से भी बढ कर हों क्योंकि नीति भी तो ऐसी है। सर्वतो जयमन्विच्छेत् पुत्रादिच्छेत्पराभवम्॥

मूल्य अग्रिम ३।/) पश्चात् ४।/)

[P]rinted at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

——xxxx——

मासिकपत्र

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने को १ ली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेहपूरित प्रगट ह्वै आनँद भरै।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै॥

ALLAHABAD.—1st May 1885. Vol. VIII.] [No. 9.

प्रयाग ज्येष्ठ शुक्ल कृष्ण २ सं० १९४२ [जि० ८ [संख्या ९

नई वस्तु की खोज।

मनुष्य को नई २ बातों के सुनने की नये २ दृश्य देखने की नई २ चीज सीखने की सदा लालसा रहती है-इन नई २ वस्तुओं की खोज मनुष्य को ~~[illegible]~~ परिपक्व बुद्धि के हो जाने पर उपजती हो सो नहीं किन्तु लड़कपने ही से जब वह अत्यन्त सुकुमार मति रहता है तभी से इसका अंकुर चित्त में जमने लगता है-कोई लड़का कितनाही खे-

खवाड़ी और आवारा हो या कि
सी नीचे से नीचा काम में क्यों
न लगा हो उस्में भी उस्को नये
रास्ते की खोज अवश्य होगी हम
ने देखा है जो लोग दिन भर
कोई फ़ाइदे का लाभ दायक
काम नहीं करते वरन खिलाड़ी
कूद में समय गवांते हैं उनको भी
जिस दिन कोई नया तरीका
खिलने या दिल बहलाने का मि
ल जाता है उस दिन उनको भी
खुशी का हाल न पूछिये-परन्तु
विचार कर देखिये तो निरे खेल
ही कूद में दिन काटना मनुष्यत्व
धर्म और मनुष्य शब्द के अर्थ पर
आक्षेप करना है क्योंकि हमारे
यहां के पूर्व कालिक विद्वानो ने
आदमी का पर्याय मनुष्य जो र-
क्खा है वह यही देख कर कि
आदमी अपनी भली बुरी दशा
सोच सक्ता है उस्के चारो ओर
जो संसार के प्राकृतिक कार्य हो
रहे हैं उनका भेद ले रहा है
उनकी असलीयत दरियाफ़्त क-
रना चाहता है नित्य नई २ वि
द्या और विज्ञान की वृद्धि करता
जाता है अपनी जिन्दगी को मजे
दार करने की ज़रूरियात पैदा
करता जाता है और अपने सोच
ने की शक्ति केवल उन ज़रूरियात
को पूरा कर अपने जीवन को
आराम और सुख देने का ढंग
भी बढ़ाता जाता है आज—जो
सैकड़ों तरीके आराम पहुंचाने
के हम लोगों को मालूम हैं पहले
के लोगों को केवल वे मालूम ही
नहीं थे वरन स्वप्न में भी उनके
ध्यान में कभी नहीं आये थे
कुछ ऐसा मालूम होता है कि
आदमी का दिमाग कबूतर के
दरबों सा है जिस्में एक समय
केवल थोड़े से कबूतर और उनके
अंडे बच्चे रह सक्ते हैं फिर ज्यों२
इन कबूतरों की सृष्टि बढ़ती जा
ती है त्यों २ दरबे के खाने भी
बढ़ते जाते हैं कदाचित् इसी
प्रकार की दशा आदमी के दि
माग और उस्में भरे हुए विषयों
की भी है आप हमको डारविन
साहब का पक्का चेला मत समझ

कीजियेगा हम यह नहीं मानते कि पहिले लोग कम सोचते थे तो वे बन्दर थे और अब हम लोगों के सोचने के विषय अधिक होकर हमारे मस्तिष्क को अधिक पुष्ट कर डाला इस लिये बन्दर से आदमी हो गये !! खैर इस बात के मानने में आप को किसी तरह का उज़ूर न होगा कि अब देखते ही देखते इसी नई २ उमदा २ चीजों को खोजने हज़ारों नई २ विद्या निकाली हैं हमारा केवल विज्ञान सम्बन्धी ही विद्या से प्रयोजन नहीं है किन्तु वे सब शास्त्र और विद्यायें जो मनुष्य को घर गृहस्थी में उठते चलते फिरते प्रति क्षण काम में आ सक्ती हैं और न इसी बात के स्वीकार करने में आप को कुछ एच पेच होगा कि इन्हीं सब नई ईजादों का यह फल हुआ कि आदमी की अक्ल फुरती या चालाकी पर मानो सान सी रख दी गई हजारों नये २ मगज़ सैकड़ों नये २ धर्म्म लोगों को अभ्या रखने के ऐसे निकले हैं कि पूर्वकालिक समाज की गढ़न के लिये उनका उपयोगी होनाही असंभव था "सर्व साधारण के हित की चीजें" इस उक्ति को जितना हम लोग अब सुनते हैं और जितना पिष्टपेषण इस पर अब होता है उतना पूर्वकालिक लोगों के रहन सहन के ढंगहों पर ध्यान देने से मालूम होता है कि सर्वथा असम्भव था इस समय यह "सर्व साधारण" का वह प्रबल समूह है जिसने हम लोगों के लिखने के ढंग को, पढने के ढंग को, सोचने की प्रणाली को, पुस्तक और किताबों के विषयों को, भीतर बाहर घर बार के बर्ताव को, खाने जाने उठने बैठने रहने सहने के तरीके को, निज के और विदेशीय लोगों के सम्बन्ध को, कहां तक गिनावें देश के देश की दशा को कुछ अनोखे नये सांचे में ढाल डाला है और आशा है कि समाज की पुष्टता के साथही साथ

इस सांचे का रूप रंग और भी
दिन प्रति दिन पेंच पेंचदार हो
ता जायगा—और सब बातों को
अलग रख छापने ही को लीजिये
जिसने लोगों की लिखावट का
ढंगही और का और कर डाला
नये २ विषयों की हजारों किता
बें और पुस्तकें निकल चुकी हैं
फिर भी लोगों को प्रत्येक विषय
की नये प्रस्ताव पढ़ने की इच्छा
शान्त नहीं होती शान्त होने को
कौन कहे बरन बढ़ती ही जाती
है क्योंकि यह शिकायत बहुधा
लोगों के मुह से सुनने मे आती
है कि कोई नई नई किताब हो-
ती तो पढ़ते हम लोग छोटीसे
से छोटीका प्रस्ताव लिख २ दिमा
ग पिच्ची कर डाला फिर भी पा
ठकों को फड़कते हुए मजमून
का आर्टिकिल पढ़ने की इच्छा
शान्त न हुई।

अस्तु हम प्रस्तुत का अनुसरण
कर नये २ धन्धों का हाल लिख
ते हैं इसी सब लोग मानते हैं कि
जो लड़का ताश शतरंज या चौ
सर खेला करता है वह समाज
मे बड़ा आवारा और निकम्मा
समझा जाता है हमने पेरिस के
कुछ लोगों का हाल पढ़ा है कि
रोज सुबह उठकर एक तश्तरी
मे खेल के सब सामान रक्खे हुये
(जैसा दोचार गड्डी ताश शतरंज
की बिसात और मोहरे आदि)
बाजार मे घूमते हैं बेकार अमीर
लोग उनको अपने घर बुलाते हैं
उनके खेल की शरह है जैसा दो
घंटे का पांच रूपया जो लोग
उनको बुलाते हैं वे इसी हिसाब
से देते हैं वे लोग अमीरों के
खेलने के वख्त हंसी के किस्सों
से खेलने वालों का दिल बहला
या करते हैं—आपने नौवाबों के
"दस्तर खान के बिल्लों" यानी
मुफ्त खोरों का हाल सुना होगा
परन्तु इन पेरिस के मसखरों के
टक्कर के लोग शायद हिन्दुस्तान
मे न निकलैं गे जिन्हो ने साधार
ण खेल कूद मे आमदनी को
एक ऐसी सूरत अपने लिये नि-
काल लिया है कि जितनी आम

दूनी इस देश मे बड़ी मेहनत के साथ दिमाग पिच्ची करने पर भी नहीं हो सक्ती—सिवा इनके बड़े २ आलिमों को नाचना गाना सिखलाने वाले उस्ताद काल मे उस का बर्ताव सिखलाने वाले उस्ताद मैसो से उमदी तरह सुल्लियत के साथ हाथ मिलाना सिखलाने वाले उस्ताद तो बस गिनत पड़े हैं आप को शायद ऐसे लोगों के सिखलाने पढ़ाने का शौक भी सुनने की इच्छा होगी प्रायः तो दो गिन्नी फी घंटा निर्ख है और बड़ा आसामी मिलने से इस्का दूना चौगुना हो सक्ता है।

शायद आप कहैं ऐसे लोगों से मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट गुण अर्थात् उत्तम २ विषयों के सोचने की शक्ति तो बहुत खूबी के साथ नहीं पाई जाती अंगरेजी मे मनुष्य के लिये जो शब्द "मैन" है क्या उस्के माने सोचने वाले के नहीं हैं? इस्का उत्तर हम यही दे सक्ते हैं कि मनुष्य मात्र के लिये संभव नहीं है कि सबी सुनि "मनन शील" हों— फिर केवल यही बात नहीं है कि मनुष्य खिलाड़ी कूद या दूसरी सुल्लियत और आराम देने वाली बातों मे नई चीज की खोज मे लगा है किन्तु जो बड़े २ गूढ़ और सूक्ष्म विषय हैं उनके सोचने वाले भी नित्य नये रास्ते निकालते ही जाते हैं आज आदमी के पैदाइश की "थिओरी" निकली कल चन्द्रलोक मे किस प्रकार की बस्ती है या कुछ नहीं परसों सूर्य मण्डल किस पदार्थ का बना है यह सोचा जाता है अथवा पदार्थ की चतुर्थ अवस्था दरअसल कोई वस्तु है या गणितज्ञों का ख्याली पुलाव है या प्रोफेसर क्रूकस ने अटकलपच्चू पदार्थ को एक दशा का नाम रख दिया है ऐसे २ नित्य एक से एक अचंभे की नई २ बातें सुनने मे बराबर आती जाती है इस लिये यदि कोई यह कह दे कि आज विज्ञान या मनुष्य की कोई विद्या अपने हद्द को पहुंच गई तो यह बड़ी भूल हो

भी हम तो कुछ ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का जन्म ही नई २ चीजों के खोजने के लिये हुआ है और इसी से यह सिद्धान्त बड़ा अच्छा मालूम होता है कि "दुनिया रोज़ २ तरक्की पाती जाती है" और जो बातें पहले के लोगों के कभी मन में भी न आई थीं उन्हें अब हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं और जब बड़े २ लोगों का यह हाल है कि दिन रात उमदा २ नई २ चीज खोज रहे हैं तो हम आप किस गिनती में हैं जो किसी फ़ाइदे की चीज आप के लिये न सोच सकें तो दिल बहलाव के ढंग पर नये ढंग का यह लेख ही सही आप के नज़र है।

कूप मण्डूकत्व और उसकी निराकरण की प्रार्थना

प्लेटो एक सुप्रसिद्ध बुद्धिमान मनुष्य था उसके नगर में आदरक चिन्ह की रीति पर बहुत सी मूर्तियां रक्खी थीं प्लेटो से किसी ने पूछा कि इसमें आप की मूर्ति क्यों नहीं है? प्लेटो ने उत्तर दिया कि "हमारे मरजाने के बाद हम चाहते हैं कि लोग हमारी मूर्ति यहां न देख कर यह कहैं हाय प्लेटो के लिये कोई मूर्ति क्यों नहीं बनाई गई न कि हमारी मूर्ति यहां देख यह कहैं कि यह मूर्ति प्लेटो की किसी ने बना दिया है" उसका आशय यह था कि यदि मनुष्य में कुछ योग्यता होती है तो अवश्य वह लोगों के जीमें जगह पाती है मरने पर उसके लिये लोग शोक करते हैं और सर्व साधारण के हृदय में अत्यन्त स्नेह के साथ स्थान पाना हजारों मूर्ति से बढ़ कर है और यदि हम कुछेक बल वसे किसी प्रकार की योग्यता या नेकनामी का लेश भी अपने में न रक्खा तो हाथ की बनी मूर्ति क्या पहाड़ भी उखाड़ कर रख दिये जाय तोभी तुमारा नाम सदा के लिये चिर स्थायी नहीं रह सक्ता इस दृष्टान्त को आज कल के दो तरह के लोगों पर हम लगाया चाहते हैं एक तो वे जो अपनी टूटी फूटी रीति पर यथा शक्ति शुद्ध हृदय और निष्कपट भाव से किसी देश की भलाई में लगे हुये हैं दूसरे वे जो शक्ति होने पर भी ऐसे लोगों के साथी नहीं होते किन्तु जहां कहीं मौका मिलता है मन मानता उनको बुराई करने में

नहीं चूकते उन्हें कुछ भी छिद्र पाकर खुचुर निकालने में बड़े प्रसन्न होते हैं ख़ैर का कलाम, सुहबे निकालने को कसम खाकर बैठे हैं ऐसों के मन में यह समाई हुई है कि निदान दस पांच मनुष्य उनके जान पहचान के जो किसी अर्थ साधन में लगे हुए हैं वे कुछ हैं नहीं बल्कि यहां तक उनको बुराई करने का तूफान उनके मन में बढ़ा हुआ है कि उन लोगों के कारन उस काम को भी बुरा कहते हैं अर्थात देश हितैषिता को अन्धा लोग देशहित में निष्कपट भाव से तत्पर होने को स्वार्थ तत्परता वा समाज में नाम या रोब पैदा करने की हिकमत समझते हैं उनका किसी ऐसे काम में न शरीक होने से शायद यह अभिप्राय है कि लोगों को ऐसी राह पर लावें कि वे उनकी खोज करैं बल्कि इस बात का उन्हें दुःख हो कि "ऐसा बड़ा आदमी हमारे किसी काम में शरीक नहीं होता अगर थोड़ी सहायता इससे मिलती तो देश की कितनी भलाई होती" हमारी समझ में तो यही आता है कि ऐसे लोगों का आदि से अन्त तक यही उद्यम रहता है कि छिपे २ कुछ थोड़े से लोगों पर अपना बड़प्पन जमावें क्योंकि इस बात की शिकायत ऐसे लोगों के मुंह से कभी सुनने में नहीं आई कि सहायता देने में वे असमर्थ हैं सच पूछिये तो जो लोग वास्तव में सहायता देने में असमर्थ हैं ऐसे पर तो हमारा कथन ही नहीं है किन्तु दशा ऐसों की शोचनीय है जो अपनी विद्या के घमण्ड में फूले हुए या अहंमतों लोगों को हेय और तुच्छ समझते हैं हम ऐसे कामों में उनकी सहायता चाहते हैं जिससे खुले आम सर्व साधारण का हित है न कि वह काम जो दो ही चार मनुष्यों के वास्ते हो हमारी समझ में खुले आम सब के लिये कोई काम करने से उसे एक प्रकार का रस आ जाता है सच पूछो तो सर्व साधारण के हित में लगने की बराबर कोई वस्तु संसार में सुखदायी नहीं है खूबी यह कि इस सुखदायी खजाने में से जितना चाहिये ले लीजिये कभी खाली न होगा और यह सर्व साधारण हित तत्परता मनुष्य की सभ्यता का सर्वोत्कृष्ट आभरण है।

अब यह है तो बतलाइये ऐसे लोगों के बारे में आप की क्या राय होगी जो ऐसे ऐसे कामों में केवल साझी ही नहीं होते बरन दूसरों को भी उन्हें सहज

की पेड़ों का सुखा सुखा कर रख छोड़ें सेठ साहूकारों से कह दो छोगभरी गोटों की लम्बी २ थैली बनवालें जिस जून दुश्मन उनके दरवाजे पर आकर खटखटावे उस दम सेठानी की पार्जेब हा थों से पहन उसकी छम छमाहट से वैरी के मन मे भय उपजावे उन लम्बी थैलियों को उसके सिर पटकें मुकाबिले के वख्त बजा जों को चाहिये कि विलायती कपड़ों के लम्बे २ थान हथियार की जगह मे काम लावें और बिसाती लोग बिलायती पटाखों के तमंचों से दुश्मन का सामना करें बर्फ बेचने वाले बर्फ के बडे २ ढेले बोरों मे भरा रक्खें और घी बेचने वाले अपनी २ घी के कुप्पे तैयार कर रक्खें पंसारी कड़वे बिरायते की बुकनी तैयार करवा लें मथुरा के चौबों को चाहिये अपने भांग घोटने का सिल और लोढ़ेश्वर महादेव को सजा रक्खें अब कौन बचे हमारे मुफ्त खोरे पुरोहित और पाधा लोग इन्हें क्या सलाह दें ? इन को हमारी दानि स्त मे उचित है सूकर क्षेत्र मे बैठ कूमियों के ऊपर अनुष्ठान करें और सब के सब उस कोटि से स्थान मे न समा सकें तो जो बच जांय उन्हें लंहगा पिन्हाय य जमानों की औरतों मे मिला दो क्यों साहब ठीक सलाह है न? "यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषण वाहन" तो अब आप जहां तक जल्द हो सके हमारी इन सला हतों को छाप दीजिये इसकी फीस मे इलाहाबाद की खुफी नाली का सीमन अतर आप को दिया जायगा जांच अफाई की जांच रखने वाले व्यभिचारक कमिशनर से इसके लिये सैंकशन करवालें ।

प्यादे से फर्जी हुआ कि तिरछे तिरछे जाय ।

कुछ बरसों से पश्चिमोत्तर की गवर्नमेन्ट ने "डिस्टी अफदि गजेटेड अफिसर्स" अर्थात् उन

अफसरों का इतिहास जिनकी घटती बढ़ती और अदल बदल सरकारी गजटमें हरएक वर्ष छप जाना आरंभ किया है इसको देखने से बहुत से मुंसिफ डिपुटी कलक्टर और सदर अमीनों की कलई खुल जाती है जो तिहाई से अधिक इनमे ५) से ले २५) तक की नोकरी में पहिले पहल भरती हुये थे कोई मुहर्रिर कोई नकल नवीस कोई रोवकार नवीस कोई बस्तावरदार इत्यादि छोटे २ ओहदों में वे पहिले पहल नियत हुए थे होते होते सिरिस्तेदार मुंसिफ नायब तहसीलदार तक होने की नौबत पहुंचती है अब कहिये जिन लोगों की उमर की उमर असलि नौकरी में कटी वे ४० या ४५ वर्ष की उमर मे अब मुंसिफ नायब तहसीलदार या सरिस्तेदार कर दिये गये तो उनमें क्योंकर स्वतंत्रता निष्पक्षपात और सच्चा इमानदारी आ सक्ती है जहां से वह आश्यता जो बिना उत्तम शिक्षा के दुष्प्राप्य है जो सकैगी इन अफसरों में वे ऐसे हैं जो लाग डांट न रखते हों रिशवत लेना बुरा समझते हों स्वतंत्र हो न्याय के ऊपर ध्यान रक्खे निर्भीकता बात कहते हों पेच पांच न करें छल कपट न खेलें जहां तक हमने इन लोगों को देखा नीच पन के बर्ताव से पूर्ण क्षुद्र बातों मे तत्पर चुगली चबाई झगड़ों मे हरदम प्रवृत्त भ्रष्ट बातों मे बड़े बहादुर हाकिमों की हां में हां मिलाने में भद्दा प्रस्तुत मौका मिलने पर सांप की तरह डसने मे कभी न चूकने वाले घर मे दो चार आने पर भी नीयत डिगावें कुत्तों की तरह लड़ा पड़ा करें पर कचहरी मे शेर बने ऐसे लोगों को जहां हमारे हाकिम बड़े २ ओहदों पर कर देते हैं तब ये कैसे चैन करने लगते हैं पहले जो दो चार आने पर नीयत डिगाया करते थे उनसे कब यह आशा हो सक्ती है कि बड़े २ पेचीदा मुकद्दमों मे दूध का दूध पानी का पानी सा न्याय करेंगे

इनका छोटा दिल जो पहले दो
आने मे प्रफुल्लित हो जाता था
वह अब क्या ५०) मे न समा
यगा सिवा इसके जब इनको
हाकिमी मिल जाती है तो अप
नी निज की दुश्मनी का बुखार
निकालने का मौका पाते हैं और
बदला लेने मे नहीं चूकते यदि
भाग्यवशात् जगर की हाकिमी
की परवरिश और निवाजिश से
अपने ही नगर या प्रदेश मे अफ
सरी मिल गई जैसा कागजों मे
दो चार भले मानुषों को सरहेन
री रामजेने किया है तो फिर
क्या बाप दादों के समय के वैर
का बदला चुकाने का अच्छा अव
सर हाथ लगा दीवानी फौजदा
री म्युनिसिपलिटी के अधिकार
कब काम मे आवेंगे यही तो
मौका है कि अपना खातिर खा
ह रोब जमाओ इसकी दूसरी बड़ी
हानि यह है कि अच्छे सुशिक्षित
योग्य लोगों को ये सब ओहदे
मिलतेही नही खुशामद चिकनी
चुपड़ी बातें झूठी तारीफ इन
बातों से हमारे विलायती हाकि
म प्रसन्न हैं और यह सब सिफतें
अमलों मे स्वभाव सिद्ध हैं तब
इनके मुकाबिले मे शिक्षितों को
क्यों पूछ हो जब कोई इज्जत या
खिताब देने को ठहरेगी तब भी
इन्ही अमलों से कोई बड़े ओहदे
वाले चुने जांयगे इन अमला
प्रिय हाकिमो के कारण एक
बड़ी हानि यह हो रही है जिध
र सर्कार को विशेष ध्यान देना
चाहिये कि इन अमलों मे से जो
ऊंचे ओहदों पर नियत होते हैं
उनका अन्याय और अयोग्यता
देख देशी लोगों का स्वदेशी हा
किमो पर विश्वास जाता रहा
हमे इस बात का बड़ा खेद है
कि देशी लोग बहुधा अंगरेज
हाकिमो के यहां मुकद्दमा फैसल
होना पसन्द करते हैं यदि प्रति
ष्ठित और योग्य देशी हाकिम इन
ओहदों पर किये जांय जिनको
भले बुरे का ज्ञान हो धर्म अधर्म
का विचार हो देश की सच्चे हित
मे रुचि हो प्रजा की भलाई मे

कटिबद्ध हों श्रम करने में रुचि रखते हों वर्तमान समय को राज्य प्रबन्ध की नीति और प्रणाली से अच्छी तरह परिचित हों अपर के हाकिमो से सत्य २ वर्ताव करना जानते हों पक्षपात शून्य हों तो ये बुराइयां जिन्हे हम ऊपर लिख आये जड़ पेड़ से निर्मूलित हो जांय उच्च शिक्षा के फैलने से योग्य पुरुषों का घाटा अब इन प्रान्तों में नहीं है केवल सर्कार का इस ओर ध्यान होना चाहिये नहीं तो इन जघन्य आदरण वाले अमलों की प्रधानता से तो हम इसी कहावत को इस अवसर पर सुघटित रक्खेंगे कि "प्यादा से फरजी भया कि तिरछे तिरछे जाय"

हिन्दुस्तान का क्या होने वाला है ?

पृथ्वीराज के समय से देखते आ रहे हैं कि हिन्दुस्तान कितने रंग बदल चुका और कितने ऐतिहासिक अद्भुत दृश्यों का रङ्ग स्थल हो चुका है—आज ऐबक के हाथ में रहा कल तुगलक के पंजे में परसों लोदी की गोदी में फिर मुगलों के चङ्गुल में। क्षण भर को पिंडारों की बगल में दो क्षण को महरठों और सिक्खों के ज़ोर में। थोड़े दिन हुए यह सोने की चिड़िया अङ्गरेजों के पिंजड़े में आफसी है लेकिन बाज़ अपने शिकार को क्योंकर किसी के पिंजड़े में देख सक्ता है मौका पाने पर ज़रूरही झपटेगा। पर ऐ चिड़िया हालांकि तेरे ऊपर खलक मरता है और सृष्टि की आदि से आज लौं बे शुमार जाने तेरे ऊपर न्योछावर हो चुकी हैं-असल में तू किसकी है तेरी ठीक क़दर कौन जानता है और बचपन से तेरा लालन पालन कर तुझे सोने के पर किसने दिये ?

अब चिड़िया की इन सवालों का जवाब सोचने का वक्त देह में बाज़ की तरफ लौटाना चाहिए और देखना चाहिए वह किस क़दर इसपर मुश्ताक़ है। बहुत दिनों से इस बाज़ रूस का

ठीक यह हाल था कि "मर गये कह न सके यार से हसरतें। मेरा तन याद रहा और मैं धरते धरते"। कई एक बार इसकी हिव्स में बेज़ार थे मगर अपनी पुरखार जिन्दगी में दिल का बुखार न निकाल सके और आखीर को हिन्द की याद में ही मुल्क अदम को कूच करना पड़ा. पर यह इश्क या मर्ज़ जो पुश्तैनी और खानदानी हो जाता है बड़ी मुश्किल से दूर होता है. और हिन्दुस्तान के इश्क का मरज़ ज़ारों के घराने में लगा तार चला आया है पर न जानिये किस लिहाज़ से अब तक उन्हों ने यह ज़ाहिर नहीं किया था. लेकिन हाल के नए ज़ार साहब अपने दिलदार की तलाश में जङ्गल बयाबान पहाड़ों में फकीर बन गेरुए कपड़े पहन सुमिरनी हाथ में लिए फिर रहे हैं और तअज्जुब क्या अगर गुलबकावली के लिये ताजुलमलूक की तरह यह भी सोने की चिड़िया पाने में आखीर को कामयाब हो जाय. लेकिन अगर गुलबकावली की हिफाज़त के लिए ज़मीन व हवा व मैदान व दरिया सभी जगह हर तरह की शकल में ख़याली देव मुकर्रर थे इस चिड़िया की रखवाली में बेशुमार असली देव जाबजा मौजूद और मुस्तैद हैं आशिक ज़ार को चारो ओर से घेरने में एक भी दकीका नहीं छोड़ा चाहते आगे पीछे दाहिने बायें सब ओर से उस पर नज़र है बालटिक में अभी से जहाज़ जाने लगे हैं रूम के सुलतान से भी ज़रूर मदद मिलने की सलाह की होगी और नहीं तो (बुका सो) काले समुद्र में घुसने की इजाज़त तो ज़रूरी ली होगी. सूदान और मिसर को छोड़ा चाहते हैं. अमीर साहब को कच्ची पक्की में फसा ही लिया. राजा लोगों पर मोहन मंत्र का छींटा पहले ही से मार दिया गया है वे अपनी जान तक देने को तैयार हैं. शहर और गांव से देहकानियों को भी पकड़

रहे हैं कहांर और कुली कहीं ढूंढ़े भी नहीं मिलते. खैर यहां तो यह सब होही रहा है अब देखना चाहिए वह आशकी हक्कानी किस फ़िकिर मे हैं।

ठीक उसी दिन जब कि अमीर साहब जमीने हिन्दुस्तान पर रौनक अफ़रोज हुये थे आशक को गों ने अमीर की हवेली के पिछवाड़े अपनी कार रवाई शुरू कर दी और ज्योंही यहां लाखों रूपये की लागत का दर्बार खतम कर वाइसराय हिन्द और अमीर काबुल रूखसत की तसलीमात अर्ज़ करते हैं कि लन्दन से खबर आती है "परसों रूस और अफ़गानियों में लड़ाई हुई अंगरेज़ी अफ़सर तमाशा देखते थे ५०० अफ़गान मारे गये और बाकी भाग निकले" जिन अफ़गानियों की खुशामद मे अंगरेजों ने हिन्दुस्तान का असंख्य रूपया होली कर इस सज धज के साथ आज दरबार रचा था और जिनके साथ बरसों तक जूझने पर भी दांत खट्टे रहे वरन १२ लाख रूपया सालाना नज़र दी जाती है उन्ही के ५०० आदमी एक ज़रा सी देर मे रूसियों ने उड़ा दिये यार रूस ताकत तो तुझमे हकीकत मे बड़ी है चाहो यह ठीक हो कि "आशकों की दोपती तन कटे का पड़े फटे" क्योंकि सुनते हैं तेरी जेब मे रूपये नहीं हैं और बेज़र की आशकों की रीति भी देखा है कि "आशक को खुदा ज़र दे नहीं करदे ज़मी परदे" पर बहादुरी मे तेरी कुछ शक नहीं है लेकिन इसे तेरी ताकत या इधर की कमज़ोरी और धूम धाम से क्या हम तो बे पर के पैर हैं हमारे तो जब से पर नोच लिये गये तभी से हमारी मासूका चिड़िया औरों के फन्दे मे फस रही है नहीं तो ऐ रूस तेरा ख्वाब मे भी इधर पैर उठाने का ख्याल न होता हमारा तो अगर आप यहां आइयेगा तो भी सत्यानाश है और जो हार कर लौट जाइगा तो भी सर्व नाश है

क्योंकि तुम आओगे तो लूटोगे और ये रहेंगे तो लूटने से भी अधिक लड़ाई का खर्चा वसूल करने को टेक्स पर टेक्स की धौंस से हमारे लत्ते उड़ा देंगे नुकसान दोनो तरह पर हमारा ही है।

नई रोशनी का विष।

चौथा अङ्क पहिला गर्भाङ्क।

स्थान—तारकचन्द के मकान में एक आरास्ता कमरा एक कोने में पियानो रक्खा हुआ।

प्रमदा—(बाजे पर से उठकर) हा! हा! आदमी को यदि किसी चीज़ के पाने की तकलीफ हो और यदि फिर भी बड़ी मेहनत और यत्न से उसको पाजाय तो उसके पाने की खुशी उसकी दूनी चौगुनी होती है हा! हा! यदि हम खुद किसी से कहें कि तारकचन्द जो कलकत्ते के बड़े अमीर और महाजन हैं उनके यहां हमको इतना २ इखतियार है तो हम समझती हैं कि शायद हमारे मुंह पर तो कोई कुछ न कहै पर पीछे से तो ज़रूर हमें झूठी समझेंगे। (छोटी सी जापानी पंखी अपने आप झलती हुई गरमी और थकावट का नाटन कर ती हुई कुरसी पर बैठजाती है) और फिर यदि हमारे मुंहो पर किसी ने कुछ कह दिया तो उसी दिन हमें डूब मरना चाहिये फिर उस दिन से अपनी बात चीत के द्वारा लुभाने वाले माधुर्य गुण का दावा छोड़ देना चाहिये (आलमारी से खुशबू का "स्प्रेंड" निकाल कुमाल उसमें तरकर) इस घर का हर एक कील कांटा हमारे हाथ है नौकर यहां के ह मी को अपना मालिक जानते हैं इससे और भी हमारा सिर दुखता है (कुछ सोचती हुये टहलती है) उस वहमी खुद गर्ज तारकचन्द के साथ रहना हरदम नाकों में दम कर रहा है बड़ी मोहब्बत उनको तो आपने अपने कागजात हमें दिखलाये लड़के वालों को लोग आपकी आंख को रोशनी या ठंडक कहते हैं हम समझती हैं तारकचन्द से कहर महाजनों की आंखों की ठण्डक देने वाले केवल उनके तमस्सुक और दस्तावेज हैं जिनसे वे अपनी आंख सेंका करते हैं (ठहर कर) एक दिन आप बहुत गद्गद हो आनुद्रत से भी कागजात हमको दिखलाते थे यह नही समझता बेवकूफ कि

कितना दुःख इन्हें उन सखों के देखने से होगा (सोचकर) अच्छा है अभी न समझे! अच्छा है अभी न समझे! क्या अब भी हम भानुदत्त से मिलने की कुछ आशा कर सक्ते हैं? हा! क्या आशा है? तो भी जहां तक हम से बन पड़ेगा उनकी भलाई ही सोचेंगी और—(खिड़की से देख) यह क्या? तारकचन्द आ रहे हैं इस जून इस खूसट के आने का क्या मतलब है? हां याद पड़ा सत्यानन्द को भी बुलाया था कुछ डर नहीं सत्यानन्द से जैसा हमसे पहले बात चीत हो चुकी है वैसाही यहां कहेगा और यदि सत्यानन्द से चालाक आदमी से कुछ न बन पड़ी तो दूसरे किसी से क्या आशा है?

॥ तारक चन्दका प्रवेश ॥

तारक—(दौड़ कर बड़े हर्ष से मिलता है) यह क्या अकेले२ बाजा बजाता था?

प्रमदा—(बड़े अन्दाज़ से) आपही के खुश रखने के सामान और तदबीरों में दिन कटता है—क्या हमें कोई दूसरा काम है?

तारक—यह तो झूठ है॥

प्रमदा (स्वगत) इसको तो शकामही है (प्रकाश) क्यों झूठ क्यों। बजह क्या॥

तारक—अच्छा क्या बजाता था छेड़ो हम भी सुनें॥

प्रमदा—देखो यह नौकर क्यों आता है

नौकर—बाबू सत्यानन्द आये हैं और कहते हैं कि आपने उनको यहीं बुलाया था॥

तारक—(प्रमदा से) आपके सामने आदमी अपना सब काम काज भूल जहां तक बेहोश हो जाय कुछ ताअज्जुब नहीं है। देखिये अभीतो अभी सोच कर यहां आये और सुध भूल गई जा लेआ आवो (नौकर जाता है) (प्रमदा परदा उठा कर भीतर जाया चाहती है)।

तारक—आप ठहरिये आपका भी काम पड़ेगा। कुछ हर्ज नहीं सिर्फ सत्यानन्द तो हैं॥

प्रमदा—बहुत अच्छा। (सत्यानन्द का प्रवेश॥

सत्या—(ता—चं से मिलकर। (और प्रमदा को मानो देखाही नहीं;) कहिये क्यों याद किया?

तारक। योंही। कहिये भानुदत्त की अच्छी तरह है॥

सत्या। हां जबसे आपके पास से गये तबसे तो बहुत अच्छी तरह हैं क्यों क्या

फिर कुछ आपको नया प्रयोजन है क्या?। (धीरे से तारक की आंख बचाया प्रमदा को ओर इशारा करता है)

तारक—वाह! क्या आप हमारा उन का पुराना सम्बन्ध जड़ पेड़ से उखाड़ा चाहती हैं। क्या हम कभी उनके पुराने बड़े२ एहसानों को भूल जांयगे?

सत्या—कभी नहीं। और भानुदत्त भी कभी आपके पहले के बड़े२ एहसानों को भूल जायगी? कभी नहीं। और हमारा तो आप लोग नाहक जिकिर करती हैं बल्कि हमतो अपने को इस लायक भी नहीं समझते कि आप हमको याद करें (प्रमदा भी धीरे से इशारा करती है)

तारक—यह तो बड़ी खराबी की बात है—आपही के हाथ सब कुछ है और आपही ऐसीर बनावट की बातें करते हैं तो बतलाइये कैसे काम चलेगा।

सत्या—(क्रोध की हंसी ओर से हंस कर) काम कौन है जनाब जो न चलेगा इससे मतलब? चाहो चलो चाहो चूल्हे में जाय मुझसे मतलब? आपके काम से मुझसे सरोकार? मुझसे मतलब? यह अच्छी दिल्लगी आपने आज छेड़ा! और बनावट की बात को भी आपने एकही कही! अभी और भी हमसे आपसे बना वट की बातें हुई थीं कि आजही होगी है। लीजिये मैं अब रुखसत होता हूं आप जाने आप का काम जाने (प्रमदा की ओर मुड़कर) और शैतान जाने ऐक अंगरेजी मसल है आप जानते हो होंगे "Two is Company three is none बस अब आप दोनों के रहस्य आप मैं बाधक होना अच्छा नहीं। अब मैं जाता हूं—बन्दगी॥

तारक—(खिसियाना सा हो कर) हां तो शायद अब आप अपने दोस्त भानुदत्त जी के यहां जाइयेगा? मुमकिन हो तो कह दीजियेगा कि हमको भी अब मुहब्बत उमड़ी है बिना देखे नहीं रहा जाता।

सत्या—आइये—आइये—घर आपका है (आगे बढ़ कर धीरे से) जो जरासा सहारा बाकी है उसको भी काट कर रख दीजिये (स्वगत) हा! आदमी की बुल हवसी उससे क्या२ न करावेगी? (तारक से) हुजूर अब आपका जादू उतर गया है अब आप दूरही रहैं तो अच्छा—बन्दगी अब मैं जाता हूं (तारक अन्द कुछ और कहने को था पर सत्यानन्द चला जाता है)

प्रमदा—बाबू सत्यानन्द—बाबू सत्यान

मद—मुझको भी आपसे कुछ कहना है (जाया चाहती है)

तारक—प्रमदा—प्रमदा—यह क्या बात है?

प्रमदा—चले बैठ बेवकूफ—(गई)

तारक (सिर हाथ से पकड़ चुप चाप फिर कुर्सी पर बैठ जाता है)

पसन्द।

पसन्द जिसे अंगरेज़ी में taste कहते हैं क्या चीज़ है इससे क्या २ नफा या नुकसान है और क्या २ बातें इसके आधीन हैं यह एक ऐसा विषय है जो सर्व साधारण से सम्बन्ध रखता है यदि विचार कीजिये तो संसार के कोई काम अपने अंजाम को नहीं पहुंच सके जब तक उस काम के आदि से अन्त तक पसन्द को दखल न दिया जाय ध्यान देकर सोचिये तो मनुष्य जन्म लेते ही पसन्द को अपनी दासी या ज़र खरीद लौंडी बना लेता है बच्चे को मां के दूध की जगह गाय या बकरी के दूध को रुई या दूध पिलाने की शीशी से दूध दिया जाता है तो उसका पीना वह किसी तरह पसन्द नहीं करता या मां की गोद में रखने की एवज बच्चे को चार पाई या हिंडोले में सुला देते हैं तो शायद सौ में दस हो ऐसे होंगे जो बिना रोये गाये खुशी से उसपर लेटे रहना पसन्द करेंगे फिर ज्यों२ उमर में बढ़ते जाते हैं त्यों २ अपने हर एक काम खाना पीना सोना पहिनना खेल कूद पढ़ना लिखना इत्यादि सब में पसन्द को दखल देते जाते हैं—पहले खानेही को लीजिये कोई यह कहते हैं भाई हम नहीं जानते लोगों को रोटी खाना क्यों पसन्द आता है हमको तो अगर दोनों जून ताज़ी२ लुचुई और बेढवीं मिलती जाय तो हम कभी रोटी का नाम भी न लें—दूसरे साहब फ़रमाते हैं तुम्हारी भी क्या ही सकील पसन्द है भजो कहीं बिना रोटी खाये तबियत खुश होती है हमारे हिन्दुस्तान में कच्ची रसोई का तरीका ऐसा उमदा रक्खा गया है कि अगर तकल्लुफ को इसमें जगह दी जाय तो हर असल रसोई रसायन हो जाती है—तीसरे कहते हैं भाई अपनी२ पसन्द तो है अगर मेरी राय ली जाय तो अव्वल इसकाम से बढ़कर खाने का ज़ायका क्या कोई जान सका है खूबसूरत भजा जिसने गोश्त जिसने न खाया ज़बान का ज़ायका न पाया इसमें कोई कंठी बन्द साहब मौजूद थे बस यह सुनते ही

जानि के बाहर हो बोल उठे हरे हरे ऐसे भी कठोर जीके मनुष्य पृथ्वीपर देखे जाते हैं जो एक जीव को लाख टके की जान मार अपनी जिह्वा को क्षण भर का सुख देते दया मन में नहीं लाते" एकस्य क्षणिका प्रीतिरन्यः प्राणै र्विमुच्यते" आपनी हमारे गोपाल मन्दिर की खुशबूदार कचौड़ी मोहनथाल और दूसरे २ छप्पन प्रकार के भोजन कभी आंख से नहीं देखे वरना मुसल्मानों के राजसी भोजन की कभी सराहना न करते यह केवल महाप्रसाद ही को चाट है जिस्से हमारे मन्दिर के सेवक इतने कसरत से हैं इसी कोई चौबे साहब जो अबतक चुप बैठे थे भंग रंग की उफान में आय बोल उठे वाह आपको क्या ही भद्दी पसन्द है हम क्या छोटे हैं जो मीठे पर दौड़ें खाने में सिर्फ ज़ायका ही नहीं वरन यह भी देखना चाहिये कि कैसा खाना उमदा असर और बदन को ताकत पैदा करता है— हम यह हरगिज़ न कहेंगे कि खाना महज़ ज़बान के ज़ाय के ही के लिये है बल्कि मिस्ल अंगरेजों के गोश्त बिरियां गोश्त आलू पावरोटी और मक्खन एक गिलास ब्रांडी के साथ दिन में चार बार कहीं आपको नसीब होता रहे तो बहुत जल्द हम यह वक्त देख सके हैं कि और२ मुल्क के बड़े२ ज़र्बार तर्रार लड़ाके भी मैदान में हमारा सामना करने की हिम्मत न बांध सकेंगे अलावा ताकत जिस्मी के आप के दिमाग में वह फरहत पहुंचे कि मुश्किल से मुश्किल प्राबलेम साल्व करना और युक्लेदिस के सख्त से सख्त सवाल हल करलेना आपके सामने कोई हकीकत में न रहै—संस्कृत अंगरेज़ी और फ़ारसी में उमदा २ मज़मून लिखना उमदा २ नावेल की तसनीफ मीटिंगों में चुस्त से चुस्त लेक्चर ज़बान अंगरेजी में उमदा गुफ्तगू अखबारों में चुस्त आर्टिकिलों का लिखना पेचीदा मुकद्दमों में कानूनी बहस पैदा करना इत्यादि इत्यादि सब बातें (बशर्ते आप होटल में खाइये) बहुत जल्द हासिल हो सक्ती हैं। इतने में एक बहुदर्शी मननशील महाशय धीरे से कहने लगे तो क्या हमारे ऋषि मुनि जिन की बुद्धिका एक अणुभी यूरोप के बड़े फिलासोफरों में नहीं पाया जाता होटलही में खाखा कर उस बड़ी भारी योग्यता को पहुंचे ? क्या उन्होंने लाखों स्लोक ह्याम्पेन और ब्रांडीहीं पीपी कर गढ़ डाले इस लियेयह बात सरासर बे अकिली की जान पड़ती है कि उमदा खानेही से बुद्धि में तीव्रता आती है वरन बुद्धि में अद्भुत चमत्कारिता और लोकोत्तर प्रतिभाका होना प्राक्तन संस्कार का फल है।

अब पीने का हाल सुनिये इसको भी अलग २ पसन्द ने अपना अलग २ पेचा मूड रक्खा है पीना उसे कहते हैं जो बिना दांतों की सहायता के केवल जीभ और तालू से हो हलक के भीतर जाता है परन्तु रस के ग्रास में रसना अर्थात जीभ को अधिकतर सम्बन्ध है इस लिये पसन्द ने इसका पीछा भी न छोड़ा बिचार कर देखिये तो आदमी खाने से पहले पीना आरम्भ कर देता है जैसा हमने ऊपर कहा पर वहां बच्चे का ज़िकर था इस लिये पीने में सिर्फ़ दूधही पर बेबात किया अब पेय मात्र वस्तु की समालोचना करते हैं पीने की चीज़ों में सब से पहली पानी है अब देखना चाहिये इसके पीने में लोग कहां तक पसन्द से सलाह लिया करते—हैं कोई कहता है हमतो सदा ताज़ा पानी पीते हैं और इसके हजारों फ़ाइदे बयान करता है—कोई कहता है हमतो जाड़ों में भी ठंढा पानी पीते हैं और गरमियों में तो बिना बर्फ़ प्यास बुझती ही नहीं। इतने में एक ग्रेज्युएट साहब कहने लगते हैं आप को मालूम है मामूली तरह पर पानी पीने में क्या नुकसान है पानी में निहायत बारीक बारीक कीड़े होते हैं इस लिये पानी को छान लेना बहुत ज़रूरी है मैंने तो एक फिल्टर खरीदा है उसी में छान कर पानी पीता हूं किशोरी गुलाब से पानी के साथ बर्फ़ मिला कर पीने में जो मज़ा मिलता है वह अमृत के पान में भी शायद ही मिलता हो—एक और साहब नाक भौं सिकोड़ चिल्ला उठते हैं हमारे इतना खटराग कौन करे यहां तो खड़ा खिल फ़र्रुखाबादी आता है प्यास ने बहुत सताया तो दो आने फेंके सोडा वाटर का बोतल मुंह में लगाय घट्ट घट्ट उतार गये कलेजा ठंढ हो गया। इतने में एक चौथे साहब अभी नाक कुढ़ते हुए जोर से कहने लगे न जानिये कैसा समय आगया कि अंगरेजी पढ़ २ देश का देश म्लेच्छ हो गया अपने तो बिना अरघोदक मिलाये जल कभी नहीं पीते चाहो मारे प्यास के कण्ठगत प्राण क्यों न हो जाय। अब सोने को लीजिये इसमें भी पसन्द ने पवेरियों खटमल से लदी हुई टूटी खाट से लेकर कोच और ईज़ी चेयर तक कितना २ खटराग रच रक्खा है पर जिस समय नींद आती है उस समय पसन्द यहां तक बेहया बनजाती है कि कंकड़ पर भी सोइये तो मखमली कोच का मज़ा मिलता है ऐसे भी ज़िद्दी सोने वाले देखे गये हैं कि खड़े २ सोते हैं चलते चलते सोते हैं खाते खाते सोते हैं बात चीत करने में एक बात मुंहसे निकली दूसरी में अन्तर्ध्यान हो गये। अब पहिनने को लीजिये लोग कहते हैं हिन्दुस्तान में फ़ैशन नहीं है पर यहां ग्रन्थ के ग्रन्थ केवल इसी बात पर लिखे गये हैं जिनमें नख सिख के सोलहो सिंगार और

बत्तीसो आभूषण छोड़ और कुछ हई नहीं अनगिनत पहनावे की जुदा२ पसन्द को गिनाना घड़ी दो घड़ी का काम नहीं है पेज दो पेज मे आंटना असंभव है तो अब इस पसन्द के भंवर जाल में देर तक अपने पाठकों को फंसा रखना अन्य औरर टटके चटकीले विषयों के लेख के स्वाद से वंचित रखना है इस लिये इस पसन्द को हम अपने पाठकों की कि पसन्द पर इस समय छोड़ रखते हैं पसन्द आने पर फिर खोलेंगे अभीतो तालों में बन्द कर रख छोड़ नाहो सलाह है क्योंकि चीज़ पसन्दीदा है।

प्रयाग मे हिन्दी पत्र की आवश्यकता।

इस समय यह नगर साधारण रीति पर प्रायः सब बातों मे पूर्ण है धर्म सम्बन्ध मे देखोतो सब तीर्थों का राजाही है व्यापार मे तीन ओर से तीन रेल गाड़ियों की त्रिवेणी हो रहा है राज को य विषय मे पश्चिमोत्तर और अवध की राजधानी है न्याय मे हाई कोर्ट यहो हुई है धनको लीजिये तो कितने दूर देश का धन काई एक द्वार से यहां आकर टिका रहता है। बीस वर्ष पहले इस नगर मे जहां झोपड़े थे वहां महल दो महले खड़े हैं विद्या के सम्बन्ध मे यहां बड़ा भारी कालेज है जिसमें से प्रति वर्ष कितने सुयोग्य छात्र बी, ए, एम, ए, उत्तीर्ण हुआ करते हैं। केवल एक समाचार पत्रही का यहां बड़ा घाटा है सिवा पायोनियर के और कोई पत्र यहां नया अलबत्त। थोड़े दिनो से इंडियन यूनियन के नाम से एक अङ्गरेजी पत्र निकलने लगा है ईश्वर इसको चिरायु रक्खे परन्तु अंगरेजी पत्र से विशेष उपकार देश का नहीं हो सक्ता क्योंकि यह उन्ही के प्रयोजन का है जो अंगरेजी पढ़े हैं पर अब ठौर२ से छोटे मोटे देशी भाषा के सामाहिक पत्र निकलते देख लोकल सेल्फ गवर्नमेंट की घर २ चर्चा और भांतर के उत्तेजक व्यख्यान लेक्चर्स सुनते था औरर कितने देश हितैषी आन्दोलन से लोगों की प्रवृति देख क्यों न तबियत फड़के कि यहां से भी एक हि-

न्टो का साप्ताहिक पत्र निकलता जिस्मे देशी तथा राजकीय विषय की पूरी२ समालोचना रहती तो कैसा अच्छा होता और छोटी छोटी बातों के लिये भी पायोनियर का जो मुह ताकना पड़ता है सो न करना पड़े और संकीर्ण हृदय गोराङ्गो का प्रधान अस्त्र होने के कारण पायोनियर हम सब देशी लोगों से घिनाता है और न कभी हमारे सुख दुख से हर्ष या विषाद से उसे कुछ सरोकार है फिर अंगरेजी भाषा मे हैं इस लिये सर्व साधारण को उस्से कुछ लाभ नहीं पहुंच सक्ता इन सब कारणो से यहां एक ऐसा हिन्दी साप्ताहिक पत्र निकलना चाहिये जिस्मे राजकीय विषय की विस्तृत समालोचना रहा करे यह नगर इस पश्चिमोत्तर की राजधानी है प्रति दिन यहां नई २ घटनायें भी हुवा करती हैं उनका जानना किसे इष्ट न होगा यह पत्र भारतमित्र उचितवक्ता अथवा इन्दुप्रकाश के ढंग का होना चाहिये। यदि इस्का होना उचित हो तो प्रत्येक सम्पादकों से प्रार्थना है कि अप ने २ पत्र मे इस्का आन्दोलन करें प्रत्येक समाज कमेटी और क्लब इस्के ग्राहक बढ़ाने के प्रयत्न मे तत्पर हो यदि प्रत्येक जिले से दस२ ग्राहक भी हों तो इस पत्र को भर पूर सहारा पहुंच सक्ता है मूल्य इस्का मैडाक व्यय के २॥) होगा जिन्हे इस सर्वोपकारी काम मे सहायक बनने का सुयश लूटना स्वीकार हो मुझे लिखें

होमियोपेथिक चिकित्सक ॥

बाबू । गिरीश चन्द्र मुकर्जी सब प्रकार के रोगों की चिकित्सा होमियोपेथिक क्रम की करते हैं सब तरह के रोगों की औषधियां इन के पास मौजूद हैं कङ्गाल और असमर्थों को सेत मे भी दवा बांटते हैं। मंत्र तंत्र के भी बहुत से लटके बाबू साहब को याद है बालकों के लिये इनकी औषधि अतीव हित है ।

अग्रिम ३।॥) पश्चात् ४॥)

printed at the '*Light Press*' Benares, by Gopinath Pathuk and
Published by Pt. Balkrishna Bhatt Ahiyapur Allahabad.

मासिक पत्र।

विद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD.—1st June 1885.
Vol. VIII.] [No 10

प्रयाग अधिक ज्येष्ठ कृष्ण ३ सं १९४२
जिल्द ८ संख्या १०

इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादककी आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रशाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

—oo—

Ist June 1885] [१ जून सन १८८५ ई०

हमारा नया जन्म

आज बड़े हर्ष का अवसर है कि हम अपना नया जन्म लाभकर स्वच्छ और सुथरे वेश से अपने रसिकों से मिलते हैं — इतने दिनो तक यहां इस प्रयाग नगर मे अच्छा सुबीता अपनेमुद्रणका न देख काशीके लाइट प्रेसका सहारा पकड़ ज्योंत्यों समय काटते रहे जहां तक स्मरण है यहतो हम कभी न कहैं गे कि हम अपने लेखके प्रकाश से कभी किसी एक मासके अङ्कसे भी केवल धुन्धली झिलमिलाती रोशनी के साथ प्रकाशित हो रसिकों को प्रत्येक विषय के रसा स्वादन कराने मे अलसा गये हों हां अलबत्ता इस-

नी त्रुटि हमारे मे अ
वश्य रही चली आई
कि बिदेश मे छपने
और यंत्रालय केजर्ज
रित होनेकेकारण अ
शुद्धियां बहुधारहजा
तीथीं आशा है अव
वैसासर्व्वथा नहोगा
—अव इसमें वहुतसे
नयेर लोगभी लिखने
वाले उद्यत हुये हैं
जिन्मे कई एकस्योर
कालेजकेग्रेज्युएट भी
हैं अवहमे अपने ग्रा
हकोंसे भरपूरसहारा
पहुंचा तोआगामी ब
र्ष केआरम्भसे इसी-
मूल्य मे हम पाक्षिक
हो मास मे दो बार
आपसे आय मिलैंगे
पाठकों से सबिनय नि
वेदन है कि वे यत्नकर
१०० के लग भग ग्राह-
क और बढादें—जो
अपनीओर से ५ग्राहक
करदेंगे उन्हे प्रति मा
सकी एक प्रति बिना
मूल्य देंगे

भाषाओं का परिवर्तन।

यह एक सामान्य सिद्धान्त है कि किसीभाषा पर प्रभुत्व होना या उस्से अच्छी तरह परिचित हो जानातभी लोग मानते हैं जब कि सीखने वाला उसी भाषा मे सोच सके अर्थात् चित्त वृत्ति उसकी मनन

करने के विषयो को उसी भाषा के ढङ्ग से ग्रहण करे—इस्के मानने मे किस्को इन्कार होगा कि हर एक भाषा के ढंग निरालेही हैं दो भाषा व्याकरण की रीति पर कुछ मिलती भी हों परन्तु वे चीजें जिनको "महावरे" कहते हैं कभी नहीं मिल सक्ते और यही महाविरेही हर एक भाषा की जान हैं—हिन्दी और अंगरेज़ीही को लीजिये इन दो भाषाओं मे थोड़ा २ कहीं २ व्याकरण के नियमों का तो भेद हई है किन्तु वड़ा भारी अन्तर मुहाविरों की निराली चाल का है जहां कहीं इन मुहाविरो की कोई गलती सुनने में आती है तो वह कान मे चट खटक जाती है यह लोग कदापि न समझें कि मुहाविरे अंगरेज़ी ही मे हैं और जब उनपर आक्षेप होता है तो "आधा बाज़ार अंगरेजी" या "बाबुओं की अंगरेजी" इत्यादि शब्द तंज़िया निन्दा की राह से कहे जाते हैं—जबतक किसी भाषा मे जान है अर्थात् रोज़मर्रे के काम मे लोग उसे बर्तते हैं और पुष्ट रीति पर उस्की स्थिति बनी रहती है तब तक नये २ मुहाविरे नित्य उसमें बनतेही जांयगे— सृष्टि के चेतन व दार्थों का जो नियम है कि वे कभी एक सां नहीं रहते बरन दिन प्रति दिन परिवर्तन के सान पर चढ़ते ही जाते हैं यह नियम भाषा के के सम्बन्ध मे बहुत पूरी रीति पर लगता हैं क्योंकि कुछ ऐसा मालूम होता है कि रुधिर और अस्थि मनुष्य के शरीर से उतना निकट सम्बन्ध नहीं रखते जितना उनकी भाषा रखती है – और इसी कारण बड़े से बड़े पण्डित के आगे कोई अशुद्ध संस्कृत शब्द बोलिये तो वह इतना न खटकेगा। जितना एक सामान्यसेसामान्य वे मुहाविरे हिन्दी शब्द कान को चोट पहुंचावेगा। क्योंकि संस्कृत अब बोलचाल की भाषा न रह गई बिचार कर देखिये तो जो हिन्दी हम आज कल बोलते हैं वह पहले क्या थी और अब क्या है-अब फारसी उर्दू शब्द इसमें मिलते जाते हैं क्यां कि जब आप के बड़े २ प्रामाणिक हिन्दी कवियों ने फारसी अरबी के शब्द ग्रहण किये तो हमारे और आपके निकाले वे सब शब्द जो हमारी भाषा के नस २ में अन्तःप्रविष्ठ से हो रहे हैं

क्योंकर निकल सकती है। बल्कि इसमें विरुद्धता दिखलाना वैसाही है जैसा किसी वेग गामिनी नदी के प्रवाह को अकेले एक हाथ से रोक कर उलट देने का यत्न करना है। जिसतरह के शब्द सर्व साधारण अपनी भाषा में प्रचलित कर लेते हैं या जिसतरह के शब्द अपने नित्य के बोल चाल से लोग निकाल कर फेंक देते हैं उसपर आप को कुछ भी अधिकार नहीं है आप मनुष्यों की भाषा तभी बदल सकते हैं जब जूलू या हबशी की सूरत का कोई आदमी इन देशों में पैदा कर सकें या उससे भी बढ़कर कोई दूसरा प्राकृतिक अनर्थ जो सर्वथा प्रकृति विरुद्ध है कर सकें क्योंकि यह कैसे संभव है कि प्रबल काल चक्र अपनी निशानी सब चीजों पर न छोड़ जाय। मुसल्मानों के अत्याचार का फल जैसा हम अपनी रीति रसम सामाजिक ब्योहार अपनो और अपने यहां की स्त्रियों की दशा सब में पाते हैं तब यह क्योंकर हो सक्ता है कि मुगलों की भाषा का असर हमारी भाषा में न हो। सोचिये कि जिस हिन्दी को हम बोलते हैं यह कितने हज़ार वर्षों से घिसते २ करोड़ों टक्करें खाकर और न जानिये कौन २ सी मुसीबतें झेलकर न मालूम किसका २ ज़माना देख भाल, आज हमारे बोल चाल के काम में आ रही है यदि प्रकृती को भी हिन्दीही मान लीजिये तो देखिये कि आज कल की हिन्दी से और चांद या पृथ्वीराज के समय की हिन्दी से और चांद के समय की हिन्दी से और कालिदास के समय की हिन्दी से काल का कितना अन्तर है क्यें कि कालिदास भवभूत प्रभृति कवियों के समय में भी संस्कृत जैसी उनके नाटकों में पाई जाती है केवल विद्वानों हीकी मण्डली में बोली जाती थी और वे लोग भी कवित्व शक्ति के प्रकाशक गम्भिन शास्त्रार्थ के बाद घर जाते रहे होंगे तो नौकरों से या लड़के वालों और स्त्रियोंसे [या सृष्टिः स्रष्टुराद्या] के जोड़की बड़े धूम धाम को संस्कृत न बोलते रहे होंगे—जैसा वेदकी संस्कृत का व्याकरण व्यास वाल्मीकि तथा कालिदास आदि कवियों की संस्कृत के व्याकरण से कुछ पृथक है वैसाही नाटकों की प्राकृतीका व्याकरण चान्द

इतर चैतन्य सृष्टि का नियम मान ती है इस कारण जैसा पीटने से गदहा घोड़ा नहीं होसकता उसी तरह बाहर वालों का संपर्क भी कुछ बहुत हानि कारक नहीं हो सक्ता और फिर भाषा के सम्बन्ध में [हानि] शब्द का पुरा २ ता त्पर्य ले करना बड़ा कठिन है क्यों कि परिवर्त्तन के बीज तो भाषा में आपही आप भरे हैं। क्यों संस्कृत से प्राकृती हुई और प्राकृती से व र्त्तमान हिन्दी। हम लोगों का केवल इतनाही कर्त्तव्य है कि देख ते जांय कि क्या क्या अदल बदल हुये हैं। अभेद्य दुर्ग सदृश पाणि नि के व्याकरण के आगे हिन्दीका व्याकरण छोटीसी फूस की झोपड़ीहै यह तो प्रगट है कि अब हमे उतने बड़े व्याकरण की आवश्यकता न रहगई। एक वह समय था कि अनेक जंजालों से भरे हुये पाणिनि कात्यायन पतंजलि के सूत्र वार्तिक भाष्य में एक मात्रा का भी हेर फ़ेर होजाने पर एक बड़ी भारी इमारत को ढहाकर फिर से खड़ी करना था और इसीका परिणाम यह हुआ कि हमारे यहां का व्याकरण ऐसा झंझट से भरा हुआ शास्त्र होगया जैसा पृथ्वी के किसी कोने में न हुआ होगा। सच पूछिये तो दो गाड़ी के बोझ की पुस्तकें शेखर मंजूषा कैयट आदि बड़े २ जगड़ वाल जो रचे गये उनमें और है क्या। सिवा इसके कि कीचड़ में पांव बोर फिर धोओ एक बड़े यत्न और प्रयास से एक बने बनाये सुन्दर मनोहर महल को तोड़ फोड़ छिन्न भिन्न कर पीछे पछताय फिर उसी को बनाया है। इन्ही विफल चेष्टा ओं में व्याकरण इतना बड़ा शास्त्र होगया जिसमें नवीन और प्राचीनों का झगड़ा पढ़ते २ उमर की उमर बीत जाती है और के कोरे मूर्ख रह जाते हैं। ऐसी सरल भाषा हिन्दी में इस सब खट पट का अब कुछ कामही न रह गया पर क्यों ऐसा हुआ यह तो आदमी तभी तै कर सकेगा जब और भी सैकडों हज़ारों [क्यों] का उत्तर दे सकैगा जैसा क्यों मनुष्य संसार में पैदा होता है। क्यों फिर यहां से चला जाता है। इत्यादि इत्यादि।

अब एक प्रश्न इसके सम्बन्ध में और उठता है कि यदि भाषा की धारा ऐसे अपरिवर्त्तनीय ढंग पर इतने ज़ोर शोर के साथ बह रही

है कि हम उसमें चूं भी नहीं कर सकते तो किसी समय के अच्छे २ लिखकों का क्या दबाव या असर उसपर होता है। इस प्रश्न का उत्तर सहजमें मिल सकता है पुरानी हिन्दी ही को लीजिये पुराने ठेठ हिन्दी शब्दों को कोई अच्छी तरह सोच बिचार कर लिखने वाला फिर से जिलाकर समाज में प्रचलित कर सक्ता है। अपनी निज की भाषा के कोमल ताजी शब्दों को मरजाने या या मृतकप्राय होजाने से बचाना अच्छे लिखकों का काम है बाहरी भाषाओं के शब्दों को अपना सा कर डालना जिससे भाषा दिन प्रति दिन अमीर होती जाय यह भी एक बड़ा काम है और सबसे बड़ा काम अपने भाषा के बिषयों को दूना चौगुना करते जाना अर्थात जो २ बिषय भाषा में पहले कम थे उनको जिला देना और जो बिषय कभी थेही नहीं उनको बाहर से लाय भरती करना—इससबका असर यह होगा कि भाषा की नमन शक्ति बहुत बढ़ जायगी अर्थात जिस तरह के बिषय पहले उससे बाहर समझे जाते थे वे जल्द उसकी पहुंच के भीतर आजायगे। हमारे देखतेही देखते अंगरेजी मेमोंने हिन्दुस्तानी गहनों का पहिनना आरंभ कर दिया जैसा सोने की चूड़ियां जड़ाऊ कंठे आदि इसी तरह यदि हम अपनी मातृ भाषा को अंगरेज़ी भाषा के आभूषण से आभूषित करें तो क्या क्षति है। ऐसेप्रश्नों की मीमांसा में अभी अनेक पूर्बपक्ष और उत्तर पक्ष रहगये हैं जिनका बिचार हम दूसरे अंक मे करेंगे आगे के अंक में [ग्रामीण शब्दों]के गुण प्रगट किये जांयगे॥

क्या होगा

यह ऊपर का वाक्य इन दिनों हाट बाट गली कूचे आबाल वृद्ध बनिता सबके मुख से सुन रहे हैं बहुत दिनों के उपरांत हम लोगों को इस प्रकार की संकीर्णता आकर उपस्थित हुई है भारत बसुधा जो बहुत दिनों से बाहरी आफतों से सुरक्षित वृटानिया की छाया में निश्चिन्त बैठी है और वृटानिया जिसका असह्य प्रताप अब तक जगतीतल मात्र को उंजाला किये रहा सो दोनों इस समय नितान्त असभ्य

निठुर निर्दय अफ़गानिस्तानको सुश्रूषा कर रहे हैं कि उस जंगली भालू रूस से हमे बचाओ। यहां उसे मात आने दो। समय की बात है समय पड़े पर बिल्ली चूहों से कान कटाती है नहीं तो बृटानिया को किस बात की कमी है। गंवारू मसल है। नंगा नाचे फाटे का॥ इस युद्ध में रूस का क्या नुकसान है हानि तो सब ओर से इङ्गलेंड ही की है विस्तृत वाणिज्य के कारण किस सभ्य देश के साथ इंगलेंड का थोड़ा या बहुत लगाव नहीं है और व्यापार सम्बन्धी काम तभी उत्तम रीति पर चल सकते हैं जब सब ओर से सुचित्ती और स्वास्थ्य है। जब बनिये हुये तो यह किसे प्रगट नहीं कि बनिया अपनी गों गांठता है इसमें तो इंगलेंड की गों है जो लड़ना भिड़ना अच्छा न समझ सुलह की ओर अधिक झुकता है। पर इस बृटानिया को निरा बनिया ही मत समझे रहो जिस दिन युद्ध के लिये भरपूर सन्नद्ध हो ललकार कर बृटिश सिंह अपने सिंह विक्रान्त पौरुष के साथ खड़ा हो जायगा उस दिन इस सिंह के क्रोधानल में कितने रूस फ़ूस के समान जलकर राख के ढेर लग जांयगे यह कभी संभव नहीं है कि हमारी सरकार इस रीछ की गीदड़ भभकी में आय दबकर भारतवर्ष को छोड़ बैठेगी इंगलेंड कुम्हड़े की बतिया नहीं है कि रूस के मुकाबिले अंगुली मात्र के देखाने से मुरझा जाय। ईश्वर न करै वह दिन आवे कि दोनों भालू और सिंह भिड़ खड़े हों धरातल के एक छोर से दूसरे तक खल बली मच जायगी भूकंप आ जायगा सहस्रों सिंह विक्रांत पौरुषों के रुधिर की नदियां बह चलेंगी कितनी वीर प्रसू जननी बांझ हो जायगी यह भारत बीभत्सरस की एक अद्भुत नाट्यभूमि बन जायगा सिवा हानि के लाभ कुछ नहीं है इन्हीं बातों को सोच २ सब लोग सन्नाटे में आय जहां देखो वहां यही कह रहे हैं [क्या होगा]

दिल्लगी के किस्से।

॥ तैयार? ॥

मकतब या पाठशालों की ओर झुके हो जाने पर भी लोग बड़े चाव से बयान किया करते हैं और

समझते हैं कि लड़कपन के वे दिन बहुत अच्छे थे अब कहां हैं। वैसे सुख के दिन फिर कभी आवेंगे बहुतेरे लड़के अपने उस्ताद को तंग करने के किस्से बड़ी शेखी के साथ कहा करते हैं ऐसेही लड़कों में एक का हाल सुनिये—इस लड़के के मास्टर साहब नये तरीके के ढंग पर अपने शागिर्दों से बड़ी सभ्यता के साथ पेश आते थे उनकी बड़ी खातिर करते थे और शागिर्दों को सदा "आप" कह कर बोलते थे—पर लड़कों में भी सब एक से नहीं होते सब भले लड़कों में एक बड़ा शरीर लड़का भी मास्टरसाहब से पढ़ता था कई बार मास्टर ने उसका अपराध क्षमा किया कभी २ जब बड़ा क्रोध आता था तो थोड़ी सज़ा भी करदेते थे एक दिन उस लड़केने मेज़ में एक कुत्ते का पिल्ला और एक बिल्ली का बच्चा बन्दकर ताली मेज़ की कुयें में छोड़दिया ये दोनों जानवर घंटों तक शोर मचाते रहे मेज़ के भीतर की किताबें और कागजों को भी गन्दा कर डाला—मास्टर साहब गुस्से में भरे लड़केसे कहा "आपने बड़ी शरारत किया है देखिये तैयार रहिये हम अभी बेत लाकर पीटते हैं यह कह मास्टर बेंत की तलाश मे गये और लौटकर आये तो देखा कि लड़का सिर नीचा किये बदन सिकोड़े उदास कोने में खड़ा है मास्टर साहब बड़े कोमल स्वभाव के थे परंतु लड़के ने बड़ी गुस्ताखी किया था कुछ सज़ा देना ज़ुरूर था इसलिये उस्से कहा पीठ झुका उस लड़केने जो ऊपर से एक ढीला ढाला कुरता पहने था पीठ झुका दिया बेंत के लगने से सिर्फ थोड़ी सी गर्द झरी और वह चुप चाप खड़ा रहा सिर झुकाये पछताता सा मालूम होता था—मास्टर ने फिर एक बेंत जड़ा और फिर ज़रा सी गर्द उड़ी तब मास्टर ने गुस्से में आकर कहा कुर्ता उतार डाल लड़के ने वैसाही किया देखा तो पीठ दो तीन पर्त डुपट्टे से कसी है उसके खोलने पर मालूम हुआ कि पटरी के ऊपर गर्दकी तह जमाई हुई है और ऊपर से डुपट्टा कसा हुआ है—मास्टर ने पूछा यह क्या है। लड़के ने जवाब दिया आपने कहा न था कि मारखाने की तैयारी कर रखो सो जल्दी में जितनी तैयारी होसकी उतनी किया

अगर पूरी तैयारी न हुई हो तो माफ़ कीजियेगा ॥

दिमाग़ नहीं है ॥

एककुन्दज़ेहन लड़के का बापस्कूल का सबक़ तैयार न होंने के लिये नित्य उस्से कहा करता था "तुम सा बेवकूफ कौन होगा तेरे दिमाग तो हई नहीं" और बापका यह बचन लड़के के दिल में बहुत खटका करता था——एक दिन वह लड़का कहीं ऊपर से गिर पड़ा और सिर फट गया——डाक्टर ने देखा तो कहा चोट बड़ी गहरी आई है भीतर का भेजा तक दिखलाईदेता है लड़का कहां तो चोट की वजह से चुप चाप पड़ा था कहां यह सुनते ही उट बैठा और अपने बाप को पुकार कहने लग। "पिता जी आप सदा कहा करतेथे तेरे दिमाग हई नहीं देखिये मेरे दिमाग है बिश्वास नहो डाक्टर साहब से पूछ लीजिये और अब कभी न कहियेगा कि तेरे दिमाग नहीं है"

पीटना शर्त ॥

एक मजिस्टेरेट साहब का एक कुली में अपनी बी बी साहब के बंगले के हाते में रहता था एक दिन साहब ने देखा कि कुली अपनी अर्द्धांगिनीकी खूबमरम्मत कर रहा है और वह चिल्ला रही है साहब को रहम आया कुली से बुलाकर समझा के कहा कि औरतों पर हाथ उठाना मुनासिब नहीं वल्कि उनकी हर तरह रखवाली और खातिरी करना चाहिये इत्यादि कुली चुप चाप यह सब सुनता रहा साहब ने अपना लेकचर पूरा करने पर पूछा [कहोसमझे] कुलीने जबाब दिया हुजूर की बातों का मेरे दिल पर बड़ा असर होता हैं पर गुस्ताख़ी माफ़ हो तो मैं भी एक बात कहूं साहब बहुत खुश हुये और समझे कि मेरी बात इसके भर पूर ध्यान में आगई खुशी से कहा जुरूर पूछो कुली ने कहा मुझे केवल इतनाही कहना है यदि आप की बात मान में अपनी बीबी को न पीटूं तो फिर किस्की दूसरे को बीबी को पीटने जाऊं। साहब के मन में कभी यह बात न आई थी कि इस शास्त्रार्थ

में ऐसे एक नये ढंग का प्रश्न उठेगा इस लिये इस अध्याय को उन्हों ने वहीं समाप्त किया और कुली साहब को चुपचाप बिदा कर दिया॥

॥ जी ॥

साधारण बात चीत में यह जी भी ऐसा जीका जंजाल है कि कुछ कहा नहीं जाता। अजी बात ही चीत क्या जहां और जिसमें देखो उसी में इस जी से जीते जी गला नहीं छुट सकता। साहब यह आप क्या कहते हैं जी से जी को राहत है जी मत चुराओ हम जो कहैं उसे सुनते चलो और इस जी की उलझी गांठ सुलझाते चलो बहुतों के नाम में जो है जैसा जीवाराम जी। जीवन दास जी। व्याजी राव जी। अजीत सिंह जी। धरम जीत जी परसूजी इत्यादि अब काम मे जीको लीजिये जीविका में जिसके बिना जीवन बेकाम है। रसोईं जीवना बाज़ी बद कर लड़ना जी लगाना जी पर खेलजाना जी से उतार देना जी दुखना जी कुढ़ाना जी चुभाना जी लेना जी देना जी उचटना जी विगड़ना जी फटना इत्यादि जंग में गाजी दो फ़रीकों में राज़ी मियां बी बी राजी क्या करें काजी कुत्तों में ताजी आदमियों में शाहजीसाग में भाजी मुसलमानों मे हाजी मेवा में चिरौंजी फलों में अंजीर स्त्रियों के आभूषण में मंजीर पुकारने पर जी हां या हां जी हां के आदि मे जी अन्त में भी जी कितने कहते हैं फलाने जी पधार गये अमुक जी नामक्का यम रखने को येये काम कर गये कितने मेंहनत से जी चुराते हैं और अपने को जीचुराने वाला कहलाते हैं बहुतेरे जी बहलाने को हवा खानेजाते हैं सच्चे जी की लगन हर घड़ीप्यारेके ध्यान में मगन कितने शब्दों में इस जीही के कारण मानो जानसी फिरा दी गई है अर्जी गर्जी दर्जी मर्जी इनमे से जी निकाल लीजिये मानो उन शब्दों की जान निकल गई और अरदर, मर बे काम हैं नाते रिस्ते मे भी जी भानजी भतीजीइसजी से सजीवहैं इस जीके गोरख धन्धे को कहांतक सुलझावें जीकी खोजकर तेकरते जी घबरागया इसलियेइस

जीकेजजालको समापतकरते हैं प

पं॰ रामदयाल

अकुनेग

लातके देव वात से नही मानते॥

दस वारह वर्ष होगया बराबर सुनते आतेहैं कि आजरूसियों ने सरकसलिया कल मर्व मेआ जमें परसो और आगे बढे होते २ पंजदेह तक अपनां अटल अधिकार स्थापित कर लिया सन १८०२ मे जब रूसी लोगो ने थोड़ा २ पैर फैलाना आरंभ किया तभो हमारी सरकार ने बहुत कुछ लिखा पढीके उपरान्त यह निश्चय किया कि अब एक सोमाबंधगई रूसी उस्के आगे न बढेगे परकछ्वे और झूठे आदमियों को अपनी बात पर दृढ रहने का कुछ ख्याल नही रहता और समय पाय अपने कपटवर्ताव से नही चूकती रूस उन सब कौल करारों को किनारे रख छिपे २ मार करताही रहा अन्त को जब घात पाया और भी पांव फैलाया—रूस का यह सवर्धीगधींगा देख अंगरेज़ी सरकार ने उचित समझा कि अब सीमा का ठीक हो जाना अति आवश्यक है रूस के ज़ार को कहला भेजा कि एक कमिशन दोनों गवर्नमेंटों से नियत हो और ठीक स्थान पर जाकर सीमा का ठीक ठाक होजाय बड़ा परिश्रम और नुकसान सह कर सरकारी कमिशन तो वहां गया पर रूसियों की ओर से जो धोखा और कपट हुआ यह पाठकों को बिदित ही है कि हमारे कमिशनर सरपीटर लमसडन साहब खड़े २ तमाशा देखते रहे १२०० अफगानियों को रूसियों ने गाजर मूलीं की भांत काट गिराया हम नही समझते अंगरेज़ी गवर्नमेंट का इसमें क्या गंभीर आशय है कि रूसियों के वार २ इतना अपराध करने पर भी मुनियों कीसी शान्त वृत्ति नहीं छोड़ती और रूस मनमानता जो चाहता है सो करता जाता है—कदाचित् सरकार को यह भ्रम हो कि रूस दल और बल में अधिक है या यह सोचा हो कि अमीर साहब की मनसा

लेलें हीरात और कंदहार में फौज भर लें तब बोलें——पर हम लोगों का यह भी तर्क बितर्क सर्वथा बे जड़ और बे सिर पैर सा बोध होता है हमारी सरकार का बल रूस से किसी प्रकार कम नहीं है [नेवी] जंगी जहाजों का समूह पृथ्वी भर में ऐसा किसी का नहीं है वालंटियर और रिज़र्व सेना की संख्या हीन हो है सिक्ख और गुरखे जिन्हों ने बड़े २ जंगली हबशी और असभ्यों के मुकाबिले में कभी नहीं मुंह मोड़ा वे लोग कोसाक तुर्कों मेन और वजीर आदि रूसियों की सेना के मुकाबिले कब हटने वाले हैं बड़े २ सूर्य और चन्द्र वंशी क्षत्री राना राठौर आदि अपनी २ म्यान से तलवारों पर सान धरे सरकार की राज भक्ति में उद्यत खड़े हैं तब सरकार को किस बात की शंका है अमीर साहब का अभिप्राय तो पहले ही से मालूम था और कमीशन जाने के समये तो बिल्कुल कलई खुल गई फिर रावल पिण्डी के दरबार में सरकार के सहकारी होने की आशा को अमीर ने पिंडदान ही कर दिया तब भी इसी भ्रम में पड़े रहना कि हीरात और कन्दहार में अंगरेजी फौज आयगी बड़ी भूल है——भला जो हुआ सो हुआ इसमें वा ग्लेडस्टन सरीखे महा बुद्धिमान मन्त्रियों की चूक हो या मेरे ही समझ में इसका पूरा २ भेद न आता हो कमिशन का जाना अमीर की रावल पिंडी के दरबार में ऐसे सज धज के साथ खातिरदारी और रूस की बन्दर घुड़की में दबकर रह जाना और ज़रा भी सिर न उठाना यह सब इसी लिबरल राज शासन में देखा गया—— और भी एक बात सुनिये हाल में अभी जो एक लड़ाई अफगानिस्तानियों से हुई थी जिसमें जेनरल राबर्ट ने असभ्य अफगानियों को परास्त कर हाल के अमीर को गद्दी पर सुशोभित किया तभी सन्धि के और २ अहद पैमान के साथ यह भी क्यों निश्चय न कर लिया गया कि हीरात तक रेल बनाने की अमीर की इजाजत हो जाती तो आज दिन यह नीचा न देखना पड़ता कि कमिशन जंगल २ खाना बदेशों की तरह महीनों हैरान परेशान फिरा करता और फिर आज लों वहीं पड़ा सड़ता रहता और कमिशन मुट्ठी भर आदमी लिये चुप चाप खड़ा रूसियों

के अन्याय का सच्ची बन इतना भारी कलंक का टीका अपने ऊपर ओढ़ लेता—आज दिन जो हम ी रेल होगत तक होती तो रूस इतना सिर उठाने का साहस न करता न अमीर साहबही अपने अहद मुसल्लम से डिग जाते यह बात तो बहुत दिनों से निश्चित थी कि रूस एक दिन हिन्दुस्तान पर अपनी किस्मतआजमई अवश्य करेगा तब क्या समझ कर इतने दिनोंतक सरकार कानमें तेल छोड़े बैठी रही न होगत तक रेलही बनाने का कोई प्रयत्न किया गया न औरही कुछ सामान रूस से मुकाबिला का किया गया वही अब बोलन घाटी की रेल बन रही है एक २ के चार लग रहे हैं अब भी उचित है कि जिस रास्ते से कमिशन गया है उस राह में रेल बने तब फ़ारस हमारे अनुकूल हुई है इस रास्ते से फोज झोंक सरकार रूस का धुर्रा उड़ा सकती है और हमतो यही कहेंगे कि यदि सरकार ज़रा सा एक बार रूस को डांट दे उसी दम रूस कोना झांकने लगे और जब तक यह न होगा तब तक वादी का उत्साह और हिम्मत बढ़ती ही जायगी इसीसे हम कहते हैं [लात का देव बात से नहीं मानता]

बिना आंच के धातु जोड़ने की तरकीब

धातुओं के जोड़ने के बहुत से मसाले हैं परन्तु उन सबों में आंच दरकार होती है बिना आंच दिये धातुओं के जुड़जाने का यह प्रकार जो आगे नीचे लिखता हूं बहुत उत्तम और सुगम है जिससे धातु के दो टुकड़े ऐसे जुड़ जाते हैं मानो लेई से काग़ज किसी ने जोड़ दिया हो न तो भाती चलाना पड़ता है न कहिया लाल करना पड़ता है फर्श पर बैठे २ नली बर्तन इत्यादि जोड़ लीजिये ॥

नौसादर	१ छटांक
सेंधा नमक	१ छटांक
क्यालसाइ डटाटर	१ छटांक
सुरमा	१ छटांक

सब चीजों को एक साथ कूक

डालो और कपड़ छान कर मलमल के टुकड़े में पोटली बांधकर एक कंच रेह मिट्टी उसके ऊपर लेस दो जब सूख जाय तो एक घरिया में उसे रख दूसरी घरिया से उसे ढांप कोइला या कंडे की आंच में धीरे २ इतना गरम करो कि खूब लाल होजाय जब जानों कि भीतर की वस्तु गलगई होगी तब आग में से उसे निकाल लो और स्वत: ठंडा होने दो अब इस गोले को घरिये में से निकाल खूब महीन बूक एक शीशी में का गल गाय रख छोड़ो—जब तुम्हे कोई वस्तु जोड़ना हो तो पहले जोड़ को रेह मिट्टी से संटाकर थोड़ीसी उसी बुकनी को छिड़क दो । एक मिट्टी के बर्तन में एक छटांक शराब गरम करो और उसमें आध छटांक शुहागा छोड़ दो जब गल जाय तब एक बाल की कूंची या पर की कलम से उसी जोड़ पर उसे लगा दो लगातेही बुल्ले उठने लगेंगे और ठंडा होनेपर बज्र समान दृढ़ होजायगा – पहले भी लिख चुके हैं कि टारटर शराब के तल छट से बनता है – क्या लसाइड इसी टारटर को दो घरियों में रख आंच मे खूब लाल करने से बनता है सिवा लोहे के पीतल तांबा कांसा चांदी आदि मुलायम धातु इस मसाले से जुड़ सक्ती हैं ॥

एक और सहज रीति पीतल जोड़ने की यह है – हेड्रक्लोरिक एसिड में जस्ते के टुकडे छोड़ते जाओ जबतक टुकड़ा गलता जाय बराबर छोड़ते रहो जब और जस्ता छोड़ने से न गले तब जानो कि मसाला तैयार होगया – अब इसे एक शीशी मे बन्दकर रख छोड़ो जब पीतल की कोई चीज़ जोड़ना हो तो इस तेज़ाब को जोड़ पर लगाय आंच देखा दो दोनों टुकडे जुड़ जांयगे – और एक युक्ति चश्मों की कमानी आदि के जोड़ने की यह है कि सवा रुपये भर फुलोओरिक एसिड मे दो छटक पीतल की रेत और एक छटाक फौलाद की रेत छोड़ दो जब कोई टूटी कमानी जोड़ना हो तो इस मसाले को उसपर गेर कर जोड़ सकतेहो ऊपर के एसिड अंगरेजी सौदागर या दवाखानो में मिलेंगे ॥

वालंटियर की हवस

इन दिनों हिन्दुस्तान के एक सिरे से दूसरे तक बालटियर होने की हवस लोगों के मन में छा रही है पर यह किससे कहें यह केवल हवसही हसब है हमारे कौन से मनोरथ को सरकार ने पूरा किया है जो यही करेगी — सन सत्तावन के बलवे में प्रजा मात्र राज भक्ति से भर तिलभी इधर उधर न टसकी कौन से हिन्दू राजा की हिम्मत सरकार के बिरुद्ध होने की कभी हुई है। जो इस कदर हमारी वे इत-बारी सरकार की निगाह में जंच रही है कि हम बराबर दरखास्त पर दरख्वास्त भेजते जाते हैं और सरकार नाहीं छोड़ हांई किसी तरह पर करतीही नहीं — प्रजा ने कब और कौन सा राज बिद्रोह प्रगट किया था जो "आर्म ऐकट" शस्त्र निग्रह वाला कानून हमे लुंज पुंज करने को जारी किया गया तो अब उस अनहोनी बात के लिये सिर मारना जिस मे सरकार सब्यथा सकुच तो है केवल हवस मात्र है ॥

टांयटांय फिस

हमने एक अनोखा भजन सीखा है जरा कान लगाकर सुन लो — छंद। राग कोर कर्नाटी रागनी इसपर नागिनो हो नाचती हैं — सुनो — टांय टांय फिस — साधो टांयटांय फिस — टेक —

हरद्वार का मेला हुआ — टांय
कितना बड़ा झमेला हुआ — टांय
एक पैसे का धेला हुआ — टांय —
बाबा जी का चेला हुआ — टांय —
पिंडी मे दरबार हुआ — टांय —
इतना रुपया ख्वार हुआ — टांय —
सीम. कमिशन भेजागया — टांय —
धक धकी इहां कलेजा भया—टांय —
काम राफ़ से भेट हुई — टांय —
आगाओं से चपेट हुई — टांय —
प.ज.दहा मे आ.गा.मारे — टांय —
रहे सेहे फिर भागे सारे — टांय —

काबुल वाले तुम क्यों हारे — टांय
बड़ी शरम है दोस्त हमारे — टांय
लमसडेन का डेरा फूका — टांय
आसमान तक उड़ा भबूका — टांय
ज़ार रूस से जवाब मांगा — टांय
कुम्भकरण अबतक नहिं जागा — टांय
नेटिव वलुंटेर बनेगे — टांय
बड़ा होसिला जंग करेंगे — टांय
क्यों जी हिन्दू हथियार लोगे — टांय
लायल तुम सब जेंक्ट बनोगे — टांय
तीन बुलाये तेरह आये — टांय
वह भी दौड़े हम भी आये — टांय
कभी न दो नेटिव को हथियार — टांय
इनसे रहो हमेशा हुशियार — टांय
बहुत हुआ चुप रहिये साहब — टांय
झगड़ा रहा सो मिटी गया अब — टांय

समस्या

पं ज्वाला प्रसाद मुदर्रिस कसावा प्रेरित—आशा है हमारे कवि तारसिक ग्राहक इस्को पूरा करने की चेष्टा करेंगे।

केहि कारण फूली फलो ना चमेली। मोरे जे शत्रु ते बिलाय जैहे और से॥ ऐसेहि बितैहो कि चितैहो चित लाय के। लादन हारे कलार को भैंसा॥ शीत डरी नारि धाय बारि बीच पैठी है।

सियापा।

शिमले से तार आया है कि बीकिफायत की बड़ी अम्मा तखफीफ शरीफा इन्तिकाल कर गई हैं उन्ही के नाम का यह सियापा है।

रोओ सब मिल हाय तखफीफ।
रूस लड़ेगा हाय तखफीफ।
घटा खज़ाना हाय तखफीफ।
कैसे पुरवें हाय तख़फीफ।
कहां से लावें हाय तख़फीफ।
मरे मुहर्रिर हाय तख़फीफ।
हुका तकरूर हाय तख़फीफ।
हुआ तनज्जुल हाय तख़फीफ।
न कुछ तअम्मुल हाय तख़फील।
ज़रा रहम नहिं हाय तख़फीफ।
हमे भी गम नहिं हाय तख़फीफ।
आफत कम नहिं हाय तख़फीफ।
हम्मे दम नहिं हाय तख़फीफ।
छिन गई रोटी हाय तख़फीफ।
किस्मत खोटी हाय तख़फीफ।
चुंगी चढ़ गई हाय तख़फीफ।
टिक्स भी होगा हाय तख़फीफ।
कैसे जियेंगे हाय तख़फीफ।

ख़ार होहिंगे हाय तख़फीफ ।
नेटिव पर है हाय तख़फीफ ।
कुछ नहिं बश है हाय तख़फीफ ।

कृष्णमोहन बनर्जी

लीजिये बंग देशके प्रसिद्ध विद्वान कृष्णमोहन महाशय भी अपने ७२ वर्ष के दीर्घ जीवन में इस संसार महारंग भूमि में अनेक भांत के रंग ढंग दिखलाय १५ मई को परलोक यात्रा के लिये करांल मृत्यु के कलेवा हुये—बनर्जी महाशय लाटिन,ग्रीक,संस्कृत, इबरानी, फारसी,उर्दू, हिन्दी, उड़िया, बंगाली, अंगरेज़ी, इनदसो भाषा मे पंडित थे और अपनी चढ़ती उमर में डिरोज़ियो एक इसाई की जो इनका उस्ताद था सोहबत में फस मे अपने ६ या ७ साथियों के ख्रीष्ट धर्मावलम्बी होगये-केवलसाधारण रीतिपर क्रिस्तानही नहीं हुये बरन डंका पीट अपना मत बदला—केवल आपही बीफ न खाया बरना ऐसे निर्लज्ज बने कि कई एक कुलीन ब्राह्मणों के घर मे कह कर बीफ फेंका—कुछ ऐसा मालूम होता है कि इसाई होने के दिन ही से माने इनकी मानसिक शक्ति पर सान सी रख दीगई बहुत दिनों तक "इन्क्वायरर" और "बंगाल स्पेक्टेटर" के एडीटर भी रहे जिनमे इन्होंने बर्तमान हिन्दू धर्म की खूबही खाक उड़ाया था बरन इसी प्रयोजन से इन पत्रों के जन्म दाता बने थे—जो हो इनके इतना हिन्दू धर्म के बिरोधी होने पर भी हम इन्हें हिन्दूही कहेंगे आज कल के लोग इसे चाहे न माने परंतु डूबकर सोचिये तो हिन्दू शास्त्र की उदारताही मनमे धसती है इसलिये हिन्दू शास्त्र की पूर्ण महिमा मानने वाले हम लाेग ऐसी छोटी बात के लिये नहीं लड़ा चाहते बनर्जी सरीखे दाे चार कृतबिद्य जोश में भर इसाई होगये तो क्या । गोजर की एक टांग टूट जाने से होता क्या है । जिन दिनों बनर्जी आर्य मत के बिरोधी हो लड़ते झगड़ते थे उसे आज ५० वर्ष हुये देखतेही देखते बंगाल की "मेटीरियालिज़म" नास्ति बाद बदलता जाता है और जहां देखिये वहांही हमारे ऋषि प्रणीत शास्त्र और

दर्शनों की खोज और प्रशंसा हो रही है " सत्य मेव जयतिनानृतं,,

वकालत के इमतिहान में तग़मा।

सन् १८८१ में जब हाईकोर्ट के जज पियर्सन साहब बिलायत जाने लगे तो बकील येसेसियेशन की ओर से उनकी प्रतिष्ठार्थ एक सोने का मेडल नियत किया गया कि जो छात्र वकालत की परीक्षा में प्रथम होगा उसे यह तग़मा मिला करेगा—अब कि बार इस प्रतिष्ठा के अधिकारी श्रीयुत मुन्शी हनुमान प्रसाद वकील हाईकोर्ट के ज्येष्ठ पुत्र हमारे प्रेम के सर्वस्व श्रीयुत मुन्शी माधव प्रसाद हुये उक्त मुन्शी हनुमान प्रसाद महाशय की अंगरेज़ी और हिंदू के व्यवस्था शास्त्र law में जैसी बिद्वता है वह किसे बिदित नहीं है तब हमारे प्रेमास्पद मित्र के सुयोग्य होने में क्या सन्देह है क्योंकि (आत्मावै जायते पुत्रः) गत मई महीने के २८ वीं को हाईकोर्ट में इस्का समारंभ था कार्यबशात् मैंभी अकस्मात उसदिन वहां जा पहुंचा हाईकोर्ट के एक कमरे में भीड़ भाड़ देख पूछा कि यहा आज क्या है तो मालूम हुआ कि तग़मा मिलेगा अपने प्रेमी मित्रका अभ्युदय समारंभ सुन बड़ा उत्सुक हो मैं भी वहीं जा बैठा दो बजने के समय वकील और ब्यारिस्टर भी वहीं आकर कुर्सियों पर बैठ गये चार या पांच मिनट के बाद मुख्य धर्माधिकारी चीफजसटिस मान्यवर कोमर पेथरम साहब ने अपने सहयोगियों के वहां आये पहले उक्त मुन्शी साहब से हाथ मिलाया जिनकी छाती मारे हर्ष के गज भर की हो रही थी सच है [पुत्रात्सर्वमाद्यात्कोन हर्षात्] बड़े भाग्यवान हैं ऐसे पिता जो अपने पुत्र को ऐसी अवस्था में पाकर पुत्र के ऋण से अपने को उत्तीर्ण मानते हैं और पुत्र भी पिता के रिण से तभी उद्धार पाता है जब सुयोग्य और सुशिक्षित हो पिता के नाम को चिरस्थायी रक्खे—ईश्वरतू भारतवर्ष के सुपुत्रों को ऐसीही प्रतिष्ठा देता रहे—बीच की कुर्सी पर मान्यवर पेथराम साहब सुशोभित हुये और इधर उधर और २ जजलोग

बिराज मान थे चीफ साहब हाथ में तगमा ले मुन्शी माधवप्रसाद को बुलाययों कहा मुन्शी माधवप्रसाद यह मेडल तुम को देते मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है जिसे मेरे पूर्बाधिकारी विद्वान पियर्सन साहब ने नियत किया है — मुझे इस बात का पूरा बिश्वास है कि इस समय यदि वे होते कि यह सुवर्ण मेडल ऐसे सुयोग्य पुरुष के पुत्र को दिया जाता है जोउनकेबड़े मित्रहै तो कितने प्रसन्न होते — तुम्हारा आरंभ शुभहै और आगामी उद्भव भी तुम्हारा कानूनदानी की उत्कृष्ट योग्यता पर निर्भर है तुमको याद रखना चाहिये कि देश में जज लोग अधिक तर वकीलोंही पर भरोसा रखते हैं इस लिये इसमें अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिये वह समय जल्द आवेगा जब कि इन बकीलोंही में से इस देश के जज चुने जांयगे कानूनकी बिद्या का अधिकपठनपाठनही इसदेशकी स्वाधीनता और ऊंचे २ पद पाने का मूल है याद रक्खो यह काम बड़ी इमांदारी का है। इतना कह मेडिल दे दिया उपरांत पं० अयोध्यानाथ ने वकील असोसियेशन की ओर से चीफसाहब के कथन का अभिनन्दन किया और धन्य बाद पूर्बक सभा बिसर्जित हुई॥

प्रेरित

संपादकजी आपने पत्रों में पढ़ा होगा कि हाल में लंडन की सइकिकल रिसर्च सोसइटी के प्रतिनिधि मिष्टर हाजसन ने थियोसोफिकल सोसइटी की कारर्वाईयोंको अच्छी तरह अनुसन्धान कर यह परिणाम देखा कि करामात और सिद्धियां जो ब्लवतस्की या उनके अनुयायियों ने देखलाया वे सब कपट और पाखण्ड निकलीं हाजसन साहब ने जो कुछ बडे खोज और अनुसंधान के उपरांत निश्चय किया उसके मानने में हमे ज़रा भी उज़ुर नहीं है किन्तु पछतावा इतनाही है कि ऐसे बडे आंदोलन का ऐसा नीच परिणाम हुआ हम थियोसोफिस्ट नहीं हैं और न उन की सब बातें मानते हैं पर यह देख कि हिंदू धर्म के नबोत्थान के लिये ये लोग इतनी दूर से आये इस पर हमको कित

ना हर्ष हुआ था आज हाजसन साहब की तलाश का नतीजा पढ़ हमारे उस हर्ष में बट्टा लग गया खैर फिर भी झूठ और पाखंड की छोड़ उनकी शिक्षा का असर हिंदुस्तान जर्मनी इंगलैंड फरांस स्विटजरलैंड इटली अमरिका में जो कुछ हुआ वह क्या काम है इस लिये ऐसे बड़े आदमी से यदि दो एक चूक बन पड़ी तो उसे दोष बुद्धि से न देख यह सोचना चाहिये कि इतने बड़े काम को अकेले उठाय इस दर्जे को पहुंचाया यह क्या थोड़ा महत्व है॥

एक सरलभाव का
आप का अनुयायी

मुनि न होहि यह निशिचर होई।

हमारे अनुयायी महाशय अपने सरल भाव के कारण इसे झूठ और पाखंड जानकर भी उनके गुणाही की ओर झुक रहे हैं—पर यह क्या कुछ थोड़ी बात है कि एक साधारण स्त्री ने अपने कपट और धोखे से हज़ारों पटुबुद्धि विद्वानों को कई बर्ष तक लटकाये रही और हमारे बहुमूल्य योग शास्त्र को मदारियों का खेलवाड़ कर डाला अपने दंभ और कपट से किसी वस्तु को औरका औरही कर दिखाना क्या कोई दोष नहीं है अथवा इससे कोई हानि क्या आप नहीं समझते इसी से हमने कहा [मुनि न होहि यह निशि होई]

संपादक महाशय आपने एक नवीन पत्र के जन्म की आवश्यकता के बारे में गत संख्या में जो लिखा वह इतने कम दाम पर बिना प्रेस की पूरी सयता के अति कठिन होगा इस प्रयाग नगर से जैसा आप एक स्वतंत्र हिन्दी भाषा का पत्र चाहते हैं वैसाही यहां एक स्वतंत्र प्रेस भी होना कोई बड़ी बात नहीं है हम आप को याद दिलाते हैं कि हिन्दी उद्धारिणी मध्य सभा के कर्तव्य अनुष्ठानें में प्रेस की ज़रूरत भी पक्की गई थी और यह बिचार सब सभासद महशयों को पसन्द भी आया

था अब उसी बिचार को काम मे लाना यहां की हिंदू समाज का कर्तव्य और समाज को प्रोत्साहित करना आप का काम है बिना लिखे एक प्रेस के समाज गूंगा और निरा भारे का टट्टू सा जान पड़ता है समाज अपनी ओर से एक प्रेस कर इसी हि० प्र० को अपना मुख मान ले तो क्या हानि है इसमें दोनो लाभहै आप समाज के प्रत्येक काम काज को अपने पत्र में मुद्रित कर समाज का उपकार करें और समाज आप के पत्र को प्रतिपालन द्वारा पुष्टता पहुंचावे [परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमावाप्स्यथ]

समाज तथा पत्र दोनो का
एक हितैषी

इश्तिहार अदालत मुंसिफ़ी

प्रगट हो कि शहर इलाहाबाद मुहल्ले चन्द की कुआं में वह कोठरी जिसमें मूरत मुन्नीमाता की स्थापित है और उस कोठरी के सामने जो चबूतरा है जिस पर एक नीम का पेड़ और कई एक और मूर्तियां उस पेड़ के नीचे जो उसी मुन्नी माता के स्थानसे संबन्ध रखती हैं जिसे उस महल्ले और दूसरे २ पास के महल्ले के रहने वाले खास और आम हिन्दूमात्र पूजते हैं उसे उसी महल्ले के रहने वाले बिहारीलाल सराफ़ोगी और उनके लड़के पन्नालाल और हीरालाल ने मूरत मुन्नीमाता को कोठरी से निकाल कर उस नीम के पेड़ के नीचे रखदिया और कोठरी को गिरा कर अपने मकान मे मिला लिया चाहते हैं और मंदिर के परिक्रमा को रास्ता भी बन्द कर दिया है नीम के पेड़ की कई एक डालियां भी काट ली हैं और चबूतरे को अपने मकान के भीतर किया चाहते हैं जिसमें वह देव स्थान बाकी न रहजाय लिहाज़ा मुद्दैयान ने नालिश की है ताकि वह पुरातन स्थान मुन्नीमात का बना रहे और खुला पाने रास्ता परिक्रमा की और दुरुस्त करा पाने कोठरी मज़कूर को बहैसियत

साबिक औदिला याने कीमत लकड़ी नीम की मिन जानिब छेदीलाल व भोलानाथ व श्यामसुन्दर व गंगाप्रसाद व विशुनलाल व गनेश ब्राह्मण व बिन्दाहज्जाम मुद्दईयान बनाम बिहारीलाल व पन्नालाल व हीरालाल मुद्दालेहुं अदालत मुनसिफी इलाहाबाद मे नालिश दायर की गई है और आप लोगों को भी वही हक्क नालिश हाज़ा में हासिल है जो कि मुद्दईयान मुकद्दमे हाज़ा को हासिल है चुनांचि अदालत से दरखास्त वास्ते हासिल करने इजाज़त इरजा नालिश और पैरवी मुकद्दमा हाज़ा की मिन जानिब आप लोगों के ली गई है लिहाज़ा बज़रिये इस इश्तिहार के आप लोगों को हस्ब मनसा दफ़ा ३० ज़ाब्ते दीवानी के इत्तिला इरजाय नालिश की दीजाती है॥

चन्द की कुआ

मिठ्ठनलाल अगरवाला। अलोपी अगरवाला। रामकिशुन अगरवाला रामनारायण अगरवाला। जीतमल अगरवाला। बालिलाल अगरवाला गयाप्रसाद अगरवाला। गोबिन्द प्रसाद अगर बाला। बेनीप्रसाद अगरवाला। लल्लन अगरवाला।

महाजनीटोला

शिवदत्त प्रसाद महाजन। रामनारायण शर्मा। लच्छू लाल उर्फ़ नन्दकिशोर। मधौराम शर्मा मनमोहन लालअगर वाला। बालकिशुन अगर वाला। गोबर्द्धन अगर वाला। महादेव प्रसाद अगर वाला। सूरज प्रसाद॥

जौहरीमोहल्ला

नन्दनलाल अगरवाला। राधाकिशुन पाठक। गजाधर पाठक। छेदीलाल बनिया। बच्चू लाल अगरवाला। शिवनारायण अगरवाला। गयाप्रसाद जोहरी। जै देव तिवारी। गोपाल तिवारी। लल्लन प्रसाद जोहरी। मन्नू लाल अगर वाला। बावन प्रसाद अगरवाला।

तिरपौलिया।

शिवनारायण पाठक। फ़कीरचन्द अगरवाला। रामनाथ ब्राह्मण

बादशाहीमंडी

शिबलाल सोनार। मोतीराम। माधोप्रसाद कायस्थ। शिवप्रभन लाल ओझा। क़ादिर बख़श नर। हशंकर सिंह। काशी प्रसाद। गोकुल प्रसाद। मथुराप्रसाद। लाला रामनाथ सहाय वकील। मोहनलाल कायस्थ। जगन्नाथ प्रसाद। चन्डीप्रसाद बिन्द्राबनदुबे। हरिदास घोस। रघुबीर सहाय। रामनाथ पाल। बालगोबिन्द। सुदिष्ट प्रसाद दुबे। सरयूप्रसाद दुबे। अयोध्या पांड़े। बाबूलाल कसौंधन बंशी दुबे। बिन्दा प्रसाद कायस्थ राजबहादुर कायस्थ। अनन्तराम ओझा। जगन्नाथ। मातादीन ओझा महाबीर दुबे। बन्शी सोनार। सुन्दर लाल कसौंधन।

मुहत्सिमगंज।

गुरुप्रसाद।

महाबीर प्रसाद

शिव प्रसाद।

गिरधारी लाल कायस्थ।

बिसेसर दयाल कायस्थ।

मथुरा प्रसाद दुबे।

बेचूलाल।

महादेव प्रसाद।

जानकी बनिया।

गनेश प्रसाद प्रयागवाल।

रघुबीर किशोर कायस्थ।

माधो प्रसाद।

पानकादरीबा।

गौरीशङ्कर ब्रह्मण।

सकठा प्रसाद वैद्य।

बड़ाताजिया।

जगन्नाथ वैद्य।

खुलदाबाद

देबी प्रसाद अगरवाला।

ऊंचेकीमंडी

झाऊ लाल अगरवाला।

कन्हैयालाल अगरवाला।

अतरसुईया।

महाबीर प्रसाद।

मुट्ठीगंज

शिवपाल सिंह।

द० मुनसिफ इलाहाबाद १ लीजून सन् १८८५

अग्रिम मूल्य	३।=)
पीछे देने से	४।=)

मासिक पत्र।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख तादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD, 1st July, 1885. Vol. VIII.] [No. 11.
प्रयाग आषाढ़ कृष्ण ३ सं १९४२ जिल्द ८ संख्या ११

इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादककी आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ८
संख्या ११

१ जुलाई
सन १८८५ ई०

ग्रामीण भाषा

हम समझतेहैं सर्व साधारण का कुछ ऐसा मत है कि हिन्दी के बारे में जो कोई कुछ लिखा चाहें उनका यह मुख्य कर्त्तव्य है कि उस पुराने खुर्रांट झगड़े को पहले लेकर लें जो हिन्दी, हिंन्दुस्तानी, या वो-उर्दू के बीच उठ रहा है। स्पष्ट है कि हिन्दी और उर्दू का कोरा लिखना है कोई कृतकार्य और सत्यसंकल्प न हो सका इस लिये भाषाओं का भेद दर्शक लक्षण लिखने का उद्यम छोड़ हम उनके बोलने वाले कौन और किस ढंग के लोग है इसपर ध्यान देतेहैं ॥

आप जो भाषा बोलेंगे वह किसी न किसी सांचे में ढली होगी। तो यह कैसी हो और किस सांचे में ढले इसका ते करना अत्यन्त आवश्यक है लोग कहेंगे इसका ढलना अधिक तर कुल और जाति से सम्बन्ध रखता है अर्थात एक ब्राह्मण का लड़का कभी संभव नहीं कि नित्य के बोल चाल में "मा-कसार को क्या हुक्म होता है" इत्यादि के ढंग की फारसी मिली हुई उर्दू बोले। न यही संभव है कि कोई मुसल्मान चाहो वह संस्कृत का बड़ा बिद्वान क्यों न हो काशी के पण्डितों के ढंग की भाषा बोले-पर थोड़ाही सोचने से यह बात खुल जायगी कि कुल जा-ति या मज़हब का बहुत कमअसर भाषा पर पहुंच सकता है। इस देश के मुसल्मानोंही की भाषा को लीजिये हम समझते हैं वह आदमी निस्संदेह मुसल्मान है जो मुहम्मद को खोदा का रसूल मानता हो नित्य नमाज़ पढ़ता हो रोजे

रहता हो अर्थात धर्म सम्बन्धी सबूत जहां तक काम दे सकताहै वहां तक वह अवश्य मुसल्मान है अच्छा तो अब लखनऊ के एक मुसल्मान को लीजिये और उसकी भाषा पर ध्यान दीजिये देखिये कैसी लच्छेदार शीन काफ़ से जड़ी हुई फ़सीह उर्दू बोलता है। तब ढाका और मुर्शिदाबाद के प्रान्त के एक बङ्गाली मुसल्मान को लीजिये और उसकी भाषा को भी कान खोलकर सुनिये सुनतेही चट आप कह उठेंगे यह तो न फारसी है न उर्दू बल्कि शुद्ध बंगला है ! कलकत्ते की चीना बाज़ार में हिन्दुस्तानियों के घर के तोतों को भी कभी २ चीनियों की बोलियों का अनुकरण "च्यां२ म्यांव २" करते सुना है तब आदमियों की कौन कहै इस लिये यही बातध्यान में आती है कि कुल जाति या धर्म नहीं बरन जैसे लोगों में को‍ई रहेगा वैसीही उसकी भाषा बदल कर हो जायगी या कभी २ अंगरेज़ी संस्कृत या फारसी आदि भषाओं का प्रवल अभ्यास भी भाषा पर असर करता है जिस भाषा का जो अधिक अनुशीलन किये रहेगा वही भाषा अपने मामूली बोलचाल में बोलेगा। अर्थात पहले समाज का असर भाषा पर होता है फिर शिक्षा का। पर भाषा का पूरा २ ज़ोर देखने के लिये उन लोगों पर ध्यान दीजिये जो एक ढंग के "शून्य भीति" हैं अर्थात जिन पर किसी तरह की शिक्षा मात्र ने अपना रंग नहीं जमाया है और जो घर में तथा घर के बाहर छोटे बड़े सब से एक तार की अपनी सहज भाषा बोलते हैं। सच पूछिये तो ऐसी भाषा से बढ़कर संसार में कोई दूसरी मीठी भाषा नहीं हो सकती इस कारण अगर ठेंठ हिन्दी शब्दों की आप को खोज है तो गत काल के या वर्त्तमान समय के नयी जोखी प्राय: एकही ढर्रे पर चलने वाली कवियों की बाणी से लेकर सहस्रों धारा से चलती हुई सजीव ग्रामीण भाषा को देखिये-यदि आप यह कहैं कि शिक्षा के अभाव से ऐसे लोग असभ्य या अश्लील शब्द अपनी बोल चाल में बहुत भरते हैं तो साथही इसके यह भी सोचना चाहिये कि कितने हज़ारों लाखों शब्द ऐसे भी मिलतेहैं जिनके पुष्ट भाव या अर्थगौरव को देख चकितही

ही जाना पड़ता है। कदाचित् आप को यह सन्देह हो कि ग्रामी ण भाषा से हमारा अभिप्राय निरे अ पढ़ और नीच लोगों की बोलचाल से है तो इस प्रश्न की मीमांसा के उत्तर में हम यही कह सकते हैं कि यदि पाठकजन टुक ध्यान दे सोचेंगे तो यह बात उनके मन में सहजही आ सक्ती है कि जिस्को वे मातृ भाषा कहते हैं वह उस्से भिन्न है जिसे वे घर के बाहर बो लते हैं अर्थात् आपस के बोल चाल की भाषा यद्यपि प्रिय से प्रिय मित्र के साथ प्रेमालाप में काम आती हो फिर भी वह भाषा एक तरह की बनावट से भरी हुई जं चती है तात्पर्य्य यह कि जैसा कुछ सरल भाव और मिठास मातृ भाषा में भरा है बाहर की सभ्य या साधु भाषा में आही नहीं सकता। इस सभ्य भाषा से हमारा प्रयोजन कोरी उर्दू ही से नहीं है। किन्तु जिसका नाम (Provincial dialects) भिन्न भिन्न स्थानों की भाषा है॥

और जो लोगों के घर के भीतर बोली जाती है और जिस भाषा का बरताव नौकर चाकर के साथ कि या जाता है उसकी सहज गति या प्रवाह होने के कारण उसमें ए क बिचित्र लालित्य माधुर्य्य या कोमलता आ जाती है और जिसमें अब तक हज़ारों लाखों अ- ति पुष्ट अर्थ के द्योतक हिन्दी शब्द भरे हैं और जो दुर्भाग्य से मनुष्यों की सभ्य मंडली से निकालकर अ लग फेंक दीयेगए हैं—इसअन्याय का क्या कारण है? कारण केवल यही जान पड़ता है कि हम लोगों के बीच बिना बोलायेही एक पाहु ना आघुसा है औरउसी कानाम उर्दू है माना कि स्त्रियों तथा दास दासी इत्यादिकों की भाषा सदा सेसहज और "प्राकृतिक" होतीचली आई है पर समाज के जो दो भाग होते हैं एक पढ़े हुओं की भाषा दूसरे कम पढ़े या अपढ़ लोगों की भाषा इन दोनों में आज कल बिचित्र भेद देखलाई देता है। पूर्व काल में भी भेद था पर इस तरह का नही था अगर वे पढ़े लोग प्राकृती बोलते थे तो इसको भी संस्कृत का बच्चाही कहना चाहिये॥

इन दिनों कोई २ कायस्थ महा- शय कुछ लोगों से तो अपने ज- न्म भूमि की भाषा बोलते हैं और बाहर दूसरे लोगों से कुछ और

ही चीज़ बोलते हैं और एक ऐसे विचित्र भद्दे फारसी शब्द मिली उर्दू बूकते हैं जिसपर उन लोगों से जिनकी निजकी भाषाउर्दू है बिना हंसे नही रहाजाता। ऐसों के सम्बन्ध में यह पुरानी कहावत सुघटित होतीहै। "कौवाचला,,हंस की चाल अपनी भी भूल गया आप जो पूजें दोहरा भूत पूजनी जोय उसके घर में दो मता कुशल कहां। से होय,,। जो बात हमारे कोई२ कायस्थ महाशयों के सम्बन्ध में ठीक है वह थोड़ा २ सब पर घटती है।

फिर इस बात पर भी तो ध्यान देना चाहिये कि समाज की समाज एक बिचित्र रास्तेपर चले इसका कोई बड़ा भारी ही कारण होना चाहिये। इस बड़े कारण को खोजने के लिये आप को दूर न जाना होगा बहुत दिनकी बात नहीं है कि पढ़े लिखे लोगों के समाज में जो ठेठ हिन्दी शब्द बोलता था वह गंवार और देहाती का खिताब पाता था अधिक नहीं २५ बर्ष पहले के हिन्दी के इतिहास पर ध्यान दीजिये हरिश्चन्द्र आदि के पूर्व हिन्दी की क्या दशा थी और जब उन्हूं ने अपना बहुत सा बित्त और मानसिक शक्ति को धूर में मिलाय बड़े यत्न के उपरांत मार२ कर लोगों को हिन्दी के पढ़ने का शौक़ दिलाया तब क्या दशा थी और अब क्या है सच पूछिये तो इस थोड़े से समय मे हिन्दी की कुछ कम बिजय नहीं हुई। वेही सब शब्द जो किसी समय गंवारों की भाषा समझे गये थे सो अब काल चक्र के हेर फेर से अधिकारशाली पढ़े लिखे लोगों के बर्ताव मे फिर आने लगे बरन ठेठ से ठेठ हिन्दी शब्दों की खोज लोगों को है और वह ठेठ हिन्दी हमारे ग्रामीण जनोही के कंठ का आभरण है। सच है। जिस पत्थल को म्यमारों ने बेकाम जान फेंक दिया वही पछे कोने का सिरा हुआ। और भी, हम शब्दों को ठीक सिक्के की तरह मानतेहैं जैसा बाज़ार मे रुपया आदि को कुछ मोल होता है वैसेही मानसिक बाणिज्य अर्थात एक मनुष्य के हृद्गत भाव को दूसरे के मन में पैठाना शब्दोंही के द्वारा होसक्ता है यदि ऐसा है तो सिक्के घिस भी तो जाते हैं! मुसल्मानों के समय के सिक्के अनोखी बस्तु को जैगे कर

रखनेवालोंही के सन्दूकही में मिलेंगे बाज़ार में नहीं चलते प्रयोजन यह कि ठेठ हिन्दी के शब्द हमलोगों के काम में जो लाये जाते हैं सो इसके बदले की गवाँर पने की बू उनसे आवे एक विचित्र लहलहापन और पुष्टता उनमें भरी हुई पाई जाती है और आप निश्चय जानिये बहुत जल्द ऐसेही शब्दों की पूरी बिजय होगी ।

केशव कहिन जात का कहिये

लोग मानते हैं कि ईश्वर की सृष्टि मे (order) सब चीजों के क्रम पूर्वक होने का कानून प्रधान है । अर्थात सब चीजें एक ठर्र पर चलतीजाती हैं और जिनको हम बिघ्न कहतेहैं वे भी उसी क्रम पूर्वक होने के कानूनही मे दाखिल हैं पर हमने ध्यान देकर सोचा तो यही जी मे समाता है कि सब से प्रबल नियम संसार का यही है कि समता कहीं रहने न पावे बन्धेठर्र पर चलनेबाली चीजें तितिर बितिर कर दी जांय, बन्धेहुये नियम तोड़ फोड़कर उड़ा दियेजांय और जो वस्तु शृंखला बद्ध होरही है वह लीक से अलग हो उच्छृंखलता वाले नियम के आधीन कर दीजाय अर्थात सृष्टि को सीधा ले चलने वाला कानून प्रबल है तो उससे प्रबल तर उसी का बिरोधी एक दूसरा कानून है जो किसीको अपने ठीक क्रम पर रहनेही नहीं देता और किसी प्रचलित कानून की सत्ता उसके काम के परिणाम से जानी जाती है पर इस सृष्टि मे सर्वाभिभाग नियम यही है कि— "छिद्रेष्वनर्था ब हुली भवंति—या जो कुछ संयुक्त है बियुक्त हो जो कुछ बना है वह बिगड़ कर नष्ट भ्रष्ट हो जाय - इस बात के सुघटित होने को हम घड़ी को उदाहरण मे रखते हैं—आप शायद यही समझते हैं घड़ी का काम ठीक समय बतलाना है पर सो नहीं है—हमारे जान उसका काम यही मालुम होता है कि सदा गलत ही चला करै—रोज़ दुरुस्त करातेर घड़ी रखने वाले का नाक में दम आजाता है पुरजे उसके किंतनाही दुरुस्त करातें जाइये फिर

भी एक दिन ऐसा होगा कि वह इस लायक भी न रहेगी कि चल सके तब बतलाइये ठीक चलना उसका मुख्य धर्म है या रोज़ बरोज़ बिगडते जाना, ? वही हाल प्राकृतिक पदार्थों का भी है—आदमी के वास्ते आप सोचते होंगे कि वह पैदा हो धीरे २ बढ़े सुख और आराम से ज़िन्दगी बिताय एक दिन ठंडे२ परलोक की राह ले—पर हम से पूछिये तो हम यही कहेंगे कि मनुष्य के लिये भी नाश करने वाला कानून अधिक प्रबल है जो हरदम बनी हुई चीज़ों का गला दबाये हुये है ज़रा मैका मिला कि अपना वार कर गुज़रा सच पूछिये तो मनुष्य उस सर्वव्यापी कानून का पूरा कलेवा है अर्थात् पैदा होते ही तकलीफ उठाने लगे जबतक बालक रहे उनकी रखवाली और भांत२ की बीमारियों से उन्हे बचाते २ मा बाप का नाकों दम आता है और बड़े होने पर पढ़ाने लिखाने और शऊर सिखलाने की फ़िकिर न कीजाय तो कोरे लंठ के लंठ बने रहें जवान होने पर काम क्रोध आदि षट् रिपु इतने ज़ोर शोर के साथ उसे सताते हैं कि किरोड़ों समाज बन्धन के हर तरह के शिकंजे मे धर न दबाया जायतो आफ्रिका के बन्दरों का मुकाबिला करने को तैयार रहे, पेट के लिये सुबह से सांझ लों उद्योग न करे तो भूखों मर जाय, तनदुरुस्ती की खबर न लेता रहे तो व्याधियों का ग्रास बन ५० बर्ष के जीवन को ५ बर्ष में तै कर डाले—जहां तक डूब के देखा यही बात मन में धसती गई कि सब पर प्रबल यही बाधा करने वाला कानून है "समागमाः सापगमाः,, क्या बल्कि अपगमही अपगम है—अब अगर हम अधिक कुछ कहें कि "महाशय आपके ईश्वर का वह न्याय कहां गया जिसके बल आप फूले नहीं समाते और होम करते हांथ जलने वाले सैकड़ों मौकों पर बिगाड़ की बातों को देख उसे अन्यायी और अबिबेकी किसीतरह नही कहा चाहते, ? तो निश्चय है लोग हमे नास्तिक कहेंगे कि पागल हो गया है, बरेली से जंज़ीर तोड़ाय भाग आया है इस लिये तुलसी दासके इस भजन के भावार्थ पर ध्यान दे चुप होतेही बनता

है "केशव कहि न जात का कहिये। देखत तव रचना विचित्र हरि समुझि मनहि मन रहिये" —

नई रोशनी का बिष

। चतुर्थ अङ्क-दूसरा गर्भाङ्क।

स्थान

बिश्वमित्र के घर का बहिर्द्वार। बिश्वमित्र और भानुदत्त का प्रवेश।

बि॰मि॰-बाग सीचने का हज़ारा तो हम भीतरही भूल आये (भानुदत्तसे) बेटा ज़रा दौड कर ले तो आओ।

भा॰ द॰ जो आज्ञा (गया)

बि॰ मि॰ छोटे २ दिहाती कामो मे बझा रख हम भानुदत्त का कितना हर्ज करते हैं—कुछ ऐसा मालुम होता है उसको स्वयं इन सब कामो के करने की रुचि है (भा॰द॰ हज़ारा लाताहै) बड़ी जल्दी आये बेटा-अच्छा तो अब तुम जाओ अपने काम का हर्ज मत करो।

भा॰ द॰ हमको तो कोई ऐसा ज़रूरी काम नहीं है पिता जी।

बि॰ मि॰ नहो २ हमसे कई आदमी शिकायत करचुके हैं कि तुम बहुत बुरा करते हो जो अपने फजूल कामों मे लड़के को फसाये रखते हो- तो अब तुम जाओ जो कुछ ज़रूरत आपड़ेगी तो बुला लेगें। (बि॰ मि॰ जाताहै)

(चिट्ठियां और अखबार लिये सरला का प्रवेश)

सरला-भैया कहां हैं (देखकर) यह लीजिये [और सब लिफाफों को छोड़ एक छोटा सा खत खोल कर पढ़ता है [सरला जाती है]

भा॰ द॰ [अचरज से] आठ बजे आवेंगे! पर आठ तो अब बजनेही चाहते हैं! [सोचता है] कौनसा ऐसा काम सत्यानन्द को हम से है यह लो आभी गए (सत्यानंद का प्रवेश बड़े प्यारसे दोनों मिलते हैं)

स॰ नं॰ आप यह भी नहीं पूछते कि क्यों इतना कष्ट सह हम कल कत्ते से आये हैं।

भा॰ द॰ मैं आप से मिलने की खुशीसे इतना घबड़ागयाहूं कि—

स॰ नं॰ [रोककर] बहुत अच्छा मैं आपको माफ करता हूं क्योंकि गलती करना इनसानों ही का काम है और माफ करना देवताओं का—मैं आप की गलती को दिल से भुला देताहूं पर और

लोग भूलें तब तो—आपने मेरे लिफाफे पर नया माटो देखा ?

भा०द० जी हां इसीसे तो ज़रा तरद्दुद हुआ—आगे तो Love is Heaven and Heaven is Love था अब Nil Desperandam कबसे हो गया? स०नं० यह इस वास्ते किया गया कि आगे हमारा जीवन चरित्र लिखने का जो काल होगा क्योंकि "कालोह्ययं निरवधि र्विपुलाच पृथ्वी" [उसमें हमारे जीवनके मुख्य२ हिस्सों में कौन २ मुख्य बातें हमारे मन में भरी थी उसका पता लगाने में लिखने वाले को सुगमता हो क्योंकि ये माटो उन्हीं सब बातों के सूचक हैं [ठहर जाता है भा०द० को देखता है और भा० द० चकित और लज्जित साहो कुछ नहीं कहता] तो अब अब आप इस अदल बदल का तात्पर्य समझ न गये " भवो हि लोका भ्युदयाय तादृशां „ परंतु अब बहुत चिन्ता आप न कीजिये ईश्वर ने पांचों अंगुलियों को बराबर नही बनाया तो क्या हानि है आप इतना लज्जित क्यों होते हैं क्योंकि आपके चरित्र का संकीर्तन करनेवाले भी तो संसारमें कितने भक्त जन पड़े हैं

भा०द० [सरल भावसे] और जो कुछ मन आवे सो कहिये।

स०न० मन मे आवे क्या—मैंने कुछ बेजा कहा है—आप भी अजीब मसखरे मालूम होते हैं खैर अब आप काम काजी आदमी हुये अब आप का अधिक समय खराब करना अच्छा नहीं ?

भा० द० आप यह सब क्यों कहते हैं ?

स० नं० खैर कानून की रूखी सूखी इबारत से और कविता के भाव और रस से बड़ा बिरोध है इसलिये अब हम साफही कहते हैं आपने बहुत सी किताबों की सैर किया होगा पर एक किस्म की किताब की कभी सैर न किया होगा।

भा०द० वह कौन सी किताब है भाई।

स०नं० उसका नाम महाजनों की बही है तब तक दो तीन को मिलाइये नहीं जब तक जैसा सूत्रोंका अर्थ बिना वार्तिक के नहीं खुलता से आज कल मैंने इस शास्त्र की ओर अधिक ध्यान दे रक्खा है और खूब उसका रस चूसा पर निश्चय जानिये अपने तो अकेले बैकुंठ को कौन कहें नरक का भी

सुख दुख न भोगेंगे। इसी लिये मुनासिब समझा कि आप को भी उस सुख का साझी बनावें और इतना कष्ट सह यहां आये। पर आप ऐसे बेमुरौवत निकले कि और खातिरदारी की कौन कहे ज़रा धन्यवाद का शब्द भी मुंह से नहीं निकालते [भा० द० सिर नीचा करलेता है]

स० न० [स्वगत] अब इनसे कुछ अधिक कहना मुनासिब नही- सुना है तारकचन्द यहां आजही आवेगा खैर आनेदो प्रमदा ने वह काम कर रक्खा है कि बचा की एक भी शरारत न चलेगी परन्तु यह सब भानुदत्त से कहकर उनको घवड़ा देना ठीक नही पर इतना जता देना चाहिये कि तारक चंद जो आते हैं (प्रकाश) अच्छा तो अब आप बन्दगी कीजिये हम जाते हैं। शायद तारक चन्द यहां आवैतो बहुततरद्दुद मत कीजियेगा उनकी खातिर दारी करनेको हम भी आजांयगे।

भा० द० (धीरे से) क्यों भाई तारकचंद अब यहां क्यो आवेंगे?

स० न० [हंसकार] "क्यो" आप यह क्यों पूछतेहैं? कदर, मोहब्बत, प्यार, दोस्ती और क्यों। आप ऐसे अमूल्य रत्नको संभव है कि तारकचंद इतनी जल्दी भूल जाय पर हम कहते न हैं आप कुछ भी तरद्दुद न कीजिये हम तारकचन्द के साथही यहां आवेंगे अच्छा रुख़सत [हाथ मिलाके जाता है]

भा० द० (स्वगत) तारकचंद—तारकचंद—तारकचंद से तो अब हमसे बहुत सम्बन्ध न होना चाहिये और अगर कुछ वात भी होती तो सत्यानन्द हमसे साफ २ बतलाता जो कुछ उनका बाकी हो दे दिलाय छुटकारा पाते पर यह बात क्या है [सोचमें भर] हाय उस वज्र सदृश शिला को हृदय परसे हटादेने को हमने कुछ न किया—क्यों हमने पिताजी से इस बातको छिपाया? क्या आहर की आफ़त टल जानेसे मन का

तूफान भी दब सक्ता है ? कभी नहीं अब यही समय हमको मानो उस बात का सुबूत है अब भी कुछ नहीं बिगड़ा सत्यानन्द के साथ लेहमपिता जी से मिल सब भेद खोलदें — क्यों आग को बुझावें और चिनगारी छोड़ रक्खें (नौकर को पुकारता है) देखो अभी बाबू सत्यानन्द की गाड़ी बाहर होगी उसे रोको — तो अबचलें ऐसाही करें (गया जवनिका पतन)

पंचम अङ्क प्रथम गर्भाङ्क ।

स्थान — तारकचन्द का मकान

नौकुमार-और रसिक बिहारी बैठेहुये

नौकुमार- मालूम होता है बाबू तारकचन्द खूबसूरती के हुनर को खूब नहो समझे हैं नहीं तो मकान कभी न यों सजते ।

रसिक-अरे भले आदमी इस वक्त तो ज़रा अपनी अकिल चरागाह से पकड़ लाते — खूब सूरती की निर्ख करना भाड़ में झोंक यह बतलाइये कि हम लोग कबसे उस कमबख़्त तारकचन्द की इन्तिज़ारी कर रहे हैं अगर उसने रुपया न दिया तो कैसे बनेगा ?

नौकुमार- (देह तोड़ता हुआ) उसपर आपका कुछ दावा है ?

रसिक-बस इतनीही तसकीन आप हमको दे सक्ते हैं ?

नौकुमार-और जो कुछ कहिये दें आपके कहने मात्र की देर है ।

र० [कुछ क्रोधसे] हम सोचते हैं नौकुमार इस सृष्टि में अगर वे जोड़ है तो हमारी तुम्हारी दोस्ती है ।

नौकुमार- जी हां आप की बेहूदगी देख किसी जून हमको भी यही खयाल आता है पर क्या करें दोस्तों कीबेवकूफी से दरगुज़र करनाही पड़ताहै । जब खींचातान होती है मुरव्वत आही जाती है

रसिक(बहलाकर) मगरनजानिये इस वख़्ततारकचन्दकिसफिक्रमेहै ।

नौकुमार-हम जब आयेथे तब अपने मुनीमों को घोंट रहा था

सुनते हैं प्रमदा ने उस्के हिसाब की दो एक बहियों को देख लिया और उसे गड़ बड़ कर दिया है।

रसिक-तब ?

नौ० भानुदत्तका हिसाब किताब कुछ आप भी जानतेथे ?

रसिक-आपको मतल इस्से

नौ० छिः हमको क्या मतलब है आपही ने बात उठाया था इस्से पूछते हैं ?

रसिक-हम नहीं मान सक्ते कि प्रमदा को तारकचन्द की कोठी का सब भेद खुलगया हो ?

नौकुमार-कौन कहता है आप मानही लीजिये सच्चीबातके मानने काआपकोशऊरहोता तोफिरक्या था ?

रसिक-खैर तो फिर क्याहुआ तब—?

नौकुमार-और यह मालूम हो गया कि तारकचन्द ने भानुदत्त के हिसाब में बड़ा गड़ बड़ कर दिया था इधर का उधर कर जो रुपया पाया भी उसे बही में जमा नहीं किया

रसिक-हम समझते हैं यह सब सत्यानन्द की करतूतहै जो तारकचन्द से चाइयां की सब चालाकी का भरपूर पता लगा लिया।

नौकुमार अभी ज़रूर आपने एक बात अकिल की कहा है—आप जानतेही हैं यह सब हिसाब किताब सत्यानन्द ही के मारफ़त था उसीने प्रमदा से मिल कर यह सब धीरे २ पता लगाया और इसीलिये तारकचन्द ने प्रमदाको अपनी युक्तियों में फ़सा रखने को अपने घर रक्खा था।

रसिक सोइस आस्तीन के सांपने पालने वाले ही को काटा।

नौकुमार बहुत ठीकहै—और हां अब मुझे याद पड़ा—माफ कीजिये गा इस समय मुझको एक बड़ा ज़रूरी काम है और आप को भी मैं सलाह देता हूं कि अब आप सीधे घर जाइये तारकचन्द जैसा दोचिता और घबड़ाया सा है उस्से तो यही मालूम होता है

कि उस्के हवास ठिकाने नहीं है अगर आपको रूपयेकी वहुत बहुत ज़रूरत है तो कहीं दूसरे जगह बन्दोवस्त कीजिये बंन्दगी (जाता है)

तारकचन्द का प्रवेश

ता॰(घबड़ाया सा एक चीज़ उठाता है और फिर उसे रखता है] कहिये आप को भी इसी वख़्त गला दबाना मंजूर था ।

रसिक (नम्रतासे) आपको याद होगा वह मेरा मुकद्दमा बहुत ज़रूरी है आपने रूपया देने का वादा किया था सो ॥

ता॰ हांहां याद है पर इस वख़्त किसे छुट्टी है जो आपके साथ सिर खाली करै मै किसी बहुत ज़रूरी काम से इस समय जाताहूं आप जाइये बन्दगी [जाता है]

र॰ हा ! यह कट्टर महाजन पर भरोसा रख उस बेचारे भगुदत्त कीबुराइयां ढूढ़ने का यही परिणाम हुआ अब इस समय हम कैसे अपने को इस आई हुई बला से छुटावें इधोतारकचन्द पर बिश्वासरख हम कुसंगत मे फस अपना कितना रुपया बरबाद कर लोग कुटुम्ब सब मे हेच और तुच्छ समझे गये और अन्त को कर्ज़ दारोंकीकुरकियों मे माल मताल घर द्वार सब गवांय बैठे और अब जेल में जाना पड़ेगा सो मने। धेलौने मे ता रकचन्द ! हम जानते हैं तू इससमय बिश्वमित्र के यहां जाता हैं जा, जिस लायक़ तू है वेसाही ईश्वर तुझे फल देगा [दुख मे धीरे से चला जाता है]

चोज़

एक साहब के डाढ़ी और मोंछों के वाल पक चले पर सिर के जैसे के तैसे स्याह बने रहे इस पर अचरज में आय उन्होंने एकदिन एक अपने मित्र से इस्का कारण पूछा — मित्र उनके ज़रा वेतकल्लुफ़ और ठठोल थे — कहा अगर माफ कीजिये तो इस्का ठीक कारण मै

बतलादूं – "आपने अपने मुह से ज़ियादह काम लियाहै „ और सिर से बहुत कम – माफ़ कीजियेगा आपने सोचा बहुत कम है और बकबाद ज़ियादा किया है।

एक मरीज़ बुखार की शिकायत करता हुआ हकीम साहब के पास पहुंचा हकीम साहब इन दिनों के इश्तहार देने वाले हकीमों के किस्म के थे दो चार घास फूस मिला कर एक नुसखा तैयार कर लगे हाथों अखबारों में उसका इश्तिहार देई तो दिया – जो जाता था बड़ी तारीफ़ और घमंड के साथ उसी नुसखे को बतलाते थे इस मरीज से बडे चाव से पूछा "पर आपनेमेरे उस जगत उजागर नुसखे केमुताबिक दवाइयांकियाहै या नहीं„ मरीज़ ने कहा "जी हां किया तो पर उस नुसखे केवजहसे मुझे बुखार नहीं आया मुझको तो फसली बुखार है„ हकीम साहब भोचक्के से हो मुहताकते रह गये।

एक जज साहब के सामने एक नामी चोर पकड़ आया जुर्म कुछ बर्तन चुरा लेजाने का था॥

जज साहब (बड़ी लियाकत से) मगर मेरी समझ में नहीं आता कि चोर क्योंकर घरके भीतर घुसा क्योंकि खिरकी दरवाजे सब बन्द थे और सेन्ध का भी कोई निशान नही पाया जाता॥

चोर – हुजूर मैं आप को कैसे समझा ऊं कि कैसे घर के भीतर घुसा और अगर आप समझ भीगये तो आपऐसेलोगोंको न चाहिये कि उस तरकीब को काम में लावें इस लिये आप को मुनासिब है कि आप अपना बर्तन भाड़ा बजारही से ख़रीद काममें लाया करें और हम लोगोंकेउमदा तरकीब केजंजालमेंन पड़िये नहीं तो सबका इन्साफ तो आप करते हैं आप का इन्साफ करने कौन जायगा॥

एक साहब बहादुर घोड़ेपर चढ़े हवा खा रहे थे दूर से आप ने देखा कि एक घसियारा घास छील

रहा है उसके मालिक के बाबत साहब के कुछ पूछना था पर शक था कि यह उन्हीं साहब का नौकर है या नहीं। इस लिये घोड़ा दौड़ा उसके पास जाय और से पूछा "टुम किसका नौकर है" साईस साहब को सड़क छोड़ खेतों में घोड़ा दौड़ाते हुये आते देख घवड़ा सा गया कुछ न समझा कि साहब क्या कह रहे हैं इसलिये हक्का बक्का सा हो गया। साहब ने फिर ज़ोर से पूछा "टुम यह घास किस साहब के वास्ते छील रहा है,, अब सईस समझा और चट जवाब दिया "हुजूर हमरो साहब के लिये" साहब बहादुर हमरो साहब को जानते थे इसलिये कुछ और पूछना मुनासिब न समझा चल दिये॥

आता है

आता है—अच्छा साहब क्या आता है—सच जानिये हमें तो कुछ नहीं आता जो आप को बतला सकें कि कहां २ क्या २ आता है—हां इतना अलबत्ता अनुभव कर सक्ते हैं कि आज कल गरमी खूब पड़ रही है सो सभों के बदन में पसीना आता है जिस्से जी ऐसा उकताता औ घबराता है कि कुछ कहते नहीं बन आता — बरन कभी २ तो जी में ऐसा पागलपन समा जाता है कि ख़याल के टट्टू को नैनो तालही की तरफ़ भगा लेजाता है। और जब उस सर्दिस्तान में पहुंच जाता हैं तभी चैन आता है। खैर ज्यों त्यों गरमी बीती वर्षा आई अब गगन तल में भ्रमण करती हुई घन घटा अथवा अवनि में रमण करती हुई सघन बन उपबन बिहारिणी मनोहारिणी हरियाली की डहडही छबि की छटा देख वियोगी जन आप लोग सावधान हो जाओ॥

नाना कृपाण निज पाणि लिये। बपु नील बसन परिधान किये। गंभीर घोर अभिमान हिये। छकि पारिजात मधुपान किये॥ छिन २

निज चोर मगोर दिखावत । पल २ पर आकृति कोरभुकावत । बनराह बाट श्यामता चढ़ावत।वैधव्य बाल बामता बढ़ावत ॥ यह मोर नचावत शोर मचावत खेत खेत बग पांति उड़ावत ॥ शीतल सुगन्ध सुन्दर अमंद नन्दन प्रसून मकरंद बिंदु मिश्रित समीर बिन धीर चलावत । अन्धयारि रात हाथ न दिखावत बिन नाथ बाल बिधवा डरात तिनके मन मन्दिर आग लगावत । छिन गर्ज २ पुनि लर्ज २ निज सेन सिखावत तर्ज तर्ज दुन्दुभी धरणि आकाश लचावत। मल्लार राग गावत बिहाग रस प्रेम पाग अहो धन्य भाग सुख पावत मेह महावत आवत ॥

हे बिरहिनी जन धीरज धरो "उड़ाता खाक सिर पर झूमता [मेघ] मस्ताना आता है,,। हे मयूरो तुम्हारी आर्त्त घोषणा श्रवण कर मेघ महाराणा (आता है। कलकता बेधड़क यह बारिश दीवाना आता है ॥

अच्छा यह तो स्पष्टही है कि ग्रीष्म केआगेपावस आताहैपर मेरे मन मे यह आताहै किजिसके आगेजोआता है उसकेआगेवहीआता है इससेयह सब की समझ में आजायगा कि किसके आगे क्या आता है। चलिये अ के आगे आ आताहै उ और र के आगे मा आताहै [उमा रमा] कार्य के आगे कारण आता है । राजा के आगे चारण आता है। मृत्यु के आगे मारण आता है। मिथिला के आगे सारण (कापदेश) आता है ॥ Education के आगे enlighten- ment आताहै enlightenment के आगे arrogance आता है । रैयतपर जुल्म और ज़ियादती देखते हैं तो लोगों के दिल में जोश आता है । नशाउतर जाता है तो होश आता है । मुसीबतोंका हमला जब आता है खामोश आता है । बाज़ार में जाय दाम खर्चिये तो पापोश आता है । तकलीफ से

रंज आता है। समुन्दर से स्पंज आता है। शर्मदार की आंखों में आता है। रहीम के दिल में आता है। आक़िल की समझ में आता है। जाहिल के सिर पर आता है। कान को सुनना आता है। घुना को घुनना आता है। बिद्वान को पढ़ना आता है बढ़ई को गढ़ना आता है। मूर्ख को लड़ना आता है। भीरू को भगना आता है। धूर्त को ठगना आता है। तुनुक मिज़ाजी को जगना आता है। भांग खाने से सरूर आता है। दौलत पाने से ग़रूर आता है। उर्दू पढ़ने से शऊर आता है। वही हिन्दी रटने से सौ कोस दूर भाग जाता है। खुशामद से माल आता है। असंयम से काल आता है। कश्मीर से शाल आता है। धनी के पास कंगाल आता है। ईश्वरीय कोप से भूचाल आता है। अदालत के कीड़ों को जाल आता है। माज़ी के बाद हाल आता है। साल के बाद साल आता है। व्यायाम से बल आता है। श्रम से फल आता है। फारसी खाने में स्वाद आता है। दिल्ली से कलकत्ता जाने में इलाहाबाद आता है। उन्मत्त को उन्माद आता है। नशा पीने के बाद आता है। स्वर और बन में निषाद आता है। दुःख से मन में बिषाद आता है। भक्तों में प्रहलाद आता है मित्रों में आल्हाद आता है। और इस असार संसार में जो आता है सो अन्त में मरनेही को आता है। "आया है सो जायगा क्या राजा क्या रङ्क" दक्खिन से मसाला आता है। ऊपर से पाला आता है। घर बिगाड़ने को साला आता है। पश्चिम से रूस आता है। दोज़ख़ से मनहूस आता है। काबुल से हूस आता है। बिल से मूस आता है। हाथियों में शेर आता है। जंग में शम्शेर आता है। बिल्ली पर स्वान आता है। चंगुल में नादान आता है। बातही बात में तार आता है। रातही रात में पुराना यार आता है। जिन्हें कुछ

रहम आता है उन्हो को ग़म भी आता है। माशूक को सताना आता है। नर्तकी को बताना आता है। शमा पर परवाना आता है। बुते काफिर को ग़म का खिलाना आता है। आशिके सादिक को ग़म का खाना आता है। "न बोसा देना आता है न दिल बहलाना आता है। तुझे तो ये बुते काफिर फकत तरसाना आता है" जो तुम हंसने में हो कामिल तो मैं रोने में मश्शाक । तुम्हे बिजली गिराना मुझ को मेह बरसाना आता है"

सुनाया हमने इतना आप को लिख करके ए मुशफ़िक़। यक़ीहै अब तो समझो गे हमें कुछ भी तो आता है॥

[श्रीधर पाठक]

बिना ब्याटरी (कलई करने के यंत्र) के कलई करने की रीति। घड़ी का ढपना चेन चांदी का बर्तन या ऐसे बर्तन जिनका मुलम्मा धुंधला होगया हो उनपर इस नीचे के मसाले से अच्छी तरह कलई हो सकती है।

Nitrous acid शोरे का तेजाब	२ भाग
Muriatic acid नमक का तेज़ाब	१ भाग
Nitric acid शोरेका तेजाब	४ भाग
Salamonia नौसादर	१ भाग

इन चीज़ों के मेल को अंग्रेज़ी में अक्वारेज़िया कहते हैं नइट्रस एसिड और नइट्रिक एसिड दोनों शोरे के तेज़ाब हैं और इन दोनों में थोड़ाही अन्तर है जिनका खुलासा बयान हम फिर कभी लिखेंगे। ऊपर लिखी हुई इन सब वस्तुओं को चीनी के एक प्याले में मिला दो शीशे के बर्तन में भूले से भी मत रखना क्यों कि इसमें म्यूरियटिक एसिड नमक का ते

जाब भी है वह शीशे को गला देगा। अब इसमें शुद्ध सोने के पत्तर या बून्दें जो (सोना गलाकर पानी में घुलानेसे बनती है) इस ऊपर कहे तेजाबों के मेल में छोड़ धीमी आंच पर चढ़ादो जब सोना गलने लगता है तब पीले रंग का धुआं उठताहै और कुछदेरबाद नारंगी रंग होजाताहै जबजानोकि सोना बिलकुलगलगया तो प्याले को आंच पर से उतार लो और टट्टी के शीशे से ढांप कर रख दो और उसे थिराने दो ब। रीक मल मल के टुकड़े उस सोने के पानी मे तर कर छांह मे सुख लो जब अच्छी तरह सूखजाय तब उसको जला कर राखकर डालो और एक शीशी में काग लगा कर रख छोड़ो ॥

अब जिस चीज़ पर तुम्हे कलई करना हो उसे पहले अच्छी तरह साफ कर डालो और चमका दो काग का एक टुकड़ा लो और एक बर्तन में नमक का पानी घोल दो—पहले काग के टुकड़े को नमक के पानी में बोरो फिर उसे वही राख उठाकर जिस बस्तु पर तुम कलई किया चाहते हो खूब रगड़ो ऐसी उमदा कलई होगी जैसी कुछ चाहिये ॥

लोहा या फौलादपर कलई करनेकीरीत

शीशा ४ छटांक नमक सेंधा ४ छटांक फिटकरी १ छटांक इनसब मसालों को आधपाव पानी में गला डालो तब उसमे एक छटांक सोने का बरक डाल दो और एक चीनी के प्याले में रखकर कोइले की धीमी आंच पर चढ़ा दो जब देखो कि सब पानी भफ हो कर उड गया तब आंच पर से प्याला उतार ठंढा होने पर उसमें खालिस स्पिरिट शराब को छोड़ दो जब सब तलछट उसमेंका गल जाय तब एक शीशी में बन्द कर रख छोड़ो जब तुम्हे किसी

चीज़ पर कलई करना मंजूर हो तो बुरूस में इस मसाले को बोर उस्पर लगादो बहुत अच्छी कलई हो जायगी।

पारेके योगसे मुलम्मा करना

जिस धातु पर तुम मुलम्मा किया चाहते हो पहले उसे खूब साफ कर डालो एक अंश Nitrousacid शोरे के तेजाब को १० अंश पानी में घोल बरतन उस्मे छोड़ दो तो खूब साफ हो जायगा थोड़ा सा न इट्रिक तेज़ाब एक मिट्टी के बर्तन मे गेर थोड़ासापरा भी उस्मे गेरदो ठीक तौल का कुछ काम नहीं है इतना अलबत्ता देख लेना चाहिये कि तेज़ाब पारे का दूना हो जब कुछ पारा तेज़ाब मे गल जाय तो पारे के पानी को जिस चीज़ पर कलई करनी हो एक बुरूस मे लगाय उस्पर फेर दो—जिस समय पारा तेज़ाब मे छोड़ते हो खबरदार रहना चाहिये कि उस्मे का धुआं तुम्हारे नाक मे न जाय नहीं तो नुकसान पैदा करेगा इस्मे विषका असरहै इसलिये चाहिये कि एक मज़बूत बोतल मे तेज़ाब डाल कर बाहर रख दो तब उसमें जल्दी से पारा डाल वहीं रक्खा रहने दो जब धुआं निकलना बंद हो जाय तब भीतर लाओ और बुरूस से जिस वस्तु पर मुलम्मा करना हो लगादो तब उसे आंचदिखलाओ और बुरूस से मलते जाओ कि सब पारा बराबर फैल जाय थोड़ी देर मे पारा उड़ जायगा तब सोने के बरक उस्पर लगा कर थोड़ी देर तक रगड़ते रहो खूब चमक आ जायगी यदि फूलदार चीज़ है तो कड़े बुरूस से उसे रगड़ो

बाल विधवा और

ये सखि कठिन मदन मरोर।

सहि सके सो कौन त्रिभुवन वेदना अति घोर ॥ जबहि उठत उमंग हिय भरि अंग जोबन जोर ॥ बढ़त उदधि तरंग सम पुनि पुनि अनंग हिलोर ॥ अगम दुस्तर हृदय जलनिधि अति अथाह अथोर। डग मगाय डुलाय प्रति पल प्रबल पवन झकोर ॥ अन्धकार अपार व्यापित कहुं न दीखत छोर । बचे खेवट हीन किहि बिधि धर्म नौका कोर ।प्रार्थना अब ईश की सब करहु करजुग जोर। दीन बन्धु सुदृष्टि कीजै बाल विधवा ओर ॥ ये सखि कठिन मदन मरोर ॥

अ० पा०

॥ मलार ॥

झूलत रघु कुल राज दुलारे ॥ कंचन जटित अनेकन बिद्रुम भूषण बसन हिंडोल संवारे ॥ झूमत मत्त घटा दामिनि युत चंचल अनिल अधिक अन्धियारे ॥ बिबिध बिहंग बाटिका कूजत अति आनन्द मगन मतवारे ॥ मन्दिरमहलबिपुल शोभा छवि दिनकर तुल्य दीप उजियारे । वनिता मिलि मलार कल गावैं नयन राम श्री मुखहि निहारे ॥ झूलत कुंवर अवध रानी को देखिरीनव रूप दुलारे । पीवत दृग भरि भरि जननी छबि हृदय प्रेम पुनि पुनि पुचकारे ॥ भौहैं कुटिल ढिठौना माथे मुख में अल्प अंगूठा डारे । श्रीधर बाल पालने में ते उठि महताब कुंवरि उरधारे ॥

है तो अनर्गल पै सार्गल सी कही जात

कुण्डलिया

(१)

सृष्टि सबाई चलत है चले न कबहूं राह। अपने अपने काम को चलें चोर अरु शाह । चलें चोर अरु साह कहैं सब मारग चाले । जल हीलत लगि पवन कहैं प्रति बिंब

हि होले । सुन्दर आतम चलत देह आवे अरु जाई । राह ठोर को ठोर चलत है सृष्टि सवाई ।

(२)

तेल ज़रे बाती जरे दीपक जरे न कोई दीपक जरता सब कहें भारी अचरज होइ । भारी अचरज होइ जरे लकरी अरु घासा । अग्नि जरत सब कहें होइ घर बड़ा तमाशा । सुन्दर आतम अजर जरे यह देह बिजाती । दीपक जरे न कोइ जरत है तेज रु बाती ।

(३)

सब कोऊ ऐसे कहें काटत हैं हम काल । काल नाश सब को करे वृद्ध तरुण अरु बाल । वृद्ध तरुण अरु बाल साल सबही को भारी । देह आपनो मान कहत हैं नर अरु नारी । सुन्दर आतम अमर देह मर है घर खोऊ । काटत हैं हम काल कहत ऐसे सब कोऊ ।

महामंत्र महोदधिः

कं कलकत्ता बासिभ्यः किरानिभ्यो नमः ।

खं खुशामद खुदगर्ज़ी त्यादि भारत देवो भ्यो नमः ॥

गं गोवर गनेश कष्मल कलेश पूरित प० उ० प्रदेश बासी हिन्दू भ्यो नमः ।

घं घाऊ घप्प माल गप्प घंटा धारी घोंघा चारी भ्यो नमः ।

चं चुल्लू में उल्लू भो भो और मुल्लू चोबे जो भ्यो—जे जमना मैया की—चकारात चुङ्गी महा डाकिन्यै श्वाहा ॥

छं छछून्दर के सिर में चमेली का तेल डालने वाले उर्दू के आशिकों को नमः ॥

जं जोहरी भ्यो—जमादारे भ्यो जमामारे भ्य श्च ॥

झं झांझ खंजरी धारी बेरागीभ्यः

टं टिकट कलेक्टरेभ्यः ॥

ठं ठग ठाकुर और ठसक धारिभ्यः ॥

डं डेकैती डिपार्ट मेंटाय ॥

ढं ढोलक साङ्गी भ्याम् ॥

तं तहसील दारान् ॥

थं थानेदारान् ॥
दं दारोगान् ॥
धं धूर्ताधिराजान् ॥
नं नर्तकी:—प्रणामाम: ॥
पं पुलिसाधिकारिषु ॥
फं फिरंगीषु ॥
बं बूट धारिषु—बाज़ार बासिनी षुच ॥
भं भिखारिषु ॥
मं म्युनिसिपल मेम्बरेषु- मोटेमल माड़वारिषुच- नतयस्तराम् ॥
यं यमदूतानाम् कांस्टेबिली भूतानाम् ॥
रं रेल गाड़ी नां—रावडोनांच ॥
लं लखनौआनाम् ॥
वं विलायतीनां ॥
शं शाम्येन सेवकानां ॥
षं षट (शठ) शास्त्रीणां ॥
सं सिबिलाइज़डा नां ॥
हं हाईकोर्ट वकीलानां ॥
त्तं त्तय रोग ग्रसित त्तत्रियाणां ।
चं चाहिमां चाहिमां मिति रटन्तो नां गृह गृहे भटन्तो नां बाल बिधवा नामार्तनाद प्रति बधिराणां ॥
ज्ञं ज्ञानिनां (ब्रह्मास्मीति बादिनां) बयं सर्वे सर्व काल म् वेइति निश्चयेनगुलामा:

प्रेरित

महाशय

आप ने देखा होगा कि सन् १८८३ ई० और इसके पहले सम्पादक लोग देश उन्नति और हिन्दी के प्रचार को बक बक कर पूरे पत्र के पत्र प्रकाशित करते थे सो वह तो कुंअर बर्ष। के भांति हुई कि जिसके फल से कहीं २ हिन्दी महारानी की झलक राजदरबार में भी होगई परन्तु अब आप लोग हिन्दी के लिये मौनी बनकर उस परिश्रम को वृथा निष्फल किया बड़े खेद की बात है कि हमारे सरकार के कान में आप लोगों के

पत्र द्वारा हिन्दी के अभिलाष की झनकार पहुंचतीथी सो वह भी दूर हुई हम तो यही कहेंगे कि जब तब उर्दू सहचरी की वकालत श्री मारथ राज्य के यहां रहेगी तब तक देश उन्नति का होना संभव नहीं है हां यदि आप लोग फिर भी एक बार अपने मात भाषा की दृढ़ता से सहायता कर इंगलेंड पति के इजलास में उर्दू पर (जो अब भारतकी मदखुला बीबी बनी है) अपील करदेवें तो अवश्य है कि हिन्दी महारानी की डिकरी होजाय फिर तभी देश उन्नति होना भी संभव होगा॥

आप का शुभ चिन्तक

मु० बच्चूराम मनेजर प्र०प्रे

लि०टि० इलाहाबाद

प्राप्ति

बाल भूगोल

पं० श्रीधर पाठक कृत—बालकों के लिये परम उपयोगी इस पुस्तक में हमारे सुयोग्य मित्र ने भूगोल के सम्बन्ध मे जो २ संज्ञा शब्द बालकों के पठन पाठन में आते हैं उनको अंगरेज़ी से शुद्ध भाषा में गढ़ने में बड़ी योग्यता प्रगट की है उसकी पूर्ति ६ भाग में होगी यह छोटी सी पुस्तक पहले नमूने के ढंग पर छापी गई है पश्चिमोत्तर के शिक्षा बिभाग की नष्ट भ्रष्ट पुस्तकों के बदले ऐसी २ पुस्तकें प्रचलित होतीं बालकों को निश्चित लाभ पहुंचे पर काहे को ऐसा होना है क्योंकि शिफारिस को बड़ी ताकत दी गई है Merit योग्य अयोग्य के बिचार पर रांडों का सियापासा पिट रहा है—मूल्य में पोस्टेज ॥)

बंदना शतक

हुशंगाबाद निवाशी बा—हरिश्चन्द्र कुलश्रेष्ठ कृत—यह पुस्तक शान्त रस की कविता का एक उत्तम उदाहरण है इसमे यमक और अनुप्रासभी अच्छे ढंग से निवाहा है मूल्य में डाक महसूल —)॥ और बा॰ केशरीचन्द हुसंगाबादके पास

मिलेगी।

मातृ शिक्षा

पं० सरयूप्रसाद कर्तृक अनुवादित यह पुस्तक प्राची शिक्षा के ढंग की है पर उससे हर एक बातो में उत्तम है एक बड़ा अच्छा पन तो यह है कि प्राचीशिक्षा कीसी अशलील बातें इसमे भरसक बर काई गई हैं भाषा इसकी कोमल और मधुर है सादर स्त्रियों के लिये बड़ी उपकारी है

बिद्या बिलास

सचित्र मासिक प्रच उचित वक्ता के संपादक पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र संपादित सरल भाषा मे इसके अनूठे बिषय छोटे बालकों को बहुत ही लाभ दायक हे और इसको स्वच्छ उत्तम और पुष्ट टाइप देख न पढ़नेकी इच्छाभी न होतो अवश्य पढनेको जी चाहता हे।

बर्षा आगम के कबित्त

बांध बांध झुण्ड सब मेघन प्र चण्ड चण्ड उमड़ि घटान पै अनेक भांति धायो है। तड़पि तड़ाक घुघकार मानो तोपन की करत कुलाहल दल साजि इन्द्र आयो है देखि के दवारि सेन अंबर बह कि उठेउ बून्दन की झड़ी मानो शास्त्र सों चलायो है॥ कहे बद्रू राम युद्ध नीति सो अखंडकर पावस प्रबीन बीर ग्रीषमे भगायोहे ॥१॥ मु० ब०

चेत-चेत-चेत

बर्ष पूर्ण होने को केवल एक महीना शेष है ग्राहक जन कृपा कर अपना मूल्य भेज हमे सुचित्त करें बार २ के तकाजे पर दाम मिलना तो हमारी और उनकी दोनों की बेहयाई है

अग्रिम	३॥)
पीछे देने से	४।=)

॥ हिन्दी प्रदीप सम्बन्धी नियम ॥

१—स्कूल के छात्रों को अग्रिम आधे दाम १॥ ≡) पर यह पत्र दिया जायगा।

२—जो महाशय पांच ग्राहक करा देंगे उन्हें एक कापी मुफ्त दीजायगी ॥

३—हिन्दी प्रदीप में जो बिषय क्रमशः के रीति पर कई नम्बरों में छपे हैं या छपेंगे वे सब विषय पुस्तकाकार हो अलग छपने वाले हैं—आगामी बर्ष से जो लोग अग्रिम मूल्य देकर ग्राहक होंगे उनको उन सब की एक कापी मुफ्त में दीजायगी ॥

मेनेजर
हिन्दी प्रदीप
इलाहाबाद

हिन्दीप्रदीप।

मासिक पत्र।

बिद्या, नाटक, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन,
राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की पहिली को छपता है।

शुभ सरस देश सनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ॥
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणि दीप सम थिर नहिं टरै ॥
सूझै बिवेक बिचार उन्नति कुमति सब या में जरै ॥
हिन्दी प्रदीप प्रकाशि मूरख ताहि भारत तम हरै ॥

१ अगस्त सन् १८८५ | जिल्द ८ संख्या १२

इलाहाबाद

पण्डित बालकृष्ण भट्ट संपादक की आज्ञानुसार
प्रयाग प्रेस कंपनी लिमिटेड में
पंडित ज्योति प्रसाद के प्रबंध से
मुद्रित हुआ

॥ हिन्दीप्रदीप ॥

जिल्द ८
संख्या १२

१ अगस्त
सन १८८५ ई०

स्त्रियों की मानसिक शक्ति

स्त्रि और पुरुषों में परस्पर प्राकृतिक शक्ति और गुणों की मीमांसा हमने विदेशी लेखकों की ही लेखनी से निकलते देखा है-हमारे हिन्दुस्तानी भी यदि इस विषय में अपने देश या अपने समय की स्त्रियों की मानसिक शक्ति के बारे में लेखनी का कुछ विस्तार दिखलाया चाहें तो क्या इस ग्रामीण कहावत के समान न होगा ,, अन्धा कुत्ता बतासे भूके, क्योंकि पहले बड़ा भारी प्रश्न उनसे यही होगा कि महाशय जिस बात के लिखने का आपका मनसूबा गठ रहा है उसको एकबार देख तो लीजिये स्त्रियों के मानसिक शक्ति या गुणों के आप के यहां कुछ अर्थ भी हो सक्ते हैं ? जब हम देखते है कि हद्द से हद्द उत्कर्ष उस शक्ति का यही है कि हमारी स्त्रियां रामायण बांच सकें राधाकृष्ण या ऊधो अथवा सुदामा कौन थे यह जानें या उन्हीं के सम्बन्ध के दो चार हिन्दी के भजन या पदों का कुछ रस या भावार्थ समझ सकें और जो संस्कृत के दो एक श्लोकों को हिज्जे कर कराय पढ़ सकीं तो क्या पूछना है मानो पण्डिताई कीसी मा चूम बैठी -- खानेदारी के कामों में दूसरे के सामने अपने भावार्थ प्रगट करने के शरम से बचने को अपने ही हाथों से टेढे सीधे चिड़ियों की टांग से

अक्षर घसीट चिट्ठी पाती लिख सकीं तो मानों हद्दकी फ़ज़ीलत को पहुंच गईं अब बतलाइये जब कि यह हाल है तो यह पूछना क्या अयुक्त है कि ऐसे लोगों के सम्बन्ध में मानसिक शक्ति के प्रकाश के माने ही क्या जब उसकी रोशनी इतनी धीमी तौर पर फैली हुई है कि टिमटिमाती बुझती हुई देखलाई देती है विद्या पर अधिकार के अर्थ ही क्या जब वह विद्याही नहीं जिसपर अधिकार किया जाय ?"

हम अपने यूरोपीय भाइयों को अपनी बहिनों के साथ इस बात के लिये लड़ते देखते हैं कि प्राकृतिक शक्तियों में आदमी बढ़कर है और तों से या नहीं,, तो क्या बहुतेरे अपने देशके लोगों के समान हमे खुशी मनाने का अवसर है कि अच्छा हुआ जो हमारे घर ऐसी लड़ाइयों की संभावनही नहीं है! भला है जो हमअपने घर अपनी सीधी सादी भार्य्याओं पर निष्कंटक राज्य करते हैं— भार्य्या शब्द में भृ धातु के अर्थ को भी तो खयाल कीजिये—उस्से यह तो नहीं निकलता कि स्त्रि लोगों को पढ़ने लिखने की भी कुछ जुरूरत है—देखिये हम बिना किसी तरह के कलह माच के { जोशमें आकर आदमी कुछ थोड़ा झूठ बोल जाता है ! } रात दिन अपने घर में चैन से काटते हैं—ईश्वर करै हमारे यहां की बिबाह की इस तरह की प्रणाली कायम रहै—और हम अपने छोटे २ लड़की लड़कों का बिबाह कर आंख का सुख देख २ निहाल होते रहैं"—हमारी समझ में इन गुड़िया गुड़ओं के बिबाह करने में तो कोई खुश होने का अवसर नहींहै—घमण्ड तो यह—कि हम लोग कैसे सुख चैन से रहते हैं लड़ाई झगड़े से कोसों दूर ! पर दृष्टि फैलाय कर देखिये तो इसी अनमिले चित्त के बिबाह के कारण कौनसा ऐसा घराना है जहां दिन रात की दांताकिटकिट नहीं हुआ करती और जो लोग

ऊपर लिखी हुई सभ्यता की इस उमदा लड़ाई के आनन्दों को रंजमान, अपनी दर असल रंज की हालत को खुशी समझकर, किसी तरह उससे दूर होना भी नही चाहते, उनके मनमें इस ऊपर लिखे हुये प्रश्न की मींमांसा का अनुमान भी हुवे पहुंचाने का उद्यम छोड़, हमको अपनेही ढंग पर जो कुछ लिखना है सो लिखते हैं—

कवियों के लेख में कविता के किसी अलङ्कार के शब्द केवल अस्थिमात्र हैं किन्तु उन शब्दों से सूचित भाव या रस ही वास्तव में कविता की जान है• जिस भाव या रस के निर्णय में हमारे यहां के साहित्य के न जानिये कितने ग्रन्थ रचे गये हैं— वैसेही हमको मालूम होता है कि इस ऊपर लिखी हुई लड़ाई की भी कुछ भीतरी जान है जिसे डूबकर थहाइये तो एक बिल्कुल नई दुनिया नज़र आती है—यह लड़ाई हमारे यहां के कुंजड़े भटियारों की लड़ाई के समान नहीं है जिस्में अगर कोई बीच बिचाव न कर दे तो दोनों ओर सिर फूटने की डर है—बरन इस लड़ाई से उमदा सुलह की बू आती है—आपस में इस प्रकार की लड़ाई का होनाही मेल बढ़ने की राह है—केवल इतनाही नहीं बरन कुछ कर देखिये तो इसलड़ाई में स्त्रियों की मानसिक शक्ति की अत्यन्त पुष्टता, समाज में विद्या का घना फैलाव, और देश मे बड़े ज़ोर के साथ चलती हुई सभ्यता का प्रचार मालूम होता है क्योंकि किसी बात के लिये एक आदमी के अभिमानी होने का तो कुछ अर्थ भी है और समूह के समूह का अभिमानी होना इसका तो कुछ तात्पर्य्य ही हमारे मन मे नही आता॥

संभव है (क्या बल्कि बहुधा ऐसा ही देखा) कि जिस बात के लिये जो अयोग्य है उसके पाने की आकांक्षा में मरा जाता है॥ "प्रांशुलभ्ये फलेमोहादु द्वाहुरिव वामनः" से केवल बड़ी

इच्छा ही नहीं वरन बड़ा बेहूदा अभिमान भी प्रगट होता है और यह कालिदास का बाक्य केवल दो चार मनुष्यों पर सुघटित हो सक्ता है समाज को समाज अभिमानी है इस्का तो कुछ अर्थही मन में नहीं धंसता और यदि कुछ अर्थ है तो यही है कि समाज उस पद के प्राप्त करने के प्रयत्न में लगी है जिस्के वह सर्वथा योग्य ही है और यदि उस्को सच्ची लो लगी है तो कौन कह सक्ता है कि एक दिन ऐसा न आवेगा कि उस अभिल- षित पद को वह समाज न पहुंच जायगी ?।

बहुधा यही दशा बिलायत में स्त्रियों के समाज को है-माना हमने कि पार्लियामेंट में घुसने के लिये स्त्रियां बहुत कोशिश कर रही हैं और संभव है कि अभी बहुत दिनों तक इस्के लिये लड़ती रहें—पर इस्से उनकी अयोग्यता नहीं वरन सर्वथा योग्यता ही प्रगट है— खेर अब हम अपने देश की और बिलायत को स्त्रियों की दशा का मिलान करना छोड़, और एक के लिये अपना हर्ष और दूसरे के लिये अपना शोक प्रगट करना छोड़ स्त्री पुरुषों के परस्पर के प्राकृतिक गुणों की बिबेचना करते हैं क्योंकि इस प्रश्न की मीमांसा किसी एक मुख्य देश के लगाव में की जाय इस्की कुछ आवश्यकता नहीं है ।

हम अपने प्रश्न को फिर लिखते हैं "शारीरिक बल या बुद्धिबल में पुरुष प्रबलतर है या स्त्री" ? यहां पर पहले "सौन्दर्य" क्या है इस्का निर्णय हम किया चाहते हैं प्रश्न मनुष्यसम्बन्धी है इस लिये इस्का उदाहरण हम जानवरों में देते हैं— नर और मादा दो तरह के जान वर हैं इनके सम्बन्ध में मनुष्यों को जैसी कृत्रिम शोभा होती है उस का ख्याल मन से ढीला कर यह कौन न कहेगा कि नर जाति के जानवरों में बिशेष सौंदर्य है—तात्पर्य हमारे उदाहरण का यह है कि प्राकृतिक सौन्दर्य शरीर के भरे हुए, सुडौल,

और प्रबलतर होने से सम्बन्ध रखता है—यह कौन नहीं जानता कि स्त्री जाति की प्रशन्सा इस्के बिलकुल बिपरीत गुणों से पूर्ण होने की है ? इस सिद्धान्त पर अधिक बाद बिबाद करने की कुछ आवश्यकता नहीं है क्योंकि आप अपने कबियों से भी पूछियेगा (जो किसी सच्ची बात का बयान करना जानतेही नहीं और सदा खयाली बातोंही में डूबे रहते हैं) तो वे भी आप से चिढ़ जांयगे क्योंकि क्या स्त्रियों के पहलवान होने की तारीफ है ? और अगर कोई कहे कि किसी २ क़िस्म के जानवरों में मादा भी नर से कमज़ोर नहीं पाई जाती तो इस्के उत्तर में हम यही कहेंगे कि भरण पोषण आदि जीवनोपायोगी काम के करने में जैसा नर सुघटित और सुघर देखा जाता है वैसा मादा नहीं—यहां पर हम एक अंगरेजी पुस्तक से कुछ उद्धृत बिषय का अनुबाद लिखते हैं — इस बात का कोई विशेष बिधान नहीं पाया जाता कि नर अपने जीवनोपयोगी उन कामों के करने में जिन्मे शारीरिक बल आदि की आवश्यकता है मादे की अपेक्षा घट कर रहे अर्थात् जहां देखा बढ़कर देखा अर्थात् नर के देह के भाग अधिक पुष्ट हैं — अपने जाति की सन्तति का बढ़ाना यद्यपि बड़ा काम है पर मुख्य काम नहीं है सब से मुख्य काम पैदा हुओं की परवरिश करना है — इस लिये सृष्टि कारक भाग (मादा) इसी सन्तति बढ़ाने के लिये ही रचा गया है पर उस मुख्य काम के लिये नहीं जो अपने सन्तानों की दूसरी अनेक प्रकार की सहायता द्वारा नर करता है इस लिये यह सिद्ध हुआ कि मादा सृष्टि के का मुख्य अंश नहीं है

सिवा इस्के कुछ ऐसा मालूम होता है कि मनुष्य जाति में स्त्रियों की प्रकृति कुछ इस प्रकार की है कि वे घर रहैं गृहस्थी का इन्तिज़ाम करें लड़के बालों का पालन पोषण करें इत्यादि — ऐसा भी देखा

गया है कि जब मृत्यु आदि कारणों से स्त्रियों ने अपनी जगह खाली कर दिया है तो पुरुष बड़ कठिनाई से उस काम को कर सका है — इसी लिये ज़नाने मर्द केवल समाज के हास्य पात्रही नहो है बरन प्रकृति के नियम के बिरुद्ध भी हैं ॥

यही बात मानसिक ब्यापार के सम्बन्ध मे भी पाई जाती है जैसे शारीरिक ब्यापार के संबन्ध मे अर्थात् स्त्रि पुरुष को जैसा शारीरिक ब्यापार मे सहायता पहुंचाने को पैदा की गई है वैसाही मानसिक मे भी परन्तु इस्मे बहुत से मत भेद है लोग कहते हैं बिद्या का प्रभाव तो जानवरों मे हई नहीं इस लिये आप इस बात मे सृष्टि के इतर जीवों का उदाहरण दे ही नहीं सक्ते पर हमे तो कुछ ऐसाही सूझता है कि पूर्ण बिद्या का अभ्यास यदि स्त्रियों मे भी फैले तो यह उनका बड़ा उत्तम आभूषण हो और अगर पुरुष बड़ा बिद्वान् है तो कैसे सम्भव है कि अपढ़ स्त्री उनके जोड़ की हो या उनकी पूरी सहायता कर सके—क्योंकि हिन्दू शास्त्र के अनुसार {"ममब्रते ते हृदयंदधामि ममचित्तमनुचित्तं तेस्तु" —"मै अपना ब्रत तेरे हृदय मे धरता हूं मेरा चित्त तेरे चित्त के पीछे चलने वाला हो इत्यादि" } परस्पर की मानसिक बृत्ति की ऐक्यताही बिबाह का मुख्य उद्देश्य है न कि आधुनिक रीति के बर्त्ताव पर ज्योतिष शास्त्र का भी खून करके दो निष्पाप बालिका और बालकों का पण्डित जी को आठ आना देकर गला घोंटना "वा ! बे दर्दी कोई तापे किसी का घर जले और बे" कोई" कौन जो अपने निज के आत्मा से पैदा हुये हैं उनपर इस प्रकार की निठुराई ! हा !!

निम्न लिखित समस्या यज्ञूराम मे० प्र० प्रेस प्रेरित आशा है हमारे कबिता रसिक इनके पूरति करनेका उद्यम करेंगे

> बूड़ि शाहाबी गढ़ोरी के पानी ।
> केहि कारन चंद गिरेउ धरनी ॥
> केहि कारन पानी में आगा लगी ।
> चकही कब चाहत चंद उदय ॥
> कीरति हीति कलंक के लागे।

नागेन्द्र हिन्द राजेन्द्र हिन्द – जय जय बहु बार जितेन्द्र हिन्द।
जय तीर्थ हिन्द जय पुरी हिन्द – जय प्रकृति ललित माधुरी हिन्द।
जय शोभा छबि नित नवल हिंद – जय धूलि धूसरित धवल हिन्द।
जय सरसिज मधुकर निकर हिन्द – जय जयति हिमालय शिखर हिंद।
जय जयति बिन्ध्य कन्दरा हिंद – जय मलय मेरु मन्दरा हिन्द।
जय चित्र कूट कैलास हिन्द – जय किन्नर यक्ष निवास हिन्द।
जय शैल सुता सुर सरी हिन्द – जय यमुना गोदावरी हिन्द।
जय पावन परम पुनीत हिन्द – जय जय जग लोकातीत हिन्द।
जय चतुरानन चातुरी हिन्द – जय चमत्कार प्राचुरी हिन्द।
जय आगम पटु पाटवी हिन्द – जय दुर्गम बिटपाटवी हिन्द।
जय उत्पाटित जग पटल हिन्द – जय धर्म धुरन्धर अटल हिन्द।
जय पन्थ हिन्द बैराग हिन्द – जय तीरथ राज प्रयाग हिन्द।
जय अवध हिन्द हरिद्वार हिन्द – जय जय ब्रज कृष्ण बिहार हिंद।
जय वृन्दाबन मधु पुरी हिन्द – जय गत कर्बुर शर्वरी हिन्द।
जय सिन्धु हिन्द जय बङ्ग हिन्द – जय जय तैलंग कलिङ्ग हिन्द।
जय राग हिन्द जय रङ्ग हिन्द – जय जय तुरङ्ग चतुरङ्ग हिन्द।
जय कुबचन मुख संपुटित हिन्द – जय सुनृत प्रिय प्रस्फुटित हिंद।
जय दलित यवन दलदुष्ट हिन्द – जय भुज बल पुष्कल पुष्ट हिन्द।
जय बिमल बिमल बन माल हिंद – जय बिद्रुम हीर प्रबाल हिन्द।
जय उज्वल कीर्ति बिशाल हिन्द – जय करुणा सिंधु कृपाल हिंद।
जय जयति कोटि भूपाल हिन्द – जय जयति बृद्ध अरु बाल हिन्द।
जय जयति शास्त्र आचार्य हिंद – जय जयति सनातन आर्य हिंद।
जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द – जय जयति जयति प्राचीन हिन्द।

दोहा

हिन्द अनूपम अगम बन। प्रेम बेलि रस पुंज।
श्रीधर मन मधुकर फिरत। गुंजत नित नव कुंज।

नई रोशनी का विष

(पंचम अङ्क—द्वितीय गर्भाङ्क)

स्थान—विश्वमित्र का बाग – वि–मि–पेड़ों को देख रहा है कहीं २ अपने हाथ से कुछ काम करता जाता है तारक चन्द आता हुआ दिखाई पड़ता है –

ता – च – (स्वगत) हैं तो अकेला ही ! इतनी खुशी तो शैतान को भी हज़रत आदम की बीबी साहबा को अकेले बागे अदन में देख कर न हुई होगी जितनी मुझको इस समय हुई ! किस्मत को नकेल पकड़ कर ले चलना हमारा ही काम है – घर से चले थे तो इस बात की टोह लेते आये कि सत्यानन्द भी अपने घर है या नहीं है – कहीं गया था (हंस कर) इस्से बढ़ कर और हमको कौन खुशी होगी (आगे बढ़ कर बहुत अदब से वि – मि – को बन्दगी करता है)

वि – मि – [कुछ घबड़ाया सा हो कर] बंदगी बन्दगी आइये आइये [कुलियों को पुकारता है] बैठिये २ [फिर पुकारता है]! कहिये आप अच्छी तरह तो है [नौकरों से] आप के लिये पानी लाओ और एक आदमी बाबू साहब को पंखा झलो – आप दूर से आये मालूम होते है कुछ जल पान कीजिये [जल्दी २ नौकरों को हुक्म देता है। ता – च – को बैठने की जगह देता है और आप खड़ा रहता हैं] आप शायद दूर से आते है

तारक – [सांस लेता है] जी हां बड़ी दूर से।

वि – मि – [स्वगत] भानुदत्त से इनको कोई बड़ा ज़रूरी काम है तब यहां आये है [प्रकाश] आप को भानुदत्त से कुछ काम है ? मै भी कुछ सुन सक्ता हूं आप का भानुदत्त से क्या काम है ? [नौकर लोग लो खातिरदारी की चीज़ें लाते हैं वह सब तारक चन्द के आगे रखता जाता है]

तारक — जी हां भानुदत्त से कुछ काम है — और असल काम तो आपही से है ।

वि — मि — मुझसे । आपका कहां से आना होता है ।

तारक — कलकत्ते से — मेरा कलकत्ते ही में मकान है — जनाब कलकत्ता भी अजीबशहर है — आज दिन दुनिया में अपना सानी नहीं रखता बड़े बूढों की कौन कहे छोटे बच्चे भी जिन्होंने दुनिया के झीरवा ने बिलकुल नहीं देखे वे भी वहां पक्के होते हैं — और दुनिया की लच्छतों का मजा चख चुके होते हैं तो सीखते ही हैं उनको भी वहां सीखते हैं [अपने मन में] और आप ऐसे बूढों के भी कान कतरने की लियाकत पैदा करते हैं [प्रकाश] मगर आप जानिये कोई इल्म हो बिना रुपया खर्च किये नहीं आता है ।

वि — मि — [कुछ सोचता सा हो] इसमें क्या सन्देह है ।

तारक — अरे आदमी पानी पीने का एक मिट्टी का बर्तन लेता है तो उसमें तो खर्च पड़ता ही है न कि किसी इल्म हुनर का सीखना उसमें भी आदमी के पहचानने और दुनिया के देखने का इल्म — और सो भी कहां कलकत्ते में जहां एक की ही चीज भी अगर एक रुपये के बदले दश रुपये को भी मिली तो कौड़ी के मोल में मिली — आप जानिये ऐसे ही अमीर और अमीरों के लड़के इसी में बिलट गये [ठहर जाता है]

वि — मि — [बिना कुछ समझे बूझे] सच है ।

तारक — मैं ऐसे तबाह अमीरों को बहुत जानता हूं — और सच पूछिये तो बहुतेरे उन्हीं के अगर मेरे हाथ न पड़ते तो अबतक उनको भीख भी नसीब न होती — वह तो कहिये ऐसों के भाग जागे कि उनकी मुझसे मुलाकात होगयी और मैंने जहां तक हो सका डूबने से उनको उबार लिया ।

वि — मि — [बिना कुछ समझे] क्यों नहीं यह आपही सरीखे भले

मानुसों का काम है।

तारक—आप मेरी बात को बिल्कुल बनावट मत समझिये न यकीन हो अपने लड़के भानुदत्त से पूछ लीजिये कि किस रास्ते पर वे चढ़ चुके थे वह तो कहिये कुशल हुई कि मेरी उनकी जान पहचान हो गई।

बि—मि—[अब तो कान खड़े हुये] आपने क्या कहा ?

तारक—जीहां—मै कुछ झूंठ थोड़ेही कहता हूं—मै ने देखा कि एक सीधा सादा आदमी और फिर आप ऐसे रईस का लड़का सिर्फ बुरे लोगों की सोहबत मे पड़ बिगड़ रहा है—मुझसे जहां तक बन पड़ा मैने उनको रोकने में कोताही नहीं किया पर फिर भी आप जानिये जवानी की धधकती हुई आग बुझतेही बुझते बुझतीहै।

बि—मि - [बहुत घबड़ा कर] मै हाथ जोड़ता हूं कृपा कर आप अपना मतलब खोल के कहिये—नहीं तो आपकी बातें मुझको पागल कर डालें गी [पेड़ों की ओड़ मे तत्यानन्द और भानुदत्त का प्रवेश]

तारक—और कुछ नहीं—वाजिबी २ जितना भानुदत्त ने खर्च किया है और जितना मेरा चाहिये केवल उतनेही के लिये आप को तकलीफ देने आया हूं [स्वगत] और ५००) सैकड़े के हिसाब से सूद तो हई है पर उस्का ब्योरा बतलाने की इन को कुछ ज़रूरत नहीं है [प्रकाश] केवल जितना भानुदत्त और उनके मुफ्तखोरे साथियों ने खर्च कराया है सिर्फ उतनाही बेबाक कर दीजिये।

बि—मि—क्या यह सच २ आप भानुदत्त का हाल कहते हैं ?

तारक—अगर आप सोते हों तो कुछ ज़रूर है कि मै भी सो जाऊं ?

बि—मि—हां साहब ठीक है आप झूंठ क्यों बोलेंगे—आप का तो यह रोज़गारही है [सिर पीट कर] हा! इस उमर मे यह

भी देखना बदा था। ईश्वर की लीला कुछ कही नहीं जाती।

तारक—तो अब बतलाइये आपने क्या सोचा है? यदि आपको व्योरेवार हिसाब देखना हो तो मै अपने मुख्तारों के हाथ अपने सब बही खाते भेज दूं वे लोग सब उस्का व्योरा आपको समझा देंगे—क्योंकि मैं चाहता हूं इस मामिले में जितनी जल्दी हो उतनाही अच्छा है और हम और आप दोनों झंझट और तकलीफ़ से बचें (स्वगत) रसिकबिहरी के सिखाये हुये जादू का असर तो होचला (बि—मि—सिर नीचा कर बैठ जाता है) तो आपने कुछ हुक्म न दिया? मै फिर भी आपको चेताये देता हूं कि इस बात में बहुत सोचना और देर करना तो अपनीही बदनामी और रंज के बीज बोना है—अब जैसा मुझको कहिये वैसा करूं।

(सत्यानन्द और भानु दत्त आगे आते हैं)

स—नं—(ता—चं—से) कहो देवता तुम यहाँ बिराजते हो?

तारक—(कुछ भय भीतसा हो पीछे हट) सत्यानन्द!

स—नं—हां सत्यानन्द! क्यों आप को मुझसे यहां मिलने में क्या खुशी नहीं है? हां आप भानुदत्त के मुफ्तखोरे दोस्तों का क्या हाल कहते थे? फिर कहिये ज़रा फिर कहिये? और बहियों का आपक्या क्या हाल कहते थे फिर कहिये न? चुप क्यों होगये? आप अपनी सब बहियां मंगाइये ऐसी उमदा चीज़ को दोही एक आदमी को दिखलाना मुनासिब नहीं है—मै भी देखूं और दस पांच उसकी जांच करने वालों को भी दिखलाऊं औ दो चार वकीलों की भी राय लें तब उस्का जोहर खुलैगा कि ऐसेही।

तारक—(बि—मि—से) जनाब इस आदमी की बराबर पाजी और

धोखे बाज़ दूसरा आप न पाइयेगा देखिये एक बार आपही के सामने जब कलकत्ते में भानुदत्त से मिलने को आप गये थे तो यही शख्स ब्यारिस्टर बन कैसा धोखा आपको दिया था अब इस जून आप का बड़ा हित चाहने वाला बनता है।

स—नं—जीहां—अफसोस कि आप का एक साथी रसिकादित्यागी तो यहां आपने ही लायक नही है—नोकुमार को कहिये बुला भेजूं वह आकर आपलोगों की आधी २ रात की कारगुज़ारियां खोले कि हमारे ऐसे सीधे लोगों की कौन कहे पुलिस के दफ्तर मे भी उनका जवाब न निकले—कहिये तो बुलाने के वास्ते आदमी भेजूं ?

तारक—जनाब ये दोनों मुझ ग़रीब का रुपया पचाने को एक राय हो गये है।

स—नं—वाहरे मुझ ग़रीब! एक गवाह मेरे पास और भी है—प्रमदा—जिस्का सिर्फ नाम लेना इस वक्त काफी है—अगर अब भी आप को बही मंगाना है तो जल्द मगाइये मै भी उस्की सैर करूं!

तारक [धीरेसे] नही मुझको बही नहीं मंगाना है।

स०नं अच्छा तो आप क्या सोच कर यहां आये हैं ?

तारक——मुझसे भूल हुई—अब मै ऐसा काम करने की कभी हिम्मत न बाधूंगा—अब घर जाऊंगा।

स०नं तुमने तो एक भले आदमी को खाक मे मिलाने का सामान किया था अगर सीधे चलते और हमसे कहते जैसा हमसे और तुमसे सदा का ब्योहार चला आया था तो हम आपके वास्ते सब तरह पर हाज़िर थे पर आपने तो समझा कि लाओ इसे भी बेवकूफ बनावें और गेहूं के साथ घुन को भी पीस डालें—कहिये अब आप को क्या चाहिये ?

तारक—(गिड़ गिड़ाता हुआ) अब मुझको कुछ न चाहिये—अब मै घर जाऊंगा।

भा – द – तारक चन्द हम तुम्हारे साथ किसी तरह की बुराई नहीं किया चाहते – यह काम तुम्हारा ही था कि अपना भला करने वाले के साथ भी बुराई चेतना – लो अब भी तुम जितना कहो हम देने को तैयार हैं।

तारक – आप लोगोंने सच २ मेरी आंख खोलदी अब कभी ऐसी गुस्ताखी मुझसे न होगा — जैसी आपके (त्रि – मि – की ओर इशारा कर) सामने हुई – और रुपये की कुछ बात नहीं रुपया आप का है।

बि – मि – पर बेटा सच २ तुमने ऐसे काम किये थे जिस्से इस तरह की तोहमत भी तुम पर आसक्ती है – तुम से ऐसी आशा तो न थी बेटा!

भा – द – (गरदन नीची कर) खैर दो एक भूल पिता जी मुझसे बन पड़ीं जिन की बजह से मैंने बहुत बहुतसी तकलीफ़ उठाया अब उन सब कामों को आप के सामने कह कर कांटों में अपने को नहीं घसीटा चाहता – इस्से प्रार्थना करता हूं कि उनको अपने मुहसे कहने की शरम से मुझे बचाये रहिये" और यद्यपि "नई रोशनी के विष" का स्वाद मुझ से अधिक किसी ने न चक्खा होगा – पर हम यह भी कह सक्ते हैं कि मुझसे अधिक उस्के लिये किसी ने ऐसा पश्चात्ताप भी न किया होगा।

बि – मि – खैर बेटा अगर कहीं बिष ही से अमृत का काम निकले तो उस्के बिष नहीं कहते "विषमप्यमृतं क्वचिद् भवेदमृतं वा बिष मीश्वरेच्छया" सुबह का भूला शांम को आजाय तो उसे भूला न कहना चाहिये – अच्छा अब ये महाशय इतनी दूर कलकत्ते से आये हैं इन का आतिथ्य करना अवश्य उचित है।

भा — द — (कुछ शरम से) मेरा तो यही इरादा था कि इस तरह के अतिथ्य सत्कार को जलांजलि दे बैठूं क्योंकि इसी के पीछे इतना बड़ा यह नाटक खड़ा किया

गया है—पर जैसी आप की आज्ञा हो [ता—से आइये चलिये—[सं-नं" से] आइये आपभी चलिये—ईश्वर करै आप ऐसा सत्य आनन्द का देने वाला मित्र सब को मिले [सब जाते है] जवनिका गिरती है।

[इति]

हमारे रसिक और कृपालु पाठक! यह बाल संजल्पित तुल्य रचना आपके करकमलों में अर्पण है—आशा है इसमें जहां कही भूलचूक हुई हो उसे क्षमा कीजिये गा।—और इस्के पूर्ण आस्वाद के मिलने में यदि आप को कुछ बिक्षेप हुआ हो तो कृपा कर के यह सोच कि क्रमश:प्रकाश्य बिषयों मे इस प्रकार की न्यूनता अवश्य आपड़ती है इस नाटक को आदि से हिन्दी प्रदीप के पिछले नम्बरों को निकाल कर [अप्रेल ८४ से] एक वार इसे फिर पढ़ कर हमारे परिश्रम को सुफल कीजिये।

सभ्यता क्या है ?

हम बहुत दिनों से फेर में पड़े हैं कि सभ्यता किस्को कहते हैं कई एक डिक्शनिरियां उलट पुलट डाली बहुत से लम्बे चाड़े व्याख्यान और स्पीचों को थहा डाला पर कहीं इस्का कुछ पता न लगा तब सोंचते २ यह सोंचा कि किसी नई रोशनी वाले, या मोलवी, अथवा किसी पण्डित से पूछें तो निश्चय हो क्योंकि ऐसे शब्दों का डिक्शनरियों में पता लगना कठिन है अकस्मात् पहिले एक नई रोशनी वाले से भेंट हुई मैंने वड़े चाव से उनसे पूछा "भाई मुझे एक शङ्का है निवारण कर दीजिये तो कहूं बोल उठे "तुम बड़ बेवकूफ हो भला आज के दिन हमको फुरसत है किसी अतवार को आओ तो मैं बतलाऊं मैंने फिर कहा थोड़ीसी तो बात है आप चित्त दे कर सुनै तो कहूं। बोले तुम लोगों से बातें करना अपना वेश कीमत वक़्त बर बाद करना है खेर आज यही सही पर आप मेरे वाक में खलल न डालिये में वाकिङ्ग करता जाता हूं

आप अपना प्रश्न करते चलिये मैं सेन्सर करता जाऊंगा — मैं गरज़मंदा तो था ही उनके पीछे २ चला पर वे आंधी सा भागते जाते थे मैं भी पतङ्ग का पुछल्ला सा उनके पीछे २ दौड़ता साथ हो गया और हांफते २ पूछा कि सभ्यता किसे कहते हैं

उन्हों ने जबाब दिया तुम ने बड़ी भारी बात पूछी मेरे साथ चले आओ अपने बंगले पर पहुंच कर बतलाऊंगा — खैर उनके साथ ही साथ चार कोस का चक्कर लगाय बङ्गले पर पहुंचे तब आपने कहा पूछिये जो आप को पूछना हो——मैने कहा ज़रा दम लेने दीजिये थक बहुत गया हूं — भौं तिरछी कर बोले आपकैसे असभ्य आदमी हैं विलायत में लोग पच्चीस मील का चक्कर मार कर आते हैं और शाम को पुलपिट पर खड़े हो घंटों तक लेक्चर देते हैं यदि थके भी तो चूं नहीं करते आप के साफिक ऐसे वेहूदा तौर पर कह बैठें कि मै थक गया तो समाज में उन की हंसी हो और लेडी लोग कभी उनसेमुंह से भी न बोलें क्योंकि वहां की चाल है अगर मर्द चार मील चले तो लेडीसाहिब १० मील चलने का दावा बांध सक्ती हैं चलना भी सभ्यता का चिन्ह है अब कभी आप ऐसा मत कहियेगा-सभ्यता शब्द का विचार जो आप ने पूछा था सो सुनिये इसका अर्थ तो मैं आपको ठीक २ नहीं बतला सक्ता पर जो उदाहरण मैं देता हूं उसीसे सभ्यता का तात्पर्य आप समझ लीजिये फी_म अर्थात स्त्री औरपुरुष दोनों परस्पर स्वतंत्र और निरपेक्ष बल्कि साहब और मेम दोनो कीस्वतंत्रता को एक साथ तौलने में मेम साहबको आज़ादी का पलरा झुका हो-एक उमदा नमूना सभ्यता का यह भी है कि मेम साहब रडापे का दुःख एक दिन भी न उठाने पावें मियां कबर में पहुंचे कि बीबी साहब के लिये दूसरे तैयार फिर एक नही चार २ बार ऐसी ही मियां कबर में पहुंचते जांय बीबी दूसरा २ करती

जांय स्त्रियों को परदे में रखना सभ्यता में बड़ा भारी धब्बा है सभ्यता जब आने लगी है तो पुराने लोग पुरानी बात पुराने ख़याल से घिन उपजाती है और हुल्लड़ जोश और तेज़ मिजाजी बेतहर तबियत मे समा जाती है आदमी के conscience बिवेचना शक्ति पर वह बारीक सान धर जाती है कि ईश्वर का अस्तित्व या मज़हबी वसूलों की बारीकियां उस बारीक सान में छू जाते ही कट फट कर सात टुकड़े हो जाती हैं और एक बात हम तुम से बड़ी गुप्त बतलाये देते हैं इसे अपने मनही में रखना वह यह है कि वइन सब सभ्यता का सार है बिना इस्के सभ्यता किसी तरह नहीं आसक्ती सभ्यता के गुण और लक्षण और अधिक जाना चाहो तो लंडन पेरस या न्यूयार्क की हिस्टरी और मिस्टरी मन चित दे खूब पढ़ो और भी दो तीन किताबों का नाम झट पट गिनागये सभ्यता की ये सब बातें उनके मुंह से सुनतेही मै सन्न हो गया और जी न भरा उठ खड़ा हुआ अब मौलवी साहब की राय भी इस बारे मे लेना चाहिये इसलिये शाम को वख्त मसजिद के पास जा निकला और जो बड़े नमाज़ी पुररोज़े और आबिद मालूम हो तेरो उन्हीं का दामन पकड़ा और बड़ी आजिज़ी के साथ उनसे पूछा मौलवी साहब मुझे एक शंका है मौलवी साहब बोले तुम्हे किस बात का शक है आप किस मुराद से मेरे पास आये इतना कह पीनक में आगये – मैने कहा मौलवी साहब आपसे एक बात दरियाफ्त करना है – बोले कहो – मैने पूछा सभ्यता किस्को कहते हैं ? सभ्यता क्या शैतानी लबज़ बोलते हो मेरी ज़बान मे कहो तो मै समझूं – अब मुझे और भी कठिनाई आपड़ी कि मै इन्हें किस तरह समझाऊं थोड़ा सा सोच सांच कहा जमात के दस्तूर और चाल चलन को सभ्यता कहते हैं – थोड़ी देर के गोर के बाद मौलवी साहब बोले – भाई हमारे लोगों का तो यही दस्तूर

है कि निहायत मैले और कसीफ़ बने रहो नहाने धोने की कुछ ज़रूरत नहीं पर नमाज़ दिन में ६ दफ़ा पढ़ो शराब तो हम हाथ से छूते भी नहीं पर मदक और चांडू का हद्द से ज़ियादा इस्तेमाल रखते हैं – बेवा की शादी हमारे यहां किसी तरह पर मना नहीं है दूसरे यह कि किसी की ख़ूबसूरत बहू बेटी हो छीन छोर जैसे मिले अपनी करलेना हाल की लखनऊ की बादशाहत को सभ्यता का पूरा नमूना समझिये आप को और ज़ियादा इसके बारे में दरियाफ़्त करना हो तो लखनऊ या दिल्ली में जाय देख आइये – इनकी भी सुन मैंने कहा अब पण्डितजी की भी सुनलेना चाहिये काशी चला गया क्योंकि कहावत है थाली खो जाती है तो कुंडे मे खोजते हैं मै मणिकर्णिका पर जा बैठा एक पण्डित जी को लम्बान छीरे नंगे सिर डुपट्टा कंधे पर धरे भव्य मूर्ति देख दूरही से प्रणाम कर कहा पण्डित जी मुझे आपसे कुछ पूछना है यदि आज्ञा हो तो कहूं मै काशी का नाम सुन प्रयाग से अपनी शङ्का निवृत्त करने को आयाहूं – पण्डित जी ने कहा आप धन्य हो जो इतना परिश्रम कर यहां आये हो कहिये आपकी क्या शङ्का है ? मैने कहा मुझे ठीक २ बतलाइये सभ्यता किसे कहते हैं पण्डित जी सुंघनी सूंघ २ तमाम श्रुति और स्मृति इसपर गाये मैंने कहा महाराज मुझे इतनी धारणा शक्ति नहीं है मुझे थोड़े मे समझा दीजिये पण्डित जी बोले सभ्यता समाज के शुद्ध व्यवहार को कहते हैं और यह सर्वथा भ्रम है जैसा अब के नव शिक्षित नितान्त असभ्य पशुओं के आचरण योग्य कर्मों को सभ्यता समझ सभ्य मण्डली के खंभ बनतेहैं सभ्यता हमारे रघुकुल मुकुट मणि श्रीरामचन्द्र तथा और २ पूर्वकाल के राजर्षियों के समय में थी सच पूछिये तो उसी समय के आचरण का नाम सभ्यता था मैंने कहा भला पण्डितजी यह भी चाल सभ्यता की थी जैसा आप मूड़ उघारे नंग

घिड़ंग बेठे हैं — नहीं २ पृथक २ समाज की जुदी २ चाल थी पर व्यवहार सब का एकही सा था दुष्कर्म और अत्याचार नहीं होने पाते थे भीख नहीं था शास्त्र और वेद की आज्ञा के बिरुद्ध मन मानो भेड़िया धसान नथी हम लोग इसी तरह रहते थे राजा लोगों की कुछ और ही चाल थी साधारण प्रजा का कुछ और ही बर्त्ताव था — पण्डित जी की ये बातें सुन मैं चुप हो सोचने लगा पण्डित जी के कहने के अनुसार सभ्यता तो अब कहीं रही न गई बल्कि अब देश का देश असभ्य और अधम हो गया जिस्से २ मैने पूछा सब अपनीही अपनी गीत गा गये कुछ नहीं सभ्यता चलन बाज़ार है जिसमें बड़े से बड़े दरज़े के लोग और छोटे से छोटे दरजे की भी सबी बधे हैं और उस बाज़ारू चलन की लीकसे वो भरम इधर उधर नहीं खसक सक्ते पर इतना अवश्य कहेंगे कि सभ्यता निरी ऊपर से चूना पोती क़बर के समान है जिन्हें लोग परम सभ्य कहते हैं उनके भीतरी आचरण पर ध्यान देने से मन में घिन उपजती है हमी अच्छे जो ऐसी घिनौनी सभ्यता के कभी आज तक डांड़े नहीं गये।

ग़ज़ल

क्या तुम्हें करने को कुछ रह गया अब भी बाक़ी। देश ज़र लेलिया अब क्या रहा हमसे बाक़ी॥ सभी अशयायों पे लेने लगे चुंगी टिक्कस मेरे दानिशमें रहा भीख कमाना बाक़ी॥ हमीं लोगों के लिये क्या बने ये सख़्त क़ानून। अपनी हम सूरतोंपर रहेमें सदा है बाक़ी॥ मुद्दतें होगईं कहते हैं पर करतेही नहीं। दफ़्तरे हिन्द का हिंदी में है होना बाक़ी॥ आफ़तों से भी बचाया है कई बार हमें॥ पर अभी ज़ुल्म सज़ा रंज अलम है बाक़ी॥ जंग जिस जा पे किया उस में फ़तहयाब हुये मगर अब रूस से तुमको रहा लड़ना बाक़ी॥ ब० रा०

हिंदी और उर्दू में मिडिल क्लास की परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों की संख्या।

जून मास के गवर्नमेंट गज़ट में मिडिल क्लास के उत्तीर्ण छात्रों का फल देख बोध होता है आश्चर्य नहीं कि कुछ दिनों में हिंदी के भी भाग्य चमकें — यद्यपि उर्दू में उत्तीर्ण छात्रों की संख्या ५३४ है और हिंदी में केवल ३६० ही हैं पर यह संख्या उस दशा में है जब कि रुहेलखण्ड की कमिश्नरी से केवल ५ और अवध में ११ ही हिंदी के छात्र थे।

नाम ज़िलह	हिंदीमें	उर्दू में
मेरठ	१	२६
सहारन पुर	०	२१
देहरा दून	०	२
मुज़फ़्फ़र नगर	०	२१
बुलन्द शहर	४	३१
अली गढ़	३१	८
कुल	३६	१०९
आगरा	३४	६
मथुरा	१५	१०
फ़र्रुखा बाद	२०	१२
मैनपुरी	१६	६
एटा	३१	२५
इटावा	३४	०
कुल	१५०	६२
इलाहाबाद	५	२५
कानपुर	२३	२
फतहपुर	१४	३
बांदा	४	५
हमीरपुर	४	४
जौनपुर	१४	८
कुल	६३	४८

भाषा वर्द्धिनी सभा ने क्या किया इन म्लेच्छाक्रान्त देशोंको क्या होने वाला है — यहां की आर्य समाजों ने क्या किया।

धन्य — सैयद अहमदखां बहादुर क्या कोशिश करने में चूक गये।

ब्रजभूमि तथा ब्रज भूमि के सामीप्य का यह फल है।

अतिधन्य

धिक् — हिंदू समाज क्या मुंह ताकने को हुये है।

बनारस	८	३
मिर्ज़ापुर	६	२
ग़ाज़ीपुर	१०	११
आज़म गढ़	१२	६
बलिया	१६	६
गोरखपुर	२०	६
बस्ती	११	०
कुल	१०३	२६
बरेली	१	२२
शाहजंहांपुर	१	३१
पोलीभीत	०	६
बदाऊं	१	३५
मुरदाबाद	३	१५
बिजनौर	१	४७
कुल	५	१५४
झांसी	३	५
जालौन	११	३
ललित पुर	२	०
कुल	१६	८
कुमाऊं	२	०
गढ़वाल	१	१
तराई	६	०
कुल	६	१
लखनऊ	०	१०
बराबंकी	१	११
उन्नाव	१	१६
कुल	२	३७

धन्य — यह दफ्तरों के हिंदी में (होने का परिणाम है ।
अति धन्य

हमारा पश्चात्ताप है
ऐसे नष्ट देश पर —
इन स्थानों की
आर्य समाजों ने
क्या बेहूदी
कर दिखाया ।

यहां कहां सज्जन का बासा

रायबरेली	०	१५
मुलतान पुर	२	९
परताप गढ़	२	६
कुल	४	३०
फैज़ाबाद	१	६
गोंडा	१	५
बहराइच	०	४
कुल	२	१५
सीता पुर	०	१३
खीरी	०	२
हरदोई	४	२६
कुल	४	४१
सब जोड़	३६०	५३४

फिर भी हम हिंदी की विजय ऐसे स्थान में कहेंगे जहां बीवी उर्दू ने अपना घर क़ायम कर लिया है जहां इनका नाज़ो नख़रा और ठसक देखतेही बन आता है——

प्रेरित ।

ज़िले तराई के लिये वकीलों का क्यों निषेध है ।

हम बिनय पूर्बक श्रीमान् अलफ्रेड लायल साहब से निबेदन करते हैं कि इस ज़िले तराई के लिये वकीलों का निषेध मिटाय और २ देशों के समान इसे भी यथा सम्भव सुख दीजिये — यहां की प्रजा राज कर्म चारियों के भय से सदा पीड़ित रहती है कितनाही उनका गला मसोसा जाता है पर अपना दुःख प्रकाश करने का हियाव उनका नहीं पड़ता, यदि वकीलों के लिये यहां वकालत करने का निषेध न हो तो उन ग़रीबों पर जो अत्याचार होता है उसका सूक्ष्म बिचार किया जाता केवल कर्म चारियों ही की लिखा पढ़ी पर आज्ञा दे देना उचित न्याय नहीं हो सक्ता — पहले तो इस ज़िला तराई के रहने वाले कमसे कम १०० मे ८० ऐसे हैं जो सदा क़ानूनी देशोंमें बास किया करते थे और उनके मुक़द्दमे सदा वकीलों ही के द्वारा हुआ करते थे इसलिये यदि इन्हें

अपने मुक़द्दमों में वकील करने की आज्ञा दी जाय तो ये अवश्य न्यसन्न होंगे – दूसरे यह कि ज़िला तराई क़िस्मत कमाऊं के भीतर है और कुमाऊं में ३ ज़िले हैं कुमाऊं गढ़वाल तराई जिन्मे कुमाऊं और गढ़वाल की कचहरियों में वकील जा सक्ते हैं तराई में नहीं जाने पाते यदि यह समझा जाय कि तराई का इलाका खास है तो ज़िले कुमाऊं में भावर का इलाका भी तो ऐसाही है वहां बकीलों के लिये तो कुछ रोक टोक नहीं है तो तराई मे भी न होना चाहिये – फिर यहां बिद्वान् और मूर्ख दोनो प्रकार के मनुष्य बसते हैं इन दोनों मे जब कभी झगड़ा आ पड़ता है तो बिद्वान अपनी बिद्या के बल मूर्ख बेचारे को दबा लेता है और यहां कानून केवल नाम मात्र को है हाकिमों की आज्ञा ही कानून है तो उचित था कि अच्छा बिचारवान् न्यायशील हाकिम नियत किये जाते न कि अपनी मन मानी करने वाले तिसपर भी यहां बकीलों का निषेध किया गया है "देखने न मारा आपही मरे" क्योंकि बकील मुकद्दमे वालों को न्याय प्राप्त करने का ऐसे ही उपाय हैं जैसा रोगी को रोग से बचाने को औषध तथा बैद्य – इत्यादि कारणों से यह निषेध का उठ जाना तराई वालों के लिये महोपकारी है आशा है श्रीमान् लायल साहब, इस बात पर अवश्य ध्यान देंगे.

एक कमाऊं निवासी

पावस

गरज घुमड़ान सुनि बोले मुरवान तड़ित कीन्हें चमकान घटा छाई आसमान है ॥ रूस उमड़ान कियो फ़ौजन चढ़ान अति सुभट जवान आय कियो युद्ध ठान है ॥ काबुल अकुलान भयमानत बलवान इंगलैंड रिसायान अह सोचे आन बान है बहुमन मान रूस तुस के समान छोड़ बैठो अभिमान सब जानत जहान है

श्याम २ सुभग घनेरे घन घेरि २ घटा घहराने फहराने पवन पीन है। ताहि देखि भागी बिरहागी न लागी बेर चट सों चटाक पट

शीघधाय दान है ॥ वाही समै तड़कि तड़ाका तड़ा तड़ बोजुपडत पड़ का बूंद झड़ी झम कीन है ॥ बनू राम मानो पिया आंगन लपटानी तेहू कामिनी डेरानी भय मानी जो कुलीन हैं ॥ २ ॥

चाचिक पुकार पीव २ अति दुखित किये केकी कल कंठ भेक बोलहूं न भावे री । जुगनूं चमकि चिनगारी सम लगैं मोहिं झींझी झन कारन सों बिथा को बढ़ावे री ॥ इंद्रहूं बिह लजान घटाये घुमंड आन कोंधा चहूंघा सो लपकि डर पावे री । बहुसन मोहन बिदेश तजि मोहिं गये याही सों बिषम मनोजहु सता वे री ॥

देखलो २ एकबेर पद्मकौमुदी मंगाकर देखलो

जो अतीव सुन्दर ललित छंदों प्रकरण और अलंकार से पूरित है मैं इस की उपमा करना व्यर्थ सम झता हूं क्योंकि हाथ कंगने को आरसी क्या कीमत भी तो सब के लेने लायक साढ़ेतीनही आना मय पोस्टेजहैमेनेजर प्रयाग प्रेस लिमिटेड